यह रूस है

यह रूस है

लेखक—

एडमंड स्टिवेंस

प्रगति प्रकाशन
नयी दिल्ली

प्रोग्रेसिव पब्लिशर्स, १४ डी. फीरोजशाह रोड,
नयी दिल्ली के लिए प्रकाशित और शारदामुद्रण
बनारस द्वारा मुद्रित मूल्य २ रुपया ८ आना

विषय-सूची

पृष्ठ संख्या

१—मुक्त वातावरण की ओर	१
२—पोलिट ब्युरो के प्रतिद्वंद्वी	८
३—रबरस्टैम्प संसद	२०
४—सोवियट शिष्ट वर्ग	३६
५—किसानों की दुर्दशा	४६
६—मास्को में दूकानदारी का रूप	५१
७—रूसी व्यापार में कितना धोखा है	५७
८—रूसी सहकारी समितियाँ ढंग पर नहीं हैं	६८
९—मजदूर सभायें जल्दी काम कराने की सस्थायें हैं	७४
१०—रूस का कितना औद्योगीकरण हुआ है ?	८२
११—महान् चुप्पी	९१
१२—साइबेरिया रूसी उद्योग-धन्धों का गुप्त घर	९६
१३—एम० वी० डी०—जो सर्वोपरि है	१०१
१४—कोई रास्ता नहीं	१०६
१५—'शुद्धियों' के परिणाम	११७
१६—सोवियट कलाकार सरकारी लकीर के फकीर—या...	१२०

१७—आन्तरिक प्रचार-कार्य की दिशा १६७

१८—आविष्कारों पर रूसी दावे १९०

१९—दल विज्ञान से ऊपर है १९७

२०—प्रचारक के लिये हिदायतनामा २०३

२१—रूस में यहूदियों के सम्बन्ध में सत्य २११

२२—बाल्टिक प्रान्त—एक शाखा रेल का अन्तिम स्टेशन २२२

२३—विदेशी दूत तथा पत्रकार मंडल २३८

२४—क्या सैनिक रूप से संगठित मजदूर-गुलाम विद्रोह करेंगे ? २५०

२५—यह आवाज़ जो बार-बार आती है २६१

प्राक्कथन

मुक्त वातावरण की ओर

जब हमारा जहाज वियेलोओस्ट्रोफ धीरे-धीरे सोवियत भूमि से अलग होने लगा, और लेनिनग्राड पीछे रह गया, तो हमने खुलकर शान्ति की सांस ली।

वर्षों की आशा तथा निराशाओं के बाद सोवियत भूमि की हमारी अन्तिम स्मृति यह थी कि तीन घण्टों तक कस्टम्स के कर्मचारियों के साथ झपट करने के कारण हम क्रुद्ध तथा परिश्रान्त हो गये थे। हमने जिन चीज़ों को बड़ी कोशिश से पैक किया था, उन्हें खींच कर निकाला गया, और उनकी जाँच की गयी। मेरी लड़की की एक यान्त्रिक गुड़िया जो दबाने पर चीखती थी, विशेष सन्देह से देखी गयी।

जब वे बेकार में बहुत देर तक इस प्रकार छान-बीन कर चुके, तब हमें मालूम हुआ वे किस वस्तु की तलाश कर रहे थे। इस समय प्रधान इंस्पेक्टर ने मुझ पर आरोप लगाया कि मैंने गाड़ी सोना लेकर एक सोवियत नागरिक के हाथ में गैर कानूनी तरीके से अपनी मोटर बेच दी। इस अभियोग के विरुद्ध मैं लिखित प्रमाण दे सका। मैंने यह दिखलाया कि मैंने अपनी कार कानूनी ढंग से एक विदेशी राजनैतिक

के हाथ बेची थी। इस पर ये कर्मचारी कुछ निराश हो गये। फिर उन्होंने हमें इस बात की इजाज़त दी कि हम अपनी चीजों को ट्रंकों में जैसे-तैसे भर लें, और जहाज पर बैठ जायें।

अन्तिम घटना से इस बात का प्रमाण मिल गया कि इस समय इस देश से रवाना हो जाना बिलकुल उचित था। थोड़े दिनों से हम इस बात का अनुभव कर रहे थे कि हमारी चारों तरफ की भारी दीवारें हमारे आसपास सिमटी आ रही हैं। सारा वातावरण घृणा तथा सन्देह से गन्दा हो रहा था। अखबारों में अमरीका की प्रत्येक वस्तु पर जो आक्रमण था, उसमें गालियों तथा हिंसा की मात्रा बढ़ रही थी। कोई भी सप्ताह ऐसा नहीं जा रहा था, जब कि यहाँ पर जो अमरिकन संवाददाता थे, उनमें से किसी न किसी को खुफिया करके अभियुक्त न किया जाता हो।

अमेरिका-विरोधी प्रचार-कार्य बच्चों के जगत् तक पहुँच चुका था। हमारे लड़के तथा लड़की को पड़ोस के बच्चे 'अमेरिकन्तसी' कहते थे, जो अब तक एक गाली हो चुकी थी।

इसलिए इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि सोवियत जीवन के साथ हमारा जो थोड़ा बहुत सम्बन्ध था, वह बहुत जल्दी बिखर गया। यहाँ तक कि वैदेशिक मन्त्रालय का पत्र विभाग जिसके ज़रिये से हमारे सारे सरकारी सम्बन्ध चलते थे, अब हमें अवज्ञा कि दृष्टि से देखता था। हमारे छोटे से छोटे अनुरोध की या तो अवज्ञा की जाती थी, या इन्कारी मिलती थी।

जब तक यह सारा क्रम व्यक्तिगत सतह पर नहीं था तब तक यह सहनीय था। पर १९४६ के प्रारम्भ में हमने एकाएक इस बात को जान लिया कि हम पर लगातार खुफिये लगे हुए हैं। जब भी हमारे

एक मंजिले काठ के घर के सामने वाले बगीचे के अन्दर कोई आता था जाता था, तो सामने के मकान की एक खिड़की का पर्दा कुछ उठ कर झप से गिर जाता था।

इसके अलावा आस-पास के झुण्डों में कई नौजवान जिनके अच्छे कपड़ों से यह मालूम हो जाता था कि वे अवारे नहीं हैं, इधर से उधर खाहमखाह घूमते रहते थे। जो मित्र हमसे मिलने आते थे; उनका पीछा किया जाता था, उनके घर का पता लगाया जाता था और यथा समय उनसे प्रश्न किये जाते थे। हमारे पड़ोस के लोग जिन्हें हम बरसों से जानते थे, पुलिस की छानबीन से नहीं बच पाते थे। उन्हें परेशान किया जाता था, और वे हमसे बिलकुल अलग रहने लगे थे।

हमने जल्दी ही देखा कि न केवल मकान पर ही खुफिया का पहरा है; बल्कि हम जब भी जहाँ जाते थे, हमारा पीछा किया जाता था। यदि मेरी स्त्री और मैं कहीं बाहर अपनी कार या टैक्सी पर अलग अलग जाते थे, तो दोनों के पीछे एक छोटी सी अर्जेन्ट बी० एम० डब्ल्यू० कार चार आदमियों के साथ पीछे पीछे चलती थी। उनकी चेष्टा तो यह होती थी कि वे सामने न आवें, इसलिए वे ट्रक और ट्राली बसों के पीछे हो लेते थे, और जब भी हम कहीं रुकते थे, तो वे काफी दूरी पर, भरसक एक नुक्कड़ के पीछे रुकते थे।

हमने जल्द ही इनके तरीकों को समझ लिया। और हमारे लिये यह एक बहुत ही मजे का खेल हो गया कि हम किसी अन्धी गली में घुस जाते थे, और फिर उसमें से पूरा चक्कर काटकर निकलते थे जिसमें कि हमारा पीछा करने वाली कार को हमारे बगल में आ जाना पड़े। इससे वे बहुत परेशान होते थे, और पीछा करने वाले यह चेष्टा करते थे कि वे झुक जायें, और वे अपना चेहरा न दिखावें।

जब भी हम कार से उतरते थे, तो वे मौके से किसी दरवाजे या नुक्कड़ की आड़ ले कर उतर कर खड़े हो जाते थे, जिससे कि वे हम पर निगाह रख सकें।

यदि हम मेट्रो (सुरंग से जाने वाली रेल) या सार्वजनिक बस में बैठते थे, तो भी वे हमारा पीछा करते थे। हाँ कभी कभी हम उन्हें झांसा देने में समर्थ होते थे। पर नियम के तौर पर हमारा पीछा सुबह से लेकर शाम तक वे बराबर करते थे।

बहुत दिनों से यह तो सब लोगों को मालूम था कि जिन टेलीफोनों से विदेशी काम लेते हैं वे किसी केन्द्रीय दफ्तर से जुड़े हुए हैं। हमें तो इस बात का कई बार प्रमाण मिला कि हम लोगों की लाइन की सारी बातें सुनी जाती हैं। जो कुछ भी हो हमारे घर की रत्ती रत्ती बातों को जानने की उधर से इच्छा है, यह हमें नहीं मालूम था।

एक दिन हमने देखा कि हमारी रूसी परिचारिका नास्त्या हमारे व्यक्तिगत डेस्क के दराजों को खोज रही है, और नोट लिखने के पैडों तथा पतोंवाली किताबों को एकत्र कर रही है। नास्त्या १९४६ से हमारे यहाँ परिचारिका थी, वह जिस समय आयी थी, उस समय सीधे गांव से आयी हुई एक सेब से गालोंवाली किसान लड़की मात्र थी। एक साल के बाद जब मेरी स्त्री ने उसे एक किसी तरह काम चला सकने वाली परिचारिका के रूप में प्रशिक्षित कर लिया, तब वह कुछ दिनों के लिये छुट्टी पर जाकर एक कान्स्टेबल से शादी कर आयी।

गत बसन्त ऋतु में फिर वह हमारे पास आई, और काम मांगने लगी। अमेरिकनों के घरों में कोई काम नहीं करता था, और नौकर पाना बहुत कठिन था, यह जान कर मेरी स्त्री ने उसे फिर से काम पर ले लिया। पर जब पतोंवाली किताब सम्बन्धी वह घटना हुई, तब हम

समझ गए कि अब नात्स्या पहले की तरह सेब से गालोंवाली सरल किसान कन्या नहीं है, बल्कि अब वह हम पर तैनात है। हमने यह भी देखा कि वह मेरी सात सालवाली लड़की को जिरह भी करती है। बात यह है कि उसमें वह बचकाना कौशल था कि वह बड़ों में होनेवाली आपसी बातचीत को ज्यों का त्यों स्मरण करके बता सकती थी।

इन झगड़ों के पहले हम मास्को में उसी प्रकार शान्तिपूर्वक तथा बिना छेड़छाड़ के रहते थे, जैसे दुनिया के किसी भी कोने में रह सकते थे। यद्यपि हमें बहुत कम रूसी दोस्त मिलते थे, फिर भी हम घनिष्ठ रूप से संगठित वैदेशिक उपनिवेश के सामाजिक जीवन में भाग ले सकते थे, और इसमें हम सन्ध्या समय की पार्टी का उपभोग कर सकते थे।

मास्को में जो तरह तरह की सांस्कृतिक सुविधाएं हैं, जैसे थिएटर कान्सार्ट आदि में हम भाग लेते थे। पर बच्चों के लिए कला, संगीत और नृत्य शिक्षकों को प्राप्त करने में कठिनाई होती थी। यह नहीं है कि गुणी लोगों की कोई कमी थी, पर ज्योंही यह जान जाते थे कि हम अमेरिकन हैं, त्यों ही दो तीन सबक देने के बाद वे किसी न किसी बहाने चल देते थे। हम अपनी लड़की को इस मुसीबत से बचा न सके।

यहां तक कि हमारा जो जर्मन शेफार्ड कुत्ता था, उसके साथ भी यही विदेशी विरोधी बर्ताव किया जाता था। हमने बहुत चेष्टा की कि उसे कहीं पर कुत्तों के किसी प्रशिक्षण विद्यालय में भर्ती करा दें, या किसी ट्रेनर के यहां प्रशिक्षित करायें। पर हमें मालूम हुआ कि कुत्ते के प्रशिक्षण के साथ सारी बातें सेना या पौर अक्सोलियरी कमाण्ड के आधीन थीं, और केवल वे ही कुत्ते जो सही साम्यवादी घरों की पृष्ठ-भूमि में पलते थे, प्रशिक्षण के लिए चुने जाते थे।

इन सारी कठिनाइयों के बावजूद हम बहुतेरे विदेशी निवासियों से अच्छे थे जिनका रूसियों के साथ सम्बन्ध न था, और जो वैविध्य हीन फ़्लैटों या होटल के कमरों में रहते थे। हमारे पास एक निजी घर था, जो एक अमेरिकन मकान की तरह सजा हुआ तथा सामान से लैस था, यहाँ तक कि उसमें अमेरिकन घरों की तरह बर्तन धोने की मशीन तक थी और एक छोटा पर आकर्षक उद्यान था।

हम केवल यह अनुमान कर सकते थे कि एकाएक हम क्यों संगठित दिलचस्पी के पात्र हो गए। समय के देखते हुए यह अनुमान होता था कि गुबीचेफ मामले से इसका संबंध था। सोवियत लोगों का कहना था कि संयुक्तराष्ट्र में यह जो रूसी काम करता था उसका खुफिया होने के अभियोग में अमेरिका में गिरफ्तार किया जाना अनुचित था क्यों कि वह राजनायक होने के नाते इस प्रकार के अभियोग का पात्र नहीं था। यह भी खुल्लम खुल्ला छापे के हरफ़ों में कहा जाता था कि इसका बदला मास्को में रहनेवाले अमेरिकनों पर लिया जायगा।

पर इस प्रकार जिनसे बदला लिया जा सकता था, उनकी संख्या बहुत कम थी, और संवाददाता ही ऐसे लोगों में आ सकते थे जिन पर बदला लिया जा सकता है।

गुबीचेफवाला मामला एक नया और ख़तरनाक ढंग का मामला था। कुछ अमेरिकन संवाददाताओं को फौरन रूस के बाहर भेज दिया गया। शायद बाद को जो भी अमेरिकन हाथ लगे, वे तब तक मुकदमा तथा छेड़छाड़ के पात्र होंगे, जब तक की गुबीचेफ को छोड़ दिया नहीं जाता।

तो कुछ सम्भावनाएं ऐसी थीं जिनके कारण इस प्रकार हमारे ऊपर एकाएक खुफियों के लग जाने से भय उत्पन्न होता था, और इस कारण हमें जल्दी से जल्दी भागना पड़ा। यह एक अजीब परिणति थी क्योंकि हम इस दृढ़ विश्वास को लेकर अपने वर्तमान कार्य पर आये थे कि दुनिया का भविष्य अमेरिका तथा रूस में सद्भावना तथा मित्रता पर निर्भर है।

पर इस समय मेरे मन में यह विश्वास पहले के किसी समय से अधिक दृढ़ हो चुका है।

पोलिटब्युरो के प्रतिद्वन्दी

"स्टालिन आज का लेनिन है।"

यह नया सूत्र वह है जिसे सोवियट पत्रों के सम्पादकीय लेखक बराबर इस्तेमाल कर रहे हैं। इस सूत्र के जरिये से हम जान सकते हैं कि महायुद्ध के बाद से क्रेमलिन के नेता को किस प्रकार अवतार बनाया जा रहा है।

एक समय था जब कि स्टालिन इससे अधिक दावा नहीं करते थे कि वे महा क्रान्तिकारी लेनिन के एक तुच्छ शिष्य मात्र हैं। स्टालिन के विरोधियों ने स्टालिनवाद शब्द को एक तिरस्कारात्मक रूप में जन्म दिया था।

इतिहास में बहुत कम मौके ऐसे हैं जब कि एक व्यक्ति अपने ही जीवनकाल में पौराणिक महत्त्व प्राप्त कर सका है। फिर भी जहां तक रूसी जनता का सम्बन्ध है, ऐतिहासिक व्यक्ति स्टालिन पौराणिक स्टालिन के मुकाबले में फीका पड़ चुका है।

पौराणिक स्टालिन एक बहुत ही सौम्य पितृव्य तुल्य व्यक्ति है, जो छोटी लड़कियों से उनके सुखी बचपन के लिये धन्यवाद के रूप में फूलों के गुच्छे उपहार रूप में लेते हैं। उनके चेहरे से नम्र धैर्य और सदाशयतापूर्ण ज्ञान की ज्योति चारों तरफ जगमगाती रहती है।

स्टालिन का यह जो रूप है, वह स्टालिन के वास्तविक, तीखे, निर्दय राजनीतिज्ञ के रूप से बिल्कुल भिन्न है, जिसने दल के यंत्र पर उस समय कब्जा किया जब लेनिन के हाथ शिथिल पड़ रहे थे, तथा जिसने चालें देकर न केवल अपनी परिस्थिति को मज़बूत कर लिया बल्कि लेनिन के सारे घनिष्ठ सहयोगियों को परास्त कर दिया, यही नहीं जिसने १९३४-३८ में जो 'शुद्धि' का कार्यक्रम चला, उसमें उन्हें समाप्त कर दिया।

स्टालिन के इस पौराणिक रूप के प्रधान प्रतिपादक स्वयं स्टालिन हैं। उनका जीवनक्रम, उनका प्रत्येक सार्वजनिक वक्तव्य इसी रूप को बल पहुँचाने के लिये हैं। प्रति दिन के सरकारी कार्यों से करीब करीब अपने को अलग रखते हुए वे केवल खास मौके पर ही इतिहास निर्माण करने के लिये अपने अर्धविश्राम की आलिम्पिक उच्चता से उतरते हैं, और यह उतरना इस रूप में होता है कि वे कुछ चुने हुए शब्दों के ज़रिये से पत्रजगत के सामने आते हैं।

१९४६ की फ़रवरी के बाद जब कि उन्होंने सर्वोच्च सोवियट के निर्वाचन के प्रचार के उपलक्ष्य में एक भाषण दिया था, स्टालिन ने कभी कोई भाषण नहीं दिया। प्रति वर्ष वे कृष्ण सागर स्थित सोची प्रासाद में अपनी छुट्टियों की अवधि बढ़ाते जा रहे हैं।

इस बीच में राष्ट्र के संचालन का भार अधिकाधिक रूप से उनके सहकारियों याने पोलिटब्युरो के सदस्यों पर पड़ता जाता है। यह वह सतह है जहाँ जाकर व्यक्तिगत शक्ति के लिये संग्राम जारी रहता है।

सोवियट देश के त्यौहारों के अवसर पर जो चित्र सार्वजनिक रूप से देखने में आते हैं, उन्हीं से यह मालूम हो सकता है कि इस समय किस सदस्य की अधिक चल रही है, और किसकी कम। जिन दिनों

आन्द्रे ज्डानोव जीवित थे उन दिनों स्टालिन को बीच में दिखाकर, दाईं ओर मोलोटोव को और बाईं ओर ज्डानोव को दिखलाया जाता था।

मोलोटोव के बाद जार्जियुन मालेन्कोव और ज्डानोव के साथ लारेन्टी पी बेरिया को दिखाया जाता था, पर एक समय बेरिया मोलोटोव के पास दिखाया जाता था।

ज्डानोव की मृत्यु से इस नक्शे में फर्क आया, और कुछ दिनों तक बेरिया और मालेन्कोव घुड़दौड़ में बहुत निकट प्रतिद्वन्द्वी रहे, पर मोलोटोव को प्रथम स्थान मिला रहा।

यह दौड़ इतनी काँटे की रही कि मुझे स्मरण है कि १९४७ के ७ नवम्बर के उत्सवों में मालेन्कोव और बेरिया के चित्रों को एक ही दिन में दो बार स्थान बदल कर सजाया गया।

अभी हाल के वर्षों में एक बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है। बेरिया जो एम. वी. डी. के. नेता होने तथा स्टालिन के घनिष्ठ सहकारी होने के कारण एक बहुत शक्तिशाली व्यक्ति हैं शायद और आगे बढ़ने की आकांक्षा नहीं रखते। जब से मोलोटोव ने वैदेशिक मंत्री का पद त्याग दिया, तब से उनका महत्व कुछ कम हुआ है। रूसियों का यह कहना है कि अपनी प्रबलता के दिनों में भी मोलोटोव केवल स्तालिन के पिछलगुआ तथा छाया के रूप में ही महत्वपूर्ण थे, वे कभी भी अपने व्यक्तित्व के कारण प्रबल नहीं थे। उनका जो बल घटा है, इसका कारण यह है कि स्टालिन अधिकाधिक रूप से रिटायर हो रहे हैं।

ज्डानोव और मालेन्कोव में प्रतिद्वन्द्विता बहुत दिनों से एक सुपरिचित गुप्त बात है। यह दो विरोधी स्वभावों का न कि दो विरोधी

राजनैतिक मतवादों का विरोध है। ज्डानोव एक बहुत ही प्रतिभाशाली बुद्धिजीवी था, जिसका झुकाव बीमार रहने की ओर था, पर उसमें नेतृत्व के लिये बहुत अच्छी योग्यता थी। वही पोलिटब्युरो में एक ऐसा व्यक्ति था, जिसमें जनता को मंत्रमुग्ध करने की शक्ति थी। उन में दल के लिये जोश के साथ ही साथ रूसी राष्ट्रीयता की प्रबल भावना थी। उनकी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि बहुत तगड़ी थी, वे रूसी साहित्य के बहुत बड़े विद्वान थे, और अपनी मातृभाषा पर भी उन्हें अच्छा दखल था। इनके अतिरिक्त वे एक बहुत अच्छे शौकिया प्यानोवादक थे। अपनी पुश्त के अन्य सोवियट नेताओं की तरह बाहरी दुनिया के सम्बन्ध में उनका ज्ञान भी नगण्य था।

मालेन्कोव दल के यंत्र की विशेष उपज है, जिसमें कि उसने अपना सारा वयस्क जीवन बिताया है। उसमें जनता को आकर्षित करने की शक्ति न होने के कारण वह रोशनी से भागता है, और पीछे रह कर तार खींचना ही उचित समझता है। ज्डानोव जहाँ जोशीला था, वह वहाँ सावधानी से काम लेता है, ज्डानोव जहाँ चमकता था, वह वहाँ धीरे धीरे चलता है। मालेन्कोव में विराट दल के कार्ड इन्डेक्स की तरह ही दिमाग है। वह इन कार्डों को रखता है क्योंकि वह दल के संगठन का प्रधान है। इस प्रकार उसे करीब करीब वही चाभीवाला स्थान प्राप्त है जो स्टालिन को उस समय प्राप्त था जब कि लेनिन अपने अंतिम दिन गिन रहे थे। दल के यंत्र को अपने काम में लगाने की उसमें उसी प्रकार की प्रतिभा है जैसे स्टालिन में है, वह प्रतिभा जो स्टालिन को उस समय बहुत काम आई जब लेनिन के मुकुट के लिये संग्राम चल रहा था। तुलनात्मक रूप से ज्डानोव में ट्राटस्की की ही विशेषताएँ थीं।

गत वर्ष में मालेन्कोव ने अपने पद का फायदा उठाकर ज्डानोव के साथियों तथा उम्मीदवारों को चाभीवाले महत्वपूर्ण स्थानों से निकाल दिया है। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति पोलिटव्युरो का सदस्य तथा राष्ट्रीय योजना आयोग के सभापति निकोलाई, वोजनेसनकी तथा मजदूर सभा के सभापति अलेक्जेन्डर कुजनेत्सोव हैं, जो दोनों ज्डानोव के दल-गत संगठन की उपज हैं।

ज्डानोव कभी कभी अपनी शक्ति के बाहर चले जाते थे, जैसा कि उन्होंने १९३९ में फिनलैण्ड पर आक्रमण, कामिनफार्म से टीटो का निकाला जाना, बर्लिन अवरोध आदि मौकों पर किये, पर मालेन्कोव की नीति यह है कि आगे हाथ बढ़ाने के पहले वर्तमान शक्ति को मजबूत किया जाय। इसका यह अर्थ लगाना बिल्कुल गलत होगा कि मालेन्कोव किसी भी तरह पश्चिमी शक्तियों की तरफ अधिक मित्रतापूर्ण या समझौतावादी नरम व्यक्ति है। मालेन्कोव में नरमी या मित्रता का कहीं नाम भी नहीं है।

अपने देश में मालेन्कोव की नीति यह रही है कि बाल्टिक देशों का सम्पूर्ण सामूहीकरण, सरहदों से अविश्वसनीय उपादानों का निष्कासन तथा यहूदियों के विरुद्ध विशेष व्यवहार की नीति का फिर से प्रयोग किया जाय।

ज्डानोव ने शिक्षा तथा संस्कृति के क्षेत्र में दल के सिद्धांतों को भरना शुरू किया था, उसमें कोई शिथिलता नहीं की गई है। मालेन्कोव की नीति में अमेरिकन विरोधी प्रचार को तीव्र किया गया है तथा अमेरिका से प्रसारित रूसी भाषा के रेडियो कार्यक्रमों को लुप्त करने के लिये अधिक से अधिक साधन तथा चेष्टा का प्रयोग किया गया है।

विदेशों में मालेन्कोव की नीति का अर्थ है कामिनफार्म देशों पर और अधिक नियंत्रण, टीटोवादियों का निर्दयतापूर्वक निष्कासन याने जिस किसी साम्यवादी में भी कोई स्वतंत्र विचार है उसका निष्कासन, जबरदस्ती सोवियट आर्थिक पद्धति का प्रवर्तन याने किसानों का सामूहीकरण तथा मध्यम वर्गों का विनाश आ जाता है। अपने कार्य के लिये एम. वी. डी. के विधिवहिर्भूत तरीकों का प्रयोग तथा ऐसे मुकदमों को काम में लगाया जाता है जिनमें अभियुक्त अपने दोष को मान लेते हैं।

मालेन्कोव की सावधानी इस बात से झलकती है कि बर्लिन अव-रोध उठा लिया गया, और टीटो के विरुद्ध प्रचार कार्य करते हुए भी वास्तविक हमला नहीं किया गया। पर ये बातें बहुत सोच विचार और रणनीति की द्योतक हैं न कि पश्चिमी देशों के प्रति मित्रता की द्योतक। सच तो यह है कि वह पश्चिमी देशों से उसी प्रकार घृणा करता है, जैसे ज्डानोव करता था, और उसमें उनकी समझ और भी कम है।

मालेन्कोव का इस प्रकार उदय एक प्रबल ऐतिहासिक घटना है। अब रूस की पतवार ऐसे लोगों की हाथों में जा रही है, जो प्राचीन पद्धति को स्पष्ट रूप से स्मरण नहीं कर सकते, और जिन लोगों ने क्रांति में कोई भाग नहीं लिया।

मालेन्कोव और उनके समसामयिक सोवियट पद्धति की छत्र-छाया में ही पले, वे इसी की उपज हैं, जब कि पुराने बाल्शेविक तथा स्वयं स्टालिन इस प्रकार नहीं थे। इस कारण इनके विचारों पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा है।

जोसेफ़ स्टालिन के उत्तराधिकार के प्रधान उम्मीदवार के रूप में जार्जी मालेन्कोव का उदय ही एकमात्र परिवर्तन नहीं है, जो प्रबल पराक्रांत पोलिटब्युरो के अंदर इन दिनों हुआ है।

१९४६ में माइखेल कालिनिन का अन्त हो जाने से पोलिटब्युरो के अन्दर से स्टालिन के अलावा एकमात्र पुराने तथा लेनिन के समसामयिक बालशेविक का निष्कासन हो गया। क्रेमलिन के देवताओं में कालिनिन ही सबसे अधिक माननीय तथा ऐसे थे, जिनके पास आसानी से पहुँचा जा सकता था। अन्त तक यह छोटा-सा सफेद दाढ़ी वाला किसान कार्यकर्ता जनता का सीधा सादा आदमी बना रहा, वह मानों सर्वशक्तिमान पुलिस राष्ट्र की ठोस पत्थर की दीवारों में एकमात्र रोशनदान के रूप में था।

सोवियट सरकार के प्रधान या सर्वोच्च सोवियट के प्रधान मंडल के प्रधान के रूप में कालिनिन एक ऐसे व्यक्ति थे, जिनके पास लाखों नागरिक अपनी निजी शिकायतों तथा अनुरोधों को लेकर आते थे। वह उनमें से बहुतों से व्यक्तिगत रूप से मिलते थे, और सैकड़ों के पत्रों के उत्तर देते थे। उनकी चेष्टा से कई व्यक्तिगत अन्याय दूर कर दिये जाते थे।

मुझे द्वितीय महायुद्ध के कुछ पहले की एक घटना याद है जब कि रूस से जाकर अमेरिका में बसी हुई एक अमेरिकन महिला ने रूस में आकर सोवियट नागरिकता ले ली, बाद को निजी कारणों से उसने यह तय किया कि वह सोवियट नागरिकता त्याग कर अमेरिका लौट जायगी।

अंत में अधिकारियों के साथ कई सालों के निष्फल संग्रामों के बाद उसने कालिनिन से मिलने की प्रार्थना की, जो स्वीकृत हुई। कालिनिन ने उसकी सारी फाइल देख कर पूछा—"तुम रूस में पैदा हुई थी। तुमने इसे पसन्द नहीं किया। तुम अमेरिका चली गई।"

"जी हां"—उस स्त्री ने कहा।

"तुमने अमेरिका पसन्द नहीं किया। तुम रूस में लौट आई।"

"जी हां—"फिर एक बार उस स्त्री ने कहा।

"तुमको यह जगह पसन्द नहीं है, इसलिये तुम अमेरिका जाना चाहती हो?"

"क्यों..."—उस स्त्री ने ऐसे अद्भुत प्रश्नों से घबड़ाकर कहना चाहा।

"अच्छा"—कालिनिन ने कहा—"नागरिका, मैं देखूंगा कि इस सम्बन्ध में क्या किया जा सकता है।"

आश्चर्यचकित स्त्री कुछ धन्यवाद दे पाने इसके पहले ही उसे बाहर ले जाया गया। दस दिन बाद उसे वह पासपोर्ट मिल गया।

यह सत्य है कि पोलिटब्युरो के सभी व्यक्ति योग्य तथा साम्यवादी लक्ष्य के प्रति वफादार हैं, पर उनकी योग्यताएं अलग हैं। सभी लोग इसको मानते हैं कि इनमें सबसे कम योग्य प्राक्युद्ध युग के रक्षा मंत्री क्लेमेंटी वोरोशीलोव हैं जिनसे स्वयं स्टालिन ने इस कार्य का भार लिया था। आज भी वोरोशीलोव एक मार्शल की वर्दी पहनते हैं, पर उनपर कोई खास जिम्मेदारी नहीं है। दल-'शुद्धि' के युग में वोरोशीलोव के कई घनिष्ठ साथी जैसे गमारनिक, तूखाचे वस्की, याकीर येगोरोव तथा सोवियट सेना के करीब करीब सभी उच्च कर्मचारी निकाल दिये गये हैं। वे खुद नहीं निकाले गये, यद्यपि यह देखा गया कि जर्मन आक्रमण के लिये पूरी तैयारी नहीं थी, इसका कारण आम तौर से यह बताया जाता है कि स्टालिन बीच में पड़े, और उन्होंने अपने पुराने मित्र क्लिम को बचा लिया। जो व्यक्ति इस समय सेनाओं का मंत्री है, और जिसने

स्तालिन से इस पद को ग्रहण किया, वह है निकोलाइ बुलगानीन। ये मास्को पार्टी संगठन की उपज हैं।

पोलिटब्युरो तथा दल के उच्च नेताओं में एक मात्र यहूदी के रूप में एलकागानोविच चले जा रहे हैं। दल में उनकी ख्याति इस रूप में है कि जब कोई बड़ी मुसीबत या अव्यवस्था आयी है, जैसे खेती, लोहा तथा कोयला आदि के कारखानों अथवा रेलों में गड़बड़ी तो वे काम आते हैं।

उन्होंने जिस प्रकार युद्ध काल में सोवियट संघ के कर्मपीड़ित तथा अयथेष्ट यातायात पद्धति की व्यवस्था की, उससे विजय प्राप्त करने में बड़ी सहायता प्राप्त हुई। विभिन्न समयों में कागानोविच के दो छोटे भाई महत्वपूर्ण ओहदों पर रह चुके हैं। खबरों के अनुसार उनकी बहन स्तालिन की वर्तमान (तीसरी) पत्नी है।

आर्मेनिया के आनास्तास मिकोयान भीतरी गुट के स्थायी सदस्य हैं। अवश्य वे अब वैदेशिक व्यापार के मंत्री नहीं हैं। युद्ध के पहले के युग में वे एक बहुत निपुण और साहसी व्यापार विशेषज्ञ थे, बाद को खाद्य उद्योग के मंत्री के रूप में मिकोयान ने अमेरिकन तरीकों को जोशीले तरीके अपना कर काम किया। अमेरिका से यात्रा करके लौटने के बाद उन्होंने रूस में आइसक्रीम तथा मांस पैक करने के कारखाने उन यंत्रों से खोले जिन्हें वे अमेरिका से खरीद लाये थे, और एक बाकायदा संग्राम सा चलाया कि रूसियों के साथ में टमाटो का रस और कुत्ते का गोश्त जुड़ जाय। उन्होंने एक रेस्टोरेन्ट यहां तक कि एक कहवाखाना खोला, जो अमेरिका के अनुकरण पर चलाये गये।

आज यदि वे इस प्रकार के कार्यों का सूत्रपात करते, तो उन्हें 'सार्वदेशिकवादी' तथा ह्रासशील पूँजीवादी पश्चिम का गुलाम

अनुकरणकारी बता कर निन्दा की जाती। पर उन दिनों स्वयं स्टालिन इस मत के प्रतिपादक थे कि उनके देशवासियों का अमेरिका से सीखना चाहिये।

निकिटा खुरुश्चेव युक्रेन में स्टालिन के वफादार (भले ही अप्रतिभा-शाली) सूबेदार के रूप में उस समय से हैं जब से युक्रेन के भूतपूर्व दलपति गरम 'शुद्धि' की प्रक्रिया के द्वारा समाप्त कर दिये गये। निको-लाई श्वेरनीक मजदूर सभा की नौकरशाही से, जहाँ कि वे वर्षों तक अखिल संघ मज़दूर सभा के प्रधान थे, राजनीति में आये। कालिनिन की जगह पर वे सर्वोच्च सोवियट के प्रधानमंडल के प्रधान बन कर राष्ट्र के ही प्रधान बन गये। पर जैसे कालिनिन के जमाने में छोटी छोटी निजी शिकायतों का फैसला प्रधान के दफतर में होता था, अब उस प्रकार की कोई बात नहीं है। उनका प्रधान कर्तव्य अब इतना ही है कि सरकार की ओर से तमगे तस्मे बाँटें और विदेश से आये हुये शिष्ट-मण्डलों से मिलें।

पोलिटब्युरो में सब से रंगहीन व्यक्ति यदि कोई है तो वह आन्द्रेई आन्द्रेयेविच आन्द्रेयेव हैं (जिन्हें तीन ए० भी कहा जाता है)। वे बहुत से ओहदों पर रह चुके हैं, जिनमें वे कोई खास नहीं चमके। वे प्रकाशन के लिये न तो कुछ लिखते और न बोलते हैं। किसी घटना के सम्बन्ध में उनका कोई उल्लेख नहीं आता, पर मौके पर उनका फोटो ठीक जगह पर आ जाता है जिससे कि उनके सम्बन्ध में जो अफवाहें उड़ती होती हैं कि अब वे स्टालिन के कृपापात्र नहीं रहे, नष्ट हो जाती हैं।

अलेक्जेन्डर कोसीज़िन वोजनेसेनस्की की ही तरह ज़्डानोव के लेनिनग्राड संगठन की उपज है। ज़्डानोव भी उन्हें वहाँ से दल के उच्च सोपान में काम करने के लिये अपने पृष्ठपोषण में ले आये थे। इस

पृष्ठभूमि के कारण मालेन्कोव की बढ़ती से उनका भविष्य अनिश्चित ही ज्ञात होता है ।

अन्य इन से कम उम्र नौजवान नेताओं के नाम तथा चेहरों को पोलिटब्युरो के सदस्यों के साथ करीब करीब बराबर महत्व दिया जाता है । दल के उच्चतर सोपान के सदस्य हैं ।

अभी हाल तक ऐसे लोगों में मिखैलसुस्लोव का नाम सब से प्रमुख है । ये ज्डानोव के जमाने में दल के आन्दोलन तथा प्रचार विभाग के प्रधान थे । जर्मन सैनिक राज्य के जमाने में उत्तरी काकेशस में इन्होंने फरार रहकर बहुत जोर शोर से काम किया । ये दो बार ज्डानोव के साथ कोमिनफार्म की सभाओं में गये । इस समय इनकी ख्याति सम्पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं है ।

इस गुट के अन्यतम सदस्य पी. के. पोनो मारेन्को हैं । मास्को में आने के पहले ये ब्येलोरशिया के दल के मंत्री थे । जर्मनों के विरुद्ध गुप्त रूप से संग्राम करने वाले नेता के रूप में इन्होंने अच्छा नाम कमाया ।

इस गुट के अन्य नेता जार्जी पोपोव हैं, जो मास्को के दल के संगठन के वर्तमान नेता हैं, और ये मालेन्कोव गुट के एक तगड़े आदमी हैं जो अपने पृष्ठपोषक के साथ बराबर चलते रहते हैं ।

अन्तिम वर्ग में जो लोग आते हैं वे या तो केन्द्रीय कमेटी के मंत्री हैं या थे, और इन्हीं में से पोलिटब्युरो में जो जगहें खाली होती हैं, बारह से लेकर चौदह तक तार्किक रूप से भरी जाती हैं । ऐसा सम्भव है कि सार्वजनिक रूप से सूचना बिना दिये ही नये सदस्य चुन लिये गये हों ।

दूसरे साधन न होने के कारण रूसी जनता इस बात की अभ्यस्त

हो गई है कि कौन व्यक्ति पोलिटब्यूरो का सदस्य है और कौन नहीं। इस बात को वह यूँ जान जाती है कि जो सदस्य नहीं रहता, उसका नाम तथा फोटो अखबारों में आना बन्द हो जाता है। जैसा कि वोजनेसेन्स्की के मामले में हुआ, तथा कौन नया सदस्य बना यह उनके नाम तथा फोटो बार बार आने से जान जाती है जैसा कि पोनोमारेन्को के मामले में हुआ।

पर दल की अगली कांग्रेस तक साधारण जनता को स्वीकृत रूप से यह बताने का नियम नहीं है कि कौन नये उच्च नेता हैं।

रबरस्टैम्प संसद

रबर स्टैम्प दल

एक बार एक मित्र ने मुझ से कहा "हम रूसी इस बात का दावा कर सकते हैं कि एक मामले में हम सब से आगे हैं, और जिसमें हमें कोई चुनौती नहीं दे सकता। हमने दुनिया का सब से कम दिलचस्प पार्लियामेंट का आविष्कार किया है।"

मेरे यह मित्र समाजवादी संघ के सर्वोच्च सोवियट के सम्बन्ध में (जिसे सोवियट संविधान में समाजवादी संघ की राष्ट्रीय शक्ति का सर्वोच्च वाहन बताया गया है) एक औसत नागरिक के मत को ही व्यक्त कर रहे थे।

क्रेमलिन के देवतागण अपनी पूर्णप्रभुत्वसम्पन्न संसद के सम्बन्ध में क्या सोचते हैं, यह इसी बात से खुल जाती है कि यही एक मात्र सरकारी संस्था है जिसकी कार्रवाई विदेशी सम्वाददाताओं तथा राजनायकों के लिये खुली हुई है। सोवियट संघ में यह एक निश्चित प्रमाण है कि इसमें कोई भी महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विषय की आलोचना नहीं होती।

प्रति वर्ष दो सप्ताहों के लिये, साधारणतया फरवरी या मार्च में कोई एक हज़ार आठ सौ सर्वोच्च सोवियट के सदस्य देश के कोने कोने से मास्को में एकत्र होते हैं। इनका तमाशा खूब रंगीन इस कारण होता है कि मध्य एशिया तथा काकेशशवासियों के अजीबोगरीब कपड़ों के साथ

साथ सारे सीने में चमकीले तमगे लगाये हुये मार्शल और जेनरल होते हैं।

क्रेमलिन के विराट हाल में जहाँ रोमानोव वंश के अन्तिम सम्राटों का अभिषेक हुआ था, ये सदस्य अन्तहीन व्याख्यान सुनते रहते हैं। और जब आवश्यकता होती है तो हाथ बढ़ाकर वोट देते हैं। संसद की प्रक्रिया का बहुत बारीकी से पालन करते हुये संसद के प्रधान बार बार लोगों से जब हाथ उठाने को कहते हैं, तो हाथों का एक जंगल सा उठ जाता है। इसके बाद वे पूछते हैं कि कौन से लोग ऐसे हैं जो इसके विरुद्ध हैं। इस पर एक भी हाथ नहीं उठता, और प्रधान की ओर से यह घोषणा होती है—"नेट" याने कोई नहीं। अंत में वे पूछते हैं कि कोई ऐसा तो नहीं है जो वोट न देता हो। इस पर फिर कोई हाथ नहीं उठता, और वही घोषणा फिर से की जाती है। तब प्रधान इस बात की घोषणा करते हैं कि जिस कानून पर विचार हो रहा था, वह सर्वसम्मति से पास हो गया, और यह कर वे अगले कार्य को संसद के सामने रखते हैं।

सर्वोच्च सोवियट के प्रत्येक अधिवेशन का प्रधान कार्य सालाना बजट को पास करना होता है। कैसे यह बजट विचारार्थ इस संस्था के सामने आता या सरकारी अन्य काम कैसे होते हैं, यह क्रेमलिन का रहस्य है। सोवियट संविधान जिसमें सर्वोच्च सोवियट के विषय में बतलाया गया है, इस विषय में बिल्कुल कुछ नहीं बताता कि बजट बनाने आदि की कार्रवाई कैसी होती है।

फिर भी एक सप्ताह के अधिकांश भाग के लिए तो प्रतिनिधिगण अधिवेशनों के कार्यक्रम पर अपना ठप्पा लगा देते हैं, फिर वे वित्त मंत्री द्वारा उपस्थित किये हुये बजट के मसविदे को सुनते हैं, फिर इस पर

विभिन्न प्रतिनिधियों की ओर से आये हुये मामूली संशोधन तथा परिवर्तन पेश होते हैं, इसके बाद वित्त मंत्री अन्तिम मसविदे को उपस्थित करते हैं जो प्रथम मसविदे से सारगत रूप से भिन्न नहीं होता, हाँ उसमें कुछ छोटे मोटे परिवर्तन तथा सिफ़ारिशें ग्रहण की जाती हैं।

मसविदे को दोनों भवनों के सम्मिलित अधिवेशन में पेश किया जाता है। ऐसा करते समय प्रधान मंत्री जोसेफ़ स्टालिन तथा पोलिट-ब्युरो के अन्य सदस्य दर्शन देते हैं। वे विराट हाल के एक किनारे पर ऊँचे किये हुये मंच पर प्रधान के पीछे लेनिन की श्वेत प्रस्तर निर्मित अत्युच्च मूर्ति की छाया में बैठते हैं।

प्रथम घंटे के बाद ही स्टालिन अक्सर धीरे से खिसक जाते हैं, और दूसरे भी ऐसा ही करते हैं। इसके बाद देश का विधि निर्माणकारी सब से उच्च भवन दल के नेताओं के बिना ही अपने कार्य को जारी रखता है, हाँ वह श्वेत प्रस्तर निर्मित लेनिन हमेशा वहीं पर बना रहता है।

इन तर्क वितर्कों का वास्तविक कार्यों से क्या सम्बन्ध है यह इसी बात से ज्ञात होता है कि १९४६ के बजट पर अक्तूबर तक न तो विचार ही हुआ, न उसे स्वीकृत ही किया गया। इस प्रकार वित्तीय वर्ष की समाप्ति पर बजट पास किया गया।

और जो अरबों रूबल बजट में विचारार्थ पेश किये जाते हैं, उनके हिसाब से देश की आर्थिक अवस्था का कुछ पता नहीं लग सकता क्योंकि रूबल का मूल्य बिल्कुल संदिग्ध है।

प्राथमिक संयुक्त बैठक के बाद सर्वोच्च सोवियट के दोनों भवन अलग अलग अधिवेशन करते हैं। वित्त मंत्री पहले एक भवन में अपना अन्तिम मसविदा स्वीकृति के लिये पेश करते हैं और फिर दूसरे भवन

में, इसका अर्थ यह है कि वे तीन बार करीब करीब उसी व्याख्यान को देते हैं।

अपने अन्तिम अधिवेशन के अन्तिम आधे घंटे में बजट को पास कर प्रत्येक भवन में सर्वोच्च सोवियट के प्रधान मण्डल तथा मंत्रिमंडल की रिपोर्टों को सुनता है, जिसमें पूर्व अधिवेशन के बाद जो कुछ भी आज्ञायें, हुक्मनामें, नियुक्तियाँ तथा बर्खास्तगियाँ हुई होती हैं उनके बारे में बताया जाता है।

सरकारी कार्रवाइयों के पास सर्वोच्च सोवियट यहीं तक पहुँचता है, इसके आगे उसकी पहुँच नहीं होती। प्रत्येक मामला जल्दी जल्दी गोली चलाने की तरह तेजी से पास कर दिया जाता है।

सर्वोच्च सोवियट ने किसी भी मौके पर प्रधान मण्डल या मंत्रिमंडल की किसी भी बात को नामंजूर नहीं किया है।

सर्वोच्च सोवियट के इतिहास में केवल एक बार इसका एक स्वर में बात कहना क्षुण्ण हुआ, और इसे जल्द ही ठीक कर दिया गया। एक बार जब कि प्रारम्भिक अधिवेशन में विषयसूची पर विचार हो रहा-था, तो एक स्त्री प्रतिनिधि ने विरोध में हाथ उठा दिया। फिर घबड़ा-हटग्रसित भवन के सामने उसने बताया कि उसकी आपत्ति इस बात पर थी कि रविवार को अधिवेशन हो रहा है, और उसे विश्वास है कि मास्को के बाहर के सभी प्रतिनिधि इस आपत्ति से सहमत होंगे क्योंकि नहीं तो वे 'हंस झील' नामक नृत्यमय खेल देखने से रह जायेंगे। इस पर ऐसी व्यवस्था की गयी कि महिला को इसकी सुविधा हो जाय, फिर लोग एकमत हो गये, और विषयसूची जल्दी से पास हो गयी। पर वहाँ उपस्थित सब लोगों ने यह अनुभव किया कि लोकतंत्र की ओर एक सही कदम उठाया गया है।

तब से जितनी भी व्यवस्था हुई है, उसमें निश्चित रूप से इस बात का ख्याल रक्खा जाता है कि प्रतिनिधियों को यथेष्ट अवकाश रहे, और वे घूम फिर कर सोवियट राजधानी की सुविधाओं का फायदा उठा सकें। यह कोई कठिन बात इस कारण नहीं थी क्योंकि दोनों भवन एक ही हाल को बारी बारी से काम में लाते हैं। जिस समय उनके भवन का अधिवेशन चालू नहीं होता, उस समय प्रतिनिधिगण शहर में सैर सपाटा कर सकते हैं। नृत्य-नाट्य तथा नाट्यशालाओं में अच्छी से अच्छी सीटें उनके लिये रिजर्व रखी जाती हैं। राशन की पद्धति उठा देने के पहले उन्हें अच्छी से अच्छी दुकानों के नाम पर कूपन दिये जाते थे, जो केवल उच्च सरकारी तथा गुप्त पुलिस कर्मचारियों को ही दिये जाते हैं। उन्हें खर्च करने के लिये काफी मोटा भत्ता दिया जाता है, इसके अतिरिक्त मास्को के तीन सर्वश्रेष्ठ होटलों में उन्हें मुफ्त में टिकाया और खिलाया जाता है। उनका यातायात भी मुफ्त होता है।

क्रेमलिन इस बात को लोगों में फैलाने के लिये इतना उत्सुक है सर्वोच्च सोवियट के लोग सोवियट जनता की तरह जिनके वे प्रतिनिधि माने जाते हैं एक बहुत सुखी परिवार है कि यदि किसी प्रकार कभी किसी एक प्रतिनिधि ने कोई ऐसी बात कह दी, जिससे मतभेद ज्ञात होता है, तो उसे रिपोर्ट में से निकाल दिया जाता है। सर्वोच्च सोवियट सब तरह से वफादारी के साथ एक दल तक सीमित चुनाव पद्धति का जिससे वे चुनकर आये प्रतिनिधित्व करता है।

जहाँ तक कि केवल रूसी समाजवादी प्रजातन्त्र तथा अन्य प्रजातन्त्र का सम्बन्ध है, वे केवल इतना ही करते हैं कि अखिल संघ बजट में उस विशेष प्रजातन्त्र को जो बजट दिया गया है, वे उसी को पास करते हैं। इस कारण अखिल समाजवादी संघ के सर्वोच्च सोवियट के मुका-

बले में उनकी कार्यवाही कम दिलचस्प तथा कम घटनापूर्ण होती है।

यदि देखा जाय तो सर्वोच्च सोवियट को किसी प्रकार के वास्तविक तर्क वितर्क से बचाना बहुत अजीब मालूम होगा। यदि थोड़ा बहुत सजीव तर्क वितर्क हो जाय, कुछ मतभेद रहे, मामूली बातों पर विचारों का संघर्ष हो, तो उससे कम से कम इतना तो हो कि जो तमाशा हो रहा है, उसमें वास्तविकता का पुट आ जाय।

अब जैसी परिस्थिति है, उसमें सर्वोच्च सोवियट केवल दूसरे देशों के सोवियटभक्तों को यह विश्वास दिला सकता है कि सोवियट संघ एक लोकतन्त्र है पर देश के बुद्धिमान लोगों पर इसका कोई असर नहीं पड़ता। मेरे मित्र ने जिस भ्रान्तिभंग की बात कही, वह सुदूर विस्तृत है। अन्दरूनी प्रचार कार्य की दृष्टि से सर्वोच्च सोवियट का मूल्य धन होने के बजाय ऋण है, क्योंकि इसमें संसद के तरीकों का जिस प्रकार अन्ध अनुकरण कर उनका तमाशा बनाया जाता है; वह बराबर उन्हें इस बात की याद दिलाता रहता है कि वे कितने पराधीन हैं।

इसका शायद यह जवाब दिया जाय कि यहाँ हम सोवियट की एक त्रुटि की ओर ही दृष्टिपात कर रहे हैं। जिस समय वर्तमान संसद्-मूलक पद्धति की स्थापना करते हुये यह संविधान तैयार हो रहा था, सम्भव है कि उस समय स्टालिन तथा उनके सहकारी गरम लोकतांत्रिक तरीकों को धीरे धीरे प्रवर्त्तित करने की बात ईमानदारी से सोचते हों। पर पुलिस राष्ट्र अपने ही भीतर तर्क से विकसित होता है, यह एक ऐसा तर्क है जिसे स्वयं स्टालिन भी बदल नहीं सकते। दूसरे शब्दों में वे भी उस दैत्य का नियंत्रण नहीं कर सकते जिसके जन्म में उन्होंने सहायता दी। पुलिस राष्ट्र जहाँ कहीं स्वतन्त्रता और लोकतन्त्र का पुट पाता है, वहाँ वह घृणा तथा आतंक से सिहर उठता है।

१९३९ के बाद सोवियट साम्यवादी दल की कोई भी अखिल संघीय कांग्रेस नहीं हुई, यद्यपि दल के नियमानुसार कम से कम तीन साल में एक बार अधिवेशन होना जरूरी है।

इस प्रकार कानूनी दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि वर्तमान नेताओं का आदेश प्राप्त शासन काल आठ साल पहले ही समाप्त हो गया, और सोवियट नेतागण तब से गैरकानूनी रूप से बने हुये हैं। पर आज तक दल के किसी सदस्य ने भी इस प्रकार कोई बात नहीं उठाई।

रूस में लोग इस प्रकार के कानूनी नुक्तों को महत्व न देना सीख गये हैं। मैंने एक बार एक परिचित रूसी को यह बताया कि सोवियट संविधान की धारा ४६ के अनुसार सर्वोच्च सोवियट के सालाना दो अधिवेशन होने चाहिए। पर व्यवहार में केवल सालाना एक अधिवेशन होता है, जो फौरन बजट को पास कर के ही समाप्त हो जाता है।

मेरे मित्र मेरी टीका को सुनकर सचमुच ही आश्चर्य में पड़ गये। वे बोले—"पर यह तो सोचिये यदि वह साल में दो बार मिले, तो खर्च कितना अधिक बैठे, और कष्ट भी कितना हो। फिर वे मिलकर ही क्या कर लेंगे?"

अखिल संघ दलीय कांग्रेस साम्यवादी दल की सबसे बड़ी संस्था है, उसमें यह कानूनी शक्ति है कि वह दल की नीति को निर्धारित करे, तथा दल के नेताओं को चुने या उन्हें निकाल दे। यह केन्द्रिय कमेटी को चुनती है, और केन्द्रीय कमेटी अपने सदस्यों में से ही पोलिटब्युरो तथा आर्गब्युरो, साथ ही साथ केन्द्रीय कमेटी के मंत्रियों को चुनती है। वैधानिक रूप से दल की कांग्रेस को यह अधिकार है कि वह उच्च नेताओं को बदल दे।

किसी भी दृष्टि से अब तो दल की कांग्रेस का अधिवेशन होना ही चाहिए। न केवल कानूनी दृष्टि से ही वर्तमान नेताओं का नेतृत्व समाप्त हो चुका है, बल्कि दल के निम्नकोटि के भी सारे नेता बदल चुके हैं।

१९३९ तक 'शुद्धियों' के फलस्वरूप प्राक युद्ध युग में जहाँ दल की सदस्य संख्या ३० लाख थी, अब वह २० लाख में पहुँची है। आज सेनाओं से जन पैमाने पर युद्धकालीन आवश्यकता के लिये साहस रखने के उपाय के रूप में दल में लोग भर्ती किये गये हैं, और इस कारण सदस्यों की संख्या ५० लाख तक पहुँच चुकी है।

नये सदस्यों को तो कभी इस बात का मौका ही नहीं मिला कि वे दल की उच्चतर संस्थाओं के लिये प्रतिनिधियों का निर्वाचन करें।

दल की कांग्रेस के लिये मुख्य तैयारियाँ गत शीत ऋतु में हुई थीं। इस अवसर पर स्थानीय दलों की कांग्रेसें सर्वत्र संघ के प्रजातन्त्रों, आत्मशासित इलाकों तथा अन्य भू-भागों में हुई थीं।

लोकतांत्रिक केन्द्रवाद के सिद्धान्त के अनुसार निम्नतर संस्था अपने से उच्चतर संस्था को चुनती है, और इस प्रकार सबसे निम्नतम संस्था साधारण सदस्यों के द्वारा बनाई जाकर पूरी संस्था एक पिरामिड के रूप में होती है। पर इस समय सोवियट में जो धींगाधांगी हो रही है, उसमें इसके बिल्कुल विपरीत आचरण हो रहा है। सारा अधिकार तो शिखर में पोलिटब्युरो के हाथों में है, और वह नीचे की ओर जाता है। दल के सब निम्नलोग केवल ऊपर से आये हुये आदेशों का पालन करते हैं।

इस पद्धति के अनुसार दल के यंत्र के अन्दर किसी में मौलिकता या स्वयं बढ़कर कुछ सोचने या करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन नहीं

दिया जाता। दल के सदस्य किस प्रकार जल्दी से हुक्म मानते हैं, इसी की योग्यता पर वे अच्छे या बुरे समझे जाते हैं। इसका परिणाम यह है कि न केवल नीति में आश्चर्यजनक एकता है, बल्कि विचार तथा मौखिक बातचीत में भी इकरसता है।

स्थानीय दल की कांग्रेसों को दल के मंत्रियों के द्वारा दी हुई रिपोर्टों से यह बात बिलकुल स्पष्ट हो जाती है। यद्यपि यह रिपोर्टें विभिन्न भाषाओं में तथा एक दूसरे से बहुत दूर के भू-भागों में पेश की गईं, फिर भी ऐसा मालूम होता था मानों वे सब एकही हाथ की लिखी गई हों।

१९४९ की २७ जनवरी को कीव नगर में निकिटा ख़ुश्चेव ने युक्रेन के साम्यवादी दल के मंत्री की हैसियत से (वे पोलिटब्युरो के भी सदस्य हैं) स्थानीय दल की कांग्रेस को रिपोर्ट देते हुये यों कहा ..... "मित्रो! युक्रेन के साम्यवादी दल की पन्द्रहवीं कांग्रेस के बाद ८½ साल गुज़र चुके हैं इस दौरान में विश्व-ऐतिहासिक महत्व की बहुत-सी घटनाएँ हुईं।"

ख़ुश्चेव ने युक्रेनीय भाषा में रिपोर्ट दी। उसी दिन सन्ध्या समय वहाँ से एक हज़ार मील की दूरी पर जार्जिया के साम्यवादी दल के मंत्री चार्कवियानी महोदय टिबलिसी नगर में स्थानीय दल की कांग्रेस में यों बोल रहे थे ...."मित्रो! जार्जिया के साम्यवादी दल की तेरहवीं कांग्रेस के बाद कोई ९ साल गुज़र गये हैं और इस बीच में अत्यन्त महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ घटित हुई हैं।"

इसी के साथ साथ बाकू में आजेर बैजान दल की कांग्रेस में उसके मंत्री बागिरोफ ने भाषण देते हुए कहा......"बन्धुओ! आजेर बैजान

साम्यवादी दल की सोलहवीं कांग्रेस के बाद करीब करीब नौ साल गुज़र चुके हैं। इस बीच में बहुत महत्वपूर्ण घटनायें हुई हैं।

कुछ दिनों के बाद दस फरवरी को किरगिज़ दल की कांग्रेस के मंत्री बोगोल्यूबोफ ने कहा ···"साथियो! किरगिजिया के साम्य-वादी दल की छठी कांग्रेस के बाद कोई नौ साल गुजर चुके हैं। इस युग में अत्यन्त महत्वपूर्ण विश्व ऐतिहासिक घटनाएँ घटित हुई हैं।"

इस प्रकार से अनन्त रूप से सर्वत्र वही बात कही गई। कुछ स्था-नीय समस्याओं के अतिरिक्त बाकी सब मामलों में प्रत्येक स्थानीय दल की कांग्रेस में वे ही बातें की गई। पश्चिम के विरुद्ध उसी प्रकार के तीव्र मन्तव्य सर्वत्र दिये गये। स्टालिन के लिये उसी प्रकार खुशामदाना शब्द प्रयोग में लाये गये, और इन पर उसी प्रकार की तालियों की गड़गड़ाहट हुई।

इस बात के प्रमाण हैं कि क्रेमलिन की यह इच्छा है कि जो बाकी उन्तीस करोड़ पचास लाख विविध ढंग के संघवासी हैं, वे भी इसी प्रकार की एक रूपता तथा एक मत प्राप्त करें।

प्रत्येक स्थानीय कांग्रेस में विशेष रूप से इस बात पर जोर दिया गया कि महान रूसी जाति तथा संघ की अन्य अरूसी जातियों के बीच मित्रता के दृढ़ बंधन पर जोर दिया जाय। ऐसा करने में रूसियों को सभ्यता के सार्वजनिक ध्वजवाहक के रूप में प्रदर्शित किया गया।

उजबेकिस्तान दल की कांग्रेस के मंत्री यूसूपोफ़ (जो स्वयं रूसी हैं) ने इस आशय का एक उद्धरण भी निकाला जिसमें १८५१ में फ्रीडरिख ऐंगेल्स ने यह कहा था कि प्राच्य देशों में रूस का भाग प्रग-तिशील है। इसी के साथ साथ यूसूपोफ़ ने बहुत जोरों के साथ चेतावनी दी कि उजबेक, और तुर्की भाषाओं में जो समताएँ हैं, उनसे

किसी प्रकार सांस्कृतिक या ऐतिहासिक निकटता सूचित नहीं होती। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के विचार मार्क्सवाद विरोधी हैं, और यह आंग्ल-अमरीकन साम्राज्यवाद का एक हथियार है।

आजेरबैजान दल के मंत्री वागिराफ ने सब आजेरबैजानियों को यह हिदायत दी कि वे रूसी भाषा सीखें जो कि उनके अनुसार बड़े भाई की भाषा थी, तथा कोटि कोटि बहुजातियुक्त सोवियट की भाषा थी। उन्होंने इस बात की पुष्टि के लिए उन्नीसवीं सदी के एक स्थानीय कवि की कविता को उद्धृत किया :—

मेरे बेटे तुम रूसी विज्ञान सीखो
और उस भाषा के पंडित बनो।
हमें उसकी जरूरत है जिसके बिना जगत अंधेरा है
इस शिक्षा के बिना ज्योति का मार्ग नहीं है

कजाकिस्तान दल के मंत्री ने अपने यहाँ की कांग्रेस को बताया कि वहाँ के इतिहास की सारी पाठ्य पुस्तकों को फिर से लिखा जा रहा है, क्योंकि अब तक के इतिहासकारों ने कजाक इतिहास को स्वतंत्रता के लिए एक दीर्घ संग्राम के रूप में चित्रित किया था, और वे कजाक तथा रूसियों के बीच के ऐतिहासिक तथा आर्थिक सम्बन्धों को दर्शाने में चूक गये।

इसका अर्थ यह है कि क्रेमलिन की यह इच्छा है कि कजाक तथा सोवियट परिवार के अन्य सदस्य बड़े भाई की भाषा रूसी सीखने को तरजीह दें, न कि रूसियों के साथ स्वतन्त्रता युद्ध के इतिहास को सीखें। स्टालिन ने बराबर इस बात पर जोर दिया है कि ज्ञान कर्म के लिये पथ प्रदर्शक है।

१९४८ की फरवरी में खास रूसी संघ के सर्वोच्च सोवियट के

चुनाव में मास्कोनगर के स्तालिन मोहल्ले के मतदाताओं ने चुनाव का एक सार्वकालिक रिकार्ड प्रस्तुत किया। सरकारी तौर पर यह दिखलाया गया कि निर्वाचकों में से सौ फीसदी चुनाव में भाग लिया, और उनमें से प्रत्येक ने साथी स्तालिन के लिये वोट दिया, जो हमेशा यहीं से खड़े होते हैं।

मास्को के मोलोटोव मुहल्ले में जहाँ बहुत सुन्दर संयोग से वियाचीसलाव एम मोलोटोव खड़े थे, वोटरों ने इसी प्रकार जोरदार तरीके से वोट दिया। पोलिटब्युरो के अन्य सदस्यों को भी इसी प्रकार अपने अपने स्थान से किसी को ९९ फीसदी, तो किसी को ९९ ८. फीसदी वोट मिले, याने जिसका जितना महत्व था उसके अनुसार उसे दशमलव के अंक प्राप्त हुए।

लोकतन्त्र के सार को तो नहीं, पर उसके ऊपरी ढांचे के प्रति सम्मान दर्शाने में सोवियट रूस शायद दुनिया में सबसे अधिक निर्वाचनों का देश है। कोई भी जाड़ा ऐसा नहीं जाता, जब कि असंख्य निर्वाचन मूलक सरकारी संस्थाओं में किसी न किसी का चुनाव होता रहता है। कभी सर्वोच्च सोवियट का हो रहा है, तो कभी भूभागीय सोवियट, तो कभी जिला या नगर सोवियट, इस के अलावा जनता के न्यायालयों के न्यायाधीशों तथा जूरियों के चुनाव होते रहते हैं।

चाहे कोई भी चुनाव हो रहा हो, एक ही सूची याने दल की सूची होती है, जिसे सोवियट पत्रों में दल तथा दल के बाहर के बाल्शेविकों के गुट की सूची कहा जाता है। रूसी भाषा में चुनाव और चयन के लिए एक ही शब्द आता है, जिस का अर्थ यह होता है कि लोगों के सामने कोई दूसरा चयन नहीं होता।

सूची के लिये वोट देने के लिये सिर्फ इतना ही करना पड़ता

है कि बैलट या शलाका पत्र को मोड़कर बक्स में डाल दिया जाय।

सूची के विरुद्ध वोट देने के लिये छपे हुये फार्म के नाम या नामों पर चिन्ह बनाने पड़ते हैं। ऐसा करने के लिये वोटर को वोट देने के स्थान में मौजूद परदे से घिरे हुये स्थान में जाना पड़ता है।

इस प्रकार यह समझना आसान है कि क्यों प्रत्येक व्यक्ति परदों से घिरे हुये स्थानों में न जाकर शलाका पत्र को मोड़कर निर्वाचन कर्मचारियों के सामने वोट देने के तरीके को पसन्द करता है।

एक बार जब कि कुछ अमरीकन संवाददाता एक चुनाव का निरीक्षण कर रहे थे, तो एक बूढ़े नागरिक ने हमको कुछ हँसते हुये पूछा...दुनिया में और कहाँ इस प्रकार के चुनाव होते हैं?"

सोवियट चुनाव में वोट देना तो एक दीर्घ तथा जटिल प्रक्रिया का अन्तिम सोपान है। यद्यपि कोई विरोध में खड़ा नहीं होता और सारा मैदान साम्यवादी दल के हाथों में होता है, फिर भी बड़े जोर शोर से चुनाव प्रचार होता है, और इसमें समाचार पत्र तथा रेडियो पूरा भाग लेते हैं।

पहिले तो नामज़दगी की सभायें बुलाई जाती हैं। वे सभायें मज़दूर सभा तथा स्थानीय दल के तत्वावधान में होती हैं, जहाँ उम्मीदवारों के नाम प्रस्तावित तथा अनुमोदित होते हैं। और चाहे जितनी भी अलग सभायें हों, दल का यंत्र इस प्रकार खूबी से काम करता है कि उम्मीदवारों के नामों में कोई संघर्ष या असामंजस्य नहीं होता।

इसके बाद चुनाव सभाओं की रेल-पेल मच जाती है, जहाँ सैकड़ों वक्ता सोवियट राष्ट्र, साम्यवादी दल तथा सोवियट निर्वाचन पद्धति का गुणगान करते हैं, और इसी के साथ साथ बाहरी दुनिया पर गोलाबारी करते हैं।

जन पैमाने पर सभाओं के अतिरिक्त कारखानों तथा मोहल्ले में भी सभायें होती हैं। इसके अतिरिक्त प्रत्येक नगर में कुछ आजिटपुंक्ट या आन्दोलन बिन्दु होते हैं, जहाँ प्रत्येक वोटर जा कर के व्यक्तिगत रूप से उन्हीं बातों को दल के प्रचारकों से सुन कर उस के साथ तर्क कर सकता है। जो लोग घर बैठे हैं, उन के पास प्रचारक कम से कम एक बार और यों तो कई बार पहुँचते हैं। इस के लिये आन्दोलनकारी ब्रिगेड घर घर पहुँचते हैं।

इस प्रकार से चुनाव के लिये सब तरह की तैयारियाँ होने के कारण अधिकारियों को भी इस बात का मौका मिल जाता है कि वे गैर कानूनी रूप से बसे हुये लोगों को पकड़ें।

गृह कर्ता के रूप में हम लोग भी सालाना चुनाव के नाम पर आये हुये आन्दोलनकारियों से बचते नहीं थे।

आन्दोलनकारी आकर दरवाजे की घंटी को बजाकर पूछता था कि यहीं पर नागरिका फिटरर रहती है या नहीं। थोड़ी देर में हम समझ पाते थे कि क्रीमिया से आई हुई हमारी स्त्री रसोइया ऐंडेलिना से उन का मतलब है, क्योंकि हमारे घर में एक वही वोटर थी।

हम आन्दोलनकारी को रसोईघर में भेज देते थे, जहाँ कि ऐंडेलिना को कोई पन्द्रह मिनट तक यह समझाया जाता था कि सोवियट नागरिक होने के क्या फायदे हैं, स्टालिन संविधान के क्या गुण हैं, और वह किस प्रकार चुनाव में भाग ले सकती है।

कई बार ऐसा भी हुआ कि इस इलाके के लिये आन्दोलनकारी नया आदमी होने के कारण ऐंडेलिना के बाद हम को पकड़ता था, क्योंकि उसे मालूम नहीं होता था कि हम सोवियट नागरिक नहीं हैं, और इस कारण चुनाव में भाग नहीं ले सकते। जब हम उसे यह

समझा देते, तो वह स्वयं आन्दोलित हो जाता, गिड़गिड़ाकर माफी माँगता, और भाग निकलता।

चुनाव के सबेरे मुहल्ला कमिटी का एक सदस्य इस बात को निश्चित करने के लिये आया कि ऐडेलिना की सरकार उसके अस्तित्व को स्मरण रखती है। यह तब तक होता रहा जब तक मुझे एक दिन वैदेशिक मंत्रालय से यह टेलीफोन नहीं मिला।

दूसरी तरफ से आवाज़ आई..."क्या आप के यहाँ नागरिका फिटरेर काम करती हैं?"

मैंने कहा..."जी हाँ, वह हमारी रसोइया है।"

उधर से आवाज आई..."मुझे दुःख है आप उसे फौरन निकाल दें। उसे विदेशियों के यहाँ काम करने की अनुमति नहीं है।"

इस हुक्मनामे को रद्द कराने की चेष्टा व्यर्थ हुई। जर्मन जाति का रक्त होने के कारण ऐडेलिना एम. वी. डी. की सूची में अविश्वसनीय करके दिखलाई गई थी, यद्यपि वह रूस में पुश्तों से रहती आई थी।

उस के अन्य रिश्तेदार एक बहन तथा बहनोई बहुत पहिले ही कजाकिस्तान भेजे जा चुके थे। ऐडेलिना को अंत तक इस कारण छोड़ा गया था कि वह स्पासो भवन में काम करती थी। बाद को वह हमारे पास काम करने लगी थी, तब एम. वी. डी. को उसका पता लगा। सब से कठिन काम ऐडेलिना को यह खबर देना था।

वह फफक फफक कर रोती हुई बोली..."मैं कहाँ जाऊँगी, मैं क्या करूँगी?" यह प्रश्न वह किसी खास व्यक्ति से नहीं कर रही थी।

हम ने उसे इस बात का वचन दिया कि जब तक उसे और काम न मिले वह हमारे यहाँ रह सकती है, पर वह अगले ही दिन चले जाने पर जिद करने लगी। उसका कोई मित्र था जो उसे सामयिक

रूप से आश्रय दे सकता था। वहाँ से उसने कहा...किसी रूसी परिवार में नौकरी की चेष्टा करेगी।

कई महीनों बाद हमसे उससे भेंट हुई, तो अब भी वह बेकार ही थी। जब भी वह काम के लिए दरख्वास्त देती थी, तो सब ठीक चलता था, यहाँ तक कि काम भी मिल जाता था, पर ज्योंही यह पता लगता कि वह विदेशी के यहाँ नौकरी करती थी, त्योंही वह निकाल दी जाती थी। अब वह अपने रिश्तेदारों में जाने की बात सोच रही थी। हम ने उसे फिर कभी नहीं देखा।

पर मैं कभी कभी यह सोचा करता हूँ कि ऐंजेलिना अब कहाँ है, और यह भी सोचता हूँ कि अब भी चुनाव के समय उस के कानों में सोवियट लोकतन्त्र के गुण गा कर वोट देने के लिये कहा जाता है कि नहीं।

सोवियट शिष्ट वर्ग

मास्को की बहुत ही चहलपहल वाली सड़क अर्बत मार्ग पर एकाएक खुप्पी छा गयी थी। फुटपाथ की बनी हुई सड़क पर से एकाएक चलनेवाले लोग हटा दिये गये थे, और दोनों तरफ दस दस मीटर की दूरी पर सफेद वर्दी तथा सफेद दस्ताना धारी पुलिस वाले खड़े थे।

पुलिस बिल्कुल सावधान खड़ी थी, उनकी आँखें सड़क के दूर वाले छोर पर लगी हुई थीं। उनमें से एक तीर को तरह दौड़ पड़ा, और एक किसान बुढ़िया जो सड़क के बीच में आ पड़ी थी, उसे शरीर से उठा कर बगल के रास्ते में कर दिया। खिंचाव और भी बढ़कर पराकाष्ठा पर पहुँच गया।

बड़ी तेजी से एक चमकती हुई काली मोटर सड़क पर से निकल गई, और फिर अंगरक्षकों से भरी हुई एक खुली कार उसके पीछे पीछे दौड़ गई। एक मुहूर्त के अन्दर खिंचाव की परिस्थिति समाप्त हो गई, और अर्बत मार्ग पर हमेशा की तरह चहल पहल जारी हो गई।

आस पास खड़े होनेवालों ने आपस में अर्थपूर्ण दृष्टि विनिमय किया, और कहा—"नेता जी गये"।

पर वह काली सेडन कार इस प्रकार परदे से ढकी हुई थी, और इतनी तेजी से निकल गई कि किसी ने भी पीछे की सीट में बैठे हुए व्यक्तियों को पहिचान नहीं पाया। इस प्रकार जो नेतागण अपने दफ्तर

और शहर के बाहर के निवास स्थान के बीच दिन में दो बार निकलते रहते हैं, उनकी संख्या अनेक है।

मिनटों में वे बहुत सुन्दर उस्पेनस्कोयी कोजे मार्ग के बीच बहुत सुन्दर देहात के जरिये से निकल जाते हैं। यह मार्ग जिस स्थान से होकर जाता है, वह रूस की परियों की कहानी में वर्णित एक स्थान की तरह है। यहाँ पर किसानों के लकड़ियों के मकान सुन्दर हैं, उनकी छतें रंगीन हैं, तथा प्रत्येक मकान के सामने भव्य बाड़ों से घिरे हुये फलों के छोटे छोटे बगीचे हैं। इस मार्ग की दृश्यमान पृष्ठभूमि को बड़ी सावधानी से बनाया गया है, यहाँ तक कि इससे मिलनेवाली सारी सड़कें पीच की बनी हुई हैं। अर्बत मार्ग की तरह प्रत्येक मोड़ पर बहुत ढंग के कपड़े पहिने हुये पुलिसवाले तैनात रहते हैं।

नेताओं के लिये जो शहर के बाहर के बँगले बने हुये हैं, वे बहुत ही मोहक हैं। मास्कवा नदी के किनारे काले चिर हरियाली युक्त पत्तों के अन्दर इन बँगलों की श्वेत दीवारें तथा चमकती हुई मंजी हुई छतें दृष्टिगोचर होती हैं। यदि कोई व्यक्ति भूल कर भी इन जादूभरे नेता निवासों के पास आ जाय, तो उसकी मुसीबत आ जाती है। खुफिया पुलिस के अनुमतिपत्र के बगैर कोई यहाँ प्रवेश करे, तो उसे भारी कष्ट का सामना करना पड़ता है।

एक बार जब हम लोग परसाल कार पर सैर करने को निकले हुये थे, तो रास्ता भूलकर एक ऊंचे हरे गेटवाले मकान के सामने पहुँच गये। कोई भी आस पास दिखाई नहीं पड़ा। हम अपनी गलती समझ गये, और फौरन मुड़े। उसी समय खुफिया पुलिस की नीली टोपीवाला एक व्यक्ति झाड़ियों में से इशारे करता हुआ निकल आया। उसका चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था। ज्यों ही मैं ठहरा, त्योंही उसने प्रश्नों की

खड़ी लगा दी। हमारी बात सुनकर, विशेषकर हमारी कार से वह प्रभावित हुआ, फिर भी चेतावनी के तौर पर बोला—कभी इधर दिखाई न पड़ना।

मास्कवा नदी के किनारे राजधानी के पश्चिम का यह सारा इलाका निषिद्ध इलाके के रूप में सरकारी तौर पर कहा जाता है। खुफिया पुलिस की विशेष अनुमति पर ही कोई व्यक्ति यहाँ रह सकता है, विदेशी तो किसी भी हालत में वहाँ नहीं रह सकते।

गत वर्ष हम प्रधान सड़कों पर गाड़ी ले जा सकते थे, और राजनायकगण इसी इलाके में कई बार वन भोजन तथा स्नान के लिये आते थे। पर अब विदेशियों की सब कारें इस इलाके में नहीं आ सकतीं।

प्रधान मंत्री जोसेफ स्टालिन से लेकर बहुत से सोवियट छोटे बड़े नेताओं के निवासस्थान इस इलाके में हैं। सरकार तथा साम्यवादी दल के प्रधानों, मंत्रिमंडल के सदस्यों, सेनाओं के संचालकों के अतिरिक्त इस इलाके में कारखानों के परिचालक, विज्ञान-परिषद् के सदस्य, प्रमुख लेखक, कलाकार और अभिनेता रहते हैं।

ये विशेष रियायत प्राप्त लोग सोवियट समाज के सरपंच हैं। इसका यह अर्थ न समझा जाय कि रूसियों में पश्चिमी देशों के सामाजिक जीवन की कोई छाया भी है। निषिद्ध इलाके में कोई क्लब नहीं है। पड़ोसी एक दूसरे के यहाँ नहीं जाते, यहाँ तक कि जब तक काम के कारण वे एकत्र नहीं होते, तब तक वे एक दूसरे को जानते भी नहीं।

दो बातें हैं जिनके कारण सोवियट उच्च कर्मचारियों में भी सामाजिक जीवन स्थापित नहीं हो पाता। पहला कारण तो भय है। खुफिया पुलिस विभाग लोगों पर पहरा रखता है, और संदिग्ध व्यवहार करता है और वह लोगों के मिलने जुलने को अच्छी दृष्टि से नहीं देखता। इसके

अतिरिक्त व्यक्तिगत मित्रता खतरनाक सम्भावनायुक्त समझी जाती है। यदि व्यक्तिगत मित्र अधिक जान जायँ, तो सम्भव है कि वे मुखबिरी करें। और यदि आप का मित्र फँसता है, तो आप भी फँस सकते हैं। जो 'दल शुद्धियों' के मौके आए, उसमें बहुत से लोग निजी संबंधों के कारण बर्बाद हो गए। इसलिये एक बुद्धिमान रूसी अपनी स्त्री को पूरी बातें नहीं बताता।

दूसरी बात जिस के कारण उच्च सोवियट कर्मचारी के लिये सांस्कृतिक तथा सामाजिक जीवन में पड़ना सम्भव नहीं है, वह है काम। जिम्मेदार सोवियट उच्च कर्मचारी को जितना अधिक तथा दीर्घ समय तक काम करना पड़ता है, उतना शायद कोई काम नहीं करता। औसत सोवियट उच्च कर्मचारी का दिन प्रातःकाल ११ बजे जल्दी में किये हुये नाश्ते के तुरन्त बाद शुरू हो जाता है, और वह दफ्तर में भागता है। वहाँ वह मध्य रात्रि के समय तक बराबर काम करता है, हाँ चार तथा नौ बजे वह जल्दी में अपनी कैन्टीन में कुछ खा-पी लेता है।

अक्सर सरकारी दफ्तरों तथा मंत्रालयों में लोगों के मिलने का समय रात ११ बजे से सुबह एक बजे तक माना जाता है,और इस दौरान में कर्मचारी के लिये यह आवश्यक है कि वह अपनी मेज़ पर मिले, क्योंकि किसी भी समय क्रेमलिन से टेलीफोन आ सकता है, या कोई उच्चतर अफसर कोई बात पूछने आ सकता है। वह सुबह दो बजे घर पहुँचता है, जब कि उसकी वफादार पत्नी डिनर के लिये तैयार होती है, और फिर तो सोना ही रह जाता है।

जब एक हफ्ते तक इस प्रकार से कार्य करने के बाद रविवार आता है, तो शायद ही किसी पति में इतनी दम रह जाती हो कि वह उस दिन थोड़ी देर के लिये दुकानों में जाने के अतिरिक्त कुछ करे। ऐसे

सोवियट कर्मचारी की पत्नी का भी कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता। दो एक अपवादों के अतिरिक्त जैसे कि श्रीमती मोलोटोव जो दो बार अपनी ही योग्यता के कारण अपने कुमारी नाम से मंत्राणी बनी थीं, कोई सोवियट कर्मचारी की पत्नी कामकाजी नहीं होती। प्रबल प्रतापशाली पोलिटब्युरो के सदस्य के साथ विवाह होने पर भी जनता को शायद ही कभी इनकी तस्वीर देखने तथा छापे के हरफों में नाम पढ़ने का मौका मिलता हो। सोवियट पत्र कभी भी दूसरे देशों की तरह सामाजिक गप-शप को स्थान नहीं देते।

उच्च कर्मचारी की स्त्री केवल उन्हीं विरल मौकों पर नृत्य-नाट्य, नाट्य-शाला अथवा कान्सर्ट पर जाने का मौका पाती है, जब कि उसका पति उसके साथ जा सकता है। हाँ, समय समय पर वह बिना पति के सिनेमा जा सकती है।

साधारणतः सोवियट कर्मचारी का शहर के बाहर वाला बंगला, शहर के अन्दर फ्लैट, तथा उसकी कार, सब उसकी नौकरी के साथ हैं, इस लिये यदि वह बर्खास्त होता है, या उसकी तनज्जुली होती है, तो उसे बहुत बड़ा नुकसान उठाना पड़ता है। वह इन सुविधाओं के लिये जो पैसा देता है, वे नाम मात्र के होते हैं। भत्तों के साथ उसका वेतन मासिक आठ से दस हजार रूबल यानी करीब दो हजार डालर हो सकते हैं।

परिषद् के सदस्य जिनकी स्वयं एक श्रेणी है कुल मिलाकर मासिक पचीस हजार रूबल यानी करीब ६,२५० डालर पाते हैं। इस के अतिरिक्त उनकी नियमित आय के अलावा उन्हें नकद बोनस भी मिलती है। विशेष कर कारखाने के संचालकों को बोनस मिलती है।

उच्चतर सोवियट कर्मचारी तथा मैनेजर वर्ग का जो सोवियट सामाजिक पिरामिड के पास है, यही जीवन है।

आवश्यक रूप से वे दल के किनारों नियमानुसार एक ही सामाजिक वर्ग के समझे जाते हैं। एक नवीन क्रान्तिकारी समाज के प्रधान नागरिकों की दृष्टि से उनका व्यवहार बहुत ही अपरिवर्तनवादी तथा परम्परागत है। सच कहा जाय तो पश्चिमी "बुर्जवा" देशों के अपने भाइयों के मुकाबले में वे अधिक दमित तथा दबाये हुये हैं।

सोवियट समाज में जिनका सबसे अधिक आदर है, वह है प्रधान कलाकारों का वर्ग। कलाकार शब्द में रूस में साहित्यिक, गवैये, अभिनेता, सिनेमा के कलाकर, साथ ही चित्रकार आदि आते हैं। सफल लेखक, गवैये, चित्रकार और इनमें भी विशेष रूप से नाट्यकार तथा अभिनेताओं को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता तथा नियंत्रणों से इतनी हद तक मुक्ति मिली हुई है, जितनी कि अन्य किसी वर्ग को प्राप्त नहीं है। उच्च कर्मचारी तथा मैनेजर वर्ग के मुकाबिले में इन्हें अपनों से तथा दूसरों से (अब विदेशियों पर रोक है) सामाजिक रूप से मिलने की स्वतन्त्रता है।

यह इस कारण है कि उनका काम गुप्त ढंग का नहीं है, और उन्हें कोई राष्ट्रीय गुप्त बात मालूम नहीं होती। इसके अतिरिक्त यह समझा जाता है कि उनकी सृजनात्मक चेष्टाओं के लिये इस प्रकार सामाजिक संस्पर्श आवश्यक तथा अनिवार्य हैं।

देश के बौद्धिक तथा सांस्कृतिक जीवन पर साम्यवादी दल की विचारधारा का क्या प्रभाव पड़ता है यह अलग से दिखाया जायगा। आर्थिक तथा सामाजिक तुलना की तात्कालिक दृष्टि से इतना ही बता देना यथेष्ट है कि यद्यपि कलाओं पर प्रतिबन्ध तथा बाहरी प्रभाव हैं, तो

भी कलाकार को उच्च कर्मचारी से अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त है। यदि उसमें साम्यवादी दल में हवा किस ओर बह रही है, उसकी ठीक समझ हुई, तो फिर उसे भविष्य के लिये भय खाने की आवश्यकता नहीं है। और जो सोवियट लेखक या गीतकार ऐसी चीजों की रचना करता है, जिन्हें दल चाहता है, तब तो उसके उपार्जन की कोई सीमा नहीं है।

युद्धोत्तर लेखकों में सबसे धनी तथा सृजन शक्तिशील लेखक सिमनोव के कई नाटक एक साथ एक ही समय सैकड़ों नाट्यशालाओं में चलते रहते हैं। इनमें से प्रत्येक के लिये वह रायल्टी का हकदार है। हिसाब की सुगमता के लिये सरकार ने उन्हें निर्बाध बैंक हिसाब दे रक्खा है। इसका मतलब यह है कि वे जब जितना चाहें पैसा ले सकते हैं। इस प्रकार वे उन लोगों में प्रथम व्यक्ति हो गये हैं जिन पर साम्यवाद का यह सिद्धान्त लागू है—प्रत्येक से अपनी सामर्थ्य के अनुसार और प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार।

कहा जाता है कि इस नई व्यवस्था से सिमनोव की शैली बिगड़ गई है, क्योंकि अब वे पहिले के मुकाबिले में जब कि उनके नाम पर एक निर्दिष्ट रकम थी, बड़ी रकमें बाहर निकालने के सम्बन्ध में कुछ संयत हो गये हैं।

कलाकार को भी धन एकत्र करने के अच्छे मौके हैं। वह अपने लिये बंगले खरीद सकता है, या बना सकता है, तथा अपनी रुचि के अनुसार उसे सजा सकता है। इसमें फायदा है क्योंकि बाद को बुरे दिन आने पर यह काम दे सकता है। इस प्रकार हास्य रस का कलाकार जोश्चेन को जब १९४६ में कोप में पड़ गया, तो वह लेनिनग्राड के अपने मकान में जाकर रिटायर हो गया, और वहाँ मुर्गी पालने लगा।

इसी प्रकार से कलाकारों, लेखकों तथा कलाकारों के सहकारी संगठनों में अपने लिये एक शहरी फ्लैट प्राप्त कर सकता है। वह निजी कार भी प्राप्त कर सकता है।

सिमनोव के पास काडिलाक, एरेनबुर्ग के पास बुइक कार है, जो उन की सामाजिक मर्यादा के अनुसार है। यह तरजीह दल की नीति के अनुसार बुरी नहीं है क्योंकि स्टालिन इस कार के मुकाबिले में पैकार्ड में बैठते हैं।

प्रधान कलाकारों की ऊँची हैसियत से मुकाबिला करने पर कम सफल पर उच्चाकांक्षी साथियों की सतह बहुत नीची, याने उनमें आसमान जमीन का फर्क मालूम होता है। असफल कलाकार साधारण सोवियट बुद्धिजीवी याने अध्यापक, डाक्टर, वकील, यंत्रविशेषज्ञ, विभागों के अध्यक्ष, मध्यकर्मचारी तथा हुनर वाले मजदूरों में आ जाते हैं, जिनसे सोवियट नागरिक समाज का मध्यम वर्ग बनता है।

ये लोग एक से तीन हजार रूबल, याने २५० से ७५० डालर मासिक कमाते हैं, तिस पर बोनसें हैं। सोवियट मानदंडों से उन्हें अच्छा घर मिला होता है याने परिवार के लिये एक या दो कमरे मिले होते हैं, उन्हें दिन में तीन बार खाने को मिल जाता है, अच्छे कपड़े मिलते हैं, तथा महीने में तीन चार बार नाटक जाने के पैसे जुट जाते हैं। वे नियमित रूप से ८ घंटे काम करते हैं, और अवकाश का पूरा फायदा उठाते हैं।

ग्रीष्म ऋतु में यदि वे भाग्यशाली हुये तो जिस संस्था की ओर से वे नियुक्त हैं, उसकी तरफ से उन्हें कुछ दिनों के लिये एक बँगला भी मिल सकता है। नहीं तो वे मास्को के पास किसी गाँव में एक सुन्दर कुटिया किराये पर ले सकते हैं। मोटर द्वारा यातायात के

साधनों में कमी होने के कारण अधिकांश लोग गर्मियों में अपने परिवारों को देहात में छोड़ देते हैं, और शनिवार को रेल से उन के पास खाने की चीज़ें तथा मिट्टी का तेल लेकर जाते हैं।

इन लोगों के ठीक नीचे के सामाजिक सोपान में सफेद कालर वाले दफ्तर में काम करनेवाले तथा मजदूर आते हैं। राष्ट्रीय ऋण खाते में चन्दा, मजदूर सभा का चन्दा, बीमा के पैसे आदि के पैसे कटाने के बाद इस श्रेणी के लोगों को ५०० से १००० यानी १२५ से २५० डालर तक मासिक मिल जाता है। अधिकांश पति पत्नी दोनों काम करते हैं, यह इसलिये नहीं कि स्त्रियाँ समानता के अधिकार को कार्यान्वित करना चाहती हैं, बल्कि इसलिये कि एक के वेतन से काम नहीं चलता।

इस तरह के लोगों को खाने को यथेष्ट मिल जाता है, यद्यपि खाना कुछ इकरस तथा बेहिसाब होता है, जिसमें रोटी और आलू की अधिकता होती है, पर गोश्त और फल कम मिलता है। उपार्जन का अधिकांश हिस्सा खाने में जाता है, विशेषकर जब कि घर में बच्चे होते हैं, और रोज़ कमाओ रोज़ खाओ वाला हिसाब रहता है। कपड़े की समस्या बराबर बनी रहती है, और बाकी चीजों के लिये जिन्हें पश्चिमी देशों के लोग आवश्यक समझते हैं, पैसा बचता नहीं है।

इस श्रेणी के बहुत कम परिवार—और इसी श्रेणी में सोवियट की शहरी जनता का अधिकांश आ जाता है, ऐसे होंगे जिनके पास कुछ अच्छे प्याले तथा तश्तरियाँ भी हों। यदि कोई मित्र या रिश्तेदार खाने के लिये आ गया, तो पड़ोसी से माँग कर तश्तरी, प्याला, छुरी, काँटा, चम्मच लाये जाते हैं।

इस प्रकार घरेलू चीज़ों की कमी बहुत कुछ महायुद्ध के फलस्वरूप

है, जब कि लोग रोज़ इधर से उधर भेजे जाते थे, और चीजें इस दौरान में या तो खो गईं या नष्ट हो गईं। सिक्का सुधार के बाद के दो सालों में सफेद कालर वाले तथा मज़दूरों की अवस्था में उन्नति हुई है।

यद्यपि घरों के संबंध की परिस्थिति मज़दूरों के लिये खराब है, क्योंकि सारे परिवार को एक कमरे में रहना पड़ता है, फिर भी परिस्थिति सुधरेगी ऐसी आशा है। यहाँ यह बतला दिया जाय कि सोवियट कर्मचारी तथा मज़दूर घर का किराया, रोशनी, घर को गरम करने तथा इस प्रकार की सामूहिक सेवाओं के लिये पश्चिमी देशों के मज़दूरों के मुकाबिले में कम पैसे देते हैं।

सोवियट शहरी मध्यम वर्ग तथा मज़दूर जिनका घनिष्ठ सम्बन्ध है, सामाजिक पिरामीड के आधार ही नहीं, राजनैतिक ढाँचे के प्रधान अवलम्बन हैं। उन में से बहुतेरे यह समझते हैं कि सोवियट पद्धति के साथ उनका भाग्य बँधा है, और वे उसके प्रति वफादार हैं। इन्हीं वर्गों में से साम्यवादी दल अपने लिये रंगरूट भरती करता है।

सोवियट शहरी जनता की जो सब से निचली सतह है, उसमें तरह तरह के असंगठित लोग आते हैं, जिन में कुछ वे मज़दूर भी हैं जो हुनरमंद नहीं हैं, और इस में स्त्रियों की संख्या अधिक है। ग्रीष्म ऋतु में ये लोग निर्माण के कार्य में, सड़क बनाने में तथा खाई खोदने में काम करते हैं। जाड़ों में ये बर्फ साफ करते हैं। इन में से अधिकांश सीधे देहात से आये हुए होते हैं। यथा समय इन्हें अच्छा और नियमित कार्य मिलता है।

इन के अलावा सट्टेबाज़, अपराधी तथा ऐसे लोग हैं, जिन की रोटी का कोई उचित जरिया नहीं है। फिर भी तुलनात्मक रूप से पश्चिम के मुकाबिले में यद्यपि इस समय आंकड़े प्राप्त नहीं हैं, सोवियट संघ में संगठित अपराध बहुत कम मालूम होता है।

किसानों की दुर्दशा

जब से चाची डाशा का पति कभी न लौटने के लिए लड़ाई में चला गया, तब से उसका एक मात्र आर्थिक, अवलम्बन उसकी गाय थी। प्रतिदिन सवेरे चार बजे वह इस धैर्यशील पशु को दुहती थी, दो मील चलकर अपने दो डब्बे दूध रेल स्टेशन ले जाती थी, और ५—४० की गाड़ी पकड़ती थी।

६—१५ को वह मास्को पहुँच कर अपने पाँच गाहकों को छकड़े पर दूध पहुँचाती थी। ७—१५ को वह फिर दो खाली डब्बे लेकर रेल पर चढ़ती थी, और फिर ठंडे चूल्हे पर के काले बड़े पात्र से लेकर उबले हुए आलू खाती थी, फिर जल्दी से अपने आठ वर्ष के लड़के ग्रीपा को कुछ हिदायतें देती थी, फिर नौ बजे सामूहिक फार्म में पहुँच कर खेत में काम करने के लिये हाजिरी देती थी।

एक बजे चाची डाशा घर लौटकर सामोवार चढ़ाकर इतनी आग पैदा करती थी, जिससे पात्र गरम हो जाय। फिर वह और ग्रीपा दिन के प्रधान भोजन के लिये बैठते थे। खाने के लिये उबले हुए आलू का भर्ता, काली राई की रोटी तथा रास्पबेरी की सूखी पत्ती की "चाय" होती थी।

तीन बजे तक वह फिर खेत पर लौट जाती थी। जहाँ वह छः बजे

तक काम करती थी। इसी समय चाबुक हाथ में लिये नन्हे से रखवाले के द्वारा हाँकी हुई गाँव की गायें जोर से रंभाती हुई गाँव में लौटती थीं।

बिना किसी के बताये हुये प्रत्येक गाय जिसमें चाची डाशा की गाय भी होती थी अपने अपने स्थान पर पहुँच जाती थी। गाय आकर प्रतीक्षा करती थी, और उस समय चाची डाशा अपने छोटे से आलू के खेत को देखती थी कि ग्रिपा ने क्या काम किया है। रविवार को वह स्वयं आलू के खेत में काम करती थी। संध्या हो जाने के बाद दूध दुह कर फिर वही ठंडा आलू का भर्ता तथा काली रोटी खाती थी। इसके बाद चाची डाशा हिसाब लगाने बैठ जाती थी। यद्यपि वह लिख पढ़ नहीं सकती थी, फिर भी जरूरत के कारण उसने अंक सीख लिये थे।

बड़े परिश्रम के साथ वह उस दिन जितने लीटर दूध हुए उससे उस दिन के दूध के रूबल मूल्य को गुणा करती थी। इस के बाद वह उस में से रेल का किराया, छकड़े का किराया, काली रोटी या अन्य किसी खरीदी हुई चीज का दाम जैसे दियासलाई, मोमबत्ती, नमक का दाम घटा देती थी। इस प्रकार जो संख्या आती थी, उसके साथ वह रूमाल में बँधे हुए पैसों को मिलाती थी, और फिर उन पैसों को अपने गद्दे में डाल देती थी।

दूध का बाज़ार भाव मौसम के अनुसार एक क्वार्ट, पर ३ से ७ रूबल याने ६० सेंट से १ डालर ४० सेंट तक घटने बढ़ने को देखते हुये, तथा चाची की गाय साल में ३०० क्वार्ट दूध देती है, इस बात को गिन कर चाची डाशा कोई ३५०० रूबल याने ७६० डालर कर लेती थी। इन में से वह ५०० रूबल याने १०० डालर काली रोटी तथा अन्य वस्तुओं पर (किलो ७५ कोपेक का) खर्च करती थी। किराये बढ़ जाने

के कारण, उसे उसमें ६०० रूबल या १२० डालर लगते थे। इस प्रकार कोई २,७०० रूबल या ५४० डालर बचते थे।

पर इस जगह आकर हिसाब कुछ जटिल हो जाता है। एक निजी गाय तथा निजी इस्तेमाल के लिए आधे हेक्टर जमीन की मालकिन होने के कारण राष्ट्र के प्रति उनके कुछ कर्त्तव्य थे। चाची को साल में ३० किलो मक्खन या १,५०० रूबल अर्थात् ३०० डालर देना पड़ता था। यद्यपि वह मुर्गी नहीं पालती थी फिर भी साल में ५०० अंडे देना लाजिमी था। इनके बदले वह ५०० रूबल दे सकती थी।

इन सारी भुगतानों को समाप्त करके उसके पास ६०० रूबल रह जाते थे, जिससे पयाल आदि खरीदना पड़ता था। प्रति वर्ष उसकी गाय जनवरी में एक बच्चा देती थी। इसी से गोश्त का खर्च चल जाता था। आलू के खेत से ६०० किलोग्राम आलू आते थे, जिसमें से ३०० किलो राष्ट्र को देकर भी उसके पास २०० किलो बचते थे, जिससे उसका और ओंघा का साल भर चलता था।

सामूहिक खेती मजदूरी की बाबत उसे बहुत सा भूसा और शलगमों का बड़ा-सा टोकरा मिलता था। सामूहिक फार्म के प्रधान ने, जिसके घर पर इस साल टिन की नई छत लगी थी सदस्यों की सभा में यह बताया था कि उस साल सामूहिक फार्म लोगों को अनाज या नकद क्यों नहीं दे सकता।

चाची डाशा इतना गणित नहीं समझती थी। कुछ भी हो भूसे के लिये उसने धन्यवाद दिया।

सब कुछ मिला कर साल अच्छा गया था। उस ने अपने घर के सामने का हिस्सा मेरे परिवार को ग्रीष्म ऋतु के लिये ८०० रूबल में किराए पर दिया था। अनुपार्जित आय पर ५० फी सदी टैक्स के

रूप में दे देने पर भी उसके पास जाड़ों के लिये जूते के पैसे बच जाते थे।

यह १९४८ की बात है। जब हम फिर चाची दाशा मिले, तो उसे अभी-अभी नये कानून के अनुसार नोटिश मिली थी कि उसे सरकार को पहले से अधिक देना है। उसने दुःख के साथ यह फैसला किया था कि गाय बेंच कर मुर्गियाँ खरीद लेगी। उसे अब भी अंडे, गोस्त तथा आलू सम्बन्धी भुगतान करनी होगी पर गाय बेंच देने के कारण मक्खन सम्बन्धी भुगतान से छुट्टी मिलती थी। बछड़ा न होने पर भी गोस्त सम्बन्धी भुगतान करनी ही थी। पर सोचती थी कि खुले बाजार में अंडे के दाम १६ रूबल यानी ३ डालर फी दस अंडे होने के कारण, यह अच्छी तरह केवल डेयरी से मुर्गी पालन में जा कर सारे काम कर लेगी।

ट्राटस्की ने एक बार बड़े गर्व में कहा था कि किसान सभ्यता का भारवाही पशु है। उनका मतलब यह था कि किसान के आर्थिक भाग की कद्र की जाय, साथ ही जिस नरमी से वह जारशाही के जमाने में अपने को शोषित होने देता था उसके प्रति घृणा व्यक्त की जाय।

तब से समाज का सारा ढांचा बदल चुका है, पर नई प्रणाली ने किसान को चूसने के पहिले के जमींदारों के मुकाबिले में बहुत अच्छे तरीके निकाले हैं। कुछ खास रियायत प्राप्त इलाकों के अलावा जैसे जार्जिया के नींबू के बाग़ तथा क्यूबन का साक जाति के बहुत ऐश्वर्य-शाली गेहूँ की भूमि के अतिरिक्त बाकी सब जगह के किसानों को शहरी बुद्धिजीवी तथा मज़दूर वर्ग के लिये शोषित होना पड़ता है।

युद्धकाल में किसानों ने अनाजों के बढ़े हुए दाम से जो कुछ बटोरा था, वह सिक्का-सुधार में समाप्त कर दिया गया। राष्ट्र के प्रति उनका देय हिस्सा प्रति साल बढ़ता ही गया। जो उपभोग द्रव्य शहरों में खूब

मिलते हैं, वे अभी अधिकांश देहाती इलाकों में पहुँच नहीं पाते, और किसानों के लिये उनके दाम भी ज़्यादा हैं।

इतने बड़े विराट देश में किसानों के जीवन के मानदंड कितने गिरे हुये हैं, यह आम तौर पर कहना कठिन है। जमीन की उपज तथा लोगों के साधनों के कारण परिस्थितियाँ भिन्न भिन्न हैं। सोवियट संघ में परिस्थितियाँ नाटक की तरह आकस्मिक रूप से बहुत बदल यहाँ तक कि सुधर सकती हैं।

एक ही दिन में सरकार अप्रत्याशित रूप से किसान पर दबाव घटा सकती है। तब तक लाखों भावी आशायें होंगी जो इस बात पर सोचती रहेंगी कि वे गाय पालें या मुर्गी।

मास्को में दूकानदारी का रूप

मास्को में जो विराट मोस्टर्ग नामक दूकान है उसमें स्त्रियाँ जो गैलश इस्तेमाल करती हैं, उस के विभाग में बड़ी भीड़ थी। सब उम्र की स्त्रियाँ जिन में कुछ मर्द भी दबके हुए थे बाकायदा भब्बड़ मची हुई थी, एक दूसरे को धक्के दे रही थीं, तथा लड़ाई सी कर के काउन्टर की तरफ बड़े साहस तथा दृढ़ता से बढ़ने की कोशिश कर रही थीं। यह साहस और दृढ़ता किसी उच्चतर लक्ष्य के उपयुक्त थी। बाहर पुलिस दरवाजे को बंद किये हुए थी, और वहाँ खुले में जो दो बार मोड़ लिये हुए क्यू लगा हुआ था, उससे एक एक आदमी को आने देती थी।

यह १९४७ के दिसम्बर की बात है। फिर भी लोग गैलोशों के लिये इस प्रकार दौड़ पड़े थे, इस का मौसिम से कोई सम्बन्ध नहीं था। सिक्कों का सुधार तथा राशन पद्धति का अंत अभी-अभी प्रवर्तित हुआ था। १० पुराने रूबल का एक दिया जा रहा था। पर स्त्रियों के गैलशों का मूल्य ६०फी सदी घटा कर १४०० रूबल याने २६४ डालर से १४० रूबल याने २६ डालर ४० सेंट कर दिया गया था। इस प्रकार जो लोग गैलश में पैसा लगा सकते थे, उन्हें यह सुखकर अनुभूति हो सकती थी कि उन्होंने मुद्रावमूल्यन को ठेंगा दिखा दिया।

गैलशों पर दौड़ एक हफ्ते तक जारी रही। तब अधिकारीवर्ग बीच

में पड़े। उन्होंने सट्टेबाज़ों को गिरफ्तार किया जो देहातों में कानूनी दाम से कई गुने मूल्य पर गैलश बेच रहे थे। सब दूकानों में गैलश का बिकना बंद हो गया।

लोगों ने यह आशंका की थी कि जब गैलशवाला काउन्टर खुलेगा, तो उसके दाम बढ़े होंगे, पर दाम बढ़े नहीं थे। यद्यपि फिर से खरीदने की एक दौड़ सी मच गयी, स्टाक खतम नहीं हुआ। जल्दी ही खरीदने की दौड़ समाप्त हो गयी। इस प्रकार सरकार ने अपनी मूल्य सम्बन्धी नीति में उपभोक्ता के विश्वास उत्पन्न करने की लड़ाई में एक बड़ी विजय पायी।

तब से ले कर बराबर कई बार चीज़ों के फुटकर मूल्य में कमी हुई। किसी-किसी क्षेत्र में मूल्य में दूसरे क्षेत्रों की तुलना में बहुत अधिक कमी हुई। खाद्य पदार्थों के मूल्यों में सब से अधिक कमी हुई, इस के अतिरिक्त कई कीमती अनावश्यक वस्तुओं जैसे रेडियो, कैमरा, मोटर साइकिलों के मूल्यों में भी कमी हुई।

खाद्य पदार्थों के मूल्यों में दस से पन्द्रह फी सदी कमी हुई, और उल्लिखित वस्तुओं के मूल्य में कई क्षेत्रों में तीस फी सदी तक कमी हुई। कपड़े के मूल्य में भी कुछ कमी हुई यद्यपि राशनिंग पद्धति को समाप्त करते समय, जो मूल्य सूची प्रकाशित की गयी थी, उसके मुकाबले में इस क्षेत्र में अधिक कमी नहीं हुई। मालों के स्टाक और साथ ही किस्मों में बराबर उन्नति होती गयी, और मास्को की जनता विशेषकर स्त्रियों को देखने से इस बात का अच्छी तरह पता लगता है।

उपभोग की वस्तुओं का उत्पादन बढ़ रहा है, पर जो किस्में दिखायी पड़ रही हैं वे मुख्यतः विदेशों से आये हुए विशेषकर चेकोस्लोवाकिया

से आये हुये माल के कारण है। मास्को की दूकानों में एक तथा दो टुकड़ों में सम्पूर्ण छपे हुए चेक कपड़े की पोशाकें काफी मिलती हैं, जिन का मूल्य लगभग ३५० रूबल या ७० डालर है। स्थानीय रूप से उत्पन्न सूती ब्लाउजों के दाम ६० रूबल या ११ डालर ३० सेन्ट हैं। रायों के बने हुए मोज़े ३५ रूबल याने ६ डालर ८० सेन्ट से लेकर १५ रूबल ३ डालर ६० सेन्ट जोड़े हैं। नीलों के माल अभी तक सार्वजनिक रूप से विक्रयार्थ नहीं हैं।

पुरुषों के लिये रेडीमेड सूट ६०० रूबल याने ११३ डालर से लेकर २,००० रूबल याने ३७७ डालर तक के हैं। पुरुषों की कमीज़ें ६० रूबल याने १ डालर ३० सेंट पर शुरू होते हैं। चमड़े के जूते २५० रूबल याने ४७ डालर १० सेन्ट से लेकर ४०० रूबल याने ७५ डालर ४० सेन्ट तक के हैं, पर कैनवस के चप्पल ५० रूबल याने ९ डालर ४० सेन्ट में मिलते हैं।

कपड़े और जूतों के अलावा चेकोस्लोवाकिया से बहुत-सी और चीजें आती हैं जैसे हैण्डबेग, दस्तानें, पेटी तथा पोर्ट फोल्यो। सच तो यह है कि मैंने रूस में पर्यटन करनेवाले चेकों को कड़वेपन के साथ यह कहते हुए सुना कि मास्को में प्राग से कहीं अधिक चेक माल मिलते हैं।

सोवियट अधिकारी लोगों की इस शिकायत की बात के सम्बन्ध में सजग हैं, इस लिये जब भी कोई चेक "सांस्कृतिक" गुट्ट मास्को में आता है, तो उन के स्वागत करने वाली सोवियट संस्थाओं से यह कह दिया जाता है कि वे ऐसे अवसर पर ऐसे चेक माल न पहने रहें, जिन्हें आसानी से चेक माल करके पहचाना जा सके। पौलेंड और जर्मनी के बने हुए सूती द्रव्य भी काफी मिलते हैं, यद्यपि बने हुए कपड़े के रूप में अभी इनका माल कम हैं।

सोवियट निर्मित बिजली का वैकुअम क्लीनर सारे सामान के साथ १२०० रूबल याने २२६ डालर में विक्रयार्थ है, और दो नाम के सोवियट निर्मित बिजली के रैफ्रीजरेटर ५६५ तथा १३६० डालर पर विक्रयार्थ हैं।

पर जहाँ तक मामूली खरीददारों का प्रश्न है, ये तो केवल दूकान सजाने की ऐसी चीज़ें हैं जो अच्छे दिन आने पर तथा रखने और इस्तेमाल करने की जगह मिलने पर, साथ ही इतने दाम देने की सामर्थ्य होने पर काम आयेंगी। आप एक विशाल रैफ्रीजरेटर को एक रद्दी सामूहिक पाकशाला में नहीं लगा सकते, और न आप एक वैकुअम क्लीनर को ऐसी जगह लगा कर काम कर सकते हैं जहाँ दो वर्ग गज जमीन भी हिलने डुलने के लिये नहीं।

इन्हीं कारणों से रेडियो तथा ग्रामोफोन १३६० और १८८० डालरों पर विक्रयार्थ हैं। पर सोवियट, चेक और जर्मन छोटे छोटे एक वेववाला रेडियो ४७ डालर १० सेन्ट से लेकर अनेक वेववाले टेलीफूकेन २३९ डालर पर बिकते हैं, और इनकी अच्छी बिक्री है।

तरह तरह की साइकिलें १३९ डालर से लेकर ३७७ डालर तक तथा मोटर साइकिलें ६८० डालर पर बिकती हैं। एक चार सिलीन्डरवाला सोवियट निर्मित मास्कविचपी जेट कार जो जर्मन ओपेल अलिम्पिया के नमूने पर बना है, '७०० डालर में और मध्यम आकार का पोबेडा ३,४०० डालर में मिल सकता है।

महायुद्ध के बाद के प्रथम सालों में दूकानें माल से खाली पड़ी रहती थीं (उन दिनों ऊँचे लाल सेना के कर्मचारियों की पत्नियाँ विजय गर्व में जर्मनी की मामूली चीज़ों जिनमें पैरोक्साइड की केशसज्जा

पर चौड़े किनारे के हैट होते थे) उन दिनों मास्को में आम तौर से जेनरलों की अति परिच्छदधारिणी स्त्रियों को लेकर मज़ाक होते थे ।

आज उस प्रकार का प्रसाधन लुप्त हो चुका है। रूसी स्त्री की स्वाभाविक सुरुचि की धीरे धीरे विजय हुई है, और कहीं कहीं तो सरकारी विरोध के बावजूद यह विजय हुई है। इस प्रकार 'नया प्रसाधन' सामने आया। दल द्वारा बनायी हुई रेखा के बावजूद (जिसके अनुसार यह सारी बातें पूंजीवादी पतन तथा अपव्ययात्मक था) कपड़ों को झालर के तरीके पर सी कर झुलाने का तरीका बढ़ता ही गया। आज मास्को की कोई भी अच्छे कपड़े वाली स्त्री फर्श से १४½ इंच से नीचे कपड़ा पहने हुई नहीं दिखायी पड़ेगी। पश्चिम में जब कि घघरों की लम्बाई ऊपर की तरफ जा रही है, मास्को में यह नीचे की तरफ जा रही है।

औसत नागरिक को सस्ता कपड़ा तो मिलता ही है, इस के अतिरिक्त अच्छे से अच्छे कपड़े मास्को में दाम देने पर मिल सकते हैं। जो लोग पैसा दे कर नाप के अनुसार कपड़े सिलवा सकते हैं, उन के लिये स्टोरों में अच्छे से अच्छे वरस्टेड फलैनेल, सूट के अन्य कपड़े तथा गेवर्डिन ५५ डालर प्रति गज से लेकर मिल सकते हैं।

एक ऐसा देश जो सारी दुनिया को फरकोट देता है, वहीं मास्को में फरकोटों का दाम अधिक है। एक सैकिंड हैंड ईरानी भेड़ पागिलहरी के चमड़े का कोट मास्को में १,००० डालर पर बिकता है। नये फरकोटों के दाम इन से दुगने या तिगुने हैं। मास्को में विक्रयार्थ ऐसे कोटों में बहुतेरे देश से बाहर के बने होते हैं। मास्को की स्त्रियों के लिये एक बहुत प्रिय वस्तु कैनाडियन सील नामक रँगा हुआ फरकोट है, जो १८ हजार रूबल में याने ३४०० डालर में बिकता है।

रूसी लोग अच्छी चीज़ की कदर करते हैं, इस कारण ऊँची आयवाले खुशी से अधिक दाम देते हैं। इस के अतिरिक्त एक रूसी जितना कमाता है उतना खर्च कर डालता है। जिस देश में पूँजी लगाने का मौका नहीं है, वहाँ पर सिक्का केवल विनिमय का एक साधन समझा जाता है।

रूसी व्यापार में कितना धोखा है

जब सोवियट जीवन के साथ हम विदेशियों के अन्य संस्पर्श नष्ट हो गये, तो भी हम बाज़ार में साधारण जनता के साथ बिना नाम बताने की घनिष्ठता प्राप्त कर सकते थे। और अब हमारे मास्को जीवन का एक बहुत दिलचस्प हिस्सा बाज़ारों में जा कर मोलभाव करना तथा खरीदना हो गया।

मास्को की गृहिणियाँ रूसी स्वभाव की अतिशयोक्ति के पल्ले पड़ कर यह कहा करती हैं कि यदि स्थानीय बाज़ार में काफी दौड़ धूप करते रहो तो चिड़िया का दूध (यह अमेरिका की भाषा में प्रयुक्त मुर्गी के दाँत की तरह शब्द है) मिल सकता है। यह सच है कि मास्को के बाज़ारों में चीज़ों की अन्तहीन किस्में साथ ही तजर्बा प्राप्त होता है।

एक दूकान में देखिये कि एक काला ककेशसवासी चौड़े किनारे का चिनचिला हैट लगा कर एक सूटकेस में नारंगियाँ, नींबू तथा थे नामक पत्तियाँ बेच रहा है। नारंगियों को आकार के अनुसार दो ढेरियों में रखा गया है। बड़ी नारंगियाँ १५ रूबल में तथा छोटी नारंगियाँ १० रूबल में बिक रही हैं। प्रति नींबू ८ रूबल में तथा थे नामक पत्तियों की तीन चार पत्तियों का गुच्छा एक रूबल में बिक रहा है।

जो खरीददार इस दाम का विरोध करते हैं, उन्हें बेचनेवालों की तरफ से अजीब उच्चारणयुक्त रूसी में यह बताया जाता है कि रेल का

किराया देना पड़ा, तथा जो कुछ माल वह ला सका, वह केवल उतना ही था, जितना कि वह दो सूटकेस में ला सका। रूसी लोग नारंगी, नींबू तथा बे पत्तियाँ श्ची तथा बोर्श नामक तरकारियाँ बनाने में इस्तेमाल करते हैं। श्ची का अर्थ सब तरह की तरकारियों तथा पत्तियों से मिश्रित बंद गोभी का शोरबा है, और इस पर खट्टी क्रीम डाली जाती है। बोर्श भी एक तरह का मिलाजुला शोरबा है, जिस में बीयर तथा खट्टी क्रीम पड़ती है।

इस लिये खरीददार एक-एक नारंगी, नींबू या बे पत्ती खरीदते हैं, यद्यपि वे साथ ही यह भी गिड़गिड़ा कर शिकायत करते जाते हैं कि जल्दी ही ये ही चीज़ें सरकारी दूकानों पर इस से बहुत कम दाम पर मिलेंगी।

नारंगियाँ, नींबू तथा बे की पत्तियों के दाम ही मौसिम के अनुसार ही इस प्रकार भयानक रूप से बदलते हों ऐसी बात नहीं। जब शुरू-शुरू में नन्हीं-नन्हीं हल्की हरी ककड़ियाँ फरवरी के अंत में सरकारी दूकानों में आती हैं, तो उनका दाम २ रूबल होता है। पर जून तक यही ककड़ियाँ बाज़ार में भर जाती हैं, और तब तो तीन रूबल में एक किलोग्राम मिलता है।

ग्रीष्म ऋतु के आरम्भ में जो किसान आलू उगाते हैं, वे एक किलो आलू के लिये ५ या ६ रूबल तक पा जाते हैं। सरकारी आलू से बाज़ार पट जाने से एक रूबल में एक किलो आलू मिलता है। मौसम के प्रारम्भ में टमाटो का एक किलो २५ रूबल में बिकता है, यही जुलाई के अंत तक साढ़े तीन रूबल में उस समय आता है, जब कि वे सरकारी दूकानों में मिलते हैं। इसी प्रकार बंद गोभी इसी दौरान में आठ रूबल से दो रूबल प्रति किलो उतर आती है।

इस प्रकार सोवियट खुले बाज़ार में माँग और पूर्ति का नियम उसी प्रकार से लागू होता है, जिस प्रकार मुक्त आर्थिक पद्धति में लागू है, पर यहाँ सरकार के द्वारा निर्णय किये हुए ढाँचे के अन्दर ही उसकी सक्रियता सीमित है।

बहुत दीर्घ फलहीन तथा तरकारियों से वंचित १९६० के शीत काल में जब हमने मास्को के बाज़ार में तरह तरह के फलों, तरकारियों तथा बेरियों की भरमार देखी, तो बहुत ही आनन्द हुआ। स्टालों में जंगली तथा खेती के स्ट्राबेरी, नचेरी, ब्लूबेरी, अंगूर, कुकुरमुत्ता आदि की भरमार थी।

सरकारी दूकानों में तरबूज़ और अंगूर थे, जो मध्य एशिया से आये हुए थे। इसी तरह युक्रेन से आयी हुई खुबानियाँ तथा नीली बेर भी दिखायी पड़ती थीं। इस बहुतायत को देख कर एक दर्शक ने यह कहा कि मास्को तो सब रूसों की रानी है। हमने तो यही बात लेनिनग्राड तथा अन्य दो चार स्थानों में जहाँ जहाँ भी हम जाने दिये गये थे, सर्वत्र देखी।

बाज़ार में मांस की भी भरमार थी। गोमांस प्रति किलो ३२ रूबल, भेड़ का मांस ३५ रूबल, सूअर का मांस ४२ रूबल को बिक रहा था। बछड़े का मांस प्रति किलो १८ रूबल था पर मांस की किस्म हर जगह अलग थी और मांस पहिचानना ज़रूरी था। मांस का मूल्य पर साल से १० से १५ फी सदी घटा हुआ था।

मास्को में इस तरह के आम बाज़ारों के अतिरिक्त कई विशेष बाज़ार भी थे, जैसे यारोस्लावस्किकी, जहाँ लोग सेकेंड हैंड कपड़े बेचने और खरीदने के लिये एकत्र होते हैं। यह समझा जाता है कि इस

बाज़ार में बार-बार दिखायी पड़ना खतरनाक है, क्योंकि यहाँ सादे कपड़ों में सट्टेबाज़ीविरोधी पुलिस के लोग छिपे रहते हैं।

इसी प्रकार डूबीनिनस्की लोहा-लक्कड़ का बाज़ार है, जहाँ स्क्रू ड्राइवर और रिंच से लेकर पुरानी मोटरें भी मिलती हैं।

पर हम लोगों के लिये विशेषकर हमारे बच्चों के लिये सब से दिलचस्प चिड़िया बाज़ार या गाय बाज़ार है। यहाँ पर प्रति सप्ताह केवल एक बार रविवार के दिन सब तरह के प्राणी जैसे ढोर तथा घोड़े से लेकर कछुए और काकातुआ तक बेचे और खरीदे जाते हैं। इस में सब नस्ल के कुत्ते आ जाते हैं, पर बहुत थोड़े ही ऐसे होते हैं, जिन का कुल अच्छा हो। इन के अलावा बिल्ली के, सूअर के, स्यार के, भेड़िये के बच्चे, स्याही, खरगोश, गिलहरी, सफेद चूहे, गाने वाली पक्षियाँ तथा शोभा के लिये रक्खी जाने वाली मछलियाँ मिलती हैं।

यहीं पर किसी खास रविवार को सुन्दर मछलियों के शौकीन एकत्र होते हैं, ये वे लोग हैं जो क्रान्तियों और युद्धों की परवाह न कर अपने-अपने मकानों में वर्षों से कांच के जारों में मछलियाँ पैदा करते रहे हैं। इन में से ग्रीष्म कटिबन्ध की कुछ विरल मछलियाँ १५० रूबल जोड़ी तक बिकती हैं। पर मछली के इन शौकीनों में कोई ऐसा नहीं है जो इसी काम से रोटी खाता हो, या अधिक पैसे बनाता हो। सप्ताह के अन्य दिनों में ये किसी वायुहीन दफ्तर में क्लार्क या मुंशी का काम करते हैं।

फिर भी प्रति रविवार को चाहे पानी बरसे या धूप पड़े, ये लोग उन्हीं बाहरी स्टालों में दिखायी पड़ते हैं। जब शीत शून्य अंश के नीचे होता है, तब ये अपने-अपने जारों को मोटे कम्बलों में लपेट कर लाते हैं, और उसके नीचे छोटी सी मिट्टी के तेल की बत्ती जलती रहती

है, जिस से पानी जम न जाय। एक आदमी के पास छोटे-छोटे ऐसे जार थे, जो उस के विशेष रूप से बने हुए ओवर कोट की सिलाई के अन्दर रक्खे जा सकते थे।

सरकार ने अब इस क्षेत्र में भी पदार्पण किया है, और धीरे-धीरे शौक की चीज़ों के सरकारी उत्पादन के कारण इन के दामों में बहुत कमी हो रही है। सरकार की यह नीति है कि प्रत्येक क्षेत्र में जहाँ भी निजी व्यापार चल रहा है, उत्पादन के द्वारा ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी जाय जिस से निजी व्यापारी की कमर टूट जाय, और वह प्रतियोगिता में टिक न सके। जब सरकार निजी व्यापारियों के दाम तक अपने उत्पन्न द्रव्य के दाम को पहुँचा देती है, तब यह और भी दाम घटाती है, और इस प्रकार मुक्त बाज़ार तथा निजी बाज़ार का अंत हो जाता है।

सरकार की करसम्बन्धी नीति में भी यही बात दृष्टिगोचर होती है, जिस का उद्देश्य है कि सामूहिकीकृत किसानवर्ग इस बात को समझ ले कि निजी गाय या आलू का खेत रखना फायदामंद नहीं है। वह दिन दूर नहीं मालूम होता, जब कि रूसी संस्थाओं में से सब से पुरानी संस्था मुक्त बाज़ार इतिहास की वस्तु हो जायगी।

आज भी यह संभव है, यद्यपि इस में दिलचस्पी का उपादान कम है कि कोई व्यक्ति अपनी सारी ज़रूरतों को सरकारी स्टोरों से खरीद कर पूरा करे। इन सरकारी दूकानों में से सब से अच्छे बृहत् आदर्श गास्ट्रोनोम दूकानें हैं, जो अब प्रत्येक शहर में मौजूद हैं। मास्को का विराट सौधयुक्त गास्ट्रोनोम नं० १ जिसे भूतपूर्व मालिक के नाम पर एलीसेएफ कम्पनी कहा जाता है, एक ऐसा स्थान है जहाँ स्वादिष्ट सासेज़, अच्छे मांस, मांस की डबलरोटी, नमक तथा धुएँ में बनायी

हुई मछली, शिकार के मांस, चिड़ियों का मांस, तरह-तरह की मिठाइयाँ, दस बारह तरह के कैवियार मिलते हैं, जिन का शायद ही न्यूयार्क का कोई दूकानदार मुकाबिला कर सके। लेनिनग्राड का गास्ट्रोनोम इसी प्रकार प्रभावोत्पादक है।

विलासिता की इन दूकानों से हम जब पड़ोस की दूकानों की ओर दृष्टि दौड़ाते हैं, तो हमें बहुत उतरना पड़ता है। अधिकांश लोग इन्हीं दूकानों में जाते हैं। फिर भी भविष्य के लिये एक नमूना तैयार हो गया है। सासेज़ के दाम प्रति किलो ५० से ६०, अच्छी बसाई हुई मछली ४० से ८०, शिकार की चिड़ियाँ तथा पशु २० से ३५ रूबल प्रति किलो प्राप्त होते हैं। कैवियार की सब से अच्छी किस्में २३० रूबल प्रति किलो प्राप्त होता है, और गास्ट्रोनोम में सिर्फ सब से अच्छी चीज़ें ही मिलती हैं।

सोवियट व्यापार की त्रुटियाँ सोवियट आत्मसमालोचना के लिये सब से अच्छे मसाले हैं। सोवियट जनता पर किसी बात का इतना अधिक प्रभाव नहीं पड़ता जितना कि इस बात से पड़ता है कि सरकार अपने वितरण की पद्धति में भ्रष्टाचार और अयोग्यता के सम्बन्ध में अपनी कमियों को स्वीकार कर उन के विरुद्ध संग्राम करती हुई दिखायी पड़ती है। फिर भी सेंसर इतना कड़ा है कि किसी भी तरह इस आत्मसमालोचना का अंश बाहर के पत्रों में नहीं जा पाता।

इस प्रकार की अप्रिय बातों को प्रकाशित करते हुए सोवियट पत्र यह साफ कर देते हैं कि इसकी जिम्मेदारी सोवियट पद्धति पर नहीं है। जो भी दोष सामने आता है, उसे पूँजीवाद की बची-खुची बात के रूप में दिखाया जाता है, जिस का स्पष्ट आशय यह है कि जल्द ही इन का अंत हो जायगा।

यह नक्शा इस माने में सही है कि सरकारी व्यापारिक संगठनों में वे लोग खिंच कर आये हैं, जो या तो प्राक्क्रान्तियुग में या नई आर्थिक नीति के युग में निजी व्यापार की ओर खिंचे थे। स्मरण होगा शेषोक्त युग में निजी व्यापार कानूनी कर दिया गया था। इन में से बहुत से व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हें जब्ती तथा सरकारी लुंठन का बार-बार शिकार होना पड़ा है, वे भीतर से सोवियट पद्धति के विरुद्ध हैं, और निजी तौर पर इस बात पर तुले हुए हैं कि अपनी क्षतियों की किसी प्रकार पूर्ति करें।

इस के साथ ही बहुत कुछ क्षति तथा अयोग्यता इस कारण है कि जहाँ मुक्त आर्थिक पद्धति में व्यापारिक प्रतियोगिता में इस प्रकार की बातें जल्द ही पकड़ ली जाती हैं, वहाँ सोवियट पद्धति में ऐसी बात चलती रहती है।

कोई भी सोवियट व्यापारिक संगठन चाहे उस में कितनी भी अव्यवस्था हो, कभी दिवालिया नहीं हो सकता, याने वह तभी दिवालिया हो सकता है जब सारी सरकार ही दिवालिया हो जाय। इस के अतिरिक्त व्यापार से मुनाफे के उपादान को दूर कर देने के कारण व्यवस्थापकों तथा बेचने वाले लोगों के सामने वह अनुप्रेरक शक्ति नहीं रह गयी, जिस से कि वे और प्रयास करते।

यह कोई काल्पनिक तर्क नहीं है। इस का परिणाम हर तरफ दिखायी पड़ता है; दूकानों के गवाक्षों पर चीज़ों को गन्दे तरीके से दिखाया जाता है, बेचने के काम नियुक्त मुंशी ग्राहक में दिलचस्पी नहीं दिखाते (आदर्श स्टोरों में यह बात नहीं है), बिना माँग की चीज़ों का स्टाक रक्खा जाता है।

उदाहरणार्थ एक घूमते हुए रिपोर्टर ने हिसाब लगा कर बताया कि

बाकू के खिलौने की दूकानों में एक विशेष प्रकार के खिलौने के सारे स्टाक के समाप्त होने में ३, ००० वर्ष लगेंगे। उस ने और भी बताया कि स्थानीय दवाफरोश ट्रस्ट जब अपने यहाँ के दन्तमंजन के स्टाक को बेचने में असमर्थ रहा, तो उसे पोतने के चूने के रूप में बेच दिया गया।

एक कथा यह भी थी कि कीव नगर के प्रधान कलाकेन्द्र की दूकान में लोग माँगते तो थे लेनिन, स्तालिन और अन्य सोवियट नेताओं की कमर तक मूर्ति, पर वहाँ की अलमारियाँ क्यूपिड और परियों आदि की मूर्तियों से भरी हुई थीं। जब स्थानीय व्यवस्थापक का ध्यान इस ओर खींचा गया, तो उस ने क्यूपिडों तथा परियों आदि के पर कतरवा दिये, उनके गले में लाल रूमाल बाँध दिये और उन्हें उस नाम से बेचने की कोशिश करने लगा कि ये रूस की वानरसेना की मूर्तियाँ हैं।

कुव्यवस्था के अतिरिक्त सोवियट फुटकर व्यापार में छोटे-मोटे भ्रष्टाचार भी चालू हैं। पत्रों की रिपोर्टों को देखते हुए एक तरीका तो यह है कि कई बहुत बिकने वाली चीज़ों पर सरकारी दाम से अधिक दाम लिख दिया जाता है। फिर व्यवस्थापक और मुंशी आपस में इस पैसे को मार देते हैं। इस प्रकार के जो बड़े-बड़े मामले होते हैं, उन के मुकाबिले में ये बहुत छोटी घटनायें हैं।

कोई एक साल पहिले मास्को के 'ट्रूड' नामक पत्र ने यह भंडा-फोड़ किया कि 'युवलिरटोर्ग' नामक सरकारी जवाहिरात सम्बन्धी संग-ठन के इर्द गिर्द सट्टेबाजी का एक बड़ा गिरोह काम कर रहा है। पेट्रोवस्का में जो कभी मास्को का पंचम मार्ग कहलाता था, सट्टेबाज-विरोधी पुलिस ने एक बहुत बड़े जवाहिरात की दूकान पर धावा किया। यहीं से सारा मामला चल पड़ा। पुलिस ने पहिली दौर में १७ व्यक्ति

पकड़े, और २० लाख रूबल का माल बरामद किया। सट्टेबाज़ बहुत सरल तरीके का उपयोग करते थे। वे युवलिरटर्ग के आस पास अपने दलाल रखते थे। जो लोग अपनी कीमती चीज़ें बेचने आते थे, उन्हें बहका कर ये लोग उनकी चीज़े खरीद लेते थे। यह काम चुपचाप होता था। यदि वे राज़ी हो जाते थे, तो खरीदे हुए माल को ऐसे लोगों के हाथ बेचा जाता था, जो खरीदने के लिये आते थे, या युवलिरटर्ग को ही बेच दिया जाता था। दोनों हालतों में गिरोह को खासा मुनाफा रहता था।

एक तरीका यह था कि टूटी हुई घड़ियाँ कम दाम पर खरीद कर सरकार के हाथों इन्हें सेकेंड हेंड घड़ियों के दाम में निर्दिष्ट मूल्य में बेच दिया जाता था। 'ट्रूड' ने रिपोर्ट दी कि इस प्रकार सरकार के हाथ दो हजार घड़ियाँ बेच दी गयीं, और गिरोह को १० लाख रूबल का मुनाफा रहा। यह बताया गया कि यह इस लिये सम्भव हुआ कि युवलिरटर्ग का व्यवस्थापक तथा प्रधान हिसाब रखनेवाला गिरोह से मिले हुए थे।

'ट्रूड' ने व्यापार मंत्री की बुरी तरह निन्दा की कि वह इस पर सुधारात्मक कदम न उठा सका, यहाँ तक कि मास्को के प्रधान सरकारी वकील का भी इस लिये तिरस्कार किया कि वह इस मामले की जाँच बहुत ढिलाई से कर रहा है। यह माँग भी की गयी कि सब दोषी पकड़े जायँ। किसी अन्य पत्र ने इस सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा।

युवलिरटर्ग पर धावे का एक प्रधान परिणाम यह हुआ जैसा कि मुझे विभिन्न जरियों से मालूम हुआ कि उस से एक ऐसे व्यक्ति का सुराग पुलिस को लगा जिस के टेलीफोन की संख्या गिरफ्तार किये

हुए व्यक्तियों में से एक के कब्ज़े में थी। यह व्यक्ति एक दिन रात को पकड़ लिया गया, और पाँच दिन बाद तभी छोड़ा गया जब कि उस की स्त्री ने परिवार की सारी कीमती चीज़ें जिस में क्रान्ति के पहिले से बचाये हुए जवाहरात तथा चाँदी के बर्तन थे, इस तहकीकात के लिये तैनात पुलिस अफसर को दे दिये। वह व्यक्ति छोड़ दिया गया, और उस की गिरफ्तारी से सम्बन्धित सारे रिकार्ड नष्ट कर दिये गये।

सरकारी स्टोर को निजी सट्टेबाज़ी के लिये इस्तेमाल करना एक बहुत मामूली बात है। ऐसा केवल जवाहरात की दूकानों में ही होता हो, ऐसी बात नहीं है। कथित कमीशन की दूकानों में जहाँ कपड़े, असबाब, वाद्य-यंत्र तथा कला-वस्तुएँ निजी इस्तेमाल के लिये बेची जाती हैं, और उन पर पन्द्रह फी सदी कमीशन लिया जाता है। ऐसे मामले में या तो कमीशन पर चीज का क्रय स्वीकार नहीं किया जायगा, या उस का ऐसा दाम बताया जायगा जो बेचने वाले को मंजूर न होगा। ऐसे मामलों में स्वाभाविक रूप से वह व्यक्ति जब निराश हो कर बाहर जाने लगता है, तो उसे बुला कर निजी तौर पर अधिक दाम देने का वायदा किया जाता है। इस समय तक बेचने वाले का दिमाग इतना गिर चुका होता है कि जो भी दाम उसे मिलता है, वह लपक कर उसे स्वीकार कर लेता है, चाहे उसे उचित दाम न मिल रहा हो।

मास्को के पत्रों ने कई गुप्त पूँजीवाद के इसी प्रकार के किस्से निकाले हैं जिन में इस तरह के रोमांचकारी व्यक्ति सम्बद्ध हैं। जैसे एक व्यक्ति है जिसे बटनों का राजा कहते हैं। इस व्यक्ति ने बटन की पूर्ति पर रोक लगा कर राष्ट्र को क्रियाशील होने नहीं दिया और अपना उल्लू सीधा किया। इसी प्रकार एक चूहों का राजा है जिन्हों ने दस लाख रूबल का निजी

व्यापार स्थापित कर लिया। इन का काम यह था कि वे सफेद चूहे पैदा कर उन्हें राष्ट्रीय प्रयोगशाला के हाथों में बेचते थे।

इन सारी बातों से ज्ञात होता है कि कुछ निजी व्यापार चाहे वह गुप्त रूप में ही जारी हो, सोवियट व्यापार के वर्तमान सोपान में मौजूद है।

रूसी सहकारी समितियाँ ढंग पर नहीं हैं

राष्ट्रीय मिलकियत तथा व्यवस्था की प्रधान आर्थिक धारा के साथ-साथ सोवियट पद्धति उपभोक्ताओं तथा उत्पादक और कारीगरों की सहकारी समितियों को अनुमति देती है। कानूनी दृष्टि से सहकारी समितियाँ सामूहिक फार्मों की तरह हैं, दोनों में ही जो निर्णायक बात है वह है साम्पत्तिक सम्बन्ध।

सामूहिक फार्म तथा सहकारी समितियों को 'आर्टेल' के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, याने वे छोटे उत्पादकों तथा मालिकों के ऐसे स्वेच्छाप्रणोदित संघ समझे जाते हैं जिन में इन्होंने अपनी चीज़ों तथा औजारों को एकत्र कर काम करना स्वीकार किया है। 'स्वेच्छाप्रणोदित' शब्द की पोल इसी बात से खुल जाती है कि साधारणतया ऐसे लोगों के सामने रूस में दो ही रास्ते हैं, एक तो यह है कि वे सम्पूर्ण रूस से विलुप्त हो जायँ, दूसरा यह है कि वे इसे स्वीकार करें।

आर्टेल के सदस्यों ने अपनी-अपनी सम्पत्तियों पर निजी मिलकियत का दावा त्याग दिया है, फिर भी उन्हें इस सामूहिक व्यापार या कार्य में हिस्सेदार होने के रूप में सामूहिक मिलकियत प्राप्त है। कोलखोस या सामूहिक फार्म तथा सोवखोस याने सरकारी फार्म में भी यही फर्क है, जो सरकारी स्टोरों तथा उपभोक्ता और कारीगरों की सहकारी समितियों में हैं।

चूंकि सहकारी समितियों के सदस्यों को सामूहिक मिलकियत प्राप्त है, और यह सम्पूर्ण राष्ट्रीयकरण के विरुद्ध है, आरटेल को निजी तथा राष्ट्रीय मिलकियत के बीच की एक अस्थायी संस्था समझा जाता है।

युद्ध के बाद से सोवियट सरकार ने उपभोक्ता और कारीगरों की सहकारी समितियों के प्रति प्रोत्साहन की नीति रक्खी है। यह आशा की जाती है कि राष्ट्रीय धन्धे जहाँ पर खाद्य द्रव्य तथा श्रम शक्ति की रिजर्व शक्ति को अपने काम में लगाने में असमर्थ रहे हैं, वहाँ ये सहकारी समितियाँ सफल रहेंगी। उदाहरणार्थ उपभोक्ता उपसमितियों को यह अधिकार दिया गया है कि वे ऐसे किसानों तथा सामूहिक खेतीवालों से फालतू खाद्य द्रव्य खरीद सकती हैं, जो शायद दूरी या यातायात के साधन में कमी के कारण अपनी चीज़ों को बाजार में लाने में असमर्थ रहें।

कारीगरों की सहकारी समितियों का प्रथम उद्देश्य यह है कि वे उपभोक्ता द्रव्यों की पूर्ति को स्थानीय चीज़ों तथा घर में बैठ कर काम करने वालों, छोटे कारीगरों तथा दस्तकारों की श्रम शक्ति को इस्तेमाल कर लेगें, जिन्हें सोवियट धन्धे के साथ जिस में जन पैमाने पर उत्पादन की ओर प्रवृत्ति है, सामंजस्य में लाया नहीं जा सकता।

यह भी आशा की गयी थी कि सहकारी समितियों की प्रतियोगिता के कारण राष्ट्रीय रूप से चलाये धन्धों को बल पहुँचेगा।

कम से कम सैद्धान्तिक रूप में आर्टेल में निजी काम-काज के लिये एक उचित सम्भावना रहती है। सरकार के प्रति आर्टेल ज्यों ही अपने कर्तव्यों की पूर्ति कर लेती है, वह चाहे उपज या उत्पन्न द्रव्य के रूप में हो अथवा व्यापारी उत्पत्ति पर टैक्स के रूप में हो, सदस्यों को

यह स्वतन्त्रता रहती है कि वे बाकी बचे हुए माल को चाहे किसी प्रकार प्रयोग करें।

यह एक उदाहरण है कि सोवियटों में पीछे के दरवाजे से उन विचारों को लाया जाता है, जिन्हें वे छोड़ चुके हैं, और जिन की वे निन्दा करते हैं।

व्यावहारिक रूप में सहकारी समितियों ने निजी व्यापार तथा धन्धे के लिये काफी सुविधा दी है, यद्यपि ऐसा हमेशा केमलिन की इच्छाओं के अनुसार नहीं हुआ है। कुछ मास पहले ताशकन्द के एक अखबार 'प्रावदा वोस्टोका' ने बड़ी दुर्लभ उदारता के साथ परिस्थिति का यों चित्र खींचा :

"निजी व्यापारी, धन्धेवाले तथा सट्टेबाज प्रजातन्त्र की सहकारी समितियों की पद्धति में राष्ट्र विरोधी कार्यों के लिये काफी बड़ा कार्यक्षेत्र प्राप्त कर चुके हैं। सहकारी समितियों को एक मोर्चे के रूप में इस्तेमाल करते हुए तथा उनके साधनों का फायदा उठाते हुए इन लोगों ने उपभोक्ताओं को बहुत बड़े पैमाने पर लूटा है, सार्वजनिक कोषों को हड़पा है, सहकारी समितियों की आर्थिक तथा वित्तीय परिस्थिति को बिगाड़ा है, और देश को भारी नुकसान पहुँचाया है।"

इन व्यापारियों ने किस प्रकार से काम किया है, इस बात को दिखाते हुए उसी रिपोर्ट में यह बताया गया है कि कसाई-सहकारी-समिति के प्रधान ने अपने पद का फायदा उठा कर सरकारी थोक दामों पर मांस खरीदा, फिर उस ने उसी मांस को कानूनी फुटकर दाम से पांच रूबल अधिक दाम पर बेचा।

एक और ऐसा उदाहरण है जिस में थेलमैन सहकारी समिति के तीन भोजनालय के सारे सामान याने बर्तन, तश्तरियाँ आदि, मेज़

बेचें आदि व्यवस्थापकों के द्वारा निजी तौर पर अपनी चीज़ों को बेचने में काम में लाई जाती थीं, और सहकारी समिति को एक भी पैसा नहीं दिया जाता था।

इसी प्रकार स्थल से घिरे हुए अरल समुद्र के किनारे पर स्थित एक कस्बे में इस अखबार के रिपोर्टर को ज्ञात हुआ कि स्थानीय भुँजी हुई मछली की सहकारी समितियों के पास निजी फायदे के लिये बेची जाने वाली मछलियाँ तली और भुँजी जाती थीं। 'प्रावदा वोस्टोका' को ज्ञात हुआ कि वे स्वयं ही मछली खरीदते हैं, उसे तलते हैं, और बेचते हैं, और यह सारा काम सहकारी समिति के पीछे होता है। कहा जाता है कि एक ऐसे ही मछली वाले ने एक लाख रूबल मासिक आय का निजी कारोबार कर लिया था।

मास्को में स्वाभाविक रूप से इस प्रकार के लोगों के लिये ज़्यादा गुंजाइश थी, और एक ऐसे ही बहुत बड़े कारोबारी बी. ए. कान्तसल थे। इन महाशय ने जिला स्कूल बोर्ड से इस बात की स्वीकृति ले ली कि स्कूल की पूर्तियों के लिये एक सहकारी वर्कशाप खोला जाय। यद्यपि ऊपरी तौर पर इस कार्य में केवल तीन व्यक्ति नियुक्त थे, फिर भी वास्तविक रूप से उस में ३०० व्यक्ति काम कर रहे थे, और स्कूल बोर्ड के कई कर्मचारी काल्पनिक सेवाओं के लिये उस से नियमित रूप से वेतन पाते थे।

स्कूल की चीज़ों के उचित उत्पादन के लिये कान्तसल की उत्पादन शक्ति केवल दस फी सदी काम में आती थी, जो एक दिखावे के रूप में थी। बाकी ९० फी सदी कारखाना तरह-तरह की झंडियों, खेलों, नवीन वस्तुओं, स्मृति के लिये उपयोगी चीज़ों तथा चित्र पोस्टकार्डों के उत्पादन में लगती थी। ये सारी चीज़ें निजी तौर पर और जैसा कि

रूसियों का कहना है "बायें तरीके से" बेच दी जाती थीं। मास्को के डायनेमो स्टाडियम में जब बड़ी फुटबाल प्रतियोगितायें होती थीं, उस समय कान्तसल तथा उन के सहकारी एक बहुत बड़ा मुड़ने खुलने वाला शो केस ले कर घटनास्थल पर पहुँच जाते थे, और वे प्रधान खिलाड़ियों के पोस्ट कार्ड आकार के फोटो, विभिन्न टीमों के रूमाल तथा झंडियों को बेच कर अच्छा पैसा बनाते थे।

कान्तसल अच्छे पैसे तब तक बनाता रहा, जब तक कि पुलिस एक दिन उस की गर्दन पर सवार नहीं हो गयी। उस के कारखाने के हाते में ताला लगा दिया गया, और गिरोह के अन्य लोगों को जेलखाने भेज दिया गया।

पश्चिमी देशों में जो कार्य बिल्कुल कानूनी रूप से उचित व्यापार समझे जायेंगे, सोवियत सरकार न केवल उन्हीं के लिये लोगों को अपराधी करार देती है, बल्कि यदि कोई मज़दूर निजी तौर पर मामूली मरम्मत का काम भी कर ले, और उस का पैसा जेब में रख ले, तो उस पर भी मुकदमा चल सकता है।

कीव से हेनबाऊम नामक एक ऐसे व्यक्ति की कहानी मालूम हुई है जो आहत युद्ध प्रत्यागत सैनिकों के मरम्मत के काम करनेवाली सहकारी समिति का सदस्य था। 'प्रावदा युक्रेनी' नामक कीव से प्रकाशित पत्र के अनुसार हेनबाऊम पकाने के बर्तनों तथा बिजली के सामानों की मरम्मत से प्राप्त पैसे खुद रख लेता था। इस के अतिरिक्त उस अखबार का कहना है कि बहुत से लोग इस को जानते थे, कि हेनबाऊम इस प्रकार निजी तौर पर काम करता है, और वह इस प्रकार अपराधी है पर वे पकड़ा नहीं देते थे। अंत में राजस्व विभाग ने उसे पकड़ लिया।

यद्यपि निजी तौर पर याने "बायें तरीके से" कार्य करने में विपत्ति

है, फिर भी रूसी मज़दूर को जब मौका लगता है, वह इस प्रकार काम करता है। रूस में परिस्थिति यह है कि यदि आप अपने मिट्टी के तेल के स्टोव को ठीक कराना, घड़ी मरम्मत कराना, छत ठीक कराना, कमरे को पेंट करवाना, या कोई काम करवाना चाहते हैं, तो आप यह देखेंगे कि सीधे-सीधे मज़दूर से बात करने में फायदा है। आप भले ही दल के एक अच्छे सदस्य हों, फिर भी आप इस में कोई बुरी बात नहीं पायेंगे।

हमारे एक रूसी मित्र ने अपना पियानो ठीक करवाना तथा उसे नया कराना चाहते थे। उन्होंने मास्को के सन्ध्या समय प्रकाशित एक पत्र में विज्ञापन देख कर एक पियानोसुधारक-सहकारी-समिति को टेलीफोन किया। इस के फलस्वरूप एक व्यक्ति ने आ कर पियानो की जाँच कर यह बतलाया कि इस के लिये २५० रूबल लगेंगे। जब इस पर मेरे रूसी मित्र ने कुछ आनाकानी की तो उस व्यक्ति ने बतलाया कि यदि वह कुछ दिन ठहरने को तैयार हों, तो वह स्वयं इस काम को निजी तौर पर १५० रूबल ले कर कर देगा। बिना किसी हिचकिचाहट के रूसी मित्र ने सहकारी समिति की १५ रूबल फीस इस बात की दे दी कि उस की तरफ से आदमी आया था। आये हुए कारीगर ने अपनी सहकारी समिति में ये पैसे जमा कर दिये, और साथ ही साथ यह रिपोर्ट दे दी कि वह व्यक्ति काम कराना नहीं चाहता।

जहाँ तक सहकारी समिति थी, उस का काम समाप्त हो गया। कुछ दिनों बाद वही कारीगर हमारे मित्र के घर पर आया, और कई दिनों तक सन्ध्या समय काम कर पियानो ठीक कर दिया। उस ने इस से प्राप्त १५० रूबल अपनी जेब में रक्खे, और किसी को कानों कान खबर नहीं हुई।

मज़दूर सभायें जल्दी काम कराने की संस्थायें हैं

युद्धोत्तर काल में रूसियों ने बिल्कुल विश्राम नहीं किया। खाई खोदने वाले से लेकर जो भी जो काम करता है, उसे बराबर इस बात के लिये उत्तेजित तथा प्रोत्साहित किया जा रहा है कि वह जल्दी से जल्दी काम करे। प्राक् युद्धयुग में यह जो बकबक थी कि ८ घंटे को ७ घंटे करो, अब दूर हो चुकी है। आज जो भी व्यक्ति "इच्छापूर्वक" ओवर टाइम काम करने से इन्कार करता है, उसे देशद्रोही समझा जाता है, और कोई भी ऐसा कहलाना नहीं चाहता।

सोवियट मज़दूर को अधिक समय तक पहिले से कड़ा परिश्रम कराने के लिये उत्तेजना देनेवाली एकमात्र तो नहीं, पर एक प्रधान संस्था मज़दूर सभायें हैं। पश्चिमी देशों में मज़दूर सभा से जैसी संस्था का बोध होता है, सोवियट मज़दूर सभा नाम के अलावा उन से सब बातों से भिन्न है। हाँ, पुराने जमाने में कम्पनियों की तरफ से जो मज़दूर सभायें थीं, उन के साथ इन की समता है।

कागज़ी तौर पर तो यह कहा जाता है कि सोवियट मज़दूर सभाओं का उद्देश्य व्यवस्थापकों के सामने मज़दूरों के हितों तथा उन के फायदों का प्रतिनिधित्व करने के लिये, यहाँ तक कि मज़दूरों के मामले में उन से समय-समय पर बातचीत करने के लिये है। साथ ही यह भी कहा जाता है कि उन्हें अधिकारपत्रों के अनुसार सब तरह अपील तथा पंच

निर्णय के अधिकार हैं, पर कार्यक्षेत्र में इन का उतना ही अर्थ है जितना कि सोवियट संविधान में वर्णित नागरिक अधिकारों का है। निर्णय करने की असली शक्ति तो कहीं और है, जो पहुँच के बाहर है। मज़दूरों के हाथ में हड़ताल के रूप में स्वेच्छाचारी शक्ति के विरुद्ध जो अस्त्र है, उसे नात्सी-जर्मनी और फ़ैसिस्ट इटली की तरह सम्पूर्ण रूस से गैर क़ानूनी बना रक्खा गया है।

वर्णित काल्पनिक उद्देश्यों के विरुद्ध सोवियट मज़दूर सभाओं का उद्देश्य सरकार को इस बात में मदद देना है कि सोवियट मज़दूरों से अधिक से अधिक परिश्रम कराया जाय। सरकार की तरफ़ से बराबर जो प्रचारमूलक मसाला आता रहता है, जिस का उद्देश्य मज़दूर को एक विशेष मानसिक परिस्थिति में रख कर उस से यथासाध्य काम लेना है, उसे बराबर मज़दूरों तक पहुँचाने की एक विराट, सुसंगठित अखिल राष्ट्रीय यंत्र के रूप में काम करने के लिये ये मज़दूर सभायें हैं।

मज़दूर सभायें स्टाखानोववादी या समाजवादी प्रतियोगिता आन्दोलन के संगठनकारी तथा प्रवर्तक के रूप में काम में आती हैं। इस आन्दोलन का उद्देश्य यह है कि मज़दूर परस्पर होड़ करें, और पहिले से अच्छा तथा कड़ा परिश्रम करें। मज़दूर सभाओं की ओर से सभाएँ होती हैं जिन में व्याख्यान होते हैं, प्रस्ताव पास किये जाते हैं और मज़दूरों के एक ब्रिगेड की ओर से दूसरे ब्रिगेड को या एक मज़दूर की ओर से दूसरे मज़दूर को यह चुनौती दी जाती है कि कौन आगे ज़्यादा काम करे यह देखा जायगा।

कहीं यह सारा काम मामूली रोज़मर्रे का न जँचने लगे, इसलिये सैनिक शब्दावली काम में लायी जाती है। उत्पादन मोर्चे पर विजय,

उत्पादन के मूल्य में कमी के लिये युद्ध आदि शब्दों से लोगों को बह-लाया जाता है जिन का अर्थ यह है कि कच्चे माल, ईंधन, बिजली का खर्च कम किया जाय, तथा विशेषकर चीज़ों की किस्म को उन्नत किया जाय। यह सारा काम ऊपर की मज़दूर सभा के केन्द्र से आयी हुई हिदायतों के अनुसार नाटकीय ढंग से किया जाता है।

इस प्रकार निरन्तर प्रयास का रूप कितना विराट है, यह सरकार के इस दावे से ज्ञात होता है कि सोवियट कारखाने के मज़दूर तथा यंत्र विशेषज्ञों में ९० फी सदी समाजवादी प्रतियोगिता में भाग लेते हैं। 'साहित्यिक गज़ट' नामक अखबार का कवित्वपूर्ण ढंग से किया हुआ यह दावा देखने योग्य है—"हमारे देश में स्टाखानोववादी आन्दोलन पल्ल-वित और पुष्पित हुआ है, लाखों लोग अपनी आत्माओं के साथ जोशीले ढंग से इस सार्वजनिक लक्ष्य में अपना दैनिक अर्घ्य चढ़ाते हैं।"

प्रतिवर्ष समाजवादी प्रतियोगिता में सफल तारकाओं पर बहुत कागज़ और स्याही खर्च होता है। इन व्यक्तियों को मज़दूरों के सामने उज्ज्वल उदाहरण के रूप में पेश किया जाता है और उन से यह कहा जाता है कि वे इन का अनुकरण करें। किसी साल तो ज़ोर उत्पादन के परिमाण पर होता है, तो किसी साल उत्पादित द्रव्य की उत्तमता पर। गत वर्ष ज़ोर उत्तमता पर था, और इस का प्रधान वीर अलेकज़ेंडर चुटकिख नामक मास्को का एक सूती मिल मज़दूर था। उस के सम्बन्ध में कहा गया कि उस ने अपने बुने हुए कपड़े की किस्म में बहुत अद्भुत उन्नति की है। सोवियट पत्रों ने उसे फौरन कालीनिनग्राड से व्लाडीव-स्टोक तक ऊँचे दर्जे की बुनकारी का प्रवर्त्तक मशहूर कर दिया। उसे तरह तरह से पुरस्कृत किया गया, यहाँ तक कि उसे स्टालिन पुरस्कार दिया गया।

जब प्रशंसकों ने मजबूर किया तो चुटकिख ने एक प्रकाशित लेख में यह कहा कि यह बहुत ही मामूली बात थी। एक दिन सवेरे उस ने यह खबर सुनी कपड़ा खरीदने वालों की यह शिकायत है कि कपड़ा खराब है, इस पर उस ने सोचना शुरू किया, और खोज करने लगा। उस ने दूकानों का दौरा किया। एक दूकान पर उस ने देखा कि एक स्त्री कपड़ा फेंक कर चलती हो गयी। उस ने जा कर उस कपड़े को देखा, तो उस की राय वही हुई जो स्त्री की थी। उस कपड़े का रंग अजीब था, जिस नमूने पर बुना गया था वह भी भद्दा था।

उसी समय चुटकिख को अनुप्रेरणा की झलक सी प्राप्त हुई। "एकाएक मेरे दिमाग में यह बात आयी कि प्रस्तुत किये हुए द्रव्यों के परिमाण की वृद्धि में प्रतियोगिता के साथ-साथ अच्छी किस्म के लिये भी प्रतियोगिता होनी चाहिये। कारखाने के स्टाखानोववादियों की सभा में मैं ने यह सुझाव रखा कि अच्छी किस्म के उत्पादन के लिये ब्रिगेड संगठित किये जायँ। मेरा समर्थन हुआ। मेरी इकाई अव्वल नम्बर के कपड़े बनाने में सर्व प्रथम आयी। अखबारों ने इस पर लिखा।"

बस इतनी सी बात थी। इस के बाद चुटकिख ने कहा कि पत्र आने लगे। "जिन्हें मैं जानता नहीं था, ऐसे बहुत से लोग मेरी सलाह माँगने लगे कि कैसे अच्छी किस्म के द्रव्य उत्पन्न किये जायँ। ऐसे सैकड़ों पत्र आये। नाव खेनेवाले, सड़क बनाने वाले, मक्खन बनाने वाले, धातु कारीगर सब इसी बात को जानना चाहते थे कि कैसे द्रव्य उत्पन्न किये जायँ कि जिस से सोवियट जनता के सामने शर्मिन्दा न होना पड़े।"

चुटकिख ने इन पत्रों के उत्तर में कौन सा मंत्र फूँक दिया यह न तो उस के अपने वक्तव्य से ही ज्ञात होता है, और न उस के सम्बन्ध में जो

विशाल प्रकाशन हुए, उन्हीं से कुछ पता चलता है। शायद यह कोई सरकारी गुप्त बात हो। कुछ भी हो करीब-करीब रात भर में सोवियट प्रेस ने यह खबर दी कि सारे देश में यहाँ तक कि बुलगेरिया में उस के प्रशंसकगण चुटकिख ब्रिगेड बना रहे थे।

यद्यपि चुटकिख इस प्रकार प्रसिद्धि का मध्यमणि हो रहा था, फिर भी उसी तक यह सीमित नहीं थी। और कई आदर्श मज़दूरों के नाम तथा चित्र अखबारों में आ रहे थे। इन से प्रभावित होकर 'साहित्यिक गज़ट' में यह लिखा गया कि रूस में तो साधारण मज़दूर को इस प्रकार वीर बनाया जाता है, जब कि अमरीका में अलकपोने ऐसे गुंडे को वीर बना कर प्रसिद्धि दी जाती है। शायद इस वक्तव्य का आशय यह नहीं है कि दोनों मामलों में धोकेबाज़ी का ही बोलबाला था।

समाजवादी प्रतियोगिता की तारकायें केवल मौसिमी प्रसिद्धि प्राप्त कर फौरन ही भुला दिये जाते हैं। पर साल के पहिले साल में अलेकजेंडर, मैट्रोसोव को इसी प्रकार वीर बनाया गया था, और यह कहा गया था कि उस ने चमड़े के जूते बनाने में समय बचानेवाले प्रस्तावों के द्वारा सनसनीखेज़ उन्नति कर दी थी। जब इन प्रस्तावों का स्पष्टीकरण हुआ तो ज्ञात हुआ कि कोई खास बात नहीं है। आज मैट्रोसोव उसी प्रकार भुला दिया गया है जैसे उस से पहिले के अन्य वीर भुला दिये गये हैं।

हाँ, स्टाखानोववादी आन्दोलनों का एक बहुत ही सुंदर तथा प्रशंसनीय पहलू यह है कि इस में नवीनताओं को प्रोत्साहन दे कर विकसित किया जाता है। पर इन आन्दोलनों में स्वयं नवीनता लाने की जरूरत है। यद्यपि तारकायें बदलती रहती हैं, और मध्य बिंदु में परिवर्तन हो कर एक धंधे से दूसरे धंधे की ओर ध्यान दिया जाता है,

फिर भी जो तरीके, नारे तथा वाक्यांश प्रयोग में लाये जाते हैं, उन में तब से कोई परिवर्तन नहीं हुआ जब से अलेक्सेइ स्ताखानोव नामक डौनवास के खान मज़दूर को ले कर १६३५ में इस आन्दोलन का सूत्रपात हुआ था।

इस का मतलब यह नहीं है कि इस प्रकार जो प्रचार सम्बन्धी मसाला छोड़ा जाता है, वह लोगों को पहिले से कड़ा परिश्रम कराने में असमर्थ रहता है। पर इस को यह जो रूप देने की चेष्टा की जाती है कि आम मज़दूरों से ही इस आन्दोलन की उत्पत्ति होती है, यह बहुत ही ग़लत और संदेहास्पद है। अवश्य जो परिणाम चाहिये, याने अच्छा काम तथा अधिक काम इस कारण प्राप्त होता है कि एक विराट प्रचार कार्य का यंत्र बिना किसी निरोध के अपना काम करता रहता है। इस यंत्र के अन्तर्गत सोवियट मज़दूर सभायें, साम्यवादी दल, सोवियट सरकार तथा सब पत्र आ जाते हैं।

मज़दूर, इंजीनियर और यंत्र-मज़दूर सभी इस में भाग लेते हैं, और "इच्छापूर्वक" भाग लेते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि अनिच्छा के नतीजे क्या होंगे।

सोवियट मज़दूर सभाओं को सोवियट देशभक्ति तथा साम्यवाद के लिये क्या करना है, ये सारी बातें मज़दूर सभा के मर्यादा पर एक नये प्रकाशन में स्पष्ट किया गया है, यह प्रकाशन अभी हाल की अखिल संघ मज़दूर सभा कांग्रेस में पास किया गया है।

एक तरफ तो यह कहा गया है कि मज़दूर सभायें दल के संगठन नहीं हैं, और इन में मज़दूर नस्ल, जाति, लिंग, धार्मिक विचार आदि में विभिन्नता रखते हुए भी आ सकते हैं, दूसरी तरफ यह स्पष्ट रूप

से कहा गया है कि साम्यवाद दल का प्रधान राजनैतिक भाग स्वीकृत किया जाता है ।

उस प्रकाशन में यह कहा गया है कि मज़दूर सभायें अपने कोटा या कर्तव्य की पूर्ति, उत्पादन मूल्य में ह्रास और किस्म में उन्नति में प्रयत्नशील रहेंगी ।

इन्हीं उद्देश्यों को सामने रख कर मज़दूर सभाओं को यह कहा गया है कि वे मज़दूरों तथा अन्य काम करनेवालों की समाजवादी प्रतियोगिता संगठित करें, और यह चेष्टा करें कि किये हुए काम के अनुसार मज़दूरी की पद्धति तथा मज़दूरी में त्यों-त्यों वृद्धि करने की बात ले कर चलें ज्यों-ज्यों किये हुए काम के गुण या परिमाण में वृद्धि हो । मज़दूर सभाओं को यह अधिकार दिया गया है कि वे व्यवस्थापकों के साथ सामूहिक समझौते करें ।

मज़दूर सभाओं के सदस्यों को यह अधिकार दिया गया है कि वे स्थानीय तथा उच्चतर मज़दूर सभा के कर्मचारियों की आलोचना करें और मैनेजर की तरफ से यदि कोई ज्यादती हो तो उसके विरुद्ध मज़दूर सभा को अपील करें ।

सदस्यों के कर्त्तव्यों में श्रम-अनुशासन का कड़ाई के साथ पालन, सार्वजनिक समाजवादी संपत्ति की रक्षा, व्यक्तिगत हुनर तथा उत्पादन शक्ति की वृद्धि, मज़दूर सभा के नियम का पालन और नियमित रूप से मज़दूर सभा का चंदा याने वास्तविक उपार्जन की एक फी सदी देना है ।

उस नियमावली में यह कहा गया है कि "सोवियट संघ में शोषक वर्ग बिलकुल समाप्त कर दिये गये हैं, मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण

को हमेशा के लिये समाप्त कर दिया गया है, और बेकारी दूर कर दी गयी है।

नियमावली में मज़दूर सभाओं पर यह जिम्मेदारी डाली गयी है कि वे विशेष रूप से नारी कल्याण में भाग लें, राष्ट्रीय उत्पादन तथा समाज जीवन में उन को अधिक से अधिक आकर्षित किया जाय, साथ ही साथ बच्चों के साम्यवादी शिक्षण में भाग लें।

नियमावली में यह भी कहा गया है कि मज़दूर सभायें सर्वहारा अन्तर्राष्ट्रीयता तथा अन्तर्राष्ट्रीय श्रम आन्दोलन, स्थायी शान्ति और लोकतन्त्र के लिये सारी दुनिया में जो संग्राम चला आ रहा है, उस के लिये सहानुभूति उत्पादन करें।

एक दूसरे प्रस्ताव में मज़दूर सभा की कांग्रेस ने सोवियट वैदेशिक नीति का समर्थन किया, और सोवियट सरकार को इस बात के लिये बहुत धन्यवाद दिया कि उस ने संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रस्तावों को पेश किया। कांग्रेस ने अखिल संघीय मज़दूर सभा की कार्य-समिति की मज़दूर सभाओं के विश्व संघ सम्बन्धी नीति की सराहना की, और अन्तर्राष्ट्रीय श्रम आन्दोलन के टुकड़े करने की निन्दा की।

रूस का कितना औद्योगीकरण हुआ है ?

युद्ध के बाद से सोवियट औद्योगीकरण बराबर उन्नति करता जा रहा है।

न केवल युद्धकालीन क्षतियों की पूर्ति कर ली गयी है, बल्कि आज सोवियट उद्योग-धंधा पहले के किसी युग से अधिक विविध है, साथ ही यांत्रिक रूप से अधिक सुसज्जित है। करीब-करीब प्रत्येक क्षेत्र में गुणगत उन्नति हुई है।

जो प्रतिशत आँकड़े प्राप्त हैं उन से यह पता लगता है कि कृषियंत्रों जैसे ट्रैक्टरों, हारवेस्टरों, फसल काटनेवाले यंत्रों, बोने वाले यंत्रों यहाँ तक कि ऐसे सूक्ष्म यंत्र जैसे आलू खोदनेवाले यंत्र तथा रूई नोचनेवाले यंत्रों के उत्पादन में रेखा गणित के तारतम्य से उन्नति हुई है। स्टालिनग्राड में बड़े ट्रैक्टरों के निर्माण पर जोर दिया गया था; बाद में युद्धकाल में इन्हीं कारखानों में टैंक बनने लगे, और ये तब तक बनते रहे जब तक कि जर्मनों ने जा कर उन के जँगलों से हाथ वाले बम नहीं फेंके।

अन्य क्षेत्रों की तुलना में कपड़ा धोने के यंत्रों के जन पैमाने के उत्पादन में सोवियट प्रयास उतने सफल नहीं रहे।

सोवियट द्वारा प्रस्तुत एक कपड़ा धोनेवाले यंत्र का जो वर्णन उस के एक प्रशंसक ने नमूने को दिखाते हुए हमें बताया, उस से पता चला कि

या तो यह नकल है, या आविष्कार है। इस के सम्बन्ध में बताया गया कि यह एक जस्ता से मढ़ा हुआ हौज़ है जिस के अन्दर एक गोल ड्रम है, इस सारे को एक धुरी पर रक्खा गया है जिस से कि वह कुछ एकतरफा तरीके से घूमें जब कि बिजली की मोटर को चालू किया जाय।

इस का एक हाथ से चलाने वाला संस्करण भी था, जिस में मोटर की जगह हैण्डिल या दस्ता लगा हुआ था। अच्छे माडलों पर टैंक के नीचे एक गैस की बत्ती जलती रहती है, जिस से पानी गरम रहे।

सोवियट शिल्प चतुरता की इस विजय का जन पैमाने पर उत्पादन १६४९ की बसंत ऋतु के आरम्भ में होनेवाला था।

युद्ध के पहिले देश में दो ही महत्वपूर्ण मोटर गाड़ियों के कारखाने थे, एक तो मास्को में स्टालिन कारखाना, और गोर्की में मोलोटोव कारखाना। दोनों में अच्छे मजबूत ट्रक उत्पन्न होते थे। इस के अतिरिक्त गोर्की के कारखाने में वस १ का जन पैमाने पर उत्पादन हो रहा था जिसे १९३३ के फोर्ड का अच्छा संस्करण कहा जा सकता है। स्टालिन कारखाने में १०१ जीस उत्पन्न हो रहा था, जो सात सवारियों का ८ सिलिन्डर वाली भद्दी मोटर थी।

मुझे ऐसा स्मरण होता है कि जनरल मोटर के एक प्रतिनिधि को समय-समय पर कार्यवश मास्को आने दिया जाता था, उन्होंने जीस १०१ को देख कर हिसाब लगा कर बताया कि इस के उत्पादन में ७५,००० डालर लगते होंगे।

जीस १०१ का युद्धोत्तर उत्तराधिकारी जीस ११० है। युद्ध के समय स्टालिन कारखाने के कई इंजीनियर तथा नक्शा बनानेवाले अमरीका गये थे, और जीस ११० उन की निरीक्षण शक्ति का

परिचायक है। आधारगत रूप से यह १९४२ का पैकार्ड है, जो स्टालिन को बहुत प्रिय है।

जीस ११० नक्शा, कारीगरी तथा प्रयोग में लाये हुए द्रव्य की दृष्टि से एक ऊँचे दर्जे की मोटर है। इस का उत्पादन दिन में दो से अधिक कभी नहीं हुआ, इस कारण इस की संख्या बहुत कम है।

युद्धोत्तर काल के सोवियट मोटर उद्योग की सब से बड़ी विजय पोबेडा (विजय) नामक गाड़ी है। इस में चार सिलिन्डर हैं और यह गोर्की के मोलोटोव कारखाने में उत्पन्न होता है।

पोबेडा मोटरों की पहिली किश्त १९४७ के मार्च को बाजार में आयी, जिस समय चार महा शक्तियों के वैदेशिक मंत्रियों के सम्मेलन का अधिवेशन होनेवाला ही था।

इस समय पोबेडा १६,००० रूबल पर साधारण नागरिकों को मिल सकती है, और केवल मास्को की सड़कों पर ही १,६०० पोबेडा टैक्सियाँ चलती हैं।

गति, चढ़ने का आराम, साधारण गुण तथा मज़बूती की दृष्टि से पोबेडा अपनी श्रेणी के किसी भी योरोपियन या अमेरिकन किसी भी कार की बराबरी कर सकता है। अदूर भविष्य में गोर्की कारखाना जिम नामक इस से भारी ६ सिलिन्डर वाले माडेल का उत्पादन करेगा।

यूराल पर्वतों के पास स्थित मियास कारखाने में मास्को के स्टालिन कारखाने की ही तरह ट्रकें बनती हैं। मियास स्टालिन कारखाने का ही मानो बच्चा है। इस में सवारी वाली कारें भी बननेवाली हैं। बियेलो रशिया में मिन्स्क में, तथा जार्जिया में नये मोटर के कारखाने बन रहे हैं।

सोवियट उद्योग धंधे की उन्नति में बहुत बाधा इस कारण पहुँचती है कि उस में उस मुक्त प्रतियोगिता का अभाव है, जो अमेरिका तथा ब्रिटिश उद्योगपतियों को सर्वदा यांत्रिक रूप से सजग रखती है।

सोवियट उद्योग धंधे के सामने इस प्रकार की कोई प्रवृत्ति नहीं है कि वह प्रतियोगियों को पछाड़ कर आगे बढ़े, इसी कारण उस में यह प्रवृत्ति है कि वह जाने पहिचाने हुए पुराने नमूनों के इर्द गिर्द में मँडराता रहता है। व्यवस्थापकगण अपनी तरफ से नवीनता को अपनाते नहीं हैं, क्योंकि उस में अनिश्चयतायें हैं, और वे जानते हैं कि असफल होने का नतीजा किस प्रकार व्यक्तिगत रूप से बुरा रहेगा।

इसी प्रकार सोवियट कारखानों के प्रत्येक मैनेजर के सामने यह जो आफत पड़ी रहती है कि जल्दी जल्दी-योजना पूरी हो, इस से परिवर्तन और उन्नति में बाधा पड़ती है। बात यह है कि परिवर्तन तथा उन्नति से सामूहिक रूप से काम बंद हो जाता है, यंत्रों को फिर से ठीक करना पड़ता है इत्यादि, इस का असर उत्पादन की रिपोर्ट पर बुरी तरह पड़ता है।

सोवियट कारखाने का प्रत्येक सावधान तथा बुद्धिमान मैनेजर हाथ के पास कुछ बहुत आसानी से किये जा सकनेवाले काम रखता है, जिस से कि यदि कभी जटिल उत्पादन में कमी आवे, तो वह उन्हें दिखा कर अपनी योजना पूरी कर सकता है।

उदाहरण के तौर पर सूती कपड़ों के वितरण करने वाले सोवियट संगठन ने एक सीने वाले कारखाने को २२०००० रूबल दाम का पापलीन दिया कि उन से पुरुषों की कमीज़ें बनायी जायँ। पर कारखाने के डायरेक्टर ने यह कह कर कमीज़ बनाना अस्वीकार कर दिया कि इस में समय लगता है तथा यह काम जटिल है। उस ने रूमाल सीने के

काम को इस कारण तरजीह दी कि उस से योजना पूरी होती है, यद्यपि उस समय ज़रूरत कमीज़ों की थी।

सब सोवियट धंधों को अब इस प्रकार संगठित किया जा रहा है कि चीज़ों के दाम पर दृष्टि रख कर सब वे चलें, इस प्रकार उत्पादित द्रव्य के गुण तथा उत्पादन कौशल के लिये मैनेजर को जिम्मेदार बनाने की ओर प्रवृत्ति है। पहिले जिस प्रकार व्यवस्थापकों को यह सुविधा थी कि जरूरत पड़ने पर उन्हें राष्ट्र की ओर से सहायता मिलती थी, अब उसे समाप्त कर दिया जा रहा है।

यह जो नया ढंग है, यह तो पहले के अपरिवर्तनवादी व्यापारिक तरीकों में लौट जाना है, और यह एक उदाहरण है कि किस प्रकार जब जरूरत पड़ती है तो सोवियट के नेता पूँजीवादी तरीकों को अपनाने के लिये तैयार हैं।

---

(२)

सोवियट आर्थिक पद्धति में पेट्रोल, डिजेल तथा अन्य इस प्रकार के तेलों की कमी सब से बड़ी त्रुटि सिद्ध होगी, हाँ यदि इस बीच में फौरन तेल की कोई नयी खान आविष्कृत हुई, तो यह विपत्ति बच सकती है।

चूँकि अधिक से अधिक ट्रैक्टर, स्वयं चालित यंत्र, ट्रक तथा मोटरों की संख्या निकट भविष्य में बहुत बढ़ जायगी, इसलिये पेट्रोल की खपत अकल्पनीय रूप से अधिक होगी। और परिस्थिति यह है कि इस समय भी पेट्रोल तथा अन्य तेल मुश्किल से पूरे पड़ते हैं। लुब्रिकेंट तेलों की

कमी के कारण इस बात की बहुत चेष्टा हो रही है कि एक बार इस्तेमाल किये हुए मोटर के तेल को साफ किया जाय तथा उसे बचाया जाय।

इस बीच में रूस की सब से पुरानी और बड़ी तेल की खान जो बाकू में है, वह धीरे धीरे खतम हो रही है, क्योंकि एक के बाद एक कुआँ सूखता जा रहा है। शायद सोवियट संघ की भूमि के नीचे के स्तर पर कहीं पर विशाल परन्तु अज्ञात तैल राशि पड़ी हुई है, पर उस का पता लगाना है। यह मानना पड़ेगा कि खोज पर सरकार प्रति वर्ष अधिकाधिक धन लगा रही है।

समय-समय पर कुछ नयी खानें आविष्कृत होती रही हैं। कई साल पहले बश्कीरिया में ईशियाम्बी नामक स्थान में एक खान योरोप और एशिया की सीमा पर आविष्कृत हुई थी, जिस के सम्बन्ध में यह कहा गया कि यह रूस की सब से बड़ी और पुरानी बाकूवाली खान से कई गुणी बड़ी है। आरम्भ से ही इसे दूसरा बाकू कहा जा रहा है।

यद्यपि यह खान अब सोवियट की नं० २ घरेलू खान के रूप में हो गयी है, फिर भी यह जो भविष्यवाणी की गयी थी कि दस साल के अन्दर यह पुरानी बाकू वाली खान से बढ़ जायगी, वह पूरी नहीं हुई।

इस बीच में इस बात की जी-तोड़ कोशिश जारी है कि बाकू के घटते हुए तेल को बढ़ाया जाय। इस सम्बन्ध में एक नया संगठन दो साल पहले बनाया गया, जो पड़ोस के नये कुओं की तलाश कर रही है, और पुरानी खान से निम्नतर सतह में खोज कर रही है, और साथ ही जिन कुओं को छोड़ दिया गया, उन्हें फिर से चालू करने की चेष्टा हो रही है।

इन सारी बातों के बावजूद गत वर्ष का उत्पादन योजना से ६·२ कम रहा।

आजेरबैजान साम्यवादी दल के मंत्री एम० डी० बाजीराव ने अभी

हाल में स्थानीय दल की कांग्रेस के सामने रिपोर्ट देते हुए सारा दोष तेल खोज करने वाले नये संगठन पर डाल दिया, जिस के सम्बन्ध में यह कहा गया कि वह नये कुएँ प्राप्त करने में असमर्थ रहा। उस ने बाकू तेल ट्रस्ट के प्रधानों पर भी दोष लगाया कि काम्प्रेशन तथा अन्य तरीकों से उन्होंने समाप्तप्राय पुराने कुओं से तेल नहीं खींचा।

उसी कांग्रेस में एक दूसरे वक्ता ने बाजीराव के साथ सहमत होते हुए यह कहा कि खोजकारी लोगों को उचित रूप से भूगर्भ वैज्ञानिक पथप्रदर्शन नहीं प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि उन्हें चाहिये कि आगे बढ़ कर कैस्पियन समुद्र के पानी के नीचे तेल खोजें।

रूस की पुरानी खानों में नं० २ उत्तर काकेशश की ओज़नी खान में तेल के उत्पादन को बढ़ाने के प्रयास इस कारण व्यर्थ रहे कि उस में तेल सीमित है, और घट रहा है। कैस्पियन के उत्तर पूर्वी किनारे पर स्थित एम्बा खान जिसे गत ५० साल से काम में लाया जा रहा है, युद्ध काल में १९४३ में अपनी पराकाष्ठा को पहुँच गयी जब कि १९४० के, मुकाबिले में उसकी उपज ४१ फी सदी बढ़ी। तब से उत्पादन बहुत घट गया। स्थानीय दलवाले इस का कारण बताते हुए उसी प्रकार तेल खोज करने वालों को दोष देते हैं, और यह कहते हैं कि पुराने कुओं के अच्छी तरह शोषण न होने के कारण ही ऐसा हुआ।

उजबेकिस्तान में भी तेल की खोज जारी है, जहाँ स्थानीय दल के अनुसार कई बिंदुओं पर थोड़ा-थोड़ा तेल मिला है, जिस से यह आशा बँधती है कि शायद बड़ी खान मिले। अब तक ८० कुएँ खोदे गये हैं।

मध्य एशिया में किरगिजिया इलाके के जलालाबाद में छोटे-मोटे कुएँ मिले हैं, पर यहाँ भी खोज तथा शोषण के कार्य से भी लक्ष्य पूरा नहीं हुआ।

युक्रेन दल की कांग्रेस के सामने रिपोर्ट देते हुए मंत्रिप्रवर निकिटाकुश्चेव ने यह कहा कि ल्वाऊ के इर्द गिर्द पश्चिमी युक्रेन में तेल की बड़ी सम्भावना है, पर उन्होंने ब्योरा नहीं दिया। ऐसा मालूम होता है कि रूस ने युद्ध के अन्त में पौलैंड को ल्वाऊ नामक स्थान देने से जो इन्कार किया, उस के पीछे सब से बड़ा कारण यही तेल प्राप्त करने की सम्भावना थी।

एक दूसरी दुराशा यह है कि जार्जिया में तेल मिलेगा, पर अब तक खोज का कार्य जोश के साथ चलाये जाने पर भी असफल रहा। जार्जिया के साम्यवादी दल के मंत्रीवर चर्कबियानी के अनुसार जार्जिया में बहुत दिनों से तेल की खोज जारी है, पर अब तक औद्योगिक महत्त्व की तेल की कोई खान प्राप्त न हो सकी।

फिर भी चर्कबियानी ने अपने श्रोताओं को यह आश्वासन दिया था कि "हमारे प्रजातन्त्र की गहराइयों में तेल का बहुत बड़ा परिमाण छिपा हुआ है।" उन्होंने यह भी कहा कि यदि ढंग से खोज जारी रही, और ठीक से तेल क्षितिजों का पता लगाया गया, तो सब काम बनेगा। उन्होंने यह कहा कि खोज करने वालों को चाहिये कि वे जल्दी-जल्दी गहराई तक खोज करें, तब तो तेल मिल कर ही रहेगा। उन्होंने इस बात के लिये दोष दिया कि खोज करने वाले गहराई तक खोद नहीं रहे हैं।

एक देश जहाँ कि युद्ध सम्बन्धी साधनों के विषय की सूचनायें बिल्कुल अति गोपनीय समझी जाती हैं, वहाँ इस प्रकार दल के बड़े नेताओं की ओर से आश्चर्यजनक रूप से स्पष्ट और क्षतिकर वक्तव्यों से ज्ञात होता है, याने उन्हें ठीक ढंग से पारायण करने पर ज्ञात होता है कि सोवियट संघ में तेल की कमी हो रही है। नहीं तो इस प्रकार

से बड़ी रकमें खर्च नहीं की जातीं, और साथ ही साथ बड़े प्रयास इस प्रकार व्यर्थ की खोजों में लगाये न जाते कि तेल मिला तो मिला नहीं तो कोई बात नहीं।

यहाँ तक कि एस्टोनिया में जो छोटी सी खान है और जिस में देश की दस लाख जनता की आवश्यकता की पूर्ति होती थी, अब अन्तिम बूँद तक शोषित हो रही है।

इसी परिस्थिति से यह भी ज्ञात होता है कि सोवियट सरकार विदेशों की खानों पर क्यों लुब्ध दृष्टि डाल रही है। क्रेमलिन को उत्तर ईरान की तेल सम्बन्धी रियायतों की समाप्ति पर जो दुःख होगा, वह कल्पनीय है।

इस लिये सोवियट तेल से धनी मध्य पूर्व में दिलचस्पी ले रहा है, रूमानियाँ के सारे तेल को हड़प रहा है, रूमानियाँ की खानों से बृटिश और अमेरिकन पूंजी को निकाल रहा है, आस्ट्रिया की जिस्टेर-डोर्फ खान पर जोंक-सा चिपट गया है, रासायनिक उपाय से तेल बनाने की ओर ध्यान दे रहा है, और अन्त में पूर्वी जर्मनी को तेल देने में कटौती कर रहा है।

बहुत से निरीक्षकों का यह कहना है कि रूस की तेल सम्बन्धी इसी कमजोरी के कारण जो औद्योगिक उन्नति के कारण और भी बढ़ गयी है, रूस इस समय किसी बड़े पैमाने पर लड़ाई की विपत्ति उठाने को तैयार नहीं है।

महान् चुप्पी

सोवियटों की सब से प्रभावोत्पादक युद्धोत्तर विजय इस बात में रही है कि उन्होंने सम्पूर्ण रूप से नष्ट इलाकों का पुनर्निर्माण किया, और औद्योगिक उत्पादन को युद्ध के पहले के किसी समय से आगे बढ़ा दिया।

सरकारी आँकड़ों के अनुसार खास रूसी समाजवादी प्रजातन्त्र में ४०७००० देहाती मकान बनाये गये, और यह १९४६ से १९४८ याने ३ साल में किया गया। इसी बीच में १८२००० फार्म की इमारतें बनीं। युक्रेन में जिसे जर्मनों ने सम्पूर्ण रूप से जीत लिया था, ८ ००० देहाती मकान बने, या उन का उद्धार हुआ, और साथ ही उसी जमाने में २००००० फार्म की इमारतें बनीं।

१९४८ में सारे अनाज की उपज ७००००००००००००० पूड (१८ सेर = १ पूड) हुए जो करीब-करीब १९४० की उच्चतम संख्या तक पहुँच गयी थी। १९४८ में ही उद्योग के क्षेत्र में ही कोई चार हजार कारखाने, खानें इत्यादि चालू हो गयीं। उसी साल कुल औद्योगिक उपज १९४० के मुकाबिले में १८ फी सदी, और १९४७ के मुकाबिले में २७ फी सदी बढ़ चुकी थी।

युद्ध विध्वस्त क्षेत्रों में १९४७ की तुलना में १९४८ में उन्नति ४ फी सदी अधिक थी, इस वृद्धि का कारण यह था कि युद्ध के दौरान में

डानवास्की बड़ी औद्योगिक इकाइयों का पुनरुद्धार हो कर उन्हें चालू किया गया।

सोवियट औद्योगिक उत्पादनों के सम्बन्ध में एक मात्र आँकड़े इस प्रकार दिये जाते हैं कि पहले साल के मुकाबले में कितनी फी सदी उन्नति हुई। रहे आधारभूत आँकड़े, याने किस प्रकार यह फी सदी वाला हिसाब किया गया, तुलना के कौन से प्रतीक तथा मानदंड प्रयुक्त हुए, कौन से नए ढंग इस्तेमाल किये गये, जैसे १६४७ के अंत में रूबल का पुनर्मूल्यन हुआ, यह सब बातें समाजवादी संघ के मंत्रिमंडल के केन्द्रीय आँकड़ा प्रशासन विभाग द्वारा बहुत प्रयास से छिपाये हुए रहस्य हैं।

उत्पादन सम्बन्धी आँकड़े बहुत से देशों में बिल्कुल सार्वजनिक सम्पत्ति है, पर मान भी लिया जाय कि ऐसे आँकड़ों से सोवियट संघ की युद्ध शक्ति का पता लग सकता है, इस लिये उन्हें छिपाया जाता है, फिर भी यह समझ में नहीं आता कि उपभोग की बहुत ही साधारण वस्तुओं के आँकड़ों के छिपाने में क्या तत्त्व है। सूती कपड़ों, गैलोशों तथा सासेजों के उत्पादन के आँकड़े उसी प्रकार से अज्ञात हैं जिस प्रकार से टैंक और हवाई जहाजों के आँकड़े छिपाये जाते हैं।

आँकड़ों की चाभी के बिना जो फी सदी के आँकड़े दिये जाते हैं, वे केवल एक गुप्त लिपि के रूप में हैं, जिस से रोशनी प्राप्त होने के बजाय मामला और रहस्य में घिर जाता है, और यही शायद इन रिपोर्टों के बनाने वालों का उद्देश्य है।

फी सदी वाले तरीके में बस एक ही अपवाद है कि सालाना बजट प्रति बसंत ऋतु को नियमित रूप से पेश होता है और उस में खुले आँकड़े रहते हैं उस में फी सदियों के बदले करोड़ और दस करोड़ की बातचीत होती है। पर उस में जो श्रेणियाँ दिखायी जाती हैं, वे जहाँ तक

आर्थिक मामलों का सम्बन्ध है बहुत अस्पष्ट रहते हैं। उद्योग धंधे में बहुत बड़ा आँकड़ा दिखाया जाता है, पर मूल्य के सामान इतने अस्पष्ट हैं कि बजट से योजना पूर्ति की रिपोर्ट के मुकाबिले में कोई अधिक खबर नहीं मिलती। बजट के सम्बन्ध में अधिक से अधिक इतना ही कहा जा सकता है कि खर्च या आय के साधनों का साथ ही पूँजी के व्यय का कुछ हद तक सांस्कृतिक कार्यों, शिक्षण तथा सामाजिक सेवाओं का अन्दाजा लग जाता है।

बहुत आश्चर्य की बात है कि राष्ट्रीय बजट में वैदेशिक वाणिज्य को न तो आय में ही दिखलाया जाता है न व्यय में ही, और ऐसा उस हालत में जब कि वैदेशिक वाणिज्य पर राष्ट्र का एकाधिकार है। छात्र को किसी भी प्रकाशित सोवियट पुस्तिका या सूचना से इस सम्बन्ध में कोई रिपोर्ट मिल सकती है। अजीब बात यह है कि चैको-स्लोवाकिया से बाटा के जूते के आयात तथा उसी देश से यूरेनियम के आयात पर एक ही सी चुप्पी रखी जाती है।

पूर्वी जर्मनी से चालू उत्पादन में से क्षति पूर्ति के रूप में जो माल लाये जाते हैं उन के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार आँकड़ों का ब्लेक आउट रहता है। फिर भी केवल मोटर तथा बिजली के सामान लिये जायँ, तो आँकड़े दसियों लाख रूबल तक पहुँचते हैं, और इन में से सारे का सारा मुनाफा ही है। किसी भी सोवियट नगर की सड़कों पर वैवेरियन मोटर वर्क्स सूचक बी. एम. डब्ल्यू. चिह्नित दो दरवाजे वाली कारें यत्र-तत्र इतनी दिखायी पड़ती हैं कि उन की संख्या किसी भी एक कम्पनी की कारों से अधिक है।

इस प्रकार जो अति गोपनीयता की नीति बरती जाती है, वह बहुत कुछ युद्ध के बाद की उपज है। युद्ध के पहले राष्ट्रीय योजना-

आयोग की तरफ से बहुत से विषयों पर ब्योरेवार आँकड़े दिखाये जाते थे।

किसी भी रूप या आकार में सोवियट शास्तिमूलक सुधारात्मक श्रम से परिचालित कामों का कोई ब्योरा प्रकाशित नहीं किया जाता, यद्यपि परिस्थिति यह है कि गुप्त पुलिस द्वारा परिचालित इस प्रकार के कारखानों या कर्म स्थान सोवियट आर्थिक पद्धति में कोई तुच्छ स्थान नहीं रखते।

जैसा कि सभी मामलों में वे करते हैं, सोवियटों का दृष्टिकोण आँकड़ों पर दल की बतायी हुई नीति तथा उसकी आवश्यकताओं के अनुसार है। आँकड़ा शास्त्रियों को पहले ही से बता दिया जाता है कि उन के आँकड़ों को क्या दिखाना चाहिये और यदि आँकड़े वांछित फल नहीं देते, तो आँकड़े तथा आँकड़ा शास्त्री दोनों के लिए उतनी ही आफत है।

इस रुख का एक बहुत ही सुन्दर उदाहरण १९३७ की जनगणना के आँकड़ों के दबा दिये जाने से प्राप्त होता है। इन को प्रकाशित करने के बजाय अखबारों ने यह अभियोग लगाया कि प्रति क्रान्तिकारी तोड़-फोड़ वालों ने जनगणना कार्यालय में घुस कर आँकड़ों को विकृत किया है। विश्वस्त सूत्र से पता लगा है कि झगड़ा इस बात का था कि जनगणना की प्रश्नावली के उत्तर में यह मालूम हुआ था कि धर्म में विश्वास रखने वाले लोगों की बहुत बड़ी संख्या है। जो कुछ भी हो १९३९ में धर्म सम्बन्धी प्रश्न को हटा कर नये सिरे से जनगणना हुई।

१९३९ की जनगणना प्रकाशित हुई। वह एक ऐसी बात है जो आज शायद ही सम्भव हो, क्योंकि सोवियट सरकार अपने वर्तमान मानसिक ढाँचे में शायद यह समझे कि जन्म-मृत्यु सम्बन्धी यह आँकड़े गुप्त बात है।

जो कुछ भी हो अब आगे किसी जनगणना के होने की खबर नहीं है, यद्यपि इस बीच में युद्ध के कारण इस विषय की परिस्थिति में यथेष्ट परिवर्तन हुए हैं, फिर बड़े भूभागों को अपने अन्तर्गत कर लेने के कारण लाखों की संख्या में अधिवासी भी बढ़े होंगे। सोवियट अर्थशास्त्री तथा समाज शास्त्री प्रकाश के लिये प्रस्तुत अपनी पुस्तकों में १६३९ के आँकड़ों को ही प्रयोग में लाते हैं। इसी प्रकार अधिकारियों ने इस बात की अनुमति नहीं दी कि युद्धोत्तर मास्को की नयी टेलीफोन डायरेक्टरी प्रकाशित की जाय, यद्यपि इस समय तक १९३९ का संस्करण बिल्कुल बेकार हो चुका है।

यदि अधिकृत प्रकाशित आँकड़ों के आगे कोई सोवियट के विषय में कुछ जानने का प्रयास करे, या कोई बुद्धिसंगत तथ्य प्राप्त करे, तो यह आर्थिक गुप्तचर होने की श्रेणी में आ जावेगा, और यह तो मालूम ही है कि राष्ट्र को गुप्त बातों की रक्षा के लिये सोवियट कानून में बहुत कड़ी से कड़ी से कड़ी सज़ा देने की व्यवस्था है।

साम्यवादी दल के स्कूलों के छात्रों के अलावा जिन की पुलिस द्वारा बड़ी सावधानी से छानबीन और फिर छानबीन की जाती है तब कहीं स्कूल में भर्ती की जाती है. अर्थशास्त्र या समाजशास्त्र के छात्र के लिये यह परिस्थिति बड़ी अजीब है। फिर भी सोवियट देशों की यही परिस्थिति है, और यहाँ की सैकड़ों बाधाओं में से यह एक बाधा है जिस के द्वारा विचार तथा ज्ञान के मुक्त प्रवाह को रोका जाता है, जो मानवीय प्रगति के लिए नितान्त आवश्यक है।

जहाँ तक विदेशी सम्वाददाताओं का सम्बन्ध है, उन के भेजे हुए सम्वादों से सोवियत प्रकाशनों से लिये आँकड़े भी काट दिये जाते हैं।

साइबेरिया—रूसी उद्योग धन्धों का गुप्त घर

५०० सालों से रूसी उपनिवेश स्थापित करनेवाले बराबर अपनी सीमाओं को पूर्व में साइबेरिया के विराट अनजाने इलाकों की ओर तथा उत्तर में जमे हुए आरकटिक समुद्र की ओर धकेलते रहे हैं। दूसरे महा-युद्ध ने इस ऐतिहासिक प्रगति को और भी बल दिया क्योंकि जर्मन हमले के सम्भावनायुक्त इलाकों से बड़े से बड़े कारखानों को उठा कर यूराल पर्वत तथा उस के उस पार के अन्तहीन इलाकों में ले जाया गया।

आज सोवियट का आर्थिक आकर्षण केन्द्र बराबर उसी तरह पूर्व की ओर जा रहा है। युद्ध काल के रणनीति सम्बन्धी पाठों को अच्छी तरह सीखा जा चुका है। उत्तर के इलाके भी बराबर विकसित किये जा रहे हैं।

साइबेरिया की कुजबास याने कुजनेटस्क कोयले की खान, मध्य एशिया, दूर पूर्व, दूर उत्तर, सर्वत्र विशाल नये आत्मयथेष्ट औद्योगिक केन्द्र निर्मित किये जा रहे हैं, जो कच्चा माल तथा ईंधन के सम्बन्ध में ही नहीं, श्रम शक्ति तथा स्थानीय रूप से उत्पन्न खाद्यान्न के अपने साधन रखते हैं।

यूराल पर्वत के लोहा तथा इस्पात उत्पादन केन्द्र मैगनिटोगोरस्क का सूत्रपात मैगनिटो पहाड़ के पास १६२८ में हुआ था। यह पहाड़

लोहे से पूर्ण है। इसी से केन्द्र का नाम पड़ा, और इसी से इस की विशाल भट्ठियों के लिये लोहा भी मिलता है। १९३९ में यहाँ की जन-संख्या कोई १½ लाख थी। अब यह अन्दाज है कि संख्या दुगनी हो गयी होगी। यह दावा किया जाता है कि मैगनिटोगोरस्क की भट्ठियों में जितना लोहा और इस्पात गलाया जाता है, उतना जारशाही के जमाने के पूरे रूस में गलाया नहीं जाता था।

मैगनिटोगोरस्क की तुलना में मियास का कारखाना एक बच्चा है। यूराल पर्वतों की प्रधान माला के जंगलों में १९४२ में मुख्यतः मास्को के स्तालिन मोटर कारखाना से लाये हुए यंत्रों के सहारे एक नया मोटर कारखाना उस आम योजना के एक भाग के रूप में खोला गया, जिस के अनुसार उद्योग-धन्धों को शत्रु की मार से हटा कर स्थापित किया जा रहा था। यंत्र के साथ-साथ लोग भी आये।

युद्ध के बाद इन में से अधिकांश को स्थायी रूप से जंगल में रहने के लिये राजी किया गया, और मियास कारखाना फलता-फूलता रहा। इस समय यहाँ ट्रकों का जन पैमाने पर निर्माण हो रहा है, और जल्दी ही सवारी की कारें भी निर्मित होंगी। इन बातों से कारखाने के इर्द-गिर्द एक नया सोवियट नगर बस गया।

मास्को के बहुत से कारखानों ने इसी प्रकार युद्ध के जमाने में पूर्व की ओर बच्चे दिये, जिन में विशाल कागानोविच बालबेयरिंग कारखाना है, जिस ने अपने कई भागों को यूराल में भेज दिया। युद्ध के कारण लेनिनग्राड से जो उद्योग धन्धे हटा दिये गये, उन के नगर का पूरा नक्शा स्थायी रूप से बदल गया है क्योंकि जो कारखानों के साथ नये स्थानों में गये थे, उन में से बहुत कम लोगों को लेनिनग्राड में लौटने की अनुमति दी गयी है।

यह शायद रूसी इतिहास की धारावाहिकता पर एक अजीब टीका है कि लेनिनग्राड से इन निकाले हुए लोगों के पूर्वज जो अब अपने प्रिय नगर से जंगल में बसने के लिये बाध्य किये गये हैं, इसी प्रकार पीटर महान के द्वारा से २०० साल पहले उस समय जंगल उन की नयी राजधानी में बसने के लिये बाध्य किये गये थे।

यूराल इलाके का एक दूसरा नगर जो युद्ध प्रयास के कारण उत्पन्न हुआ वह है क्रास्नोट्रिन्स्क जहाँ विशाल बोगोस्लोवस्की अलुमिनियम कारखाना निर्मित हुआ है। जन-संख्या के आँकड़ों के अभाव में इस के आकार का इसी से पता लगता है कि यहाँ २० प्राथमिक स्कूल तथा एक इंजीनियरिंग स्कूल है।

इसी प्रकार से उचित नाम युक्त अस्बेस्ट नगर है, जहाँ अस्बेस्टस बनता है। इस वस्तु के निर्माण में सोवियट सरकार चालू पाँच वार्षिक योजना में २० करोड़ रूबल लगा।

मैगनिटोगोरस्क के कोई एक हजार मील पूर्व में पश्चिमी साइबेरिया के कुजनेटस्क इलाके में स्टालिनस्क नामक नगर है, यहाँ पर एक धातु-वाला विशाल कारखाना है। क्रांति के पहिले यहाँ पर जो कुजनेटस्क गाँव था, उस में चार हजार अधिवासी थे। आज स्टालिनस्क की आबादी २५०००० से अधिक है।

विभिन्न पाँच वार्षिक योजनाओं के फलस्वरूप लोहा और कोयले के उद्योग धंधे के क्षेत्र में केमेरोवो का निर्माण हुआ है, यह कुजनेटस्क इलाके का शासन प्रबन्ध तथा कोयला सम्बन्धी केन्द्र है। इस इलाके में प्रोकोपिएवस्क आन्जेरो-सुडजेनस्क, और लेनिनस्क कुजनेटस्की नामक नये नगर बस गये हैं।

आमूर नदी के निचले हिस्से में जो कि उन दिनों बिलकुल जंगली

इलाका था कोमसोमोल्स्क नामक युवकों का नगर १६ साल पहिले स्थापित किया गया था। साम्यवादी युवक संघ के पाँच हजार युवकों ने मिल कर इस नगर की स्थापना की थी। आज इस नगर की आबादी डेढ़ लाख से ऊपर है। इस के उद्योग धंधों में सोवियट दूर पूर्व की सब से बड़ी धातु मिल आमूर स्टील इस्पात मिला है। यहाँ पर जहाज बनाने के ऐसे कारखाने हैं, जहाँ महा समुद्रगामी जहाज निर्मित होते हैं। इसी प्रकार कई इंजीनियरिंग के कारखाने हैं। साथ ही ३६ स्कूल, १५ क्लब और १ स्टेडियम भी है। सोवियट संघ के बिलकुल उत्तर पश्चिम किनारे पर जहाँ कोयला प्रायद्वीप आर्कटिक महासागर में बढ़ जाता है रावेस्क नगर है, जो सोवियट अपाटाइट धंधे का केन्द्र है, और मोंचेगोरस्क है जो ताँबा तथा निकल का एक उन्नत केन्द्र है।

पिचोरा के किनारों पर वोरकुटा नामक नगर है। इसी के पास पियोरा नदी आर्कटिक महासमुद्र में मिलती है। १९४२ के पहिले पियोरा इलाका आर्कटिक का वीरान बर्फीला इलाका था, यद्यपि इस के पहले ही खोज करने वालों ने यहाँ कोयले की अच्छी खानों का आविष्कार किया था।

जब जर्मनों ने अपने हमले के द्वारा डानवास इलाके के कोयलों से सोवियट को वंचित कर दिया, तो सोवियट योजना शास्त्रियों को एकाएक पिचोरा इलाके के कोयले की याद आयी। फौरन बात की बात में रिकार्ड समय के अन्दर पिचोरा इलाके को मुख्य सोवियट रेल लाइन से उत्तर जंगलों के बीच से जोड़ते हुए एक लाइन की स्थापना हो गयी। कोयले की खान में मशीनें लगा दी गयीं, और आज वहाँ बड़े पैमाने पर कोयला निकाला जाता है।

इसी प्रकार वोरकुटा नगर का भी जन्म हुआ, और इस में अब कई दस हजार निवासी बसे हुए हैं। इस में संगीत तथा नाट्यशाला के अलावा एक खानविद्या सम्बन्धी स्कूल भी है। यथा समय पिचोरा के कोयले उत्पादक केन्द्र के साथ मैगनिटोगोरस्क इलाके का सीधा सम्बन्ध जोड़ दिया जायगा, और इस प्रकार यूराल की इस्पात मिलों को ऊँचे दर्जे का कोयला पहुँचाया जायगा।

कजाकिस्तान नामक मध्य एशिया के प्रजातन्त्रों में स्थित कारागांडा कोयले का महत्वपूर्ण उत्पादन स्थल है। गत शताब्दी के मध्य भाग में पहले पहल वहाँ कोयले का पता लगा था, और ऊपाकोव नामक एक व्यापारी ने इस पर "हमेशा के लिये" अधिकार प्राप्त कर लिया था। कोई पैंतिस साल बाद उपाकोव के उत्तराधिकारियों ने इस अभी तक काम में लायी हुई खान को फ्रेंच खरीददार के हाथ बेच दिया, जिस ने इसे एक बृटिश कम्पनी के हाथ बेचा। इस कम्पनी ने भी केवल एक ही जगह से कोयला निकालने का काम जारी किया।

आज कोड़ियों शैफट काम कर रहे हैं, और प्रति वर्ष कई करोड़ टन कोयला निकाला जाता है, और भूगर्भ वैज्ञानिकों का कहना है कि लाखों अरब टन कोयला अभी और निकलेगा। १९३९ में कारागांडा में १६६००० लोग रहते थे, पर इस समय वहाँ २५०००० लोग रहते हैं।

कजाकिस्तान में एक महत्त्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र बलखाश है, जो तांबे का एक बड़ा केन्द्र है।

एम० वी० डी—जो सर्वोपरि है

मास्को में रहते समय अंतिम सप्ताहों में हमें इस बात का भीतरी ज्ञान हुआ कि सोवियट पुलिस किस प्रकार कार्य करती है। जिस शर्तनामे तथा भद्रता के कारण साधारण रूप से विदेशी इस दैत्य के जिसे हम "चीज" कहते थे बहुत घनिष्ट सम्पर्क से बचे रहते हैं, उन्हें ताक पर रख दिया गया था।

अब वे जंगल से झाँक कर ही संतुष्ट नहीं थे। अब "चीज़" ने हमारे घरों की निजी एकान्तता पर हमला कर दिया था, वह अब हमारे कंधों के ऊपर से झाँकती थी, और हमारी पीठ पर उस की सांस आ लगती थी। हम ने एकाएक यह अनुभव किया कि हमारे अमेरिकन पासपोर्टों के बावजूद "चीज़" के विरुद्ध उसी प्रकार कोई कानूनी अधिकार नहीं था, जैसे हमारे इर्द गिर्द करोड़ों सोवियट नागरिकों को कोई अधिकार नहीं था।

लेनिन ने अपने प्रसिद्ध लेख "राष्ट्र और क्रान्ति" में राष्ट्र रूपी यंत्र को एक नग्न, अनियंत्रित, दमनकारी शक्ति के रूप में चित्रित किया जो थोड़े से आदमियों के हाथों में सेना तथा पुलिस शक्ति के रूप में असहाय जनता पर अपनी इच्छाओं को लादता रहता है। यद्यपि लेनिन के मन में ज़राशाही का राज्य था, जिसे वे नष्ट करने पर तुले

हुये थे, अब सोवियट पुलिस राष्ट्र इस धारणा की कार्बन से की हुई नकल के रूप में प्रमाणित हुई है ।

सोवियट पद्धति ने जार की तानाशाही के हाथों से इस यंत्र को याने सेना, पुलिस विशेषकर जेलों तथा कैदी बस्तियों को ले लिया । इस ने इस उत्तराधिकार को इस प्रकार विस्तृत तथा पैना बनाया कि निकोलस प्रथम तथा उस की पुलिस और निकोलस द्वितीय तथा उस का ओखराना याने गुप्त पुलिस इन के मुकाबले में महज शौकिया काम करने वाले मालूम होंगे ।

जार की तानाशाही अपने सब से अच्छे दिनों में भी स्वतन्त्रता की कभी न दबने वाली आवाज को सम्पूर्ण रूप से चुप नहीं करा सकी थी । उन्नीसवीं सदी के रूसी बौद्धिक दैत्यों ने आमरण सरकार के साथ लोहा लिया, और यद्यपि कई बार उन पर भयंकर अत्याचार हुए, फिर भी उन्होंने खेत नहीं छोड़ा । पर वर्तमान शासकगण पुश्किन, गोगोल, बेलिनस्की, स्टाल्टिकोव-श्चेड्रीन या टालस्टाय को इस के अत्याचारों की निन्दा करने, इस के अन्यायों की आलोचना करने, इस की आत्मस्फीति को फोड़ने अथवा इस की धोखेबाजी का मजाक, उड़ाने नहीं देंगे । वे इस बात को अच्छी तरह जानते हैं कि किस प्रकार जरा भी असंतोष या विद्रोह को आरम्भ में ही गला घोंट कर मार देना चाहिये । जार की तानाशाही और सोवियट पुलिस राष्ट्र में फर्क यह है कि जब लेनिन को साइबेरिया में देश निकाला दिया गया था, तो उन्हें अपने साथ अपने पुस्तकालय को ले जाने तथा क्रान्तिकारी लेखन को जारी रखने दिया गया था ।

जारशाही के जमाने में व्यक्ति को तानाशाही की ज्यादतियों के मुकाबले में कुछ संरक्षण प्राप्त थे, पर सोवियट व्यवहार तो

किसी प्रकार के अविच्छेद्य मानवीय अधिकार तथा अपनी शक्ति के एकाधिकार में किसी प्रकार की सीमा को स्वीकार नहीं करता।

सामाजिक ठेका या इकरारनामा के क्रम को उलटते हुए सोवियट राष्ट्र न तो जनता की इच्छा से बनता है, और न उस की उपज है। नागरिक ही राष्ट्र की उपज समझे जाते हैं, और उन्हें केवल ऐसे ही अधिकार तथा स्वतन्त्रतायें प्राप्त हैं जिन्हें राष्ट्र उन को देता है, और राष्ट्र को यह अधिकार है कि जब चाहे तब इन अधिकारों को भी मौकूफ कर दे।

बड़ी अजीब बात है कि सोवियट का स्तालिन विधान बहुत से नागरिक अधिकार देता है जिन में छापेखानों, बोलने, सभा करने की स्वतन्त्रता है, न्यायपूर्ण मुकदमा तथा अदालतों की स्वतन्त्रता की गारन्टी है। पर सोवियट के कथित मुक्त चुनावों तथा सोवियट संसद की तरह ये सारी बातें केवल दिखावा मात्र हैं।

शक्ति का सारा याने सारी शक्ति गृह मंत्रालय में जिस के रूसी नाम के प्रथम अक्षरों को लेकर एम. वी. डी. बनता है न्यस्त है। इस के नाम मात्र से ही सोवियट रूस में लोगों में कँपकँपी आ जाती है, यहाँ तक कि बाहर भी इस का दबदबा छाया हुआ है।

एम. वी. डी. अपने कार्यों के लिये क्रेमलिन के उच्चतम नेतृवर्ग के अलावा किसी के प्रति जिम्मेदार नहीं है। किसी भी मंत्रालय या सरकारी संस्था को यह साहस नहीं है कि इस का विरोध करे, और मैं ने देखा है कि ऊँचे से ऊँचे अफसर इस के अक्षरों को देखते ही काँपने लगते हैं।

जिस प्रकार से सोवियट विधान सारी व्यक्तिगत स्वतन्त्रताओं को कागजी रूप से मानता है, पर उन्हें व्यवहार में नहीं लाया जाता,

उसी प्रकार से लोकतांत्रिक समाज की सारी शब्दावली अपनायी गयी है, और एक अजीब प्रक्रिया से प्रत्येक शब्द को बिलकुल उस का विरुद्ध अर्थ दिया गया है ।

इस प्रकार "लोकतन्त्र" के बहाने "अधिनायकत्व", "इच्छाकृत" के बदले "बाध्यतामूलक", "स्वतन्त्र चुनाव" के बदले "एक दलीय बिल्कुल जबरदस्ती से पर्ची डलवाना", "शांतिप्रिय" के बदले "युद्धप्रिय", पढ़ा जाय तो अधिक गलती न होगी ।

सोवियट पद्धति के अनुसार भूमि, उद्योग धंधे तथा अन्य राष्ट्रीय धन की तरह लोग सरकारी सम्पत्ति बन गये हैं । इस प्रकार यह राष्ट्र का अधिकार बन गया है कि व्यक्ति क्या पढ़ता है या सोचता है वह उस का नियंत्रण करे तथा उसे सब तरह से अनधिकृत सूचनाओं से बचावे ।

इसी लिए राष्ट्र को यह अधिकार है कि वह नागरिक को यह बताता है कि वह कहाँ रहे तथा काम करे, उसे अपने काम तथा वासस्थान से अपने पहले अर्द्ध दास पूर्वजों की तुलना में अधिक दृढ़ता से बाँध दो ।

इसी लिये राष्ट्र को यह अधिकार है कि वह उसे बताये कि वह किस से शादी करे और किस से न करे, उस के कितने बच्चे हैं या नहीं हैं, उन की संख्या पर उसे सज़ा अथवा पुरस्कार दे ।

इसी लिये राष्ट्र को यह अधिकार है कि वह उस के पत्रों को खोले, उसे बुला कर पूछे या धमकाये, बिना किसी बहाने या जवाबदिही किये उस के घर की तलाशी ले ।

अंत में इसी लिये उसे यह अधिकार है कि जब चाहे तब उसे जो थोड़ी बहुत चलने फिरने की स्वतंत्रता मिली है, उसे गिरफ्तारी के

द्वारा छीन ले, और कोई हैबियस कार्पस भी न हो सके।

सोवियट संघ में कोई भी सरकार पर मुकद्दमा नहीं चलाता, और न उस के कार्यों के कानूनी न होने पर कोई झगड़ा करता है। तानाशाही शक्ति के भयंकर दबाव के विरुद्ध व्यक्ति को कोई भी कानूनी संरक्षण या प्रतिकार प्राप्त नहीं है, वह निर्दय की दया पर निर्भर है।

मुझे स्मरण है कि कैसे सोवियट संघ से प्रकाशित हास्य रस के साप्ताहिक 'क्रोकोडिल' ने एक बार एक अमेरिकन जेल के आजन्म कैदी की कहानी छापी थी जिस ने प्रकाशक पर दिवानी दावा किया था, और विजय हुई थी। ऐसा मालूम होता है कि क्रोकोडिल को इस कहानी में हास्य रस इस लिये ज्ञात हुआ कि आजन्म कैदी ने मुकद्दमा जीता था। भला सोवियट संघ में कोई इस बात की कैसे कल्पना कर सकता है कि आजन्म कैदी मुकद्दमा जीत सकता है। अमेरिकन कानूनों के अनुसार आजन्म कैदी के भी कानूनी अधिकार हैं, यह 'क्रोकोडिल' की बुद्धि के बाहर था।

राष्ट्रीय सम्पत्ति के रूप में नागरिक के सम्बन्ध में धारणा इस बात को बताती है कि सोवियट नागरिक यदि निष्क्रान्त है, तो वह चाहे लौटना चाहे या न चाहे सोवियट सरकार यह क्यों समझती है कि उसे बुला लेने का अधिकार उसे है।

सोवियट पद्धति में व्यक्तिगत अधिकारों की अस्वीकृति के साथ-साथ अपने नागरिकों को बाहर जाने देने का अधिकार भी अस्वीकृत है। जब सोवियट नागरिक बाहर जाने की दरख्वास्त देते हैं तब पुलिस राष्ट्र के तरीके सब से स्पष्ट रूप से सामने आते हैं।

कोई रास्ता नहीं

मास्को में प्रचलित एक कहानी यों है कि ईवान पेट्रोविच नामक एक व्यक्ति सरकारी काम पर रूस से बाहर भेजा गया। उस ने वारसा जहाँ वह पहले पहल ठहरा गृह सचिवालय को तार दिया "मुक्त और स्वतन्त्र पोलैण्ड की जय"। इस के बाद उस ने प्राग से तार दिया "मुक्त और स्वतन्त्र चैकोस्लोवाकिया की जय"।

इसी प्रकार से पेट्रोविच ने रूमानिया, बलगेरिया, हंगरी तथा अन्यान्य रूस के पिछलग्गुए देशों से तार दिये। इस के बाद बहुत दिनों तक उस का कोई संदेश प्राप्त नहीं हुआ। फिर स्विटजरलैंड से यह संदेश आया "मुक्त और स्वतन्त्र पेट्रोविच की जय"। कहानी के अनुसार मास्को ने इस विशेष ईवान के विषय में इस के आगे कुछ नहीं सुना।

विदेशियों की सोवियट पत्नियाँ जो वर्षों से विदेश में अपने पति से जा कर मिलने की चेष्टित हैं, तथा वे पति जो अपनी स्त्री तथा बच्चों को सोवियट दायरे से मुक्त करने के लिये चेष्टा कर रहे हैं, यह कहानी बड़ी दुःखद तीक्ष्णता रखती है,और इस में कोई हँसी की बात नहीं है। उन के निकट लौह यवनिका कोई सूक्ष्म चर्चिलीय उत्प्रेक्षा नहीं, बल्कि बहुत ही कठिन तथा अभेद्य वस्तु है।

इस सम्बन्ध का जो रेकार्ड है, उसी से इस की कहानी बतायी जाय।

गत नौ वर्षों में अमेरिकन नागरिकों की कोई १५० स्त्रियाँ देश छोड़ने की अनुमति माँगती रही हैं। इन में से १५ स्त्रियाँ मास्को के अमेरिकन दूतावास के भूतपूर्व सदस्यों के साथ विवाहिता हैं। ९० स्त्रियाँ संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के युद्धकालीन वीरों की पत्नियाँ हैं।

दूतावास के सदस्यों की स्त्रियों के अतिरिक्त बाकी स्त्रियों में से बहुत बड़ी संख्या उन लोगों की है, जो पूर्वी पौलैण्ड, बल्कि तटस्थ राष्ट्र इस्थेनिया या बेस्सराबिया की हैं, और १९३९ के पहले विवाहिता हुई थीं, याने सोवियटों के द्वारा ये भूभाग अपने अन्तर्गत कर लिये जाने तथा इन के अधिवासियों पर खुद ब खुद सोवियट नागरिकता न्यस्त होने के पहले ही इन की शादियाँ हो चुकी थीं।

चूँकि सोवियट संघ ने कभी भी किसी नागरिक के देश के बाहर जाने आने के अधिकार को स्वीकार नहीं किया है, इसलिये नियम यह है कि सोवियट नागरिकों को केवल राष्ट्र के हित में ही बाहर जाने दिया जाता है। व्यक्तिगत कारण चाहे जितने भी जरूरी हों एम० वी० डी० अफसरों की आँखों में तुच्छ हैं, और वे ही बाहर जाने की अनुमति देने के अधिकारी हैं।

फिर भी कुछ साल पहले तक अमेरिकन नागरिकों की एक या दो सोवियट स्त्रियों को प्रति वर्ष देश के बाहर जाने की आज्ञा दी जाती थी। पर १९४५ के अगस्त से यह भी मना हो गया है।

इस सम्बन्ध में एक और कदम १९४७ की १५ फरवरी को यह उठाया गया है कि सोवियट सरकार ने यह हुक्मनामा निकाल दिया कि कोई भी सोवियट नागरिक विदेशियों से शादी न करे। हृदय के मामलों में इस प्रकार के कानून बनाने के भद्दे प्रयास के सम्बन्ध में सोवियट नेतागण बहुत गर्वित नहीं हैं, और न वे इस बात का ज्यादा विज्ञापन

करना चाहते हैं, यह इसी से प्रकट है कि इस सम्बन्धी घोषणा को उच्चतम सोवियट के 'सरकारी पत्रक' में ही प्रकाशित किया गया है, जिसे बहुत थोड़े लोग पढ़ते हैं।

जहाँ तक मैं जानता हूँ यह हुक्मनामा आम सोवियट पत्रों में न तो प्रकाशित हुआ, और न इस का उल्लेख किया गया। जब हम पहले-पहले किसी रूसी से इस बात को कहते थे, तो वह इस पर विश्वास नहीं करता था। जब-जब संवाददाताओं ने इस खबर को बाहर भेजने की चेष्टा की तो इसे सेन्सर ने रोक लिया।

यह कानून विशेष कर पाशविक इसलिये हो जाता है कि प्रयास यह है कि इस कानून को उन शादियों पर भी लागू किया जाय, जो इस से पहले हो चुकी हैं, और यह चाहती हैं कि ऐसी शादियों के पति-पत्नी दुनिया के एक दूसरे से दूरस्थ इलाकों में जीवन व्यतीत करें। पुलिस राष्ट्र का सारा दबाव इस बात के लिये लगाया जाता है कि ऐसी शादी टूट जाय।

यह इस तरह से काम करता है, जब कोई पत्नी वर्षों प्रतीक्षा करने के बाद बाहर जाने का अनुमति-पत्र मांगने के लिये यात्रा अनुमति-पत्र विभाग में जाती है कि उस की दरख्वास्त का क्या हुआ तो एक 'सहानुभूतिशील' अफसर उस से मिलता है, जो हरे बेज़ रंग की मेज़ के उस पार से जहाँ उस की फाइल रक्खी हुई है, उसे यह 'पितृवत्' परामर्श देता है—

"नागरिका, क्या तुम सचमुच निश्चित हो कि तुम अमरीका जाना चाहती हो? उधर से जो खबर आ रही है, वह तो तुम जानती ही होगी। अब वहाँ अर्थ संकट सिर पर है, किसी भी दिन तुम्हारा पति

बेकारी का शिकार हो सकता है और तब तुम्हारे लिये भूखों मरने की नौबत आयेगी।"

थोड़ी देर ठहर कर मानों इस भयंकर चेतावनी को दिल में पैठने का समय दे कर वह अफसर फिर कहता है—"इस के अलावा रूसी होने के नाते तुम पर सर्वत्र संदेह किया जायगा। अनअमेरिकन कार्यावली समिति तुम्हारे पीछे पड़ जायगी। तुम्हें एक मुहूर्त के लिये भी शान्ति न मिलेगी। और याद रक्खो कि यह जाना हमेशा के लिये जाना होगा। फिर कभी तुम अपनी जन्म भूमि में नहीं आ सकती।"

थोड़ी देर ठहर कर अफसर फाइल में उँगली चलाता है। अब की बार जब वह बोलता है, तो उस के सहानुभूतिपूर्ण लहजे में परिवर्तन हो कर कड़ाई आयी है। वह कहता है—"नागरिका, तुम्हें अनुमति-पत्र मिलने में देर, शायद बहुत देर हो!" बात यह है कि सोवियट व्यवहार में बिल्कुल इनकार कर देने का तरीका नहीं है।

फिर वह कुछ समझाने बुझाने के लहजे में कहता है..."तुम अभी जवान और सुंदर हो। क्या इस में कोई तुक है कि तुम अपने जीवन के सब से अच्छे वर्षों को एक विदेशी के लिये नष्ट कर दो? क्या वह इस दान के योग्य है? आखिर हमारे सोवियट युवकों में क्या बुराई है? अपनी चारों तरफ देखो।"

इस के बाद वह धीरे धीरे क्रुद्ध होता हुआ फट पड़ता है..."मैं यह समझ नहीं पाता कि किस प्रकार तुम जो कि दावा करती हो कि तुम एक देशभक्त सोवियट नागरिक हो एक अमेरिकन के लिये अपने जन्मसिद्ध अधिकार तथा सोवियट जन्मभूमि को जिसने तुम्हें पैदा किया और शिक्षा दी, छोड़ने के लिये तैयार हो गयी हो।"

यदि इस बिंदु पर वह स्त्री यदि कुछ मानसिक कष्ट का प्रदर्शन

करती है, तो वह अत्याचारी एकाएक शिथिल पड़ जाता है, कहता है "सुनो, सुनो, नागरिका ! मैं तुम्हारी भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं चाहता था, मैं केवल तुम्हें अच्छी सलाह दे रहा था। यह एक अफसर के नाते नहीं, बल्कि एक वृद्ध देशवासी के नाते दे रहा था। घर जा कर इस पर अच्छी तरह विचार करो।"

घर में यदि वह अपने पिता माता के साथ रह रही है, और सम्भव है कि उसी कमरे में रहती है, तो उस पर बराबर दबाव डाला जाता है। उस के परिवार वाले कहते हैं..."यदि तुम अपने जीवन को नष्ट करना चाहती हो, तो कर सकती हो, पर तुम्हें हमारे जीवनों को नष्ट करने का कोई अधिकार नहीं है। विदेशियों के साथ मिल मिला कर तुम ने हम सब को पुलिस की देख-रेख और जाँच का शिकार बनाया है। तुम हम लोगों को फँसा कर ही मानोगी। अब तो खतम करो। उस अमेरिकन के बारे में भूल जाओ। किसी भी हालत में तुम वहाँ पहुँच नहीं सकती।"

शायद उस स्त्री को तथा उस के परिवार को और भी तरीकों से तंग किया जाय, कहीं रेजिस्ट्रेशन की बात उठायी जाय, तो कहीं और बात। जल्दी में या देर में कुछ थोड़ी सी बहुत दृढ़ पत्नियों के अतिरिक्त बाकी सब स्त्रियाँ घुटना टेक देती हैं, और विवाह-विच्छेद की दरख्वास्त दे देती हैं। ऐसे मामलों में अत्यन्त कड़े सोवियट विवाह-विच्छेद सम्बन्धी कानून फौरन ढीले कर दिये जाते हैं। साधारण तौर पर जिस मुकद्दमे में महीनों लग जाते हैं, वह दो ही चार दिनों में समाप्त हो जाता है। कानून की यह जो माँग है कि दोनों फरीक अदालत में उपस्थित हों इस मामले में ढीला कर दिया जाता है।

उस के अपमान पर मानों चार चाँद लगाने के लिये पत्नी को इस

लिये "राज़ी किया जाता है" कि वह सार्वजनिक रूप से अपने पति की निन्दा करे, उस के देश को स्वीकृत तरीके से बुरा बतावे, और अपनी इस "इच्छा" को प्रकाशित करे कि वह अपनी प्यारी सोवियट भूमि में रहना चाहती है ।

जो थोड़ी-सी लड़कियाँ अपने हृदय की इच्छा पर डटी रहती हैं, उन पर बुरी तरह बीतता है । एक अमेरिकन वैदेशिक सेना में नियुक्त अफसर की एक सोवियट पत्नी थी । जब मास्कोवाला काम समाप्त हो गया, तो उस अफसर को अपनी स्त्री तथा छोटे बच्चे को वहीं छोड़ कर चल देना पड़ा क्योंकि उन्हें बाहर जाने का अनुमति-पत्र नहीं मिला ।

छः महीने बाद वहाँ पर गृह व्यवस्थापक आया । रूस में यह व्यक्ति गृहों का प्रशासन तो करता ही है साथ ही साथ खुफिये का भी काम करता है । उस ने आ कर यह कहा कि अब वह स्त्री जो अपने पिता माता के साथ रहती थी, इस फ्लैट में रह नहीं सकती, उसे कहीं और जाना पड़ेगा । जब वह स्त्री बोली कि उस के जाने के लिये कोई स्थान नहीं है तब गृह व्यवस्थापक बोला..."अमेरिकनों के पास जाओ, वे तुम्हारी देख-भाल करेंगे ।"

उस स्त्री को दूतावास में रहने का स्थान दिया गया, और साथ ही वहीं पर घर की देखभाल करने का काम भी मिल गया । एक सप्ताह बाद वह बाजार जाने के बाद फिर नहीं लौटी, और तब से उस के सम्बन्ध में कुछ मालूम नहीं हुआ । वैदेशिक मंत्रालय के सामने जो राजनयिक तरीके पर सूचना भेजी गयी उस का जैसा कि बराबर होता है कोई उत्तर नहीं मिला ।

केवल अमेरिकनों तथा अंग्रेजों की सोवियट स्त्रियों को ही बाहर जाने न दिया जाता हो, ऐसी बात नहीं। चाइल के भूतपूर्व राजदूत के पुत्र की सोवियट पत्नी का मामला संयुक्त राष्ट्र के सामने आ चुका है। ग्रीक राजदूत की रूसी स्त्री के साथ भी ऐसा ही हुआ। दोनों मामलों में राजदूत की पदवी का भी वीसा विभाग पर कोई असर नहीं पड़ा। अमेरिकन नागरिकों की सोवियट स्त्रियाँ उस संख्या का एक छोटा सा भग्नांश मात्र हैं, जो सोवियट संघ छोड़ कर अमेरिका जाना चाहती हैं। कोई ५,५०० दरख्वास्तें अमेरिकन दूतावास में इस आशय की गत ६ साल में आ चुकी हैं।

तुलनात्मक मित्रता के युग में भी एक साधारण सोवियट नागरिक के लिये अमेरिकन दूतावास में पहुँचना बहुत साहस तथा दृढ़ता का परिचायक था। दूतावास में कौन जाता है, और आता है, इस पर चौबीसों घण्टा सादी वर्दीवाले खुफियों की दृष्टि रहती है। यदि कोई भी "अनधिकृत" व्यक्ति वहाँ पहुँचे, तो उस का पीछा किया जाता है, और शायद उसे नजरबन्द कर लिया जाता है।

दूतावास के नाम लिखे हुए पत्र बराबर खोले जाते हैं, और चाहे वे पत्र पते पर पहुँचें या न पहुँचें, एम. वी. डी. उसी समय से पत्र लेखक के सम्बन्ध में ऐसी दिलचस्पी लेना शुरू करता है जिसे और कुछ भी कहा जाय मित्रतापूर्ण नहीं कहा जा सकता।

अतएव यह बुद्धिसंगत रूप से मान लिया जा सकता है कि यदि दूतावास में एक दरख्वास्त पहुँचती है, तो प्रति दरख्वास्त पर दस बीस ऐसे लोग होंगे जो लिखना चाहते थे, पर डर के मारे नहीं लिखते या जिन्होंने पत्र लिखा, पर उन का पत्र बीच में ही रोक लिया गया। यदि एकाएक जंजीरें तोड़ दी जायँ, तो यह कहा नहीं जा सकता कि

हजारों रूसी ऐसे निकलेंगे जो कहीं भी जाने को तैयार हैं, पर शायद सब से अधिक अमेरिका जाने को तैयार होंगे।

इन में से कोई दो हजार व्यक्तियों ने अमेरिका नागरिकता के लिये दावा करते हुए दरख्वास्त दी। बाकी कुछ लोगों ने अमेरिका में बसने के लिये दरख्वास्त दी। जैसा कि स्त्रियों के सम्बन्ध में बताया जा चुका, इन दरख्वास्त भेजने वाले लोगों में उन की सब से अधिक संख्या है जो उन इलाकों के रहने वाले हैं जो अभी हाल में रूस में मिला लिये गये हैं, और इस कारण सोवियट कानून के अनुसार खुद ब खुद सोवियट नागरिक हो गये।

जहाँ तक मालूम है ३,५०० दरख्वास्तों में से केवल ७६ लोगों को सोवियट संघ के बाहर जाने की अनुमति मिली। इन में से ४१ को सोवियट नागरिक कर के दावा नहीं किया गया। ३३ को अमेरिका नहीं बल्कि पोलैंड में जाने की अनुमति मिली, क्योंकि पोल-सोवियट देश प्रत्यागमन समझौते के अनुसार प्रत्येक पोल के सम्बन्ध में यही तय हुआ था और ये व्यक्ति पोल नस्ल से उत्पन्न थे।

१९४७ में नीति परिवर्तन के साथ-साथ ढकना बिलकुल बन्द कर दिया गया। उस साल केवल ऐसे ३ सोवियट नागरिकों को बाहर जाने की अनुमति मिली। दो मामले तो भूतपूर्व अमेरिकन पर सोवियट नागरिकों की विधवाओं से सम्बद्ध थे। इन में से एक स्त्री के दो छोटे बच्चे थे। तीसरा मामला एक अमेरिकन नागरिका के नाबालिग बच्चे के सम्बन्ध का था, जो एक सोवियट नागरिक की एक विधवा थी।

१९४७ में इस श्रेणी के किसी भी सदस्य को बाहर जाने की अनुमति नहीं दी गयी, और केवल एक गैर अमेरिकन नागरिक को सोवियट भूमि छोड़ कर अमेरिका जाने दिया गया। यह एक यहूदी लड़का

था जिस के माँ-बाप नात्सी नज़रबन्द शिविरों में मार डाले गये थे, और उस का एकमात्र रिश्तेदार उस का चचा अमेरिका में था।

अमेरिका नागरिकता के दो हज़ार दावेदारों में ६०० के दावे मान लिये गये हैं, पर केवल एक सौ के दावे अस्वीकृत किये गये हैं। केवल २५० मामलों के अलावा जिन के सम्बन्ध में अभी फैसला होना है बाकी मामलों पर सूचनाओं के अभाव के कारण कुछ हो नहीं पा रहा है, क्यों कि इन लोगों ने जो पहले-पहल एक बार दरख्वास्त दी था आ कर मिल गये, उस के बाद उन के सम्बन्ध में कुछ सुनायी नहीं पड़ा।

हमारे दूतावास की तरफ से जो पत्र भेजे जाते हैं, उन के साधारणतः या तो कोई उत्तर नहीं आते, या वे ज्यों के त्यों बिना खुले हुए लौटा दिये जाते हैं।

फिर भी यह अनुमान लगाया जाता है कि सोवियट संघ में १८ सौ से ऊपर ऐसे व्यक्ति हैं जो अमेरिकन नागरिकता का दावा करते हैं, और जो अमेरिका में लौट जाना चाहते हैं, पर उन्हें सोवियट की ओर से बाहर जाने का अनुमति पत्र नहीं मिल रहा है। इन में से अधिकांश को सोवियट संघ अपने भी नागरिक बताता है, और वह द्विराष्ट्रीयता की सम्भावना नहीं मानता। १९४० से इन में से केवल १७ व्यक्ति बाहर जाने दिये गये हैं, पर १९४६ के बाद तो किसी को भी जाने नहीं दिया गया।

अन्तर्मुक्त किये हुए इलाकों में ऐसे बहुत से व्यक्ति थे जिन्हें सोवियट संघ विदेशी नागरिक कर के मानता था, इस लिये वे उन इलाकों के अन्तर्मुक्त कर दिये जाने से खुद ब खुद सोवियट नागरिक नहीं हो जाते थे। विशेषकर ऐसे मामले पोलिश तथा लिथुवानीय इलाकों में थे जहाँ

वे लोग जो अमेरिका में रहते थे या अमेरिकन नागरिकता प्राप्त कर चुके थे या वहाँ पर पोलिश तथा लिथुवानीय माता-पिता से उत्पन्न थे, और केवल यहाँ पर अमेरिकन पासपोर्ट ले कर आये हुए थे।

आरम्भ में सोवियट अधिकारियों ने इस परिस्थिति को मान ऐसे लोगों को विदेशियों के रूप में रहने का अनुमति पत्र दिया था। १९४७ तक इन में से बहुतों को देश छोड़ कर जाने दिया गया, पर नीति में जो परिवर्तन हुआ उस से इन पर भी प्रभाव पड़ा, और १९४८ में ५० अमेरिकन नागरिकों में केवल तीन को बाहर जाने दिया गया।

दूसरों ने जिन्होंने अपने अमेरिकन पासपोर्टों को इस लिये पेश किया कि उन्हें बाहर जाने का अनुमति पत्र मिले, यह देखा कि उन के पास-पोर्ट तथा विदेशियों के रूप में रहने का अनुमति पत्र जब्त कर लिये गये, और उन्हें सोवियट नागरिक कर के घोषित किया गया। कई बार ऐसा हुआ कि पतियों को अमेरिकन नागरिक के रूप में बाहर जाने का अनुमति पत्र दिया गया, पर उन की स्त्री तथा बच्चों को उस के साथ जाने या जा कर उस से मिल ने से रोका गया।

उन इलाकों में जो सोवियट के अन्तर्भुक्त किये गये थे द्विराष्ट्रीयता वाले लोगों को यह स्वतन्त्रता थी कि वे दो में से एक की नागरिकता चुन लें। हाँ उसे यह अधिकार तो नहीं था कि साथ ही साथ दो देशों का नागरिक रहे, फिर भी व्याख्या में काफी उदारता दिखायी जाती थी। इस प्रकार से अमेरिकन नागरिकता के अधिकार युक्त कई व्यक्ति वर्षों तक पोलैंड या लिथवानिया के नागरिक के रूप में रहते थे, और फिर अमेरिकन पासपोर्ट पर देश छोड़ कर चले जा सकते थे।

अब सोवियट के अधिकारी ऐसा सोचते हैं कि जिन लोगों को इन देशों की नागरिकता किसी भी प्रकार से प्राप्त थी, चाहे वे उसे काम में

न लाते हों, फिर भी सोवियट संघ के अन्तर्युक्त होते ही वे सोवियट नागरिक बन गये। यह समझा जाता है कि इस सम्बन्ध में उस व्यक्ति के मत का कोई महत्त्व नहीं है।

अमेरिका की वैदेशिक सेवा इस सम्बन्ध में इस प्रकार से फँसे हुए अमेरिकन नागरिकों को कुछ भी संरक्षण नहीं दे सकती, क्योंकि यह लोग जिन इलाकों में रहते हैं, वे उन निर्दिष्ट इलाकों के बाहर हैं जिन में राजनयिकगण घूमते फिरते हैं, तथा वे गहरे रूप से निषिद्ध इलाकों के अन्दर हैं।

मास्को का अमेरिकन दूतावास जो कुछ भी कर सकता है, वह इतना ही है कि वह समय-समय पर वैदेशिक मंत्रालय को कुछ स्मारक पत्र भेजे। ये प्रतिवाद साधारण तौर पर सुने नहीं जाते। जहाँ तक कि द्विराष्ट्रीय लोगों या सोवियट नागरिकों की बात है, ऐसा देखा गया है कि यदि दूतावासों की तरफ से उन का मामला उठाया जाता है तो उस से उन के अमेरिका जाने की सम्भावना को किसी प्रकार उज्ज्वल न कर दूसरी ही दिशा में उन को यात्रा के लिये तैयार कर देता है।

'शुद्धियों' के परिणाम

सोवियट संविधान में एम. वी. डी. के क्या कार्य तथा कौन सी शक्तियाँ हैं यह बताया नहीं गया। यह वही संविधान है जिस में रबर स्टैम्प संसद को देश की सब से बड़ी न्यायपालिका संस्था बताया गया।

इस प्रकार संविधान में एम. वी. डी. का नाम न आने से उसे कोई अपमान का बोध नहीं होता। इस के विपरीत यह निःसंदेह रूप से इस बात को नापसन्द करेगा कि उस के अधिकारों की परिभाषा की जाय, क्योंकि परिभाषा माने सीमित कर देना है।

एम वी. डी. सोवियट पद्धति के केन्द्रीय स्थान पर पहुँच गया, इस का रहस्य यह है कि उस के लिये किसी प्रकार का कानूनी ढाँचा नहीं बनाया गया। यह एक अबाध सर्वशक्तिमान पुलिस शक्ति है जिसे व्यावहारिक संगठनिक रूप दिया गया है, माने लेनिन की परिभाषा के अनुसार यह सब अर्थों में "दमन का एक यंत्र" है।

एम. वी. डी. कोई ऐसा विषय नहीं है जिस को ले कर कोई सोवियट छात्र मास्टर या डाक्टर की डिग्री लेना पसन्द करे। एम. वी. डी. दिन की रोशनी के मुकाबले में किसी बन्द जगह में बहुत ऊँची शक्ति के प्रदीप्त बल्बों को पसन्द करता है। यह अखबारों से बचता है, और

साधारण रूप से इस की भावनाओं की कद्र की जाती है। इस कारण किसी सोवियट सूत्र से एम. वी डी. की प्रकृति, ढाँचा, तरीकों और शक्तियों पर कुछ ज्ञात नहीं हो सकता।

इस लिये हम सोवियट न्याय मंत्री के. पी. गोरशेनिन के और भी अधिक कृतज्ञ हैं कि उन्होंने एम. वी. डी. की उत्पत्ति तथा प्रारम्भिक विकास पर एक संक्षिप्त पर रोशनी देने वाला वर्णन पेश किया। गोरशेनिन का कहना है कि १९१७ के दिसम्बर में जब सोवियट शासन अभी कई सप्ताहों का बच्चा मात्र था, तो उस समय फेलिक्स डेरजिनिस्की के सभापतित्व में एक विशेष आयोग नियुक्त हुआ। उस समय इस के सामने यह उद्देश्य थे :

(१) सारे रूस में चाहे कोई भी इस की लपेट में आता हो, इस बात का पता लगाना कि कौन प्रतिक्रान्तिकारी तथा तोड़-फोड़-मूलक कार्य कर रहे हैं तथा उन को समाप्त कर देना।

(२) इन्हें सैनिक क्रान्तिकारी ट्रिब्यूनल के न्यायालय के सामने पेश करना, और इन उपादानों के साथ संग्राम के उपायों का आविष्कार करना।

इस प्राथमिक आदेश पत्र में इस नयी संस्था पर विशेष रोकें लगायी गयी थीं। यह कहा गया था कि :

यह आयोग केवल प्रारम्भिक तहकीकात करेगा, और यह उस हद तक ही करेगा जहाँ तक कि रोकने का सम्बन्ध है। दूसरे शब्दों में इस प्रारम्भिक सोपान में आयोग को यह शक्ति नहीं थी कि वह फैसला दे या सजायें दे। इस का काम इतना ही था कि वह तहकीकात करे और उस के परिणामों को क्रान्तिकारी ट्रिब्यूनल के सामने पेश करे। इस

प्रकार कानून की सही प्रक्रिया का कम से कम दिखावा तो बना ही हुआ था।

१९१७ के १३ दिसम्बर (प्राचीन पद्धति) को मंत्रिमण्डल ने सरकारी रूप से इस नयी संस्था का नाम प्रतिक्रान्ति तथा तोड़-फोड़ के विरुद्ध संग्रामकारी अखिल रूसी विशेष आयोग रख दिया, और यह बताया कि यह सीधे मंत्रिमंडल के प्रति जिम्मेदार है। इस के बाद इस संस्था को उस के नाम के प्रथम अक्षरों के अनुसार वी. च. क. या आम तौर पर चेका कहा जाने लगा।

चेका के प्रारम्भिक सीमित चरित्र को प्रसारित करते हुए पहला कदम कुछ महीनों के बाद ही उठाया गया।

गोरशेनिन के अनुसार "१९१८ के मार्च को अखिल रूसी विशेष आयोग ने तमाम स्थानीय सोवियटों के सामने यह प्रस्ताव रखा कि वे स्थानीय विशेष आयोग संगठित करें। साथ ही चेका ने यह शर्त रखी कि स्थानीय चेकाओं के संगठित होने के बाद प्रतिक्रान्तिकारी अपराधों, सट्टेबाजी, दफ्तरी अपराध, याने घूसखोरी और कर्तव्य में अवहेलना, प्रकाशन के द्वारा सोवियट को नुकसान पहुँचाने के प्रयासों के सम्बन्ध में की गयी सब गिरफ्तारियों, तलाशियों, वस्तुओं, मकानों आदि को हुक्म दे कर काम में लगाने के अधिकार तथा ज़ब्तियाँ सम्पूर्ण रूप से चेका की ही संस्थाओं के जरिये से होगी।"

इस सूची में जो कार्य गिनाये गये हैं, उन का बहुत लम्बा-चौड़ा होना बिलकुल स्पष्ट है। पर इस प्रकार चेका के संगठन तथा उस की शक्ति में बहुत अधिक वृद्धि होने से उस की शक्ति की पिपासा और बढ़ी।

गोरशेनिन के अनुसार "१९१८ के अन्त में वी. च. क. को एक तहकीकाती संगठन से बिलकुल अदालत के बाहर एक अदालत के रूप

में याने अदालतों की सहायता के बिना फैसले दे कर सजा आदि देने के संगठन के रूप में बनाया गया, जिस से कि सोवियट राष्ट्र के शत्रुओं का जल्दी निर्दयतापूर्वक दमन किया जा सके।" गोरशेनिन ने इस प्रकार जो परिभाषा की, उस में उस ने अपने अनजान में यह साबित कर दिया कि सोवियट संविधान में व्यक्ति को जो अधिकार तथा संरक्षण दिये गये हैं वह किस प्रकार केवल एक धोखा तथा दिखावा मात्र है।

सोवियट भूमि के कानून विशेषज्ञों में गोरशेनिन का स्थान वैदेशिक मंत्री आन्द्रेई-वाई विशिन्स्की के बाद ही है, इस से उन के शब्दों को विशेष गुरुत्व प्राप्त होता है। न्याय मंत्रालय के रूप में गोरशेनिन को यह ज्ञात है कि जब वह चेका के तरीकों को निर्दय बतलाते हैं, तो उन का क्या मतलब है क्योंकि प्रारम्भिक युग में बहुत कम मौकों पर सही, उन के मंत्रालय के कई छोटे स्थानीय अफसरों के मामले में एम. वी. डी. से कुछ बकझक करनी पड़ी थी।

गोरशेनिन इस वक्तव्य में सोवियट पुलिस के प्राथमिक युग पर बातचीत कर रहे हैं। तब से चेका का नाम बदल कर क्रमशः जी. पी. यू., एन. के. वी. डी. और अंतिम रूप से एम. वी. डी. हुआ। प्रत्येक नाम के परिवर्तन के साथ-साथ इस का संगठन तथा इस की शक्ति बढ़ती ही गयी है।

जब सोवियट शासन के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध का अंत हो कर गृह युद्ध का युग समाप्त हुआ, तब इस का प्रारम्भिक नाम तथा ढाँचा बदल दिया गया, इस कारण १९२१ में इस का नाम जी. पी. यू. पड़ा क्योंकि ये वर्ण "राष्ट्रीय राजनैतिक प्रशासन" के रूसी प्रथम अक्षरों को ले कर बने थे, और इस पर अब ये भी काम दे दिये गये—सरकारी दफ्तरों पर पहरा रखना, क्रेमलिन तथा क्रेमलिन के नेताओं की

जिस में स्टालिन भी आते हैं व्यक्तिगत रूप से रक्षा करना, जहाँ भी महत्त्वपूर्ण यंत्र आदि लगे हुए हैं, उन की रक्षा करना, देश की सुविस्तृत सीमाओं पर देख-रेख रखना, और संघ के बाहर लोगों को जाने तथा उस में आने का अनुमति-पत्र देना।

कई सालों के अन्दर इस ने बहुत ठोस, अच्छी तरह अनुशासित, अस्त्र-शस्त्रों से लैस, अच्छी तनख्वाह पाने वाली भीतरी सेना का संगठन कर लिया, जिस के सदस्य दल के नेताओं के प्रति अंधभक्ति रखते थे। इस के अतिरिक्त आंशिक समय के लिये या पूरे समय के लिये काम करने वाले खुफिया एजेंटों का एक सर्वव्यापी जाल बिछा दिया गया। रहे मामूली खुफिया और सोवियट जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में इन के जो मुखबिर तैनात हुए उन की तो कोई संख्या ही नहीं है।

जब स्टालिन नेतृत्व का दल के अन्दर १९२५-२७ में ट्रात्स्की-वादियों के साथ तथा १९२० में दक्षिण पंथियों के साथ संग्राम हुआ, तो जी. पी. यू. स्टालिन नेतृत्व का एक बहुत अपरिहार्य मित्र प्रमाणित हुआ।

जी. पी. यू. की शक्तिशाली सहायता तथा "दमन के विधिवहिर्भूत तरीकों" के बिना शासकगण किसी भी हालत में रूसी किसानों को सामूहिक फार्मों में भर्ती करने का विशाल कार्य उठा नहीं सकते थे। इसी प्रकार १९२७ से जो बराबर विराट निर्माण योजनायें बनीं, वे भी, जी. पी. यू. के द्वारा लाये हुए जबर्दस्ती श्रम के बिना सफल नहीं हो सकती थीं।

भीतरी सुरक्षा संबंधी कार्यों के अतिरिक्त जी. पी. यू. को सारी सोवियट खुफिया पुलिस का इन्चार्ज बना दिया गया। इस प्रकार इस के

कार्य दूसरे देशों में फैल गये, विशेष कर उन देशों में जिन में महत्त्वपूर्ण साम्यवादी अल्प संख्या है।

१९३४ में जी. पी. यू. को एन. के. वी. डी. या आन्तरिक मामलों की जनता का कमिसेरियट बना दिया गया और अब इस के हाथ पैर तथा फौजदारी दोनों पुलिस केन्द्रित कर दी गयी। इस के बाद तो एन. के. वी. डी. के हाथ में कुत्तों का लाइसेंस देना भी आ गया।

१९३० और १९४० के बीच के अन्तिम भाग की ओर जो दल 'शुद्धियाँ' हुईं, उन में एन. के. वी. डी. ने दमन के विधिबहिर्भूत उपायों का प्रयोग दिखलाया। इस में हजारों नागरिकों को रात में बुलाया जाता था, और फिर उन के सम्बन्ध में कुछ मालूम नहीं होता था। इन में से कुछ थोड़े लोगों की ही सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन की दृष्टि से अदालत के सामने पेशी होती थी।

सर्वकाल का यह एक महान् रहस्य है कि एच. जी. यगोडा जो जी. पी. यू. के अति विस्तार के युग में उस के प्रधान थे, और आक्षरिक रूप से वर्षों तक जिन के हाथों में स्टालिन तथा दूसरे क्रेमलिन नेताओं के जीवन थे, लाखों साधारण नागरिकों के जीवन तो उस के हाथ में थे ही, उन का भी उस यंत्र के शिकार के रूप में अंत हुआ, जिस को उन्होंने बनाया था। उन्हें उसी के द्वारा प्रशासित एक गोली मारने वाली टोली के सामने खड़े हो कर गोली खा कर मरना पड़ा, और यह सारा काम उसी तरीके पर किया गया, जिस का उन्होंने आविष्कार किया था, और जिसे हजारों के विरुद्ध प्रयोग में लाये थे।

इस बात पर जाने की जरूरत नहीं है कि उस पर गोर्की को मारने का तथा स्टालिन की हत्या करने के षड्यंत्र के जो अभियोग थे,

वे सही थे या नहीं। इस से सोवियट पुलिस राष्ट्र की पद्धति के सम्बन्ध में जो उपसंहार निकलते हैं, उन में कोई फर्क नहीं आता।

बात यह है कि जैसे कि विशिन्स्की ने सरकारी वकील के रूप में १९३८ के शुद्धि वाले मुकदमे में कहा था—'यागोडा एक बहुत पतित, विवेकहीन, व्यक्ति विषाक्त अपराधी था।' तो इस से यह प्रश्न उठता है कि यागोडा ने अपने दस वर्ष के राज्य में जिन हजारों लोगों को श्रम कराने के शिविरों में भेज दिया था, जिन्हें उस ने जी. पी. यू. की गोली मारने वाली टोलियों के सामने भेज दिया, उन के सम्बन्ध में क्या सोचा जाय?

यह एक प्रश्न है जिस का उत्तर मैंने सोवियट शासन के किसी भी समर्थक को देते नहीं पाया।

महान् 'शुद्धि', का उस समय सूत्रपात हुआ जब १९३४ के १ दिसम्बर को स्टालिन के सम्भव उत्तराधिकारी सर जेई किरोव को लेनिनग्राड की स्मोलनी संस्था की दूसरी मंज़िल के लम्बे बरामदे में गोली मार दी गयी थी।

कुछ दिनों बाद 'इजवेस्तिया' की तेज़ आँख वाले पाठकों ने यह देखा कि प्रदर्शन के लिये रक्खी हुई किरोव की अर्थी के एक प्रकाशित फोटो पर स्टालिन शब्द बहुत बारीकी से मुद्रित है। इस के बाद ३ साल ही बीते थे कि 'इजवेस्तिया' के प्रधान सम्पादक निकोलाई बुखारिन सुपरिचित नमूने पर चलाये हुए मुकदमों में से अन्तिम मुकदमें के बाद अपने ही मुँह से अपने अपराध को स्वीकार करने वाले एक देशद्रोही के रूप में मृत्यु दण्ड के शिकार हुए।

उस समय तक 'शुद्धि' की प्रक्रिया करीब-करीब समाप्त हो चुकी थी। ऐसे लोगों की कितनी संख्या थी जिन्हें मृत्यु दंड दिया गया, यह

तब तक पता नहीं लगेगा जब तक कि सोवियट गृह मंत्रालय के कागज़ात इतिहास लेखकों के सामने नहीं रख दिये जाते। पर एक बात से कुछ अनुमान लगता है कि जैसे युद्ध के जमाने में शायद ही कोई रूसी व्यक्तिगत हानि से बचा हो, उसी प्रकार इस शुद्धि प्रक्रिया में भी बहुत कम रूसी होंगे जो किसी न किसी प्रकार क्षतिग्रस्त न हुए हों।

मुझे एक जर्मन साम्यवादी की याद आती है जो एक जिम्मेदार पद पर थे। एक दिन रात को एन. के. वी. डी. उन्हें ले गया। ऐसी अफवाह थी कि वह ट्राटस्कीवादियों में था। उस की रूसी पत्नी ने जो दल की बहुत पुरानी सदस्या थी पति के विरुद्ध कुछ अभियोग लगाये। उस ने कई तुच्छ बातें कहीं, जिन में एक यह थी कि उस का पति हमेशा अपने डेस्क के एक ड्रायर को बहुत सावधानी से बंद रखता था, और अपनी पत्नी को भी कभी उसे छूने नहीं देता था। यह इस बात का प्रमाण था कि उस की ऐसी कुछ गुप्त बातें थीं जिन्हें वह छिपाना चाहता था।

इस प्रकार से स्त्री ने जो गवाही दे दी, तो उस से वह न केवल संदेह से बची, बल्कि वह अधिकारियों की इतनी कृपापात्र हो गयी कि दो साल बाद वह वाशिंगटन स्थित सोवियट राजदूत की वैयक्तिक मंत्राणी के रूप में भेजी गयी, जो दल के विश्वास का बहुत बड़ा प्रमाण था।

जब वह युद्ध के अन्त में मास्को में लौटी, तो उस ने देखा कि उस का भूतपूर्व पति (बात यह है कि उस की गिरफ्तारी के बाद ही पत्नी ने विवाह-विच्छेद करा लिया था) लौट आया था, और अब

चूंकि क्रेमलिन को जर्मनी से आये हुए लोगों की ज़रूरत थी, उस पर से सारा दोष उठा दिया गया था, और उसे पूर्वी जर्मनी के एक महत्त्वपूर्ण पद के लिये चुना गया था। उस ने भूतपूर्व पति के पास लौटना चाहा, पर पति ने उसे लेना स्वीकार नहीं किया।

जिन विदेशियों ने सोवियट नागरिकता प्राप्त की थी, 'शुद्धि' से सब से अधिक क्षति उन्हीं की हुई।

जो फाइनबर्ग ने लेनिन और स्टालिन की पुस्तकों के अनुवाद करने में अपने जीवन के सब से अच्छे वर्ष बिता दिये थे, १९३७ के अन्त में वह लापता हो गया। छः महीने बाद वह छोड़ा गया। अब वह पहले से २० साल बूढ़ा लगता था, और उस के सामने के दाँत झर चुके थे। जाँच करने वालों ने दोष का पता लगाने के लिये उन दाँतों को हटा दिया था''।

अलबर्ट ट्रायर अलाबामा के दक्षिण से आया हुआ नींबू जाति के फलों का विशेषज्ञ था। सोवियट अधिकारी इस बात की तलाश में थे कि कृष्ण सागर के किनारे लगाने के लिये नींबुओं तथा संतरों की दो किस्में विकसित की जायँ, उन लोगों ने ट्रायर को इस बात पर राज़ी किया कि वह एक शर्तनामे पर दस्तखत कर दे जिस के अनुसार देश में उस की तनख्वाह डालरों में जमा होती रहे, और सोवियट संघ में रहते समय रूबल में उसका खर्च चले।

जब ट्रायर परिवार १९३२ की ग्रीष्म ऋतु में सुखोमी पहुँचा तो शर्तनामे में जो बातें थीं उन से हालत कहीं अच्छी थी। उन्हें नीलम रंग के समुद्र के किनारे एक सुन्दर बँगला दिया गया। उन को अपने प्रयोगों के लिये जिन चीजों की जरूरत हुई, सब पहुँचायी

गयीं। अपने जीवन में पहली बार श्री ट्रायर को अपने मन के मुताबिक कलम लगाने तथा दो पेड़ों में जोड़ा लगाने की पूर्ण सुविधायें मिलीं। पाँच साल तक ट्रायर परिवार अपने उष्णकटिबन्धवाले स्वर्ग में सुख से रहे। नींबुओं के आकार बढ़ते गये, और वे अच्छे होते गये, और ट्रायर जिन के चौबीसों घंटे इस में लगते थे, राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं रखता था। फिर एक दिन १९३९ की वसन्त ऋतु में वनस्पति विज्ञान-केन्द्र में उन के जो अफसर थे, उन्होंने कहा कि मास्को से एक हुक्म आया है जिस के अनुसार अब कोई विदेशी रूस में नौकर नहीं रह सकता था, इसलिये श्री ट्रायर के लिये इस के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं था कि या तो वे चले जायँ, या सोवियट नागरिक बन जायँ। उन्हें निर्णय के लिये केवल तीन दिन दिये गये।

श्रीमती ट्रायर अमेरिकन पासपोर्ट रखने पर तुली हुई थीं, पर श्री ट्रायर अपने नींबुओं को छोड़ नहीं सकते थे। उन्हें अपनी खोजों की तुलना में पासपोर्ट का मामला तुच्छ ज्ञात हुआ, इसलिये उन्होंने सब फार्म भर दिये, और अमेरिकन पासपोर्ट लौटा दिया।

एक सप्ताह बाद श्री ट्रायर काम करते हुए गिरफ्तार कर लिये गये। उन की पत्नी को उन से मिलने नहीं दिया गया। जो खाना और कपड़ा भेजा गया, उसे स्थानीय एन. के. वी. डी. ने तीन दिन के लिये तो ग्रहण कर लिया, पर चौथे दिन सारी चीज़ें यह कह कर लौटा दी गयीं कि ये चीज़ें उन तक पहुँचायी नहीं जा सकतीं क्योंकि वे किसी अज्ञात स्थान में भेज दिये गये हैं।

जल्दी ही अधिकारियों ने श्रीमती ट्रायर को भी परेशान करना शुरू किया, और उन्हें आगे रहने की अनुमति देने से इन्कार किया।

अपने पति के सम्बन्ध में कुछ जानने की चेष्टा के बाद वह मास्को चली गयी। वहाँ सहानुभूति शील अमेरिकन दूतावास के अफसरों ने उन की कहानी सुन कर यह कहा कि वे इस सम्बन्ध में कुछ भी नहीं कर सकते, क्योंकि श्री ट्रायर ने अमेरिकन जन्मसिद्ध अधिकार को अपने हस्ताक्षरों से दे दिया था।

आज अमेरिका में लौटने के बाद श्रीमती ट्रायर अब भी अपने पति के सम्वाद पाने की प्रतीक्षा करती हैं।

हम ने उन दिनों इस 'शुद्धि' की प्रक्रिया को बहुत पास से देखा। हम एक सामूहिक फ्लेट के कमरे में रहते थे, और हमारे पड़ोसी बराबर बदलते रहते थे। हमारा कमरा बाहर के दरवाजे के पास था, इस लिये जब भी टोली आ कर दो बजे बुलाने की घंटी बजाती थी तो मैं बिस्तर से कूद कर उन्हें भीतर आने देता था।

यह लोग नीले रंग की टोपी लगाये हुए नौजवान होते थे, शायद ही १६ साल की उम्र के हों। जब कभी ऐसा होता था कि वे जिस आदमी के पीछे आते थे, वह रात में वहाँ नहीं मिलता था, तो वे टेलीफोन की किसी संख्या से मिलाते थे, और एक कथित "कामरेड कार्नेल" से बातचीत करते थे कि अब आगे क्या हो। बोलने वाला अपने को कुमान्ड इतनी संख्या याने सुरक्षा सेना अफसर स्कूल का छात्र संख्या इतनी बता कर बात करता था।

मुझे एक नवीन माता का दृश्य याद है। वर्षों बीत जाने पर भी अब भी मैं उस के उस समय की चीख सुन सकता हूँ जब उस से उस के दो महीने की उम्र के बच्चे को ले जाया गया, और वे "काला कौआ" या पुलिस की गाड़ी में ले जाये गये। अभी तीन ही सप्ताह

पहले उस का पति जापान में किसी काम को कर के अपनी पत्नी तथा बच्चे के लिये तरह-तरह के सुन्दर उपहार ले कर लौटा था।

१९३८ की ग्रीष्म ऋतु में 'शुद्धि' की प्रक्रिया में ब्रेक लगा दिया गया, और जल्दी ही गाड़ी दूसरी तरफ चल निकली। निकोलाई येज़ोफ जिस ने यागोड़ा पर अभियोग लगाये थे, तथा जो उस के बाद एन. के. वी. डी. का प्रधान बना था ऐसे गायब हुआ कि उस का पता ही नहीं लगा। 'शुद्धि' के सम्बन्ध में जो अत्याचार हुए थे, उन पर जाँच हुई, और उन की निन्दा की गयी। प्रान्तों के पत्रों में खून के प्यासे एन. के. वी. डी. अफसरों के विरुद्ध कार्रवाइयाँ छपीं। इन लोगों ने स्कूल के बच्चों को भी प्रतिक्रान्तिकारी कर के गिरफ्तार किया था। इस समय तक क्रेमलिन को यह पता लग गया था कि सम्भव विरोधियों को खतम करने की धुन में इस ने सार्वजनिक चरित्र को गिरा दिया था, और बुद्धि तथा प्रतिभा की बड़े पैमाने पर समाप्ति के द्वारा देश की आर्थिक तथा सैनिक शक्ति को हानि पहुँचायी थी।

'शुद्धि' से बहुत सी बातों के साथ यह भी पता लगा था कि क्रेमलिन के सर्वशक्तिमान शासकगण एन. के. वी. डी. के अंगरक्षकों पर निर्भर हैं।

स्टालिन और उस के साथी तब तक किसी स्थान में सार्वजनिक रूप से नहीं जाते थे, जब तक गोली की मार के अन्दर के सारे व्यक्तियों की जाँच न हो जाती हो। क्रेमलिन स्वयं एक तरह का गढ़ सा हो रहा था, जिसमें चारों तरफ टामी गन लिये लोग आकस्मिक हमले को रोकने के लिये तैयार रहते थे।

यह असाधारण तैयारियाँ स्वयं ही गम्भीर खतरे के रूप में थीं क्योंकि जो व्यक्ति रोमन ढंग के इस गारद पर नेतृत्व करता था, वह

सहज ही में प्रासाद क्रान्ति कर सकता था। सचमुच ये ही अभियोग यागोडा पर लगाये गये थे, और 'शुद्धि' के दौरान में क्रेमलिन की सुरक्षा व्यवस्था में कई बार शुद्धियाँ हुईं।

इसी के अनुसार १९३८ में स्टालिन अपने पुराने समय के मित्र जार्जियावासी लारेन्टीबेरिया को मास्को ले आया कि वह अन्धभक्त बिगड़ेदिल याजोफ की जगह ले सके। इस के बाद से वे कुछ-कुछ आश्वस्त रहने लगे।

सोवियट कलाकार सरकारी लकीर के फकीर—या......

गत वर्ष प्रधान सोवियट साहित्य आलोचिका टमारी मोटील्योवा को विश्व साहित्य की गोर्की परिषद् से निकाल दिया गया। तुरन्त ही उच्चतर शिक्षा मंत्रालय ने उस की डाक्टर की डिग्री छीन ली।

उस पर यह आरोप लगाया गया कि वह यह चाहती है कि सोवियट साहित्य सोवियट भूमि की परिस्थितियों की आलोचना करे। उस पर यह भी अभियोग था कि सोवियट साहित्य ऐसा नहीं करता, इस कारण वह सोवियट साहित्य की सब से उत्कृष्ट रचनाओं पर मुँह बनाती है। उस का दोष इस कारण और भी गुरु गम्भीर समझा गया कि उस ने कभी गंदे विश्वासघातक लियोंहलम के मत को उद्धृत किया था।

इस के अतिरिक्त उस ने अपनी पुस्तक "फासिज्म के विरुद्ध संग्राम में जर्मन साहित्य" में यह दिखलाया था कि सार्वदेशिकतावादी लियोन फायक्तवांगेर एक फासिज्म विरोधी है। यही उस पर पूँजीवादी सार्वदेशिकतावादी होने के दोष लगाने के लिये यथेष्ट था "क्योंकि वह किसी रचना को दल की नीति की दृष्टि से नहीं बल्कि एक शीतल तथा उदासीन सौन्दर्यवादी दृष्टि से देखती है"।

मामूली भाषा में मोटील्योवा ने वह अमार्जनीय अपराध किया था कि उस ने दल की इच्छा को साहित्यिक आलोचना के सर्वोच्च मानदण्ड के रूप में नहीं अपनाया था।

दल का यह आदेश था कि साहित्य का उद्देश्य साम्यवाद के लक्ष्य को आगे बढ़ाना है और कोई रचना कैसी है, इस का अन्तिम निर्णय साम्यवादी दल का प्रचार तथा आन्दोलन विभाग करेगा। हाल के महीनों में इस संस्था ने समाजवादी वस्तुवाद की धारणा को अपना रखा है। इस की परिभाषा यों की जा सकती है कि जो भी बात सोवियट पक्षीय नहीं है, लेखक उस के प्रति ऋणात्मक रुख ग्रहण करे, और जो कुछ भी सोवियट पक्षीय है उस के प्रति धनात्मक रुख ग्रहण करे।

दिन ब दिन इस की आवश्यकतायें और भी उपदेशात्मक होती जा रही हैं। ऐसा समय था जब घरेलू दृश्य पर लिखने वाले सोवियट लेखक यह समझते थे कि उन्हें इस बात का अधिकार है कि वे समाजवादी वस्तुवाद को निभाने के लिये नये समाज की त्रुटियों और साथ ही साथ गुणों पर दृष्टिपात कर सकते हैं, पर अब वह समय चला गया।

अभी कुछ दिन पहले की बात है कि राष्ट्रीय साहित्य प्रकाशन संस्था की सार्वजनिक रूप से इस लिये निन्दा की गयी कि उसने दूसरी बातों के साथ-साथ सोवियट के प्रसिद्ध हास्य रस के लेखक इलियाइल्फ तथा येवजेनीपेट्रोव की "बारह कुर्सियाँ" तथा "सुनहरा बछड़ा" नामक पुस्तकों को फिर से छपवाया। अब दल को इन के केन्द्रीय चरित्र चतुर खलनायक ओस्टाव बेन्डर की कलाबाजियों पर हँसी नहीं आती थी।

यह आपत्ति की गयी थी कि ओस्टाव को भले सोवियट नागरिकों से उज्ज्वल कर के दिखाने से सोवियट वास्तविकता का हनन होता था।

यहाँ तक कि लेखक संघ के प्रधान तथा दल के प्रसिद्ध प्रतिपादक अलेक्जेंडर फाडेव को प्रचार तथा आन्दोलन विभाग ने यह आदेश

दिया कि वह "नौजवान गार्ड" नामक अपने उपन्यास को, जो कि युद्ध के बाद प्रकाशित सर्वोत्तम सोवियट रचना है, फिर से लिखे। दो साल बाद 'नौजवान गार्ड' को स्टालिन पुरस्कार मिला, तो प्रचार और आन्दोलन विभाग ने एकाएक इस बात पर आपत्ति की कि दो छिपा कर काम करने वाले नेताओं को गड़बड़ करते हुए तथा जर्मनों के द्वारा पकड़े जाते हुए दिखाया गया था, जब कि एक सोवियट सेनापति को ताड़ के पत्ते का सिपाही दिखाया गया था।

फाडेव ने इस आलोचना के औचित्य को माना, और वे बताये हुए परिवर्तनों को करने पर तैयार हो गये। बात यह है कि प्रचार और आन्दोलन विभाग से कोई तर्क नहीं कर सकता।

समाजवादी वस्तुवाद के नियम के अनुसार सोवियट साहित्य के नायक को नवीन सोवियट नागरिक होना पड़ेगा, जिस के स्वीकृत गुणों में नैतिक पवित्रता, प्रेम और मित्रता में विश्वस्तता तथा सोवियट देशभक्ति की भावना होनी चाहिये। पर यदि लेखक में सब तरह की शुभेच्छा भी हो, तो यदि वह इस सूत्र में कोई विविधता लाने की कोशिश करे तो, वह विपत्ति में पड़ सकता है।

उदीयमान सोवियट नाट्यकार आनाटोली सोफ्रोनोफ ने, जिस को "मास्को चरित्र" नामक पुस्तक पर स्टालिन प्रथम पुरस्कार दिया गया था, सोवियट कर्मचारियों के जीवन को ले कर कुछ लिखने की चेष्टा की, और इसका नाम "बेकटोफ़ का जीवन" रक्खा। बेकटोफ जो इस नाटक का खलनायक है एक विवेकहीन तथा उच्चाकांक्षी इंजीनियर है। वह फसल काटने वाले एक निरीह मैनेजर को धमकाता, और धोखा देता है, जिस से कि उसे नौकरी मिल जाये। इस नाटक का नायक बेकटोफ का पुत्र है, जो एक बहुत ही सुंदर युवक है। वह साम्यवादी

युवक संघ का सदस्य है। वह अपने पिता के पत्रों को पढ़ कर यह समझ लेता है कि किस प्रकार बुरी बातें चल रही हैं, और साम्यवादी युवक संघी युवक तरीके पर वह अपने बाप के मामले को योग्य अधिकारियों के सामने पेश करता है। इस पर जोश में आ कर "साहित्यिक गज़ट" लिखता है .."इस नाटक में बालशेविक सदाचार के प्रश्नों को ईमानदारी तथा सच्चाई के साथ सही ढंग से रक्खा गया है। इस में नवीन सोवियट नागरिक के उदात्त आन्तरिक जगत की पवित्रता तथा स्वच्छता दिखायी गयी है, उस के लिये मातृभूमि के स्वार्थ ही वैयक्तिक स्वार्थ हैं।"

सोफ्रोनोफ के साथी नाटककारों ने भी यही मत व्यक्त किया, और उन्हें नाटक पुरस्कार दिया। बहुत से रंगमंचों से "बेकटोफ का चरित्र" जल्दी-जल्दी बुक किया गया।

पर प्रचार और आन्दोलन विभाग ने कुछ और ही सोचा, और इस के मुख पत्र "संस्कृति और जीवन" ने इस नाटक की तीव्र निन्दा की क्योंकि यह जीवन में ज्यों-त्यों ऊँचा चढ़ने वाले एक व्यक्ति के इर्द-गिर्द घूमता था, और इसे "धनात्मक" चरित्रों की तुलना में अधिक क्रियाशील तथा सजीव कर के दिखलाया गया था।

"संस्कृति और जीवन" ने "साहित्यिक गज़ट" की इस कारण बहुत तीव्र निन्दा की कि उस ने "बेकटोफ के चरित्र" की बिना समझे-बूझे आलोचना कर दी, और इसी प्रकार कोजेवनिकोव द्वारा लिखित "अग्निमयी नदी" की गलत आलोचना की।

"साहित्यिक गज़ट" के सम्पादकों ने फौरन इसे मान लिया, और सम्पादकीय तौर पर यह माना कि उन्होंने इन मामूली रचनाओं पर इस तरह जोशीले लेख तथा आलोचनायें निकाल दीं। यह इस बात

का सूचक है कि 'साहित्यिक गजट' के पृष्ठों में आलोचक ईमानदारी की हत्या हुई है।

साधारण तौर पर जो पुराने लेखक हैं उन्हीं को प्रचार तथा आन्दोलन विभाग के साथ कदम रख कर चलने में दिक्कत होती है।

महायुद्ध के पहले उपन्यासकार तुलनात्मक रूप से तब तक अपनी कल्पना का अनुसरण करने के लिये स्वतन्त्र था, जब तक वह शासन पर हमला नहीं बोलता था या सोवियट विरोधी रंग नहीं भरता था। कुछ लोग जैसे मिखैल सोलोकोफ जिन का नाम सोवियट साहित्य में सब से बड़ा है, अपनी रायल्टियों तथा ख्याति पर बैठ कर जीवन बिताना तथा नीति में परिवर्तन की प्रतीक्षा करने को तरजीह देते हैं। प्रतिभाशाली कवि बोरिस पास्टरनाक की जब इस कारण बहुत निन्दा की गयी कि वे सही नीति से दूर हैं, तो उन्होंने शेक्सपियर का अनुवाद करना शुरू किया।

युद्ध के पहले के सोवियट नाट्यकारों ने एक प्रमुख व्यक्ति निकोलाई पोगोडिन जो अब तक कदम मिला कर चल नहीं पाये अभी इस साल के प्रारम्भ में सार्वजनिक रूप से इस बात की निन्दा कर चुके हैं कि रंगमंच की कला पर जो प्रभाव जबर्दस्ती और गलत तरीके से डाले जा रहे हैं, वे अनुचित हैं। उन्होंने उदाहरण के तौर पर मास्को कला रंगमंच के (जो रूसी रंगमंच में सर्व प्रधान हैं,) संचालक पर यह दोष लगाया कि एक नये नाटक को चुनते समय वे इस प्रकार तर्क कर चुके हैं... "सुरोफ इस नाटक का लेखक इस समय दल का कृपा पात्र है। वह दल का आदमी है तथा यह जानता होगा कि क्या लिख रहा है, इस कारण वह गलत नहीं हो सकता।" पोगोडिन ने कहा कि इसी प्रकार की अद्भुत विश्वनिन्दक उदासीनता से चीजों पर निर्णय किया जाता है।

पर पोगोदिन पर जब बहुत झाड़ें पड़ीं, तो उन्होंने पूर्ण रूप से अपने वक्तव्यों को वापस ले लिया। उन का अंतिम नाटक "मिसौरी वाल्ट्ज" जिस में कैन्सस नगर की राजनीति में फैले हुए भ्रष्टाचार की निन्दा की गयी, यह कह कर निन्दित हुआ कि उस के भ्रष्टाचारी राजनीतिज्ञ उन के धनात्मक टाइपों से याने अमेरिकन साम्यवादियों से अधिक माननीय हैं।

इस प्रकार वैयक्तिक रूप से दो चार क्षेत्रों में पीछे की ओर गति होने पर भी सोवियट भूमि में जो साहित्य उत्पन्न हो रहा है, उस में प्रतिभा की कमी नहीं है, और संभावनायें बहुत अधिक हैं। कुछ नये नाटक बड़े मनोरंजक हैं। गद्य लेखकों में से एक व्यक्ति जिस ने नये हुकमनामे को मानते हुए भी अपनी साहित्यिक दक्षता खोयी नहीं है, वे हैं कानस्टेंटिन फेडिन जिन के उपन्यास "अस्वाभाविक ग्रीष्म" को इस साल स्टालिन पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसी प्रकार स्टालिन पुरस्कार विजेता "मास्को से दूर" जिसे वासिली अजायव ने लिखा है यह एक बहुत ही सुपाठ्य पुस्तक है।

इन लेखकों ने प्रचार तथा आन्दोलन विभाग की माँग के अनुसार सोवियट युग के नये मानव को उज्ज्वल कर के दिखाने की अनुज्ञा का सम्पूर्ण रूप से पालन किया है।

कम से कम वे इस समय ऐसा ही कर रहे हैं।

---

(२)

सोवियट शासन की वास्तविक सांस्कृतिक सफलताओं में से एक यह है कि प्राचीन रूसी तथा विश्व साहित्य की रचनाओं को जनता तक पहुँचा दिया गया है। भूतकाल के महान लेखक, विशेषकर १९ वीं सदी के रूसी साहित्य के दिग्गजों की रचनाओं को सोवियट जनता तक बहुत सस्ते संस्करणों में पहुँचाया गया है। आज के सोवियट साहित्य से उन की बिक्री कहीं अधिक है।

इस सेवा को करते हुए यह दावा किया जाता है, और इस दावे को पुष्ट करने के लिये जमीन आसमान एक कर दिया जाता है कि वर्तमान साम्यवादी पद्धति भूतकाल की सब से अच्छी सांस्कृतिक तथा साहित्यिक परम्पराओं की उत्तराधिकारिणी तथा सब से अच्छी उपज है। साथ ही यह दावा किया जाता है कि यदि पुश्किन, लेरमोन्टोव, टालस्टाय यहाँ तक कि बायरन यदि आज जीवित होते तो प्रमुख साम्य-वादी होते।

इस प्रकार पेश करने में सर्वव्यापक साम्यवादी प्रचार और आन्दो-लन विभाग को बहुत काफी चतुरता, साथ ही बुद्धिमत्ता दिखलानी पड़ती है। ऐसा तो नहीं हुआ कि किसी रचना को इस के साथ एक पंक्ति में लाने के लिये, उसे बदला गया हो, पर निर्वाचन तथा किसी भाग को निकाल देने में बड़ी सावधानी से काम लिया जाता है। किसी एक विशेष लेखक के उस वक्तव्य को जो दल की नीति से विरोध रखता है, या तो बिल्कुल अवज्ञा कर के उड़ा दिया जाता है या उस की परवाह नहीं की जाती।

इस सम्बन्ध में एक प्रासंगिक उदाहरण उस अवसर के वर्णन से दिया जा सकता है, जब कि इसी बसन्त ऋतु को रूसी कवि अलेक-जेंडर पुश्किन के १५० वें जन्मोत्सव को बड़े धूमधड़ाके से मनाया गया। उस अवसर पर बोलते हुए सोवियट कवि निकोलाई ग्रीबाचोफ ने कहा..."मैं उन्हें साथी पुश्किन कहना चाहता हूँ, मानो हम सभी एक ही युग के हों।"

पुश्किन अधिकांश समय जार की तानाशाही तथा जार के सेन्सर विभाग से लड़ते रहते थे, इसी बात का यह अर्थ निकाला गया है कि यदि वे होते तो आज की पद्धति के साथ सम्पूर्ण रूप से सहमत होते। "साहित्यक गजट" संवादकीय रूप से कहता है..."पुश्किन की कविता सारे जगत के सरल तथा ईमानदार लोगों के हृदय में अपनी जड़ें रखती है, ऐसे लोग जो जातियों की अनिवार्य शान्ति तथा स्वतन्त्रता में विश्वास रखते हैं।"

साम्यवादी भाषा में इस का फलितार्थ है विश्व क्रान्ति की विजय।

वैदेशिक नीति के विशेष विषय पर उसी "साहित्यिक गजट" का कहना है..."पुश्किल अपनी जाति के उज्ज्वल भविष्य के सम्बन्ध में निश्चित थे। उन का कहना था कि योरोप की मुक्ति रूस के ही जरिये आयेगी।"

एक प्रमुख सोवियट आलोचक वाई यरगिलाफ़ का तो यहाँ तक कहना है कि इस समय जो अमेरिकन विरोधी प्रचार चल रहा है, वह भी पुश्किन से प्राप्त किया जा सकता है। वे इस अंश को उद्धृत करते हैं—"कुछ दिनों से उत्तर अमेरिका के राज्यों की ओर योरोप के सोचने वाले लोगों का ध्यान गया है।...उन्होंने आश्चर्य के साथ देखा कि अत्यन्त घृणित विश्व निन्दकता, निर्दय कुसंस्कार तथा असहनीय अत्याचार को ले कर वहाँ का लोकतन्त्र चल रहा है।......अमेरिका का

जो चित्र हमारे सम्मुख है उस में हम देखते हैं कि मतदाता लोभी और मत्सरपूर्ण हैं, प्रशासक गुलाम मनोवृत्ति के तथा कायर हैं।'[7]

पुश्किन को आधुनिक रूसी साहित्य तथा भाषा के संस्थापक के रूप में सही तौर पर दिखाने के साथ ही साथ प्रवृत्ति यह है कि पश्चिम के साथ उन की निकटता को तथा कीट्स, शेली, विशेष कर बायरन के साथ उन की निकटता को सामने नहीं लाया जाता।

इसी प्रकार से सोवियट शासन ने महान् मानवता वादी तथा साहित्यालोचक वेसारियन वेलीनस्की के सत्कार का स्वीकार किया है, क्योंकि वे बौद्धिक स्वतन्त्रता के लिये बराबर जारशाही पुलिस से लोहा लेते रहे, और ऐसा करते-करते शहीद हो गये। वेलेनस्की ने रूसी जीवन के कई पहलुओं पर विशेष कर साहित्य पर पश्चिमी योरप की संस्कृति के साम्यकारी प्रभावों पर जोर दिया और यह कहा कि यह पश्चिम से मानों एक पौधे को ला कर रूसी जमीन पर लगा दिया गया। यदि वे इस समय जीवित होते तो इसी मत के लिये उन्हें "पूँजीवादी सार्वदेशिकतावादी" करार दिया जाता।

ऐसे मतों की या तो अवज्ञा की जाती है या उन्हें अस्वीकृत किया जाता है। एक सोवियट लेखक ने समय क्रम का विशेष ख्याल न रख कर यह फतवा दे दिया कि इस प्रकार के वक्तव्य वेलेनस्की ने तब दिये जब कि उन की बुद्धि परिपक्व नहीं हुई थी।

गोगोल जिन्होंने अपने समय के अन्यायों तथा भ्रष्टाचारों का अपनी अमर कृतियों जैसे "मृत आत्माओं" तथा "इन्सपेक्टर जनरल" में पर्दाफाश किया था, अब प्रशंसित होते हैं, यद्यपि वे समाजिक असंगतियों को दूर करने के उपायों के आविष्कार करने में समर्थ नहीं

हुए।" यदि दल की इस भाषा का अनुवाद किया जाय तो इस का मतलब यह होगा कि वे हिंसामूलक क्रान्ति के पक्ष में नहीं थे।

गोगोल को मुख्यतः उन की देशभक्ति के लिये स्वीकार किया जाता है। अभी हाल में एक आलोचक ने बड़े आदर के साथ उन के उस वक्तव्य को उद्धृत किया जिस में वे रूसी जाति की तुलना एक द्रुतगामी ट्राइका या घोड़ागाड़ी से करते हैं। जैसे-जैसे वह घोड़ागाड़ी आगे बढ़ती है, "दूसरी जातियाँ तथा लोग अलग खड़े हो कर उसे रास्ता देते हैं।"

व्यंग के प्रतिभाशाली लेखक साल्टिकोव श्चेड्रिन, जिन्होंने निर्दयता पूर्वक जार की नौकरशाही की मूर्खता तथा कुसंस्कारों की धज्जियाँ उड़ायी थीं,एक सोवियट पथ-प्रदर्शक माने जाते हैं। यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि यदि वे आज जीवित होते, तो उन्हें व्यंग करने के लिये सोवियट नौकरशाही में कोई मसाला नहीं मिलता।

सोवियट का यह दावा कि नम्र और साथ ही पैनी दृष्टि वाले एन्टनो-चेकाफ भी इसी प्रकार के व्यक्ति थे, इस प्रकार प्रमाणित किया जाता है कि देहाती जीवन की एकरसता से उन के चरित्र अक्सर एक सुन्दरता और पहले से सुखकर जगत के आगमन की भविष्यवाणी करते हैं। निष्कर्ष यह है कि वर्तमान सोवियट शासन ही वह पद्धति है जिस की ओर चेकाफ तथा उन के पात्र टकटकी बाँध कर देख रहे थे। यहाँ तक कि शक्तिशाली टालस्टाय को यद्यपि वह एक रहस्यवादी आदर्शवाद को मानते थे काँट छाँट कर सोवियट विचारधारा के पशु-प्रतीकवादी डंडे पर कलम के रूप में लगा दिया गया है।

इन सारे बुद्धिवादी महान् रचयिताओं में एक खास बात थी, वह थी बौद्धिक स्वतन्त्रता तथा राजनैतिक लोकतन्त्र के लिये प्रीति, और

यह १९ वीं सदी के उदारवादी अर्थ में था, न कि इन शब्दों के चालू सोवियट अर्थों में। यदि वे आज रूस में होते, तो बहुत संभव है कि वे सोवियट राष्ट्र के अप्रिय होते।

सोवियट परिषद के सदस्य टार्ले का यह कहना है, और यह उस स्थल की चीजों को अध्ययन करने के बाद कहना है कि निकोलस प्रथम ने जान बूझ कर पुश्किन और लेरमोनटोव को मरवा दिया, क्योंकि वे लोग द्वंद्व युद्ध में मारे गये थे।

टार्ले लिखते हैं—"थोड़े ही समय याने चार साल के अन्दर ही दो कवि बिना किसी कष्ट या असुखकर बात के समाप्त कर दिये गये।"

इस से यह विचार सूचित होता है कि यदि वे तथा उस प्रकार के अन्य लोग आज होते, तो तरलीकरण (जेल या मृत्युदंड) की प्रक्रिया और द्रुत होती।

महान् रूसी लेखक फेयोडोर डास्टायवस्की एक ऐसे लेखक हैं जिन पर सोवियट कोई दावा नहीं करते, और उन्हें निराशाजनक रूप से भयंकर तथा उद्धार के बाहर प्रतिक्रियावादी के रूप में निन्दित किया जाता है। जब साहित्यालोचक वी. किरपोटीन ने यह चेष्टा की कि वे डास्टायवस्की को पंक्ति में ले आयें, तो उन्हें साहित्य परिषद नामक संस्था की नौकरी से निकाल दिया गया। "साहित्यिक गजट" ने किरपोटीन पर यह दोष लगाया कि वे क्रान्ति तथा लोकतान्त्रिक क्रान्तिकारियों के सब से दुष्ट और खुले हुए दुश्मन डास्टायवस्की को पुनःस्थापित करना चाहते हैं।

फिर भी सत्य यह है कि सब साहित्यिक विभूतियों में डास्टायवस्की ही एक ऐसे व्यक्ति थे जो पुलिस राष्ट्र की मनोवृत्ति को समझ सकते थे। राजद्रोह के मामलों में (जिन में अजीब तरीके से अभियुक्त अपना

अपराध स्वीकार करते हैं) ऐसी कथायें हैं जो डास्टायवस्की के उपन्यासों की तरह हैं। वर्तमान सोवियट राजनैतिक वातावरण में डास्टायवस्की ही एकमात्र व्यक्ति थे जो उसे समझते, पुश्किन से अधिक समझते। शायद इसी लिये उन का इतना विरोध किया जाता है।

---

(३)

"हमें चाहिये कि हम सोवियट बच्चों के लिये ऐसी रचनायें प्रस्तुत करें जिन से आंग्ल अमेरिकन साम्राज्यवादियों के पाशविक चेहरे को, उन की युद्ध करने की मनोवृत्ति तथा उन के द्वारा किये गये गुलामों के व्यवसाय को अच्छी तरह समझें।"

गत वसन्त ऋतु में साम्यवादी युवक संघ की ११ वीं कांग्रेस में बोलते हुए बच्चों के प्रिय लेखक लज्जाशील नम्र स्वभाव सर जेइ मिखे लोव ने इस प्रकार भाषण दिया था। इस समय तक मिखे लोव हमारे मित्र थे, अब हमारे अन्य बहुत से मित्रों की तरह हमें देख कर शरमा जाते थे, तथा यदि कहीं भेंट हो ही गयी तो ऐसा बन जाते थे कि उन्होंने हमें देखा ही नहीं।

इस व्याख्यान के कुछ दिन बाद हमारा लड़का करीब-करीब रुआसा हो कर अपने सब से प्रिय मित्र रूसी बालक वाल्या के यहाँ से लौट आया। वाल्या की बड़ी बहन घर पर थी। हमारे लड़के ने उस से यह

बताया कि हम ने उस से यह प्रतिज्ञा की थी कि यदि वह अच्छी तरह पढ़ता रहा, और उस की चाल-चलन ठीक रही, तो हम उसे गर्मियों के लिये अमेरिका भेजेंगे। इस पर बड़ी बहन ने नाक-भौं सिकोड़ कर कहा—वाह! खूब रहा, तुम अमेरिका भेजे जाओगे। वहाँ तो तुम्हें तब भेजना चाहिये जब तुम बुरे काम करो, न कि इसलिये कि तुम अच्छे काम करते हो। तुम ने नहीं सुना सिर्गे लोव ने अमेरिका के सम्बन्ध में क्या कहा।

हमारे लड़के ने दुःख के साथ बताया—इस के बाद मैं ने बहुत शिष्टाचार से काम नहीं लिया। मैं ने उस से यह कहा कि वह अमेरिका के विषय में कुछ भी नहीं जानती, और वह ज़बान बन्द करे, और इसी प्रकार की अन्य बातें।

इस प्रकार से एक सुन्दर मित्रता का अन्त हो गया। हमारी जान-पहचान की तरह उस की भी जान पहचान जल्दी-जल्दी खतम हो रही थी, और उस का कारण दोनों क्षेत्रों में एक ही था।

साम्यवादी दल का प्रचार तथा आन्दोलन विभाग के वयस्क सदस्य अमेरिकन विरोधी प्रचार कार्य को बच्चों की तरफ ले जा रहे थे। "पथ प्रदर्शक प्रावदा" तथा नौजवानों के लिये अन्य प्रकाशनों में अमेरिकन ब्वाय स्काउटों को प्रशासित खुफिया कर के बताया जाता था, उन में यह कहा जाता था कि अमेरिकन बच्चे पालने से लेकर अटम बम की तरह खिलौनों को ले कर खेलते हैं और बचपन ही से युद्धकामी कर के प्रशासित किये जाते हैं।

हम इस के व्यावहारिक नतीजों को भी देखने लगे थे, क्योंकि अब पड़ोस के नौजवान दीवार के उस पार से हमें गालियाँ देते थे, और कभी-कभी वे और भी कड़ी चीजें हमारी तरफ फेंकते थे।

अब अमेरिका की निन्दा करना साहित्य, रंग मंच तथा राजनीति में सब से निश्चित सफलता का उपाय है। ऐसा कर के कोई भी लेखक विशेष कर बच्चों का लेखक अपनी जेबों को भर सकता है, और साथ ही दल के प्रति अपनी वफादारी का परिचय दे सकता है।

कोई भी सोवियट नाटक या उपन्यास अमेरिकन राजनयिक, पत्रकार, इंजीनियर या व्यापारी के बिना सम्पूर्ण नहीं होता, जो साथ ही साथ खुफिया और फसाद कराने वाले हैं। ऐसा मुख्य चरित्र अथवा गौण चरित्र के रूप में दिखाया जाता है। अब तो कोई भी हास्य रस की रचना अमेरिकन विरोधी पुट के बिना सम्पूर्ण नहीं होती।

कनस्टैन्टाइन सिमोनोव ने एक अमेरिकन विरोधी नाटक "रूसी प्रश्न" को लिख कर इस क्षेत्र में पथ प्रदर्शक का काम किया। उन्होंने आत्म समालोचना के जोश में यह कहा कि हर्स्ट रिपोर्टरों के विच्छिन्न व्यक्तित्व पर इतना समय खोने के बजाय यह उचित था कि वे उन के दैनिक सोवियट विरोधी कार्यों पर अधिक प्रकाश डालते।

निश्चित रूप से ज्यों-ज्यों समय जा रहा है, सोवियट लेखकों का अमेरिकन विरोधी कार्य कलाप बढ़ते ही जा रहे हैं।

अब तक जितने भी अमेरिकन विरोधी प्रचार साहित्य की सृष्टि हुई है, उन में दल के नाट्यकार अनाटोली सुरोव ने "पागल बिसाती" नामक जो नाटक लिखा है, वही सब से भयंकर है। इस का मुख्य पात्र बिसात खाने का एक सेल्समैन मिसौरी के कैन्सस नगर का निवासी है। उस का चेहरा हिटलर से बहुत मिलता है।

पेन्डरगास्ट मशीन राजनीति के ज्ञातागण यह युक्ति सोचते हैं कि इस व्यक्ति को हिटलर कर के घोषित किया जाय, जो गुप्त रूप से चैनसेलरी से बच गया है, और इसे नात्सी दल की ओर से अमेरिका का राष्ट्रपति बनाया जाय।

ऐसा मालूम होता है कि दल के प्रचार तथा आन्दोलन विभाग ने इस का बन्द करना चाहा क्योंकि कई बार इस नाटक के प्रारम्भ किये जाने की घोषणा हुई, और फिर वह रह रह गयी।

अमेरिका पर जो दल की नीति है, वह यों है...अमेरिका विश्व पूँजीवाद का केन्द्र तथा सोवियट संघ के विरुद्ध जो विश्व के वर्तमान युग में प्रगतिशील मानव जाति का नेता है, सारी शक्तियों का मिलन बिन्दु है। अमेरिका की सरकार अमेरिकन एकाधिकारमूलक पूँजी का ऐजेन्ट है. वह इस बात पर तुली हुई है कि विश्व साम्राज्य स्थापित करे, और इस सम्बन्ध में वह सोवियट संघ पर आक्रमणात्मक युद्ध की योजना पर चल रही है।

जैसा कि साम्यवादियों में रिवाज है, नीति तय हो जाने पर प्रचार तथा आन्दोलन विभाग उस के समर्थन के लिये तथ्यों का संग्रह करता है।

यदि किसी तथ्य से इस बात की झलक आ जाय कि अमेरिका की नीति सोवियट संघ के विरुद्ध युद्ध को ही अपनी नीति में सब से अधिक प्रधानता देने की नहीं है, तो उस तथ्य का दमन किया जाता है। जो अमेरिकन यह कहता है कि इन दोनों देशों में पारस्परिक सम्मान और ईमानदारी के आधार पर मित्रतापूर्ण व्यवहार रहना चाहिये, उस का विश्वास नहीं किया जाता। रूसी इस प्रकार के पारस्परिक व्यवहार को स्वीकार नहीं करते। सोवियट मित्रता आत्म

करने का एकमात्र तरीका है उन की हाँ में हाँ मिलाना, तथा उन के हाथों में खेलना।

इस सम्बन्ध में यह बता देना चाहिये कि प्रचार तथा आन्दोलन विभाग को अमेरिका के कुछ गैरजिम्मेदार नेताओं की वाणी तथा सन्देशों से जिन में वे रूस के विरुद्ध युद्ध और अटम बम के प्रयोग की बात करते हैं, बहुत सहायता मिलती है। ऐसे बोलने वालों में अमेरिकन कांग्रेस के सदस्य भी होते हैं। सोवियट जनता की दृष्टि में यह 'प्रावदा' पत्र का अनुमोदन मालूम होता है।

रूसी जाति में अमेरिका के प्रति जो परम्परागत मित्रता तथा सम्मान की भावना है, वह अमेरिकन विरोधी प्रचार कार्य में सब से बड़ी घरेलू बाधा है। युद्ध के जमाने में सोवियट युद्ध प्रयास को अमेरिकन सहायता पहुँचायी गयी, तथा अमेरिका मित्र पक्ष में था, इन तथ्यों का रूसी जनता पर बहुत प्रभाव है।

अमेरिका ने युद्ध में जो भाग लिया उसे मिटाने तथा संस्कृति और प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र में अमेरिकन दान को घटा कर देखने-दिखाने की सब तरह की चेष्टा की जाती है।

लेखक सीटर पावलेन्को ने अमेरिका से शान्ति सम्मेलन से लौट कर यह वक्तव्य दिया कि अमेरिका का सारा संगीत बाहर से आता है, और अमेरिका का कोई उल्लेखयोग्य निजी संगीत नहीं है। इसी प्रकार अमेरिकन साहित्य, कला, वास्तुकला, यंत्रविज्ञान आदि के सम्बन्ध में सोवियट पत्रों में रोज़ कुछ नयी बात पढ़ने को मिलती है।

गत शीत ऋतु में "पासपोर्ट हीन सार्वदेशिकवादियों" की 'शुद्धि' का बहुत अजीब कार्यक्रम इसलिये चलाया गया था कि असाम्यवादी संस्कृति तथा विचारों के प्रभाव को सम्पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया जाय,

इस का अर्थ साथ ही साथ बची खुची बौद्धिक ईमानदारी और आलो-चना की प्रतिभा को नष्ट करना था। प्रचार तथा आन्दोलन विभाग की समझ में इस के बाद रूसियों को सारे नहीं तो मुख्य आविष्कारों तथा सांस्कृतिक सफलताओं के श्रेय देने की चेष्टा पर कोई न तो छिपे या खुले तौर पर हँसेगा, और न उन के अनाड़ी तर्कों का कोई विरोध होगा। इस प्रकार दल के पले हुए ऐसे लेखकों के लिये जमीन बन जायेगी जो दल के हुक्म के अनुसार लिखते हैं।

यह विभाग एक सोवियट लेखक से क्या चाहता है, इस का एक प्रकृष्ट उदाहरण निकोलाई विर्टा है।

विर्टा ने अपनी बहुमूल्य प्रतिभा का उपयोग दल के प्रचारक के लिये निर्दिष्ट नियमावली को सम्पूर्ण रूप से अपना कर किया है।

१९४६ में युद्ध के बाद दल युद्ध कालीन शिथिलता के बाद सामू-हिक फार्म के अनुशासन को कस रहा था। विर्टा ने "हमारी दैनिक रोटी नामक" एक नाटक लिखा, जिस में सामूहिक फार्म के अनुशासन को कड़ा बनाया गया।

१९४८ में जब चेकोस्लोवेकिया को पश्चिम से 'बचाने' की बात हुई, तब उस प्रयास का समर्थन करते हुए उस ने एक नाटक "पराजित होने वालों का षड्यंत्र" लिखा, जिस में यह दिखलाया गया था कि एक पूर्वी योरोपीय स्लाव देश को साम्यवादी किस प्रकार अमेरिकन षड्यंत्र से बचा ले गये।

विर्टा की सब से ताज़ी पुस्तक में टीटोवादी दलपलाटू को और यूगोस्लाव देशभक्तों का संग्राम दिखाया गया है। यह तो बिना किसी खतरे के अनुमान कर लिया जा सकता है कि इस के खलनायकों में कोई अमेरिकन खुफिया अवश्य होगा।

जब हम १९५८ में दीर्घकालीन कार्य ले कर मास्को में लौटे, तो डाक्टर सरजेई अलेक्सैंडोविच कुजेविटस्की ने जो इस समय बोस्टन के सिम्फनी आर्केस्ट्रा के ख्यातिप्राप्त तथा लोकप्रिय डायरेक्टर हैं, अपने पुराने सोवियट संगीतज्ञ दोस्तों के लिये कुछ कपड़े तथा अन्य वस्तुयें दीं। उन की यह हिदायत थी कि यदि सम्भव हो तो सारी चीज़ें एक मामूली कम्पोज़र गिलीयर को जो मास्को कन्जरवेटरी में सहपाठी भी थे दे दिये जायँ, और गिलीयर ही इन चीज़ों को बाँट देंगे।

हम ने गिलीयर के घर का पता मालूम किया, और एक दिन शाम को पहले से तै कर के मेरी स्त्री और मैं अपने सब से बड़े सूटकेस को साथ में ले कर चल पड़े। गिलीयर दम्पति अधेड़ पर बड़े सुन्दर स्वभाव के निकले। वे अभी नये फ्लैट में गये थे, पर पानी के कारण रहने के कमरे की भीतरी छत खराब हो गयी थी, और इसे ठीक करना बहुत कठिन काम था।

हमारे मेज़बान ने एक पुरानी अलमारी ढूँढ़-ढाँढ़ कर एक रंग उड़ा हुआ फोटो निकाला, और उस में उन्होंने युवकों की कतारों में से अपने को तथा सरजेई अलेक्जेंडरविच को बताया। पुरानी मित्रता की स्मृति मात्र से गिलीयर खिल उठे, और जब हम ने यह बताया कि डा० कुजे-विटस्की यह आशा कर रहे हैं कि वे रूस में कान्सर्ट करेंगे, और उन्होंने सोवियट अधिकारियों को यह लिखा था कि वे अपना और आर्केस्ट्रा का सारा खर्च खुद देंगे, तो गिलीयर जोश में आ गये। कम्पोज़र संघ

कार्य समिति के सदस्य के रूप में उन्होंने यह कहा कि वे इस यात्रा को सफल बनाने में कुछ उठा न रखेंगे।

जहाँ तक कपड़ों तथा अन्य उपहारों का सम्बन्ध था गिलीयर फॉरम ही उन को बाँटने के लिये राज़ी हो गये। उन्होंने यह बताया कि सूटकेस लौटाते समय वे यह बतायेंगे कि किस प्रकार क्या किया गया।

डा० कुजेविटस्की ने यह जो प्रस्ताव किया था कि वे अपने ही खर्च से आर्केस्ट्रा को ले आयेंगे, और टिकट से प्राप्त धन युद्ध के कारण जो बच्चे अनाथ हो गये हैं, उन के लिये दे देंगे, इस का कोई भी उत्तर नहीं दिया गया, यद्यपि कई बारियों से यह अनुरोध किया गया। अमेरिकनों की तरफ से सोवियट संघ के साथ सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित करने की जो भी चेष्टा हुई, उस की यही गति हुई। ऐसी कोई भी योजना जिस में संगीत का आदान-प्रदान भी आता था दल की नीति के साथ सम्पूर्ण रूप से सामंजस्यहीन थी।

दो साल बाद जब स्वर्गीय आन्द्रेइ ज्दानोव के नेतृत्व में मानवीय इतिहास में सब से पहली 'शुद्धि' का कार्यक्रम चलाया गया, तब यह बहुत स्पष्ट रूप से सार्वजनिक हो गयी। संगीत की यह शुद्धि कुछ अजीब तरीके से हुई। बालशोई रंगमंच में १६४७ के नवम्बर में क्रान्ति के तीसवें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में जार्जिया के कम्पोज़र वानोमुराडेली लिखित ताजा ऑपेरा 'महान् मित्रता' पेश करने का निश्चय हुआ।

दल के किसी भी दृष्टिकोण से यह निर्वाचन बहुत निरापद था। ऑपेरा में काकेशश में क्रान्ति तथा गृह युद्ध का विषय लिया गया था, जिस का अन्त बालशेविकों की विजय में होता था। कम्पोज़र स्टालिन का देशवासी था। पर बालशोई रंगमंच के अधिकारियों ने ज्दानोव की

बात बिना सोचे ही यह प्रस्ताव किया था। उडानोव स्वयं यथेष्ट प्रतिभाशाली संगीतज्ञ थे, और वे संगीत के सम्बन्ध में कुछ विशेष विचार रखते थे।

इसलिये पत्रों की प्रथम प्रशंसात्मक टीकाओं के बाद दल की ओर से एक आदेश-पत्र निकाला गया जिस में इस आपेरा को सुरभंग करने का अपराधी बताया गया, और यह कहा गया कि इस पर पाश्चात्य ह्रासशील संगीत का प्रभाव है। इस से सन्तुष्ट न रह कर कई प्रधान सोवियट सुर-रचयिताओं पर इसी प्रकार के दोष लगाये गये। इन में सरजेई पुरोकोफिराव तथा डमिट्रीसोस्टाकोविच भी थे।

जैसा कि 'शुद्धि' के मौकों पर होता है कम्पोजरों के संघ की आत्म-निन्दामूलक सभायें हुईं, जिन में छोटे से छोटों ने गिरे हुए बुतों पर गोलियाँ चलाईं। बात यह है कि सोवियट संघ में उसी समय किसी व्यक्ति पर हमला किया जा सकता है जब कि उस के बुरे दिन आये हों। तिरस्कृत हो कर सुर-रचयिताओं ने अपनी 'भूलें मानीं'।

सोस्टाकोविच बहुत बुद्धिमान् प्रमाणित हुए, और उन्हें 'ईमान-दारी' के कारण प्रशंसा प्राप्त हुई। यद्यपि उन्होंने जितने ऐसे संगीतों की रचना की थी जिस के कारण वे विश्वविख्यात हो गये थे, सोवियट संघ में बिल्कुल रद्दी के टोकरे में डाल दिया गया है, फिर भी उन्होंने फाडेव के उपन्यास 'नौजवान पहरेदार' को जिस प्रकार से फिल्म संगीत दिया था, उस के सम्बन्ध में यह कहा गया कि उन में सम्भाव-नायें हैं। तब से उन्होंने 'जंगल का कन्टाटा' लिख कर अपनी ख्याति फिर प्राप्त कर ली है। यह दल की ओर से चलाये जाने वाले पुनर्वन महोत्सव की प्रशंसा में लिखा गया था।

पुरोकोविराव ने सोश्टाकोविच की तरह सार्वजनिक रूप से प्राय-श्चित्त करने से इनकार किया। वे इन निन्दात्मक सभाओं से तन्दुरुस्ती खराब होने का बहाना करके बचे रहे। फिर भी उन्हों ने लिखित रूप से अपनी गलती मान ली है, और दल को यह आश्वासन दिया है कि जैसा दल चाहेगा, वे उस प्रकार के संगीत की रचना करने की चेष्टा करेंगे।

१९३० में पुरोकोविराव सोवियट सरकार के निमंत्रण पर स्वेच्छाकृत निर्वासन से रूस में वापस आये थे। उन के साथ उन की अति सुन्दरी स्पेनिश फ्रेंच स्त्री लीनेथ भी आयी जो उन के कारण सोवियट नागरिका हो गयी। उन के दो पुत्र थे। हम इस परिवार को बहुत सालों से जानते थे। १९३९ में जब मेरी रूसी पत्नी प्रथम बार अमेरिका जाने की सम्भावना से घबड़ा रही थी, उस समय पुरोको-विराव ने परिहास में मेरी स्त्री को न्यूयार्क की परिस्थिति बतायी, और यह बताया कि कैसे वह जगह उसे पसंद आयेगी।

फिर युद्ध आया। शायद सम्पूर्ण रूप से अपने निर्वासित जीवन से अपने को अलग करने के लिये तथा 'देशी' बनने के लिये पुरोकोविराव ने अपने परिवार को अलग कर दिया। बात यह है कि वे शायद यह समझने लगे थे कि एक विदेशी होने के कारण उन की स्त्री लीनेथ एक सामाजिक तथा राजनैतिक भार-सी थी। थोड़ी देर के लिये लीनेथ ने अपने पति के प्रेम का सहारा लिया। पर जब वह सफल नहीं रहा, तो उस ने रूस से बाहर जाने की चेष्टा की, क्योंकि अब वहाँ न तो उस का कोई मित्र था न उस की जड़ें थीं। वह माँ से पेरिस में जा कर मिलना चाहती थी। जब भी हम उस से मिले तो वह यही कहती हुई पायी गयी कि उसे जल्दी ही बाहर जाने का अनुमति-पत्र मिलेगा। एक बहुत

महत्वपूर्ण व्यक्ति के साथ उस की बातचीत हो चुकी है कि उसे तथा उस के दो पुत्रों को अनुमति-पत्र प्राप्त हो जायेंगे, और उस का पति जो उस से छुटकारा चाहता है उस की सहायता करेगा।

लीनेथ जब महीनों दिखायी नहीं पड़ी, तो हम ने उसे टेलीफोन किया। उधर से एक डरी हुई आवाज़ ने यह कहा कि वह अब वहाँ नहीं रहती। हम को जल्दी ही मालूम हुआ कि लीनेथ गिरफ्तार हो गयी थी, और बच्चे राष्ट्र के जिम्मे थे।

तब तक पुरोकोविराव सम्पूर्ण रूप से अपने कष्टों में उलझ गये थे। उन का आपेरा "एक वास्तविक व्यक्ति की कहानी" जो एक सोवियट गीत को लेकर बना था, लेनिनग्राड में कान्सर्ट के रूप में पेश हुआ था, और उन्हें बड़ी आशाएँ थीं।

पर दल के पत्रों ने इस की निन्दा की। कहा गया कि "बाहरी रूपवाद की पुनरावृत्ति" है। यहाँ तक कि अभागा कन्डैक्टर, जिस ने उसे अपनी जिम्मेदारी पर बजाया था तिरस्कृत हुआ। 'साहित्यिक गजट' ने टरटरा कर कहा..."स्पष्ट है कि संगीत रचयिता ने दल के ऐतिहासिक आदेश पत्र से अपने उपसंहार नहीं निकाले, और वह अब भी कथित आधुनिक सुर तालहीन संगीत का प्रतिपादन करता है, जो सोवियट मानव के मानसिक जगत को व्यक्त करने में असमर्थ है। इस से तो केवल एक बहुत बड़े देशभक्तिपूर्ण विषय का हनन हुआ है।"

इस असफलता के बाद पुरोकोविराव ने दुनिया से अपने को अलग कर लिया। जिस पुरोकोविराव को हम ने कभी एक प्रफुल्ल, रसिक पर्यटक तथा चिरंतन रूप से बचकाना रूप में देखा था, वह अब चिड़चिड़ा, दुःखी, दिल बैठा हुआ तथा भग्नहृदय व्यक्ति हो गया था। उस ने संगीत रचना यह समझ कर छोड़ दी कि वह अपने

स्वभाव के कारण दल की डफली बजाने में असमर्थ है, और उस के लिये तरुण सोस्टाकोविच की तरह नयों के साथ कदम मिला कर चलना संभव नहीं।

इसी बीच में गिलीयर की उन्नति हुई। संगीत के प्रतिभाशाली लोग जब सामयिक या स्थायी रूप से मिट गये, तो मध्यम दर्जे के प्रतिभावालों के लिये गुंजाइश थी। जब अगली बार संगीत में स्टालिन पुरस्कार बटे, तो उन्हें भी एक पुरस्कार मिला। शायद इस से उन्होंने अपनी छत ठीक कर ली हो पर हमें मालूम नहीं। जब हम तीन वर्ष बाद मास्को से रवाना हुए, तो अब भी हम प्रतीक्षा कर रहे थे कि वे मिल कर हमें सूटकेस लौटायेंगे।

---

(५)

जब १९४८ में अमेरिकन चलचित्र सम्राट् मिस्टर जानसन मास्को में आये, तो उन्होंने एक सोवियट चलचित्र का स्टूडियो देखना चाहा। उन का अनुरोध मान लिया गया, यद्यपि इस के कारण चलचित्र मंत्रालय को काफी कष्ट का सामना करना पड़ा।

इस विदेशी के सामने रूसी कहावत के अनुसार 'कीचड़ में औंधे मुँह गिरने' से बचने के लिये जल्दी-जल्दी एक बेकार पड़े हुए स्टूडियो को क्रियाशील करने की कोशिश की गयी। इस मौके के लिये अभिनेता,

कैमरा मैन तथा अन्य लोगों को झटपट लाया गया, और साथ ही साथ अन्य सरंजाम भी लाये गये। फिर भी मिस्टर जानसन की अभ्यस्त आँखें सम्पूर्ण रूप से धोखे में नहीं आ सकीं। बाद को यह कहानी सारे मास्को के साहित्य तथा रंगमंच समाज में पहुँच गयी।

इस का अर्थ यह नहीं है कि सोवियट चलचित्र धन्धा जिस ने भूतकाल में जगत को कई अच्छे चित्र दिये हैं अब बिलकुल बेकार पड़ा है, या उस का अब उत्पादन से कोई सम्बन्ध नहीं रह गया। हाल के कुछ चित्र जैसे "पत्थर का फूल" जिस में बहुत आकर्षक लोक-कथा तथा बहुत रंगीन फोटो का काम है या अलेकजेंडर फाडेफ का "नौजवान पहरेदार" जिस में सफलता से उबलते हुए अभिनेताओं का दर्शन होता है, इस बात के सबूत हैं कि रूस में अब भी परिचालन की प्रतिभा, अभिनय कुशलता तथा यांत्रिक दक्षता की कमी नहीं है। बहुत से डाकूमेन्ट्री तथा जल्दी में तैयार किये हुए प्रचार चित्रों में भी कई बार बहुत सुन्दर कला के दर्शन हो सकते हैं।

फिर भी १९४६ से सोवियट चलचित्र धन्धा, यद्यपि उस में बहुत सम्भावनायें हैं, बहुत नीचे के गियर में चल रहा है। बात यह है इसी समय सांस्कृतिक क्षेत्रों में दल की विचार धारा की नयी आवश्यकताओं को एक दलीय हुक्मनामे के रूप में पेश किया गया, जिस के कारण कई चित्र जो तैयार हो चुके थे नष्ट कर दिये गये।

किसी भी क्षेत्र में प्रचार कार्य के कैदियाना जामे ने उतनी हानि नहीं पहुँचायी जितना कि सोवियट चलचित्र के क्षेत्रों में हुई है। इस का कारण यह है कि चित्र बनाने की प्रक्रिया पुस्तक प्रकाशित करने, यहाँ तक कि रंगमंच पर एक नाटक को पेश करने से जटिलतर है।

रूस की निजी कठिनाइयों के अलावा चलचित्र धन्धे पर लेखक, नाटककार, कम्पोज़र जो लोग सेनारियों तथा चलने वाले संगीत की रचना करते हैं, उन पर लगायी हुई रोकों तथा नियंत्रणों से हानि पहुँचती है।

चलचित्र उत्पादन में सब से प्रारम्भिक विपत्ति उपयुक्त विषय चुनने के सम्बन्ध में आती है। कोई कथानक या कहानी चलचित्र का उपजीव्य हो सके, इस के पहले यह जरूरी है कि दल और सरकार की छानबीन से साधारण रूप से पहले-पहल पाण्डुलिपि के रूप में, फिर पुस्तक के रूप में, फिर रंगमंच के रूप में, और अन्त में सेनारियों के रूप में बच निकले और प्रत्येक परीक्षण में इस बात की बहुत कुछ सम्भावना है कि वह रुक जाय।

फिर यह भी बात नहीं कि एक दिन पास हो गया, तो फिर उसे कोई खतरा नहीं। कहीं न कहीं ऐसा अटकता है, कि बहुत मौलिक परिवर्तन करने की आवश्यकता आ पड़ती है। इस प्रकार इस बात की सम्भावना बहुत कम है कि चित्रपट पर किसी भी विचार को अन्त तक अपने उपसंहार तक पहुँचने दिया जाय। यहीं पर विपत्तियों का अन्त नहीं होता। जैसे घोड़े के सामने घुड़दौड़ में बाधाएँ क्रमशः बड़ी होती होती अन्तिम बाधा सबसे बड़ी होती है, उसी प्रकार से चलचित्र बन भी गया, तो उसे अन्त में जा कर सब से बड़ी बाधा के सम्मुख पड़ना पड़ता है। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि दल की दीर्घ रेखा में चलचित्र का नम्बर सब से अन्त में है।

चलचित्र के मोर्चे पर चार साल पहले डानबास कोयले की खान में युद्धोत्तर पुनर्गठन का चित्रण करता हुआ "महान जीवन" नामक एक चलचित्र को (यद्यपि वह तैयार हो चुका था) कूड़ेखाने में डलवा कर

दल का हमला शुरू हुआ । इस अद्‌भुत कार्य का कारण बताते हुए यह कहा गया था कि सोवियट खानों में प्रचलित तरीके निकृष्ट हैं, और वे उच्च यांत्रिक तरीके पर नहीं दिखाये गये हैं ।

इस के पहले इस चित्र की जो सूचना निकाली गयी थी, वह बहुत ही प्रशंसापूर्ण शब्दों में थी । चालू रिपोर्टों के अनुसार सब विचारकों के अनुसार यहाँ तक कि क्रेमलिन में जहाँ इसे पहले दिखाया गया था, यह सब सोवियट नेताओं तथा प्रधान मंत्री जोजेफ स्टालिन की प्रशंसा प्राप्त कर चुका था । बाद को संक्षिप्त बातचीत में दक्ष प्रधानतम सेनापति यानी स्टालिन ने पूछा—इसे बनाने में कितना खर्च हुआ ?

इस पर उन्हें यह बताया गया कि इस में ३० लाख रूबल लगे ।

इस पर यह उत्तर आया—अच्छा तीस लाख रूबल, तो इतना धन नष्ट हुआ ?

कहा जाता है स्टालिन की तरफ से इतनी ही टीका हुई ।

इस हमले में और जिन चलचित्रों का हनन हुआ, उन में से कुछ प्रधान चित्रों में "इवान भयानक" (भाग २) आ गया, और सरजेई आईसेन स्टाइन जो रूसी चलचित्र निर्देशकों में सब से बड़े थे, तथा जिन्होंने इसी चित्र के तैयार करने में जीवन के अन्तिम दिन दिये, इस झपेट में आ गये । इसे कूड़ेखाने में इस अभियोग पर डाला गया कि इस में इवान के ऋणात्मक पहलू पर अधिक जोर दिया गया, तथा उस ने मास्को राष्ट्र को दृढ़ करने और उसे मजबूत बनाने में जो धनात्मक हिस्सा अदा किया, उस पर जोर नहीं दिया गया । बात यह है यह आलोचना इतिहास की नयी व्याख्या के अनुसार थी ।

इस मामले में भी अन्तिम विचारक स्टालिन ही थे । आईसेनस्टाइन इस धक्के से सँभल न सके । अन्तिम कड़वे घूँट के रूप में उन्हें इस

बात के लिये मजबूर किया गया कि वे अमेरिकन चलचित्र धन्धे की (जिस के लिये उन के मन में बड़ी प्रशंसा थी) आदिष्ट होकर निन्दा करें ।

इस प्रकार से बहुत से चित्र उत्पादन के दौरान में या अन्तिम रूप में जनता के सामने पेश किये जाने के ऐन पहले अस्वीकृत कर दिये गये । कई बार स्वीकृत सेनारियों में आरम्भिक कमी हुई । चलचित्र मंत्रालय वर्ष के आरम्भ में जो उच्चाकांक्षा प्रेरित योजनायें बनायी जाती थीं, वे साल खतम होने के पहले ही पूरी हो जाती थीं, पर अब इस में बाधा पड़ने लगी । प्रत्येक असफलता में किसी न किसी की गर्दन नापी जाती थी, चाहे वह निर्देशक की हो या सेनारियों लेखक की हो । फिर साल के अन्त में इन सब का खमियाजा चलचित्र मंत्री ईवान बल्शाकोव को भुगतना पड़ता था कि वे अपनी योजना पूरी क्यों नहीं कर सके । बल्शाकोव यह कह कर बच जाते थे कि अगले साल अच्छा काम करेंगे । आज धीरे-धीरे उत्पादन बढ़ रहा है, पर यह बहुत ही धीमी कष्टदायक प्रक्रिया है ।

चलचित्र वितरण की संस्थाओं तथा सिनेमाघरों को भी अपनी-अपनी योजनाओं को पूरी करने की पड़ी रहती है । जब से देश भर में लागत के हिसाब की पद्धति और बाहरी खर्च घटाने का तरीका चल पड़ा, तब से उन के लिये भी जीवन-मरण की समस्या हो गयी । इसलिये सोवियट चलचित्रों की कमी को देखते हुए ऐसे चित्रों की आवश्यकता पड़ रही है जिन से कि सिनेमाघर चलते रहें ।

इस का परिणाम यह हुआ कि अब वहाँ उन जर्मन चलचित्रों की भरमार हो गयी है जो या तो युद्ध के पहले बने हैं, या जो लड़ाई के जमाने के जर्मन चलचित्र हैं और अब रूसियों के कब्जे में आ गये हैं । इन में से सभी मामूली चित्र हैं, कुछ तो बिलकुल रद्दी हैं, और कई

तो मार्क्सी प्रचार के चलचित्र हैं, जिस का रुख पश्चिम विरोधी है। बात यह है कि इस समय दल की जो नीति है उस से इन चलचित्रों की नीति मेल खाती है। पर चाहे कुछ भी हो, यह चित्र उन लोगों के लिये जो दल के प्रचारमूलक चित्रों को देखते-देखते ऊब गये हैं, एक नयी बात है, इस कारण भीड़ खूब होती है।

परिस्थिति ऐसी होने के कारण तथा किसी तरह सिनेमा घरों को चालू रखने की आवश्यकता होने के कारण सोवियट चलचित्र मंत्रालय कुछ अमेरिकन चित्रों को मँगाने की बात सोच रहा था, और जब मिस्टर जानसन मास्को में गये, तो उन के साथ चलती हुई व्यापारिक बातचीत भी हुई थी। यह तय हुआ था कि श्री जानसन सौ चित्रों की एक सूची देंगे, जिस में से रूसी २५ चुन लेंगे।

जानसन के पूर्वी योरोपीय प्रतिनिधि कान्टूरेक फिल्मों को ले कर मास्को उड़ आया। पूरे एक महीने तक वह चलचित्र मंत्रालय के निजी रंगमंच पर इन फिल्मों को दिखाता रहा। कान्टूरेक को ऐसा मालूम पड़ता था कि जो थोड़े लोग दर्शक रूप में आते थे, वे बहुत उच्च अधिकारी थे। उन की स्त्रियाँ भी अक्सर साथ में होती थीं। यद्यपि वे इन में रस लेते हुए ज्ञात होते थे, फिर भी कान्टूरेक को कभी कहा नहीं गया कि आखिर क्या राय है क्योंकि कोई बाद को उस से कुछ कहता ही नहीं था।

२५ वाँ चलचित्र दिखाने के बाद कान्टूरेक ने बोरियाबधना बाँध कर यात्रा कर दी। यहीं पर मामला खतम हो गया। ऐसा मालूम होता है कि दल के प्रचार तथा आन्दोलन विभाग ने बराबर यह प्रचार किया था कि हालीवुड विष फैलाने वाला है, अब वह किस मुँह से सोवियट

चलचित्र मंत्रालय को यह अनुमति देता कि वह थोड़ी मात्रा में ही सही सोवियट दर्शकों को यह विष परोसे ।

अमेरिका के सैकड़ों सिनेमा स्टारों में करीब-करीब एक चार्ली चेपलिन को ही सोवियट की सरकारी स्वीकृति प्राप्त है । फिर भी चेपलिन का एक फिल्म, उस की सर्वश्रेष्ठ रचना "महान् अधिनायक" कभी सार्वजनिक प्रदर्शन के लिये पेश नहीं हुई है ।

---

(६)

साम्यवादी युवकों के मुख पत्र 'कोमसोमोलोस्काया प्रावदा' में इस बात की आवाज़ उठायी गयी कि कुछ सोवियट चित्रकार कला में वस्तुवाद की खोज करते-करते प्राकृतिकवाद में भटक गये हैं ।

उस लेख का लेखक विक्टर साजिन था जिसे एक निर्माण विभाग का इंजीनियर बताया गया है, यह कहता है कि अतिरंजन और सूक्ष्मीकरणवाद की कोई आवश्यकता नहीं है । वह इन बातों को ह्रासशील आधुनिक कला के लक्षण बताता है, पर वह साथ ही प्राकृतिकवाद या आक्षरिक रूप से वस्तुवाद की प्रतिलिपि करने को उतना ही खतरनाक बताता है ।

श्री साजिन का कहना है कि जिन चित्रों में प्रकृति को फोटो की तरह प्रकट करने की चेष्टा है, उन में किसी प्रकार का बौद्धिक सार नहीं है ।

वस्तुवादी चित्रकार को सब से पहले विचार को रूप देना चाहिये, पर आकृतिक वाद में ऐसा नहीं किया जाता।

साजिन का कहना है कला में विचार होना चाहिये। उन का कहना है कि कुछ हद तक वास्तविकता को अतिरंजित करना पड़ेगा, जिस से कि सन्देश को रूप दिया जा सके।

श्री साजिन जिन पर आकृतिकवादी होने का दोष लगाते हैं उन में सोवियट कला जगत के ऐसे-ऐसे महान् व्यक्ति हैं जैसे जिरसियोव बन्धु, ईगो ग्रैबर, यफानोव, कार्पोव, और याकोवलेव। श्री साजिन का कहना है कि बच्चों का चित्र अंकित करने का अर्थ देश के भविष्य का चित्र अंकित करना है।

पर कलाकार यफानोव ने अपने चित्र "सुखी बचपन" में एक हँसती हुई सुंदर छोटी-सी लड़की को चित्रित किया है, "जिस की सारी खुशी" इस बात में है कि वह सुंदर है, तथा हँस रही है।

श्री साजिन का कहना है "कलाकार ने इस बात की कोशिश नहीं की कि कोई ऐसे ढंग का वस्तुवादी स्वरूप प्राप्त कर ले, जिस से चित्र पर प्रभाव पड़े तथा जिस से यह पता लगे कि हमारे बच्चों की खुशी किस बात में है। भयंकर युद्ध के युग में सोवियट बच्चों को कष्ट उठाना पड़ा। बहुतों के घर तथा पिता-माता जाते रहे। पर उन की एक माँ है, वह है समाजवादी मातृभूमि। उन के सामने बहुत बड़ा भविष्य है, और वे सचमुच सुखी हैं क्योंकि उन का सुख, जीवन तथा भविष्य 'मातृभूमि के लिये संग्राम' में उत्पन्न हुआ था।

"और यह जो खुशी है उसे प्राथमिक रूप से बच्चे की आत्मा तथा हृदय में ढूँढनी पड़ेगी। यफानोव इसी को समझने तथा अनुभव करने में

अकृतकार्य रहे। उन्होंने 'सुखी बचपन' को इतना चित्रित नहीं किया, जितना की 'आराम के बचपन' को चित्रित किया।"

श्री साजिन के मतानुसार एस जेरा सिमोव ने युद्ध चिह्न युक्त वीर के विजयी के रूप में घर लौटने को 'पुत्र का प्रत्यावर्तन' नामक चित्र में जिस प्रकार चित्रण किया है, उस में भी वे उस से ज्यादा सफल नहीं रहे।

उनका कहना है कि चित्र में जिस छैले बने हुए अफसर को दिखाया गया है, वह माँ के आँचल के साये में पलने वाला एक लल्ला मालूम होता है, जो युद्ध कष्टों में पके हुए सैनिक तो है ही नहीं, बल्कि एक ऐसा व्यक्ति है जिस ने कभी बारूद सूँघा भी नहीं है। इस के अलावा इस चित्र में पारिपार्श्व को इतना घिसे पिटे ढंग से दिखाया गया है कि वह इस मौके की खुशी तथा भावुकता को व्यक्त नहीं कर पाता।

श्री साजिन इस बात की प्रशंसा करते हैं कि सोवियट चित्रकला में लेनिन तथा प्रधान मंत्री स्तालिन को प्रमुखता दी गयी है। पर उन का कहना है कि अलेक्जेंडर जेरा सिमोव ने "ट्रिब्यून पर लेनिन" तथा "सोलहवीं कांग्रेस में स्तालिन" नामक जो चित्र खींचे हैं, उन के अलावा इन दो क्रान्तिकारी नेताओं के और कोई भी अच्छे चित्र बनाये नहीं गये। उन का कहना है कि इस दिशा में जो बहुत से प्रयत्न किये गये हैं, वे बिलकुल ही असफल रहे हैं। उन के अनुसार कुछ कलाकारों ने विषय को तुच्छता के साथ जनता के प्रति अपनी जिम्मेदारी को ग्रहण किया। उदाहरणार्थ उन का कहना है कि ग्रेवर ने "सोलवी-चेगोडस्क से निर्वासित स्तालिन" नामक जो चित्र खींचा है, वह अपनी प्राथमिकता तथा शौकियापन में आश्चर्यजनक है, और वे यह

कहते हैं कि इस में कोई भी बात अच्छी नहीं है। श्री साजिन इस बात पर आश्चर्य प्रकट करते हैं कि ऐसा कैसे हुआ। एक कलाकार जिस में रूसी और पश्चिमी कलागुरुओं की उच्चतम परम्परायें हैं, ऐसा चित्र कैसे खींच सका।

श्री साजिन वोरिसकार्पों पर यह दोष लगाते हैं कि स्टालिन के चित्रों में वे बिल्कुल गैर जिम्मेदारी दिखलाते हैं। यद्यपि श्री कार्पोव ने बहुत से ऐसे चित्र खींचे हैं, फिर भी श्री साजिन का कहना है कि वे एक ही चित्र के भिन्न रूप हैं।

वे यह भी कहते हैं कि श्री कार्पोव ने अपने चित्रों के ताजे संस्करणों की पृष्ठभूमि में देहाती दृश्य चित्रित कर कुछ चीज़ को उन्नत नहीं बनाया है, उन की चित्रकला अब भी प्राणहीन है।

श्री साजिन इस बात पर जोर देते हैं कि सोवियट चित्रकला केवल वर्तमान तक ही अपने को सीमित न रखे बल्कि इस समय जिस भविष्य का निर्माण हो रहा है, उस की तरफ अपनी दृष्टि को निबद्ध करे। उन की शिकायत यह है कि अब तक इस दिशा में प्रयत्न सफलता प्राप्त नहीं कर सके।

उदाहरण के तौर पर वे जेरासिमोव के "राई" नामक चित्र को लेते हैं, और यह कहते हैं कि ५० साल पहले शिशकिन ने इसी विषय को ले कर जो चित्र खींचा था, यह उस से निकृष्ट है यद्यपि इस बीच में अक्तूबर क्रान्ति, नये राष्ट्र तथा नये मानव की स्थापना ऐसी घटनाएँ हो गयीं।

उन का कहना है कि जेरासिमोव नये मानव, नये किसान याने सामूहिक खेतिहर के श्रम के सौन्दर्य तथा सामर्थ्य को अनुभव नहीं कर

सके ।......यह केवल 'राई' नहीं है यह तो जनता की शक्ति और उस का सुख है ।

श्री साजिन के अनुसार आकृतिकवाद की दिशा में सब से बड़े अपराधी कलाकार याकोलेव हैं, जिन्हें वे प्रकृति के दास बताते हैं, ऐसा दास जो अनावश्यक ब्योरों पर गलत ज़ोर दे कर प्रकृति को विकृत करता है, तथा इस प्रकार दर्शक की दृष्टि को मुख्य विषय से खींच लेता है । श्री साजिन इस बात पर दुःखी हैं कि याकोवलेव अकेले नहीं बल्कि उन के साथी और चेले हैं ।

श्री साजिन कला-आलोचकों को भी जली-कटी सुनाते हैं । उन का कहना है कि अक्सर आलोचक कलाकार को खुल कर ईमानदारी से उस के दोष न बता कर उस के गुणों की तुलना में उसी की रचना की हद से ज्यादा तारीफ करते हैं ।

वे कहते हैं..."कलाकारों की दुर्बल और अपरिपक्व रचनाओं की प्रशंसा करना इन कला-आलोचकों का स्वभाव हो गया है ।"

वे कहते हैं कि जर्योश्किन नामक कला आलोचक जेरासिमोव के उक्त 'राई' नामक चित्र की प्रशंसा करते हुए आपे से बाहर हो जाते हैं । "हम जर्योश्किन के साथ सहमत नहीं हो सकते, जो करुण भाव से कहते हैं कि जेरासिमोव की भूमि से जीवन, श्रम, खुशहाली, तथा मृत्यु जहाँ भी चाहें सर्वत्र जा सकते हैं । यह कोई आलोचना नहीं है, यह तो बिल्कुल खुशामद और गुलामों की तरह दिलजोई है ।"

उन का कहना है कि हमारी कला की दम्तहीनता एक कारण है जिस से कला की उन्नति नहीं हो पाती ।

उपसंहार में वे साहित्य पर ज्दानोव की साहित्य सम्बन्धी रिपोर्ट को उद्धृत करते हैं—"केवल साहसपूर्ण खुली आलोचना से ही हमारी

जाति उन्नति कर सकती है, आगे बढ़ने के लिये साहस प्राप्त कर सकती है, तथा अपनी रचनाओं की त्रुटियों पर विजय प्राप्त कर सकती है।

श्री साजिन के लेख को प्रकाशित करते हुए सम्पादकों ने उस में इस आशय की एक पाद टीका जोड़ दी, जिस में यह कहा कि लेखक समसामयिक चित्रकला की कुछ गम्भीर त्रुटियों पर प्रकाश डाल रहे हैं, और इस लिये वे चित्रकला, खुदाई तथा मास्कर्य में जो बहु-संख्यक धनात्मक सफलतायें प्राप्त हुई हैं, उन पर दृष्टि नहीं डालते।

---

(७)

सोवियट गृह निर्माण कला ने संगीत, साहित्य तथा जीव विज्ञान की तरह आलोचना का बहुत बड़ा विस्फोट सहा है। प्रसिद्ध गृह निर्माण कलाकारों में से बहुतों पर इस अपयश का दोष लगाया गया है कि वे स्वरूपवाद, भाववाद, तथा अन्य विदेशी पूँजीपति प्रभावों के नीचे आ गये हैं।

समाजवादी संघ की गृह निर्माण कला परिषद के स्थानापन्न सदस्य तथा कीव के प्रधान गृह निर्माता एवलासोव ने 'प्रावदा' के एक नौ स्तम्भ वाले लेख में हमला शुरू किया। इस का शीर्षक था "सोवियट गृह निर्माण कला के कुछ परिपक्व प्रश्न"।

श्री एवलासोव ने जो आलोचना की थी, उस की ढाल विशेष रूप से स्थपति संघ के विरुद्ध पड़ती थी।

सोवियट स्थपति की ऐसी सफलताओं की प्रशंसा तो की गयी थी जैसे मास्को के सब वे स्टेशन, मास्को नहर, अखिल संघ कृषि परिषद, कुछ सार्वजनिक इमारतों तथा सोवियट संघ के कई हिस्सों में मकान सम्बन्धी विकासों की प्रशंसा की गयी थी। श्री एवलासोव ने अपने कई साथियों पर यह अभियोग लगाया कि उन्होंने अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाई।

उन्होंने विशेष कर स्थपति परिषद पर दोष लगाया, और यह कहा कि वे सैद्धान्तिक मोर्चे की परिचालना नहीं कर पाये, तथा स्थापत्य विज्ञान की उन्नति में हाथ नहीं बँटा पाये।

श्री एवलासोव ने यह भी कहा कि परिषद की ओर से पूँजीवादी शहरों की पुनर्निर्माण योजनाओं का विज्ञापन किया गया, पर अमरीका में इस सम्बन्ध की १३५ योजनाएँ रद्दी की टोकरी में डाल दी गयीं, इस का कहीं उल्लेख नहीं किया गया।

उन्हों ने यह अभियोग लगा कर अपनी रिपोर्ट का उपसंहार किया कि..."इस प्रकार के लोगों ने हमारे नौजवान स्थपतियों के मन में यह असम्भव तथा मूर्खतापूर्ण कल्पना भर दी कि पूँजीवाद के अन्दर मजदूरों के लिये उद्यान-नगरों की सृष्टि हो सकती है।"

उन्होंने यह भी कहा कि इस रचना में बराबर पूंजीवादी देशों की स्थापत्य कला की नकल करने की चेष्टा की गयी है।

आलोचक ने राजनैतिक तरीके से कई बातें आपत्तिजनक पायीं, जैसे पूँजीवादी विषयपरता, स्वरूपवाद तथा भाववाद। और उन्होंने यह बताया कि "साथियों में ही इस प्रकार के दोष पाये जाते हैं।" उन्होंने ईवान जोल्टोवस्की के इस मत को उद्धृत किया कि "सौन्दर्य समाज से ऊपर है।"

श्री एबलासोव ने कहा कि इसी रुख के कारण आधुनिक इमारतों के स्थान पर ग्रीक और रोमन इमारतों की अक्षम नकलों की उत्पत्ति हुई है। इसी के कारण स्टालिनग्राड का नक्शा एक मध्ययुगीन दुर्ग की तरह बनाया गया है, तथा प्राचीन रूसी नगर काल्गा के बीच के हिस्से के पुनर्निर्माण की योजना को प्राचीन रोमन फोरम के रूप देने की चेष्टा की गयी है।

इसी प्रकार से श्री एबलासोव ने इस बात की भी निन्दा की कि कुछ स्थपतियों ने प्राचीन रूसी स्थापत्य कला की नकल करने की चेष्टा की है, जिस का परिणाम यह हुआ कि गृह निर्माण की ऐसी योजनाओं की भरमार हो गयी जिन में बेकार के स्तम्भों की व्यवस्था थी। इस के साथ ही उन्होंने अति सरलीकरण वाली ''बाक्सशैली' की निन्दा की।

उन्होंने स्थापत्य कला में जनता की ओर से आये हुए रंग-ढंग को प्रोत्साहन दिया, पर इस बात पर जोर दिया कि इन्हें बुद्धिमान ढंग से अपनाया जाय। उन्होंने इस बात पर दुःख प्रकट किया कि लोक-कला की इतर व्याख्या की जाती है, जिस का नतीजा यह है कि सामूहिक खेतिहरों के लिये मकानों के नक्शे सोलहवीं सदी के उत्तर रूसी किसानों के घरों अथवा प्राचीन यूक्रेनीय घरों के नमूने पर बनाये जाते हैं।

उन्होंने स्थपति संघ साथ ही स्थापत्य कला सम्बन्धी सरकारी कमिटी की इस बात के लिये निन्दा की कि वे वाद-विवाद तथा आलोचना को नापसन्द करते हैं। श्री एबलासोव ने अपने साथियों को इस बात के लिये उद्बुद्ध किया कि वे आत्मसमालोचना की ओर ध्यान दें। उन्होंने उपसंहार में कहा—

'हमें ईमानदारी के साथ तथा खुले दिल से स्थापत्य कला के सिद्धांत तथा व्यवहार में जो भयानक विकृतियाँ उत्पन्न हुई हैं, उन्हें शीघ्रता से और निर्णयात्मक रूप से दूर करना चाहिये, और इस प्रकार सोवियट स्थापत्य कार्य को सरकार तथा दल के द्वारा बताये हुये मार्ग की ओर ले जाना चाहिये।

आन्तरिक प्रचार कार्य की दिशा

(१)

"आत्मसमर्पणवादी, ट्राटस्कीवादी जिनोविफवादी गुट्ट का एक सोवियट विरोधी गुट्ट के रूप में पर्दाफाश हुआ, और दक्षिण पक्ष के हाथों में आत्मसमर्पणवादी लोगों को कुलक या धनी किसानों के एजेंटों के रूप में आविष्कार किया गया ......आत्म-समर्पणवादी ट्राटस्कीवादी"...... ।

इस समय तक मैं बिलकुल जग चुका था । यद्यपि मेरी घड़ी में अभी केवल साढ़े छः बजे थे, फिर भी उज्ज्वल मई के प्रातःकाल की सूर्य किरणों से मेरा कमरा भर चुका था ।

हमारे ११ साल के लड़के की आवाज़ खुले दरवाज़े से गूँज रही थी...

"आत्मसमर्पणवादी......"

मैं ने चिल्ला कर कहा—"तुम यह रिकार्ड उलट क्यों नहीं देते, या सब से अच्छा है तुम इसे बंद ही कर दो ।"

"पर पिता जी, आज पहले घंटे में ही दल का इतिहास पढ़ाया जायगा, और यदि मैं अपने पाठ को बता न सकूँ, तो मास्टर जी बहुत नाराज़ हो जायेंगे । आत्म समर्पणवादी ट्राटस्कीवादी......"

'दल का इतिहास' सोवियट संघ में चौथी जमाअत से ले कर एक अनिवार्य विषय है । सोवियट संघ में बच्चे से लेकर बूढ़े तक सभी उसी

पाठ्य पुस्तक को पढ़ते हैं—"सोवियट संघ के बाल्शेविक दल का इतिहास—संक्षिप्त संस्करण।"

इस पुस्तक की डेढ़ करोड़ प्रतियाँ सोवियट संघ की प्रत्येक भाषा तथा समस्त महत्वपूर्ण विश्व भाषाओं में छापी गयी हैं।

संक्षिप्त संस्करण पहले पहल १९३८ में प्रकाशित हुआ। पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर किसी भी ग्रन्थकार का नाम नहीं था, सिर्फ इतना ही लिखा था कि साम्यवादी दल की एक केन्द्रीय कमिटी के एक विशेष आयोग के द्वारा यह प्रस्तुत किया गया, तथा बाद को उस केन्द्रीय कमिटी ने इसे स्वीकार किया।

गत वर्ष इस युगान्तकारी ग्रन्थ के दसवें प्रकाशन वर्ष का उत्सव मनाते हुए सोवियट छात्रों ने यह लिखा कि अन्य बहुत सी प्रसिद्ध रचनाओं तथा कृतियों की तरह इस के भी रचयिता स्टालिन थे।

"संक्षिप्त संस्करण" बाल्शेविक आन्दोलन का स्वीकृत तथा प्रामाणिक इतिहास है। इस के प्रत्येक वाक्य, शब्द और विराम चिह्न आक्षरिक रूप से दवाफरोश के काँटे पर तौले गये हैं, अणुवीक्षण यंत्र से इन की जाँच की गयी है, और इन के सम्बन्ध में यह गारन्टी की गयी है कि इन में कहीं किसी प्रकार से दल की नीति से हट कर कोई बात नहीं लिखी गयी है। दल के सदस्यों तथा सोवियट नागरिकों के लिये यह सब तरह के प्रश्न तथा तर्क वितर्क के पूरे ज्ञान का परिष्कृत अर्क है।

"संक्षिप्त संस्करण" में रूसी क्रान्तिकारी आन्दोलन का प्रारम्भ से इतिहास दिया गया है। इस में जो चित्र खींचा गया है, वह स्टालिन के राजनैतिक प्रतिद्वन्द्वियों के लिये बहुत निन्दाजनक है, और इस से ऐसा प्रभाव पड़ता है मानो लेनिन के मुख्य सहकारियों में से अधिकांश या तो विश्वासघातक थे, या उत्तेजना दे कर गड़बड़ी कराने वाले एजेंट

थे, और इस सारे नाटक के मुख्य खलनायक थे लियोन ट्राटस्की। इस के विपरीत स्टालिन लेनिन के सब से घनिष्ट तथा विश्वासपात्र शिष्य के रूप में दिखाये जाते हैं।

"संक्षिप्त संस्करण" का नौजवान तथा बूढ़े इतना सार्वदेशिक रूप से अध्ययन इस कारण करते हैं कि दल के इतिहास पर यही एक प्रामाणिक पाठ्य पुस्तक है। बात यह है कि स्टालिन से कम वजन वाले लेखकों को हमेशा यह खतरा बना रहता है कि वे दलनीति तोड़क सिद्ध हो सकते हैं।

युद्ध के जमाने से "संक्षिप्त संस्करण" के पूरक के रूप में स्टालिन ग्रन्थावली का प्रकाशन हुआ है, जिन में से अब तक बारह भाग निकल चुके हैं, और बाद को कुछ और भाग भी निकलने वाले हैं। इन में पाठक को "संक्षिप्त संस्करण" के विषयों को विशद रूप से प्रमाण आदि के साथ पढ़ने को मिल सकता है।

तीसरा भाग जिस में १९१७ के क्रान्तियुग का वर्णन है स्टालिन को वास्तविक विजय के लिये इतना महत्व दिया जाता है कि वह किसी प्रकार लेनिन के दान से कम नहीं ज्ञात होता। दोनों व्यक्ति बराबरी के साझेदार के रूप में सामने आते हैं। लेनिन तो भागे हुए थे, और स्टालिन ने १९१७ के अक्तूबर के विद्रोह की योजना तैयार की तथा उसे कार्य रूप में परिणत किया। पुस्तक के अन्त में जो जीवनी सम्बन्धी क्रम दिखलाया गया है, उस में ये मन्तव्य विशेष रोशनी डालने वाले हैं—

अक्तूबर २४—लेनिन संध्या समय स्मोलनी में पदार्पण करते हैं। स्टालिन उन्हें राजनैतिक घटनाओं की गतिविधि से परिचित कराते हैं।

अक्तूबर २४-२५.—लेनिन और स्टालिन सशस्त्र अक्तूबर विद्रोह का नेतृत्व करते हैं।

यह उस तरह की बातचीत से सम्पूर्ण रूप से अलग है, जब कि स्टालिन इतना ही दावा करते थे कि वे महान् क्रान्तिकारी शिक्षक लेनिन के एक साधारण छात्र मात्र थे।

इसी प्रकार से इतिहास का दल की नीति के अनुसार पुनर्लिखन केवल संक्षिप्त संस्करण तक ही सीमित नहीं है। रूस के सारे भूतकाल को इस प्रकार से पेश किया जा रहा है जिस से क्रेमलिन की नीति का समर्थन हो।

जारशाही की विस्तारात्मक नीति, एशिया तथा योरोप में एक ऐसे साम्राज्य द्वारा जिसे लेनिन ने "जातियों का कारागार" कर के वर्णित किया, अरूसी जातियों को वश में लाना तथा गुलाम बनाया जाना एक प्रगतिशील विकास के रूप में दिखाया गया। इस समय के कुछ लेखक तो अलास्का का रूसी उपनिवेश के रूप में गवाये जाने की बात को याद करते हुए आँसू ढारते हैं।

इतिहास का सब से आश्चर्यजनक पुनर्लिखन हम अभी हाल के महायुद्ध के सम्बन्ध में देख सकते हैं। बात यह है कि अभी तो इस की घटनाएँ करोड़ों लोगों के लिये ताज़ी बनी हुई हैं। फिर भी यदि मंगल ग्रह से कोई ऐसा व्यक्ति रूस में आवे, जिसे सांसारिक घटनाओं का कोई ज्ञान न हो, तो उसे चालू सोवियट साहित्य से यह मालूम होगा कि सोवियट संघ ने अकेला लड़ कर जर्मनी, जापान और इटली की सम्मिलित पूँजीवादी शक्तियों को जिसे अमेरिका तथा ब्रिटेन का पृष्ठ-पोषण प्राप्त था हरा दिया।

युद्ध के परिणाम को इस रूप में दिखाया जाता है कि यह विश्व पूँजीवाद पर साम्यवादी विजय है। जर्मनी की पराजय में पश्चिमी शक्तियों के भाग को बिल्कुल कोई महत्व नहीं दिया जाता। पश्चिमी शक्तियों के सम्बन्ध में यह चित्र दिया जाता है कि वह एक तरफ तो इच्छापूर्वक दूसरे मोर्चे खोलने में लग जाती है, और दूसरी तरफ गुप्त रूप से फैसिस्टों को मदद दे रही है।

उदाहरण स्वरूप कार्नेल क्रिस्टाव "लाल तारा" नामक पत्र में लिखते हुए यह बताते हैं कि इंगलैंड और अमरीका ने मिल कर जर्मनी पर जो बम बरसाये, उन का जर्मनी के युद्ध प्रयास पर कोई भी असर नहीं पड़ा। वे इस प्रकार उपसंहार करते हैं—"सोवियट सशस्त्र बल के वीरता पूर्ण संग्रामों के कारण ही, जिस ने अकेले फैसिस्ट जर्मनी से लोहा लिया, और बिना किसी बाहरी सहायता के हिटलर के युद्ध यंत्र को विध्वस्त कर जर्मन फैसिस्ट आक्रमणकारियों से योरोप को मुक्त किया, उसी ने पश्चिमी शक्तियों को इस बात के लिये मजबूर किया कि वे जल्दी से जल्दी फ्रांस में अपनी सेना उतारें।"

इसी में और भी बताया गया है कि इस प्रकार सेना उतारने का प्रधान उद्देश्य जर्मनों को हराना इतना नहीं था जितना कि यह बात थी कि सोवियटों के द्वारा पश्चिमी योरोप की "पूर्ण मुक्ति" को रोका जाय।

'साहित्यिक गजट' का एक लेख जिस का शीर्षक "युद्धकामी जनरल ब्राडले" है, बोरिस लेम्रेनेव नामक लेखक लिखते हैं—

"पौराणिक कथित अटलांटिक प्राचीर को तोड़ने के बाद ब्राडले की सेनाएँ तेज़ी के साथ आगे बढ़ीं, केवल बहुत थोड़ी जर्मन इकाइयाँ उन का विरोध कर रही थीं। इन इकाइयों को इस बात की कोई

आशा नहीं थी कि नयी सेना आ कर उन को सबल बनायेगी क्योंकि पूर्व में सोवियट आक्रमण के कारण जर्मन इतने विध्वस्त हो चुके थे कि वे पश्चिम में रिजर्व सेना भेज ने की शक्ति नहीं रखते थे।"

सैनिक विषयों पर एक अन्य लेखक मेजर जनरल जम्पाटीन ने १९४५ की जनवरी के सोवियट आक्रमण पर एक व्याख्यान देते हुए यह कहा कि आर्देन्स इलाके में जर्मनों का घुस आना इस कारण संभव हुआ कि अंग्रेज तथा अमेरिकन सेनायें चुप बैठी थीं, बात यह थी कि वे लड़ाई को जल्दी समाप्त नहीं करना चाहते थे।

उन का कहने का अर्थ यह है कि यदि सोवियट की ओर से जनवरी आक्रमण न होता तो जर्मन एन्टवर्प पर पहुँच कर ही रहते।

युद्ध के इतिहास का पुनर्लिखन एक-एक सोपान कर के हो रहा है।

जर्मनी की हार में पश्चिमी शक्तियों के भाग को बिल्कुल उड़ा कर अब सोवियट इतिहासकारगण यह कह रहे हैं कि प्रशान्त महासागर के युद्ध में सोवियट ने जो अल्पकालीन हिस्सा लिया, वही जापान को हराने में निर्णयात्मक बात सिद्ध हुई।

इस बात को तो बिल्कुल अस्वीकार किया जाता है कि अणु बम के कारण ही जापान ने जल्दी आत्मसमर्पण किया। हिरोशिमा और नागासाकी के विस्फोटन के सैनिक परिणाम को अस्वीकार करते हुए भी इन्हें भयंकर अत्याचार के रूप में दिखाया जाता है।

'प्रावदा' पत्र की एक व्याख्या के अनुसार अणु बम का मुख्य उद्देश्य सोवियट संघ को डराना था। लेखक का कहना है कि पश्चिमी

शक्तियों ने जर्मनी पर सोवियट की शीघ्र विजय पर क्रोध तथा दुःख के कारण ही यह कदम उठाया।

प्रावदा का उपसंहार है..."इस अत्यन्त घृणित अस्त्र का यह प्रथम परीक्षण था, जिस का उद्देश्य था सारी दुनिया के लोगों को डराना।"

---

(२)

तथ्यों को अपने ढंग से इस प्रकार ढालने का सोवियट तरीका जिस से वह दल की नीति के साथ मेल खाय केवल इतिहास तक ही सीमित नहीं है। सचाई, झूठ, भलाई, बुराई, सही और गलत, सिद्धान्त विश्वास तथा व्यक्तित्व, वे चाहे किसी भी क्षेत्र, देश तथा काल में हों इस दृष्टि से देखे जाते हैं कि साम्यवादी उद्देश्य को सिद्ध करते हैं या उस में बाधा पहुँचाते हैं।

एक साल पहले की बात है कि "सान्ध्य मास्को" नामक पत्र ने अप्टन सिनक्लेयर के हाल के उपन्यासों की अलोचना करते हुए यों लिखा...

"हम यह जानते हैं कि अप्टन सिनक्लेयर बहुत ईमानदार, साधु तथा विवेकपूर्ण लेखकों में हैं।"

इस के छः महीने बाद "साहित्यिक गजट" ने लिखा......

"अप्टन सिनक्लेयर हमेशा से एक अपनी उन्नति चाहनेवाला साहित्यिक धाँधलीबाज़ के रूप में परिचित है।"

इस प्रकार से अप्टन सिनक्लेयर की साहित्यिक साधुता के सम्बन्ध में सोवियट मत परिवर्तन क्यों हुआ, यदि इस बात को देखा जाय तो ज्ञात होगा कि सिनक्लेयर की किसी नई पुस्तक के कारण मत में यह परिवर्तन नहीं हुआ। उन्होंने अटलांटिक पैक्ट का समर्थन किया; इसी से यह परिवर्तन हुआ। यदि वे सोवियट संचालित किसी भी शान्ति कांग्रेस का समर्थन करते, तो वे अब भी विवेकशील कर के प्रशंसित होते।

इस प्रकार से सभी मामलों में केवल दल की नीति को देख कर चलना लेनिन ने बहुत पहले ही शिष्यों के लिये चला दिया था। उन्होंने भलाई और बुराई के सम्बन्ध में किसी निरवच्छिन्न मानदण्ड का मजाक इस प्रकार से उड़ाया कि यह तो एक पूँजीवादी ढकोसला है, और यह कहा कि प्रत्येक मानवीय समाज अपनी नैतिक संहिता आप बनाता है। उन्होंने सोवियट नौजवान सभा की तीसरी कांग्रेस की बैठक को संबोधित करते हुए कहा कि इस सम्बन्ध में पथ प्रदर्शक नीति यही हो सकती है कि "सदाचार वही है जो प्राचीन शोषक समाज के विनाश को प्रोत्साहन दे कर उस सर्वहारा के इर्द गिर्द सारे काम करनेवालों को एकत्र कर दे, जो साम्यवादियों के नये समाज का निर्माण कर रहा है।"

सदाचार के सम्बन्ध में लेनिन के विचार उन के भौतिकवादी दर्शन से उद्भूत हैं, जिस का प्रतिपादन उन्होंने अपनी पुस्तक "भौतिकवाद और प्रयोगवादी आलोचना" में किया है। उसमें वे कहते हैं:

"भौतिकवाद साधारण तौर पर भूत या विषयगत वास्तविकता के

अस्तित्व को मानता है, जो चित्त, अनुभूतियों तथा अनुभव से स्वतन्त्र है।......चित्त केवल सत्ता का प्रतिफलन मात्र है, अधिक से अधिक एक ऐसा प्रतिफलन जो करीब करीब सही है।"

उन्होंने और भी कहा..."भूत वह वस्तु है जो हमारी ज्ञानेन्द्रियों पर कार्य करके अनुभूतियाँ उत्पन्न करता है। भूत विषयगत वास्तविकता है। भूत, प्रकृति, सत्ता ये तो प्राथमिक वस्तुएँ हैं, और आत्मा, चित्त, अनुभूति याने मानसिक जगत उन से उत्पन्न द्वितीय वस्तुएँ हैं।"

इस से तार्किक रूप से यह नतीजा निकलता है कि मानवीय चित्त प्राणहीन भूत से उत्पन्न तथा उस पर निर्भर होने के कारण कोई भी स्वतन्त्र, निरवच्छिन्न तथा आध्यात्मिक मान्यताओं को स्थापित नहीं कर सकते।

स्टालिन जिन में यह प्रतिभा है कि व्यावहारिक शब्दावली में लेनिन द्वारा प्रतिपादित सूक्ष्म बातों को अति सरल रूप में पेश कर सकते हैं, "लेनिनवाद की समस्याएँ" नामक पुस्तक में लिखते हैं... "समाज जैसा भी है, उस की भौतिक अवस्थायें जैसी भी हैं, उस के विचार, सिद्धान्त तथा राजनैतिक दृष्टिकोण भी उसी प्रकार के होते हैं।"

यह बहुत अजीब बात है कि यद्यपि लेनिन भौतिकवादी थे, और सदाचार के किसी निरवच्छिन्न मानदण्ड को नहीं मानते थे, फिर भी उन में मनुष्य तथा मानवीय संस्थाओं की सम्पूर्णता में एक अन्तहीन आदर्शवादी विश्वास था, और वे अपने विचार शक्तिहीन भौतिक विश्व को एक अपरिहार्य रूप से बौद्धिक चरित्र से समन्वित कर के

देखते थे। यहीं पर आ कर सारी साम्यवादी विचारधारा की सब से प्रधान दार्शनिक असंगति स्पष्ट हो कर सामने आती है।

लेनिन केवल ऐसे भूत में विश्वास नहीं करते थे जो केवल गति रखता है, बल्कि वे ऐसे भूत में विश्वास रखते थे जो चिन्ताशक्ति रखता है।

इस चित्र में, जिस का खाका पहिले मार्क्स और एंगेल्स ने तैयार किया, और लेनिन ने उस का विशदीकरण किया, भूत या प्रकृति जिस में मनुष्य समाज भी आ जाता है, बराबर अनिवार्य रूप से निम्नतर संगठन से उच्चतर संगठन की ओर जा रहा है। यह अनिवार्य रूप से प्रगति की उन्नीसवीं शताब्दी की उस धारणा का ही एक रूप है जिस में बराबर सामने की ओर किसी अच्छाई की ओर प्रगति हो रही है, इस में प्रतिक्रिया के माने पीछे की ओर किसी बुराई की ओर गति है। मार्क्स या लेनिन किसी ने निम्न लिखित प्रश्न पर विचार नहीं किया..."यदि भलाई बुराई के कोई निर्दिष्ट मानदण्ड नहीं हैं तो यह कैसे निर्णय किया जायगा कि क्या पहले से अच्छा है, या पहले से बुरा, गति, सामने की ओर रही है, या पीछे की ओर ?"

यह प्रगतिशील गति किस प्रकार होती है, इस के सम्बन्ध में मार्क्स और लेनिन ने उन्नीसवीं शताब्दी के अभाववाद से विचार लिये, और उस में जर्मन दार्शनिक हेगेल द्वारा विकसित वाद प्रतिवाद-समवाद वाली द्वंद्वात्मक पद्धति को अपनाया। हेगेल इस प्रक्रिया को यों मानते थे कि वह सज्ञान रूप से निरवच्छिन्न विचार जो अंतिम वास्तविकता भी है, उस की ओर सम्पूर्णता में जा रही है।

लेनिन भी सम्पूर्णता के सम्बन्ध में अपने विचार रखते थे। मानवीय समाज पर विकास के उस नियम को जो निम्नतर से उच्चतर की ओर गतिशील है, लागू करते हुए उन का यह कहना था कि चालू पूँजीवादी समाज ऐतिहासिक आवश्यकता के कारण साम्यवादी समाज के रूप में विकसित होगा।

'संक्षिप्त संस्करण' नामक साम्यवादी दल के इतिहास में इस 'आविष्कार' पर टीका करते हुए स्टालिन लिखते हैं—'समाजवाद या साम्यवाद अब मनुष्य जाति के लिये एक स्वप्न मात्र न रह कर इस से विज्ञान के रूप में हो गया।'

इस प्रकार से दर्शन शास्त्र और कामनामूलक विचार का अजीब तरीके से मिला देना क्रेमलिन की आज की नीति के निर्माण में एक निर्णयात्मक दर्जा रखता है। ऐतिहासिक आवश्यकता की इस धारणा से ही हम मोलोटोव के उस अजीब वक्तव्य को समझ सकते हैं, जिस में वे कहते हैं—'सभी सड़कें साम्यवाद में समाप्त होती हैं।'

यदि सोवियट नेतागण अपनी दार्शनिक मान्यताओं पर विश्लेषणात्मक दृष्टि से विचार करते, तो उन्हें यह ज्ञात हो जाता कि 'ऐतिहासिक आवश्यकता' के वे एकमात्र ठेकेदार नहीं हैं। ३० साल पहले आसवाल्ड स्पेंगलेर ने इसी धारणा की दुहाई दे कर कैसर के साम्राज्यवादी स्वप्नों का समर्थन किया था।

अभी बहुत हाल में इसी विचार ने हिटलर की विश्व विजय की धारणा को जामा पहिनाया था, और इसी का सहारा ले कर हिटलर ने वह डींग मारी थी कि योरोप का इतिहास एक हजार वर्ष के लिए निर्णीत हो चुका है। यहाँ तक कि मुसोलिनी ने भी फैसिज्म की शताब्दी

की झाँकी थी। सिकन्दर से लेकर नैपोलियन तक सभी अधिनायकों तथा विजेताओं ने भाग्य के साथ अपने को एक रूप कर के देखा था।

लेनिन के उस वक्तव्य को कि जिस बात से भी साम्यवाद की गाड़ी आगे बढ़ती है, वही नैतिक है, अपना कर वर्तमान सोवियट नेताओं ने उद्देश्य के लिये मनमाना ढंग से जो चाहे सो करने का बीड़ा उठा रक्खा है। इसी लिये वे सत्य का अपलाप तथा उस के दमन, साथ ही समझौते करने या उसे तोड़ने के अधिकार को मानते हैं, और वे इतिहास में सब से निर्दय तथा निरंकुश शासन के हक में अपनी जाति तथा दूसरी जातियों के साथ कुछ भी करने का दावा करते हैं।

अंतिम विश्लेषण में तात्त्विक रूप से नैतिक मानदण्डों की भौतिकवादी अस्वीकृति के कारण सारी मान्यताएँ तथा आध्यात्मिक मानदण्ड नष्ट हो जाते हैं, और केवल यही बात रह जाती है कि जिस की लाठी उस की भैंस। फिर तो नग्न शक्ति ही एक उद्देश्य के रूप में प्रशंसित होती है। इस का सब से स्पष्ट परिणाम वर्तमान युग का सोवियट पुलिस राष्ट्र है।

यह मार्क्स की उस भविष्यवाणी से जिस में लेनिन विश्वास रखते थे, बहुत दूर है, जिस के अनुसार साम्यवाद में राष्ट्र मुरझा जायगा।

---

(३)

सोवियट प्रणाली में तथ्यों को मरोड़ने का जो सार्वजनिक तरीका है उसी से इस बात का भी निर्णय होता है कि किस प्रकार से सोवियट भूमि में संवाद संग्रह किया जायगा।

साम्यवादीगण खुल्लमखुल्ला यह कहते हैं कि छापेखाने सूचनाओं को फैलाने के साधन नहीं हैं, बल्कि प्रचार के साधन मात्र हैं। इस के परिणामस्वरूप मुख्य-मुख्य विश्व संवादों को सोवियट पत्र जिस प्रकार अपनी छौंक लगा कर परोसते हैं, वह स्पष्ट है।

राष्ट्रपति ट्रूमैन ने यह जो घोषणा की कि रूस में एक आणविक विस्फोटन हुआ, इस संवाद की सोवियट पत्रों में सम्पूर्ण रूप से अवज्ञा की गयी। दो दिन बाद जब सरकारी टास एजेन्सी ने इस विषय पर वक्तव्य दिया, तो सोवियट पत्रों ने अपने पाठकों को यह धारणा दी कि टास ने सारे जगत को आश्चर्य में डाल दिया है। हास्य रस के साप्ताहिक "क्रोकोडाइल" में एक व्यंग चित्र भी निकला जिस में यह दिखाया गया कि टास के वक्तव्य से ट्रूमैन आश्चर्य में पड़ गये हैं।

आज तक सोवियट पत्रों में १९४५ की ८ मई को रीम्स नगर में 'शाफ' याने मित्र शक्तियों के हाथों में जर्मनी के आत्म समर्पण का जिकर नहीं किया, यद्यपि इसी से योरोप में युद्ध समाप्त हो गया। इस के बराबर पाट्सडैम में जो समारोह हुआ था, उसी को वास्तविक वस्तु कर के दिखाया है, और ९ मई को योरोप में विजय दिवस कर के स्वीकार किया है।

सोवियट पाठक मंडली को बर्लिन अवरोध के सम्बन्ध में कभी बताया नहीं गया। जर्मन राजधानी से सोवियट पत्रों में जो रिपोर्ट भेजी गयी, उस से यह धारणा उत्पन्न करने की चेष्टा की गयी कि पश्चिमी शक्तियाँ नगर की आर्थिक व्यवस्था को विध्वंस कर उस के अधिवासियों को भूखा मारने की चेष्टा कर रही हैं क्योंकि वे जान-बूझ कर सोवियट की तरफ से दिये गये अत्यन्त उदार प्रस्तावों को अस्वीकार कर रही हैं। केवल यही नहीं यह कहा गया कि एक "कथित हवाई पुल" केवल

प्रचार कार्य के लिये तथा एक हवाई जहाज की लाइन पैसा पैदा करने के लिये चलायी जा रही है, जो बिल्कुल असफल है।

बाद के बर्लिन समझौते को सोवियट नीति की एक उज्ज्वल विजय के रूप में चित्रित किया गया, जिस में पश्चिमी शक्तियों की हार दिखायी गयी।

बर्लिन की रेलवे हड़ताल को इसी प्रकार से पश्चिमी शक्तियों की चश्मपोशी में कुछ थोड़े से झगड़ा पैदा करने वाले लोगों की ऐसी कार-वाई बतायी गयी जिस के प्रति साधारण रेल मज़दूरों का विरोध था।

आणविक नियंत्रण के प्रश्न को कभी भी सोवियट जनता के सामने ढंग से पेश नहीं किया गया। वैदेशिक मंत्री विशिन्स्की को बराबर सोवियट पत्रों में एक सही अन्तर्राष्ट्रीय समझौते के प्रतिपादक के रूप में पेश किया गया।

इस के विपरीत अमेरीका को अपने स्वार्थ के लिये आणविक एका-धिकार चाहने वाला दिखाया गया।

सोवियट ने इस बात को कभी नहीं बताया कि रूस में आणविक कार्य कलाप पर अन्तर्राष्ट्रीय देख-रेख को स्वीकार न करने के कारण ही वर्तमान गत्यवरोध उत्पन्न हुआ है।

प्रकाशन के लिये खबर के चुनाव तथा उसे कैसी प्रवृत्ति से समन्वित किया जाय, यह बड़ी बारीकी साथ ही साथ अनाड़ीपन से किया जाता है।

जिन संवादों का सम्बन्ध सोवियट नीति के किसी प्रधान पहलू से है, उन का निर्णय दल के उच्चतम अधिकारियों द्वारा होता है। चूंकि इस में समय लगता है, इसलिये कई बड़ी घटनाओं की खबर कई दिनों तक, कभी कभी अनिश्चित काल तक रोक ली जाती है।

इस बीच में सोवियट साम्यवादी दल के पत्र "प्रावदा" को यह भय तो है नहीं कि सरकारी पत्र "इजवेस्तिया" पहले खबर दे कर दाँव मार लेगा।

वर्षों तक सोवियट पत्रों को प्रतिदिन पढ़ने के बाद ऐसा मालूम होता है कि सोवियट पत्रों को उन की खबर सम्बन्धी नीति के लिये जो हिदायतें मिली हुई हैं, वे इस प्रकार होंगी।

(१) कोई भी ऐसी खबर न छापो जिसे पश्चिमी शक्तियों को विशेषकर अमेरिका को कोई श्रेय मिलता हो।

(२) किसी भी बुरी बात को पश्चिमी शक्तियों के सिर थोपो। ऐसा दिखलाओ कि पश्चिम आर्थिक तथा राजनैतिक विघटन के निकट है। मार्शल योजना को इस प्रकार दिखलाओ कि यह अमेरिका के हित में योरोप को शोषण करने का एक राक्षसी साधन मात्र है।

(३) अमेरिका को इस प्रकार दिखलाओ कि वह एक भारी आर्थिक संकट के सम्मुख है। (गत तीन सालों से सोवियट अखबारों ने अमेरिका को इस प्रकार दिखलाया है कि वह लड़खड़ा रहा है और गिरने ही वाला है) ऐसा दिखलाओं की अमेरिका में जीवन का मान-दण्ड गिरता चला जा रहा है, अधिकांश लोग किसी प्रकार जी सकने की सतह से नीचे गिरे हुए हैं। नस्ली विद्वेष तथा हिंसा को बढ़ता हुआ दिखलाओ। (लिंचिंग की प्रत्येक घटना को बढ़ा कर दिखलाओ, हो सके तो फोटो इस्तेमाल करो) यह दिखाओ कि पाप और अपराध बढ़ रहे हैं।

(४) अमेरिकन सरकार को एक अपराधी वाल स्ट्रीट के ऐसे गुट्ट के रूप में दिखलाओ जो सोवियट संघ तथा दूसरी शांतिकामी जातियों के विरुद्ध युद्ध का षड्यंत्र कर रहा है। औसत अमेरिकन

नागरिक को अच्छे स्वभाववाला परन्तु अत्यन्त गरीब, निर्यातित तथा अपने शासकों द्वारा प्रताड़ित दिखलाओ।

इस नीति के अनुसार अमेरिका ने युद्धोत्तर युग में उद्योग धन्धा, श्रम सम्बन्ध, नस्ली सहिष्णुता तथा अन्य क्षेत्रों में जो प्रगति की है उस के सम्बन्ध में चुप्पी रहती है।

जब बड़ी-बड़ी हड़तालें होती हैं तो उन की खबर अवश्य छापी जाती है, पर जब समझौता होता है, तब उस के सम्बन्ध में चुप्पी रहती है। बेकारी बढ़ने की खबर दी जाती है, पर घटने की नहीं। मूल्य वृद्धि की खबर दी जाती है, पर मूल्यों में कटौती या मजदूरी में वृद्धि की खबर नहीं दी जाती।

अमेरिका में हब्शियों के साथ भेदमूलक व्यवहार की बात खूब छापी जाती है, पर कभी इस बात का उल्लेख नहीं किया गया कि फिलस्तीन में अमेरिका की तरफ से मध्यस्थ डाक्टर राल्फ बुंचे अमेरिका के ही एक हब्शी हैं।

सच तो यह है कि डाक्टर बुंचे तथा उन के कार्यों के सम्बन्ध में रूसी पत्रों में तब तक कुछ छपा ही नहीं जब तक उन्होंने उपराष्ट्र सचिव के पद को लेने से इनकार कर दिया। इस पर सोवियट पत्रों ने उन की अस्वीकृति को बड़ा तूल दिया साथ ही उन्होंने रंगभेद पर जो कुछ कहा था उसे भी प्रकाशित किया, पर इस के पहले उन्होंने जो कुछ किया था तथा उन को जो मर्यादा प्राप्त हो चुकी थी, उस पर कुछ नहीं कहा गया।

चलते हुए यह बता दिया जाय कि जिस समय फिलस्तीन में विराम संधि की बातचीत हो रही थी, उस समय सोवियट पत्रों में यह लिखा गया कि बृटिश और अमेरिकन नेता शांतिपूर्ण समझौते के

बजाय झगड़े को चिरस्थायी करने की कोशिश में हैं। इस सम्बन्ध में जो प्रगति होती रही तथा अन्त में जा कर जो समझौता हो गया, उस पर एक भी शब्द नहीं कहा गया। जहाँ तक सोवियट पाठकों का सम्बन्ध है, फिलस्तीन का युद्ध शायद अब भी जारी है।

जर्मनी के सम्बन्ध में सोवियट पत्र बर्लिन अवरोध की बात को छिपा कर यह दिखा रहे हैं कि पश्चिमी इलाके आर्थिक रूप से गिरे हुए तथा राजनैतिक रूप से दिवालिया हैं। वहाँ के लोगों को ऐसे दिखाया जाता है मानों वे पूर्वी इलाके के लोगों से उन की लोकतांत्रिक सरकार के कारण ईर्ष्या करते हैं।

सोवियट पाठक पश्चिम की तरफ से भेजे गये आकूपेशन अधिकारियों को इस प्रकार देखते हैं कि वे नात्सीवाद के पुनरुद्धार के लिये प्रयत्नशील हैं तथा पश्चिमी जर्मनी को सोवियट संघ पर कूदने का एक पाँवदान बनाना चाहते हैं। इस नीति के अनुसार नूरेमबर्ग मुकदमे के बाद सोवियट पत्रों में पश्चिम में नात्सी युद्ध अपराधियों पर चलाये हुए मुकदमों तथा दिये हुए दंडों को नहीं छापा है। हाँ इससे कोरब ऐसे लोगों के साथ जो अनुचित नर्मी बर्ती गयी है, उस पर यथेष्ट प्रचार कार्य किया गया है।

सोवियट पत्रों में वैदेशिक समाचार देते हुए सोवियट सरकार के रुख तथा उस की नीति को बहुत ब्योरे में दिया जाता है। यह तो बताने की जरूरत नहीं कि यह सारा तरीका समर्थन के लिये होता है। इन सब का यह अर्थ न लिया जाय कि टास या सोवियट संवाददाताओं की ओर से जो भी खबरें भेजी जाती हैं, वे उसी प्रकार एकतरफा हैं जैसा कि छपते समय दिखायी पड़ती हैं।

बात यह है सोवियट संघ में खबर देने-लेने पर सरकारी एकाधिकार

है । इस कारण सोवियट के वैदेशिक संवाददाता बहुत विश्वस्त सोवि-यट सरकारी नौकर हैं । इन का काम है कि जनता के लिये नहीं बल्कि मुख्यतः सोवियट सरकार के फ़ायदे के लिये खबरों का संग्रह करें । उच्च सोवियट तथा दल के अधिकारियों को प्रतिदिन टास की एक संवाद विज्ञप्ति मिलती है ।

सोवियट संवाददाताओं का इस प्रकार से यह जो कार्य है कि वे सोवियट सरकार के लिये खबरों का संग्रह करें, शायद इसी से सोवि-यट सरकार की यह धारणा है कि सारे वैदेशिक संवाददाता अपनी-अपनी सरकार के खुफियों के रूप में हैं ।

---

(४)

सरकारी सोवियट संवाद एजेन्सी टास के पास अपनी सुवि-स्तृत वैदेशिक संवाद-सेवा के लिये बहुत बड़ी कर्मचारी मंडली है । इस के अतिरिक्त इसे घरेलू संवाद पर भी एकाधिकार प्राप्त है, और यह प्रांतों के पत्रों को चाहे वह रूसी भाषा के हों चाहे अन्य भाषा के हों, बने-बनाये सम्पादकीय तथा अन्य सूचनात्मक लेख पहुँचाता रहता है ।

स्थानीय सम्पादकगण साधारण अवस्था में यही पसन्द करते हैं कि अपने चार पृष्ठ के पत्रों को इस प्रकार से पहिले से तैयार किये हुए स्वीकृत मैटर से भर दें, न कि अपने को किसी प्रकार की सम्पादकीय विपत्ति में डालें । इस के फल स्वरूप पत्रों की बहुत अधिक एकरूपता

हो गयी है, और सारे देश में सभी पत्रों में स्थानीय खबरों तथा रंग की सम्पूर्ण कमी हो गयी है।

उदाहरणार्थ यदि कोई व्यक्ति टिविलसी या आशंकावाद में वहाँ के पत्रों को पढ़े तो वहाँ क्या हो रहा है, इस सम्बन्ध में कुछ पता लगना असम्भव है। व्यावहारिक रूप से जो कुछ भी मास्को के पत्रों में छपता है, उन्हीं की इन में नकल होती है।

इस एक रूपता के बीच में दो अखबार जो कुछ-कुछ अपने वैयक्तिक पत्र जीवन को कायम रख सके हैं, वे हैं सोवियट संघ के दो सान्ध्य पत्र "मास्को सन्ध्या" तथा "लेनिनग्राड सन्ध्या"। इन दोनों पत्रों में विचार धाराओं से उकताया हुआ पाठक पशु-जीवन पर किसी कहानी को या बाल्गा तट के दृश्य सौन्दर्य का उल्लसित विवरण पढ़ कर मन बहला सकता है।

सनसनीखेज़ खबरें तथा कुत्सा सोवियट पत्रों में कभी नहीं छपतीं, इसी प्रकार से ऊँची सोसायटी की खबरें याने बड़े तथा करीब-करीब बड़े लोगों के व्यक्तिगत जीवनों पर भी सोवियट प्रेस में कभी कुछ नहीं छपता। न कोई स्त्रियों का पृष्ठ होता है, न हल्के हास्य रस के चित्र होते हैं, और न अन्य किसी प्रकार की हल्की बातें होती हैं। हाँ जिन सान्ध्य पत्रों का नाम लिया गया, उन में प्रति शनिवार को खेल, पहेली, मजाक आदि का आधा पृष्ठ होता है, जिस में एक वर्ग पहेली भी होती है।

बात यह है कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिका तथा अन्य स्थानों में सोवियट प्रवक्ताओं के द्वारा दिये हुए लम्बे-लम्बे व्याख्यान पूरे छपते हैं (हाँ उन्हें घरेलू संवादों के रूप में कुछ सम्पादन कर दिया जाता है) इस के अलावा दुनिया भर में जो साम्यवादियों के द्वारा परिचालित शांति आन्दोलन चल रहे हैं उन की भी खबर रहती है, पूर्वी योरोप में देश-

द्रोहियों पर जो मुकदमे चलते रहते हैं, उन की खबरें रहती हैं। सारी दुनिया की खबर आज कल भीतरी पृष्ठों पर रहती है, और इस कारण उसी अनुपात में सोवियट सांस्कृतिक तथा आर्थिक सफलताओं की खबरों को कम करना पड़ता है।

करीब-करीब प्रतिदिन ही किसी न किसी ऐतिहासिक घटना का वार्षिक उत्सव होता है, 'प्रावदा' पत्र का लेखक उस की स्मृति में कुछ न कुछ लिखता है। राजनैतिक तथा सांस्कृतिक सैकड़ों विषयों पर स्थान के अनुसार लेख छपते रहते हैं।

'प्रावदा' का यह भी काम है कि वह विभिन्न आर्थिक उद्देश्यों के लिये मार्ग प्रदर्शन करता है, जिस से कि अन्य पत्र अपना कार्य कर सकें। बात यह है कि आर्थिक योजनाओं से अखबार बराबर भरे होते हैं।

इस सम्बन्ध में अखबारों के पहले पृष्ठ अक्सर मज़दूरों तथा सामूहिक खेतिहरों के उन पत्रों से भरे होते हैं जिन्हें वे प्रधान मंत्री स्टालिन के नाम लिख कर यह वादा करते हैं कि वे इस्पात का उत्पादन, प्रति एकड़ गेहूँ का उत्पादन, प्रति गाय दूध का उत्पादन इत्यादि बढ़ायेंगे।

'प्रावदा' के प्रथम पृष्ठ का छठा स्तम्भ अब "भ्रातृत्वपूर्ण" देशों में समाजवादी निर्माण की खबरों से भरा जाता है।

इस स्तम्भ में बुखारेस्ट से दी हुई यह खबर पढ़ने को मिल सकती है कि नवम्बर का पहला सप्ताह सोवियट-रूमानियन मित्रतावृद्धि सप्ताह के रूप में मनाया जायगा, तथा रूमानिया में साठ लाख सोवियट पुस्तकें छपी हैं।

शंघाई से यह खबर है कि सोवियट कैमरा मैन इस समय यहाँ

चीन में लोकतन्त्र की स्थापना पर एक तथ्यमूलक चलचित्र तैयार कर रहे हैं। दूसरे सोवियट पत्र दूर-दूर तक इस स्तम्भ की नकल देते हैं।

प्रथम तथा द्वितीय स्तम्भ सम्पादकीयों के लिये सुरक्षित हैं। ये विशेष कर घरेलू विषय पर होते हैं, पर जिस समय दल को कोई विशेष नारा देना होता है—जैसे मार्सल टीटो का तीव्र तिरस्कार, तो वैदेशिक मामलों में भी इस स्तम्भ में भी सम्पादकीय प्रकाशित होता है।

निर्वाचन युग में पत्र की तीन चौथाई दल की नीति के स्पष्टीकरण में तथा निर्वाचन सम्बन्धी व्याख्यानों की रिपोर्ट देने में लगायी जाती है।

इस समय 'साहित्यिक गजट' एक बहुत ही विशिष्ट पत्रकारिता का कर्तव्य सम्पादित करता है। पहले यह लेखक संघ का व्यापारिक मुख पत्र था, पर अब यह सम्पादकों के शब्दों में "साम्यवाद के महान् विचारों का एक जोशीला प्रचारक" हो गया है।

इस की गैर सरकारी मर्यादा के कारण 'साहित्यिक गजट' को बहुत से मोटे प्रचार कार्य के लिये इस्तेमाल किया जाता है। यह ऐसे मैटरों को इस्तेमाल करता है जिन की संदेहात्मक प्रामाणिकता तथा मानहानिकारक चरित्र के कारण सरकारी पत्र अथवा दल के मुख्य पत्र को मुसीबत का सामना हो सकता है।

इसी में बोरिस गर्बाटोफ नामक सोवियट लेखक ने राष्ट्रपति ट्रूमैन पर एक नीचतापूर्ण लेख लिखा, इस पर अमेरिकन राजदूत की ओर से मोलोटोव से शिकायत की गयी, तो तड़ाक से उत्तर मिला कि सरकार 'साहित्यिक गजट' के लेखकों के लिये जिम्मेदार नहीं है।

'साहित्यिक गजट' में ब्राजील के राष्ट्रपति डटरा पर एक इस से भी खराब लेख निकला, तो उस पर दोनों देशों का राजनयिक सम्बन्ध टूट गया क्योंकि ब्राजील वालों ने इस प्रकार की चालाकी की आड़ लेने को स्वीकार नहीं किया।

अभी हाल में 'साहित्यिक गजट' ने सब सोवियट प्रकाशनों को टीटो विरोधी प्रचार में यह कह कर पछाड़ दिया कि १९४१ में मार्शल टीटो ने हिटलर के निकट आत्म समर्पण का प्रस्ताव रक्खा था बशर्ते कि उन्हें युगोस्लेविया का क्विसलिंग मान लिया जाय।

इसी प्रकार जब सोवियट नेताओं को फिनलैंड की सरकार के संबंध में (जिस के साथ सोवियट सरकार मित्रता तथा पारस्परिक सहायता की संधि में आबद्ध है) कोई बहुत बुरी बात कहनी होती है, तो वह 'साहित्यिक गजट' में छपती है।

घर के मोर्चे पर 'साहित्यिक गजट' 'सार्वदेशिकवादियों' के विरुद्ध-अभियान की पहली कतार में है। सार्वदेशिकवादी वे लोग हैं जो सभी सांस्कृतिक क्षेत्रों में रूस के अगुएपन पर प्रश्न करते हैं, इन में से बहुतेरे यहूदी हैं।

गत वर्ष इस सम्बन्ध में सम्पादकों ने संयुक्त रूप से अपनों को बधाई दी कि उन्होंने ऐसे टोड़ियों का पर्दाफाश किया जो वाल स्ट्रीट की गुलाम संस्कृति के प्रशंसक हैं। कुछ सप्ताह बाद इन्हीं सम्पादकों का 'संस्कृति और जीवन' नामक पत्र में इस बात के लिए तिरस्कार किया गया कि वे खुशामद तथा पारस्परिक प्रशंसा की प्रवृत्ति से परिचालित हो कर एक दूसरे की रद्दी रचनाओं की तारीफ करते रहते हैं। सम्पादकों ने सम्पादकीय रूप से इसे सट मान लिया, और यह प्रतिज्ञा की कि वे आगे कभी ऐसा नहीं करेंगे।

जब साम्यवादी दल की प्रचार तथा आन्दोलन समिति का मुखपत्र 'संस्कृति और जीवन' किसी विषय पर निर्णय दे देता है, तो इस का अधिकार इतना सम्पूर्ण तथा अंतिम होता है कि प्रत्येक व्यक्ति इसी की सी गाने लगता है, यहाँ तक कि वह लेखक जिस की रचना या ख्याति अभी-अभी समाप्त कर दी गयी है, वह भी इसी राग को गाता है।

अक्सर ऐसा होता है कि 'साहित्यिक गजट' तथा अन्य पत्रों द्वारा जोर-शोर से प्रशंसित होने के बाद जब इस प्रकार के फैसले दिये जाते हैं तो ऐसा ज्ञात होता है कि यह इंद्र के वज्र की तरह आकस्मिक रूप से गिर रहा है, और उस उपन्यास तथा नाटक के लिये वैसा ही घातक सिद्ध होता है। कई अभिनय के लिये प्रस्तुत नाटक अभिनय के ऐन पहले इस लिये अभिनय से रोके गये कि 'संस्कृति तथा जीवन' नामक पत्र में उस के विरुद्ध आलोचना हो गयी।

सोवियट लेखक तथा विशेषकर नाटककारगण प्रति दशम दिन इस दुधर्ष पत्र के प्रकाशन का भय तथा शंका से प्रतीक्षा करते रहते हैं। मास्को में लेखकों में एक बहुत अजीब तरीके का अभिवादन आम तरीके से प्रचलित है। 'जीवन कैसा है' के बजाय लोग आपस में यह पूछते हैं "संस्कृति और जीवन कैसा है"।

आविष्कारों पर रूसी दावे

रूल केवल सोवियट प्राकृतिक विज्ञान का ही नियंत्रण नहीं करता, बल्कि इसे बड़े जोश के साथ पूंजीवादी पश्चिम के हानिकर संस्पर्श से बचा रखता है।

अभी हाल में एक कानून इस सम्बन्ध में बना है कि सोवियट संस्थाओं के साथ बाहरी जगत के सम्बन्ध किस प्रकार नियंत्रित हों। इस के अनुसार सोवियट प्राकृतिक वैज्ञानिकों को विदेशियों के साथ किसी प्रकार का व्यवसाय और पेशा सम्बन्धी बातचीत या संस्पर्श का अधिकार नहीं है, जब तक कि ऐसी बातचीत तथा संस्पर्श वैदेशिक मंत्रालय के जरिये से परिचालित न हों। व्यवहार में इस का अर्थ यह है कि सोवियट जीव वैज्ञानिक, पदार्थ वैज्ञानिक, इंजीनियर, डाक्टर ये लोग विदेश के अपने समव्यवसायियों से अब अपने व्यवसाय पर भी कोई पत्र व्यवहार नहीं कर सकते, और न कोई विदेशी पत्र पत्रिका ही प्राप्त कर सकते हैं, जब तक कि यह सारी लेन देन सोवियट वैदेशिक दफ्तर के जरिये से न हो। इस का नतीजा यह होता है कि नौकरशाही जिस प्रकार से अनाड़ीपन के साथ बर्ताव करती है, उस से बहुत से लोग उकता कर इस प्रकार सम्बन्ध रखने की चेष्टा त्याग देते हैं।

इस प्रकार जान बूझ कर वैज्ञानिक अलगाव की नीति का अनुसरण प्राक् युद्ध युग की नीति से सम्पूर्ण रूप से पृथक् है। ऐसा मालूम होता है कि उस समय सारी दुनिया के लोगों की तरह सोवियटों की यह राय थी कि इस प्रकार वैज्ञानिक तथा राजनैतिक सतह पर संस्पर्श कायम रखने से तथा लेन-देन करने से मानवीय ज्ञान के साधारण भण्डार में वृद्धि हो कर सारी मानव जाति को लाभ पहुँचता है।

इस के अनुसार उस जमाने में सोवियट संघ में विभिन्न क्षेत्र के वैज्ञानिकों के विश्व सम्मेलन होते रहते थे। विश्व विशेषज्ञों को सोवियट संस्थाओं में काम करने के लिये बुलाया जाता था, और उन्हें सोवियट विज्ञान परिषद् का अवैतनिक सदस्य चुना जाता था। प्रसिद्ध सोवियट वैज्ञानिकों को देश से बाहर काम करने तथा व्याख्यान देने, विदेश की परिषदों के अवैतनिक सदस्य बनने दिया जाता था। उन्हें अपने विदेशी सम व्यवसायियों के साथ पत्र व्यवहार करने तथा विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में लेख और संदर्भ प्रकाशित करने की स्वतन्त्रता थी।

अब इस प्रकार का भाईचारा "अदेशभक्तिपूर्ण" समझा जाता है। जो सोवियट वैज्ञानिक जान बूझ कर या अनजान में अपनी गवेषणा के परिणाम को विदेशियों के लिये सुलभ कर देता है,उसे ले कर कई नाटक लिखे गये हैं तथा चलचित्र बनाये गये हैं। अब तो यह विचार है कि यदि कोई ज्ञान पश्चिम में पहुँच जाता है, तो वह पूँजीवादी युद्ध-कामियों के द्वारा अनिवार्य रूप से सोवियट संघ के विरुद्ध व्यवहृत होगा।

वर्तमान नियंत्रण ऐसे क्षेत्रों पर भी लागू हैं जहाँ सैनिक सुरक्षा सम्बन्धी कोई भी उपादान कल्पित नहीं हो सकता। इस समय चालू तर्क यह है कि विश्व-विज्ञान नाम का कोई पदार्थ तब तक नहीं हो

सकता जब तक कि दुनिया पूँजीवादी और साम्यवादी दो आपस में शत्रुतापूर्ण शिविरों में बँटी हुई है। जब जगत का एकीकरण होगा, और यह साम्यवाद के अधीन होगा, तभी विश्वविज्ञान भी होगा। तब तक मोर्चेबंदी के उस पार हाथ बढ़ाना निषिद्ध है।

यह जो रुख है, वह दल के एक दूसरे रुख के सम्पूर्ण रूप से मेल खाता है, जिस के अनुसार दुनिया के यदि सब नहीं तो अधिकांश आविष्कारों का श्रेय रूसी आविष्कारकों को प्राप्त है। ऐसे रूसी आविष्कारक क्यों ख्याति प्राप्त न कर पा कर अँधेरे में ही मुरझा गये, इस का कारण यह बतलाया जाता है कि जार की नौकरशाही का भ्रष्टाचार ही इस के लिये जिम्मेदार है। यह कहा जाता है कि यह नौकरशाही विदेशी पूँजीपतियों के हाथ अपने देश के फुटकर तथा थोक ऐश्वर्य को बेच देती थी। इस का एक आंशिक कारण यह भी बताया जाता है कि विवेकहीन विदेशी गण रूसी जाति के विरुद्ध जान-बूझ कर एक चुप्पी का षड्यंत्र किये हुए थे।

सोवियट पत्रिका 'साहित्यिक गजट' का कहना है ..."इटालियन मार्कोनी ने रूसी वैज्ञानिक पोपोव के द्वारा आविष्कृत रेडियो को निर्लज्जता पूर्वक अपना लिया। जर्मन जीमेन्स ने याकोवी से तार के संबंध में आविष्कार सम्बन्धी कागजात को आक्षरिक रूप से चुरा लिया (इसके सम्बन्ध में और कुछ कहा नहीं जाता), राइट बन्धुओं ने मुजाइस्की के गौरव को गलत रूप से अपना लिया। (मुजाइस्की के सम्बन्ध में यह दावा किया जाता है कि उन्होंने किटीहाक की घटना के २० साल पहले संटपीटर्स बर्ग में अपने हवाई जहाज पर उड़ने का गौरव प्राप्त किया था)।

इस सूची को जारी रखते हुए एडीसन नहीं बल्कि याब्लोचकोव ने

बिजली की बत्ती के बल्ब का आविष्कार किया, जिसे पहले रूसी बत्ती कहा जाता था। सियोलकोवस्की नामक एक दूसरे रूसी के सिर पर राकेट परिचालना का सेहरा बाँध दिया गया है। उन्हीं के देशवासी पोलजूनोफ को यह गौरव दिया गया है कि उन्होंने स्टीफिन्सन के बहुत पहले वाष्प चालित इंजिन का आविष्कार किया।

एक दूसरे रूसी ने प्रथम वाष्प नौका बनाने में रावार्ट फुल्टन को परास्त कर दिया। जो पहली पनडुब्बी बनी और डूब गयी, वह रूस ही में उन्नीसवीं सदी के प्रारम्भ में हुआ था। १८५० में एक बहुत "आश्चर्य जनक यंत्र" साराटोव के पास देहात में दिखायी पड़ा था। यह पहला ट्रैक्टर था, जिसे ब्लीनोव नामक रूसी ने दुनिया में किसी से भी पहले बनाया था।

आर्मरप्लेट बनाने की लपेटने वाली प्रक्रिया के आविष्कार का श्रेय १८६० के आस-पास के एक रूसी मज़दूर वासिली प्याटोव को दिया जाता है, पर भ्रष्टाचारी जारशाही के अफसरों ने, जो किसी भी विदेशी वस्तु के सामने सिर झुका देते थे, इस रूसी आविष्कार को विदेशी कम्पनियों के हाथ बेच दिया, जिन्होंने बाद को इसी आविष्कार को जारशाही के हाथ में यह कह कर बेचा कि यह एक बृटिश आविष्कार है।

दूसरे रूसी आविष्कार के दावों में अब यह भी है—भूत की रक्षा का नियम जिस का श्रेय गलत तरीके से फ्रेंचमैन लावोअसियेर को दिया जाता है, पर इस ने इस विचार को रूसी लोमोनोसोफ से चुराया था। बेलून—इसका श्रेय गलत तरीके से फ्रेंचमैन मोंगोलफियेर को दिया जाता है, पर पहला बेलून इस से बहुत पहले निजनी—नोवोग्राड में उड़ाया गया था। इण्टरनल कम्बश्चन इंजिन, टैंक, टेलीविजन, बनावटी रासायनिक रबड़, हेलीकाप्टर, पेनिसिलिन तथा अन्यान्य चीज़ें।

अभी सब से ताज़ी बात यह है कि सोवियट प्रचारकगण साइकल को भी रूसी आविष्कारों की दीर्घ सूची का अंतर्मुक्त कर के घोषित कर रहे हैं। दो पहिये के पैडल से चलाये जानेवाले यान के आविष्कार का श्रेय मास्को के अखबार आर्टामोनोफ नामक एक व्यक्ति को दे रहे हैं, जिस के सम्बन्ध में यह बताया जाता है कि यूराल इलाके में उस ने स्वयं अपने आप को यह विद्या सिखायी। कहा जाता है कि आर्टामोनोफ ने यह वीरतापूर्ण कृत्य १८०१ में किया, और उस ने यूराल के नीज़नी टागिल नामक स्थान से लेकर एक हज़ार मील दूर मास्को की यात्रा इसी यान से की।

आर्टामोनोफ के इस सम्मानित यान के हाल के आविष्कार के पहले तक सोवियट अखबारों का कहना है कि जर्मनी का ड्राइस नामक व्यक्ति जिस ने १८१३ में लकड़ी का पुशबाइक बनाया था, आम तौर से साइ-कल का आविष्कारक माना जाता था।

मास्को के पोलीटेकनिक अजायबघर में आर्टामोनोफ तथा ड्राइस के बने हुए साइकल आस-पास दिखाये जाते हैं। आर्टामोनोफ का यान देखने में काफी अच्छा है। इस के पहिये ऊँचे हैं। लकड़ी की सीट के अलावा बाकी सब हिस्से लोहे के बने हैं, और यह बिल्कुल उसी तरह का है, जैसे आम तौर पर उन्नीसवीं सदी के अन्त में हाईव्हीलर होते थे। यह शेषोक्त नमूना भी प्रदर्शित है।

आर्टामोनोफ का असली यान इस समय निज़नीटागिल के स्थानीय अजायबघर में प्रदर्शित है।

राडार के सिद्धान्त के आविष्कार के सम्बन्ध में यह दावा किया जाता है कि सब से पहले एक रूसी पदार्थ वैज्ञानिक अलेक्जेंडर पोपोफ ने इस का आविष्कार किया। यह पहले ही बताया जा

चुका है कि रूसी पोपोफ़ को रेडियो का आविष्कारक मानते हैं।

यह कहा जाता है कि श्री पोपोफ़ ने १८९७ की ग्रीष्म ऋतु में बाल्टिक बेड़े के साथ प्रयोग करने के दौरान में यह देखा कि जहाज के धातु वाले हिस्सों में विद्युत चुंबकीय लहरें उठती हैं। उन के मन्तव्यों के उद्धृत संक्षिप्त विवरण में यह दिखाया जाता है कि उन्होंने इस से उन सम्भावनाओं को पहले से देख लिया था, जो नौचालन क्रिया के के लिये हो सकती हैं। पोपोव केन्द्रीय यातायात अजायबघर के डायरेक्टर गोलोविन इस बात को "लाल बेड़ा" पत्र में प्रकाशित कर चुके हैं, जिस में उन्होंने कहा..."पोपोव के द्वारा आविष्कृत इस बात के व्यावहारिक उपयोग से ही राडार की टेकनीक का सूत्रपात हुआ और विकास हुआ।"

गोलोविन का कहना है कि इस के २५ साल बाद याने सन् १६२२ में अमेरिकन गवेषणाकारियों ने इसी बात का आविष्कार किया, और फिर १९३० में बृटिश इंजीनियरों ने स्वतंत्र रूप से इस का आविष्कार किया।

दूसरे लेखकों ने मार्कोनी पर पोपोव की प्रथमता प्रमाणित करने के लिये और भी प्रमाण पेश किये हैं। मार्कोनी पर तो यह दोष लगाया जाता है कि उन्होंने पोपोव के विचारों को चुरा लिया।

यह कहना गलत होगा कि इस प्रकार के सारे दोष केवल डींग-मूलक ही हैं। बहुत से देशों में लोग उन्हीं टेकनीक सम्बन्धी तथा अन्य विषयों की समस्याओं पर एक साथ सिर खपाते रहे हैं। कई बार ऐसा हुआ है कि एक ही आविष्कार विभिन्न व्यक्तियों द्वारा एक दूसरे से स्वतन्त्र रूप से किये गये हैं।

भूतकाल में पश्चिम में इस संबंध में एक निश्चित प्रवृत्ति थी कि रूसी यांत्रिक तथा वैज्ञानिक खोजों को महत्व न दिया जाय, तथा रूसी

सफलताओं की अवज्ञा की जाय या उन्हें स्वीकार न किया जाय। भाषा की दीवार के कारण इस में वृद्धि हुई, साथ ही साथ पुरानी शासक श्रेणी के प्रभावशाली तबके का हर बात में पश्चिम की नकल करना, यहाँ तक कि मातृभाषा छोड़ कर विदेशी भाषा अपनाने से यह प्रवृत्ति और दृढ़ हुई।

साम्यवादी दल कम ज्ञात रूसी आविष्कारकों को विस्मृति से निकाल कर अपनाने के कारण रूसी राष्ट्रीय अभिमान को बल पहुँचाता है। रूस के आत्म सम्मान को स्थापित करने तथा हीनता बोध के बचे-खुचे भाग को दूर करने की चेष्टा के साथ-साथ आविष्कार सम्बन्धी यह रुख चल रहा है। रूसियों को अब जो इस बात की जरूरत है कि वे बाकी जगत को दौड़ा कर पकड़ लें, और उसे पीछे छोड़ दें, उस में भी यह रुख सहायक होता है।

अणु के सम्बन्ध में सफलता प्राप्त कर सोवियट की तरफ से अब यह दावा किया जा रहा है कि वह आणविक शक्ति के शांतिकालीन प्रयोग में सब से आगे है। इस दावे को अस्वीकार करने के पहले यह बता देना अच्छा है कि राष्ट्र के सारे साधनों पर जिन में मस्तिष्क तथा श्रम शक्ति भी आती है, पूर्ण तथा केन्द्रीभूत नियंत्रण होने के कारण रूसी राष्ट्र को आणविक खोज की दौड़ में कुछ महत्वपूर्ण सुविधायें प्राप्त हैं।

फिर भी इन बातों से सारे प्रसिद्ध मानवीय आविष्कारों को रूसियों के मत्थे थोपना तथा दूसरी जाति के दावों को छोटा कर के देखना उचित नहीं कहा जा सकता। सच तो यह है कि दूसरे के आविष्कारों को न मानने से चालू सोवियट दावों को उन की उचित ऐतिहासिक तथा मनोवैज्ञानिक पृष्ठ भूमि में देखने में बाधा पहुँचती है। अति का वर्जन रूसी चरित्र की विशेषता नहीं है।

दल विज्ञान से ऊपर है

सोवियट संघ में प्राकृतिक विज्ञानों को उसी प्रकार कड़ाई से दल की नीति के अनुसार नियंत्रित किया गया है, जिस प्रकार कलाओं तथा साहित्य को नियंत्रित किया जा रहा।

आज जीव वैज्ञानिक या पदार्थ वैज्ञानिक उसी प्रकार से दल की विचार धारा के अधीन हैं, जिस प्रकार से लेखक या सुररचयिता हैं। साम्यवादी दल की केन्द्रीय कमेटी इस बात का निर्णय करती है कि गवेषणा का परिणाम सही है या गलत, न कि प्रयोगशाला। प्रकृति के नियमों की प्रस्थापना दल के हुक्मनामे से हुआ करती है।

यदि किसी क्षेत्र में कोई सिद्धान्त या साध्य दल की स्वीकृति प्राप्त कर ले, तो फिर उस पर प्रश्न नहीं किया जा सकता, और न आलोचना की जा सकती है। जो प्राकृतिक वैज्ञानिक सहमत नहीं हो पाते उन्हें अपने संदेहों के परित्याग करने के लिये कहा जाता है, या उन्हें कहा जाता है कि वे "सोवियट विज्ञान से निकल जायँ"। अत्यन्त अधिक संख्या तो इस माँग को मान लेती है। सोवियट जीवन के दूसरे क्षेत्रों की तरह इस क्षेत्र में भी सामाजिक तथा आर्थिक मजबूरियाँ बहुत अधिक होती हैं। अभी हाल में जीव

विज्ञान में जो शुद्धियाँ हुईं थीं, उन से यह अच्छी तरह प्रदर्शित हुआ था।

चौदह सालों से ट्रोफिम डेनीसोविच लिसेंको नामक एक कृषि वैज्ञानिक ने सूखा तथा पाला के बावजूद जीवित रहने वाला गेहूँ उत्पन्न करने में व्यावहारिक सफलता प्राप्त की थी। वे उत्तराधिकार से प्राप्त होने वाले गुणों के सम्बन्ध में प्रचलित विचारों का विरोध कर रहे थे, यद्यपि उन्हें नियमित रूप से अध्ययन करने का मौका कम मिला था।

लिसेंको ने मेन्डेल और मोर्गन द्वारा स्थापित क्रोमोसोम सिद्धान्त का विरोध करते हुए अपनी बातें कहीं, पर गम्भीर वैज्ञानिकगण लिसेंको को एक नीम हकीम मात्र समझते थे। लिसेंको ने अपने को ईवान मिचुरिन का शिष्य कर के घोषित किया, जो एक देशी बुर्बांक की तरह व्यक्ति थे, और जिन्हों ने सेव की कई नयी किस्में उत्पन्न की थीं। लिसेंको ने यह विश्वास प्रकट किया था कि नयी-नयी विशेषतायें उत्पन्न की जा सकती हैं।

पेशा सम्बन्धी अपने गुणों के अतिरिक्त १९३० की "शुद्धियों" के युग में लिसेंको ने अपने को एक विपुल ख्यातियुक्त ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रख्यापित किया, जिस के सम्बन्ध क्रेमलिन के लोगों से थे, और जिस का विरोध करना बहुत खतरनाक था। युद्धोत्तर युग में उन की और भी अधिक चली, क्योंकि अब यह जो प्रवृत्ति उत्पन्न हुई थी कि विदेशी प्रभावों को अस्वीकार कर देशी प्रतिभाओं का स्वागत किया जाय, उस में उन के "मिचुरिन जीव विज्ञान" को अधिकाधिक सरकारी पृष्ट पोषण प्राप्त हुआ।

इन की तुलना में वे जीव वैज्ञानिक जो अब तक मेंडल और मोर्गन

के साथ थे, 'पूँजीवादी पश्चिम की पूजा करने वाले' के रूप में अभियुक्त हुए, और उन पर यह अभियोग अच्छा बैठने लगा।

लिसेंको लेनिन कृषि विज्ञान परिषद् के सभापति चुने गये। १६४८ के ८ अगस्त को उन की सब से बड़ी विजय हुई जब उन्होंने परिषद् की एक विशेष बैठक में यह घोषणा कर दी कि साम्यवादी दल की केन्द्रीय कमेटी ने उन के विचारों को विधिवत् रूप से स्वीकार कर लिया है।

इस पर लिसेंको के पराजित विरोधी झुंड बाँध कर उन के सामने आ कर यह कहने लगे कि हम अपने गलत मतों को छोड़ देते हैं।

इस प्रकार प्रायश्चित्तकारियों के जुलूस के आगे-आगे परिषद् के सदस्य प्योटर मिखाईलोविच ज़ुकोवस्की थे, जिन्होंने अभी दो दिन पहले ही जब कि परिषद् की बैठक चल रही थी, लिसेंको के विचारों का प्रबल रूप से विरोध करते हुए क्रोमोसोम सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। अब ज़ुकोवस्की बिल्कुल चित हो गये। बोले 'मैंने दो दिन पहले केन्द्रीय कमेटी के सामने जो व्याख्यान दिया था वह जीव विज्ञान की दो धाराओं को विभाजित करता था और साम्यवादी दल के एक सदस्य तथा सोवियट वैज्ञानिक के अनुपयुक्त था। मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मेरा रुख गलत था।'

बूढ़े वैज्ञानिक ने परोक्ष रूप से इस बात पर भी रोशनी डाली कि क्यों उन्होंने अपना मत वापस लिया—"मैं एक जिम्मेदार व्यक्ति हूँ क्योंकि मैं स्टालिन पुरस्कार समिति तथा डिगरी देनेवाले विशेषज्ञों के आयोग का सदस्य हूँ। इस कारण मैं इसे अपना एक नैतिक कर्तव्य मानता हूँ कि मैं एक ईमानदार मिचुरिनवादी तथा एक ईमानदार सोवियट जीव वैज्ञानिक होऊँ। यदि मैं यह कहता हूँ कि मैं अब से मिचुरिनवादी हो गया, तो मैं ऐसा ईमानदारी से कर रहा हूँ, और मैं

उन का अब से समर्थन करूँगा।...ट्रोफिम डेनीसोविच लिसेंको के साथ मेरा जो विरोध था, उसे अब भुला दिया जाय। आप विश्वास करें कि मैं दल के एक सच्चे सदस्य के रूप में बात कर रहा हूँ, और काम करूँगा (तालियाँ)"

इस बैठक की जो ब्योरेवार शाब्दिक रिपोर्ट निकली थी, उस में से यह उद्धृत किया गया। दूसरों ने भी जुकोवस्की के ढंग पर अपने मत को वापस लिया। शाब्दिक रिपोर्ट में यह नहीं बतलाया गया कि किसी ने भी महान इटालियन ज्योतिषी गैलिलियो का अनुकरण किया कि नहीं, जिन को मजबूर करने पर तो उन्होंने इस बात को वापस ले लिया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है, फिर भी चुपके से यह कहा था—"फिर भी यह सचमुच घूमती है।"

इस के बाद बैठक के सामने अगला विषय याने वह प्रस्ताव आया जिस में कहा गया था "मिचुरिनवादी प्रवृत्ति ने जिस के नेता इस समय परिषद् के सदस्य लिसेंको हैं, मोर्गनवाद तथा मेंडलवाद के सिद्धान्त को चकनाचूर कर बहुत महत्त्वपूर्ण और हितकर कार्य किया है।"

इस के बाद बैठक की समाप्ति के पहले सर्वसम्मति से स्टालिन के अभिनन्दन का एक प्रस्ताव पास हुआ, जो इन शब्दों में था..."सर्वाग्रगण्य जीव वैज्ञानिक मिचुरिन की जय। जनता के नेता तथा सर्वाग्रगण्य विज्ञान के ध्रुवतारा स्टालिन की जय।" शाब्दिक रिपोर्ट में यह कहा गया था कि इस के बाद बड़ी देर तक तालियों की गड़गड़ाहट होती रही और स्टालिन संवर्द्धित हुए।

केवल कुछ पक्के लोगों ने मत वापस लेने से इनकार किया, और उन के साथ उसी प्रकार का व्यवहार हुआ।

परिषद् के सदस्य तथा टीमीरियाजेफ कृषि विज्ञान परिषद् के

डायरेक्टर नेमचीकोफ़ ने जब यह कहा..."क्रोमोसोम सिद्धान्त मानवीय ज्ञान के स्वर्णकोष का एक बहुत बड़ा रत्न है," तो उन की बड़ी भद्द उड़ायी गयी। जब उन्होंने यह कहा कि जब तक वे परिषद् के प्रधान हैं, तब तक यह सिद्धान्त छात्रों से छिपाया नहीं जायगा, इस पर बड़े ज़ोर का शोर मचा, और लोगों ने कहा..."तो आप इस्तीफा दे दें।"

इस के बाद जब नेमचीकोफ़ ने अपने विभाग के एक अध्यापक ज़ेवराक का समर्थन किया, तब शोर और भी अधिक मचा, और वे बात करते हुए रोके गये। ज़ेवराक का अपराध यह था कि उन्होंने अमेरिकन पत्र "विज्ञान" में एक लेख लिखने का भयंकर अपराध किया था। नेमचीकोफ़ ने यह कहा कि ज़ेवराक विज्ञान में लिखने के बावजूद एक ऊँचे दर्जे के वैज्ञानिक हैं, और वे उन्हें बर्खास्त नहीं करेंगे।

बैठक के तुरन्त बाद नेमचीकोफ़ को डायरेक्टर पद से निकाल दिया गया और ज़ेवराक की योजना रद्दी की टोकरी में डाल दी गयी।

बैठक के पहले ही अखबारों में यह इंगित किया गया था कि लिसेंको विरोधी दल के भेड़ियों के हाथ में दे दिये जायेंगे। वातावरण का वर्णन करते हुए परिषद् के सदस्य तथा एक अत्यन्त प्रसिद्ध जीव वैज्ञानिक बोरिस जावाडोवस्की काकेशश में अपनी छुट्टी मनाने को स्थगित करने के लिये बाध्य हुए, और मास्को में जा कर अपने विचारों का समर्थन करने के लिये पहुँचे। उन्होंने शिकायत की "जिन परिस्थितियों में यह सम्मेलन बुलाया गया है, वे उचित नहीं हैं। जो लोग वाइजमैन-मोर्गन सिद्धान्त को मानते हैं, उन्हें इस बात का यथेष्ट मौका नहीं दिया गया कि वे तैयारी कर सकें तथा अपने मत को खुल कर कह सकें।" वे बोले..."मैं यह देखता हूँ कि सोवियट विज्ञान की

मर्यादा को बढ़ाने के सम्बन्ध में दल की जो नीति है, तथा 'साहित्यक गजट' और अन्य पत्रों में दल की नीति न मानने वाले सारे सोवियट वैज्ञानिकों के साथ जो बर्ताव किया जाता है, उस में बड़ी असंगतियाँ हैं।" उन्होंने और भी कहा..."विज्ञान में और भी कई तरीके तथा मार्ग हैं, जिन्हें न तो उड़ा देना चाहिये और न तो अस्वीकार करना चाहिये क्योंकि वे लिसेंको के क्षेत्र से बाहर की बातें हैं।"

इस चेतावनी का कोई असर नहीं हुआ।

प्रचारक के लिये हिदायतनामा

अभी-अभी एक बहुत सुविधाजनक आकार में छपी हुई एक ठोस पुस्तक निकली है, जिस में सोवियट संघ तथा अन्य देशों के सम्बन्ध में ज्ञातव्य बातें सन्निविष्ट की गयी हैं।

जैसा कि इस के नाम से जाहिर है "प्रचारक के लिये हिदायत-नामा" इस प्रकार के पाश्चात्य पूँजीवादी प्रकाशनों से अलग किस्म की पुस्तक है जैसे कि world almanac या "स्टेट्समैन की वर्षलिपि" है, तथा यह उन आवश्यकताओं के लिये भी नहीं है।

हिदायतनामा का उद्देश्य है कि साम्यवादी आन्दोलनकारियों तथा प्रचारकों की विराट सेना को उन के काम में मदद दी जाय। इन का काम यह है कि जनता के सामने विशुद्ध मार्क्सवादी शब्दावली में देश में तथा बाहर होनेवाली घटनाओं की व्याख्या करते रहें। यह पूँजीवादी हैंडबुकों की तरह कोई मोटी पुस्तक नहीं है, फिर भी इस में बहुत सी ऐसी बातें हैं जो पूँजीवादी पुस्तकों में नहीं पायी जातीं, जैसे विभिन्न देशों में साम्यवादी दल के सदस्यों की क्या संख्या है। मध्य अमेरिका तथा कैरीबिया के प्रजातन्त्रों को "संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के अधीन" कर के दिखाया गया है, और उन का क्षेत्रफल तथा आबादी लिखी गयी है।

कुल ३३३ पृष्ठों में हिदायतनामे में २४१ पृष्ठ सोवियट संघ की सूचनाओं से भरे गये हैं, जिन में आबादी, आर्थिक पद्धति, राजनैतिक ढाँचा, रहन-सहन की अवस्था तथा सशस्त्र बल पर सूचनाएँ हैं।

राष्ट्रीय गुप्त बातों की रक्षा के सम्बन्ध में नियम भी दिये गये हैं।

जो प्रचारक विश्व की घटनाओं की जटिलता को समझ कर यह चाहता है कि अपनी बारी में वह अपने श्रोताओं को यह बात समझावे, उस के लिये शायद हिदायतनामे का सब से महत्वपूर्ण भाग वह है जहाँ चालू राजनैतिक शब्दावली की मार्क्सवादी परिभाषायें दी गयी हैं।

अक्सर जो "आक्रमण" शब्द आता है, प्रचारक उस के सम्बन्ध में जानना चाहे कि यह क्या है तो उसे इस प्रकार ज्ञान प्राप्त होगा—

आक्रमण—हमला, कब्जा कर ने के लिये चढ़ायी।

आक्रमणात्म नीति—कब्ज़ा करने के लिये चढ़ायी की नीति।

आक्रमणकारी राष्ट्र—युद्धकामी राष्ट्र। द्वितीय महायुद्ध के युग में ऐसे राष्ट्रों में हिटलरवादी जर्मनी, साम्राज्यवादी जापान तथा इन के पिछलगुए थे। वर्तमान समय में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, ब्रिटेन तथा अन्य पूँजीवादी देश साम्राज्यवादी आक्रमणात्मक नीति का अनुसरण कर रहे हैं, तथा एक नये युद्ध के लिये उत्तेजना पैदा कर रहे हैं।"

"उत्पादन की अराजकता" शीर्षक में प्रचारक को यह पढ़ने को मिलेगा ."सामाजिक उत्पादन में योजनाहीनता, पूँजीवादी पद्धति में यह अनिवार्य है।"

एक और उदाहरण है "विरोध" शब्द इस शीर्षक में लिखा गया है......"पूँजीवादी वर्ग तथा मज़दूर वर्ग में विरोध, ऐसा विरोध है जिस में कभी संधि नहीं हो सकती। जैसा कि मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन और स्टालिन ने वैज्ञानिक रूप से दिखलाया है, इस विरोध के कारण

सर्वहारा क्रान्ति तथा मजदूर वर्ग की विजय के कारण पूँजीवादी पद्धति नष्ट हो कर समाजवादी पद्धति स्थापित होती है।"

दूसरी परिभाषाएँ यों हैं :

"ऐपोलोजिस्ट—पूँजीवाद के समर्थक जैसे पूँजीवादी वैज्ञानिक, दक्षिणपंथी समाजवादी, ट्राटस्कीवादी तथा पूँजीवाद के अन्य एजेन्ट।"

"राजनीति में उदासीनतावाद (ऐपोलीटीज्म)—राजनीति के प्रति उदासीनता। पूँजीवादी वर्ग यह चेष्टा करता है कि मजदूरों में राजनैतिक उदासीनता उत्पन्न कर दे जिस से कि वे पूँजीवादी पद्धति के विरुद्ध संग्राम करने से चूक जायँ।"

"बूम—शोर, सनसनी, स्टाक एक्सचेंज की सनसनी, कृत्रिम रूप से थोड़े समय के लिये चीज़ों के दामों में तथा सिक्यूरिटी के मूल्यों में वृद्धि।"

"संयुक्तीकरण—एकीकरण। शक्तियों का संयुक्तीकरण एकीकरण। एक या बहुत से राष्ट्रों के विरुद्ध संयुक्तीकरण। कई प्रगति शील संयुक्तीकरण भी होते हैं, जैसे अब कई राष्ट्र कब्जे के लिये आक्रमण के विरुद्ध संयुक्त हो जाते हैं। इसी प्रकार प्रतिक्रियावादी संयुक्तीकरण भी होते हैं जब कई राष्ट्र साम्राज्यवादी उद्देश्यों से संयुक्त हो कर अपना राज्य दूसरों पर लादना चाहते हैं या स्वतंत्रता का दमन करते हैं, अथवा लुंठनमूलक युद्ध छेड़ते हैं।"

"भ्रष्टाचार—घूसखोरी। पूँजीवादी राष्ट्रों में राजनैतिक तथा सार्वजनिक नेताओं अर्थात् मंत्रियों, संसद् के सदस्यों, सरकारी अफसरों तथा पत्रकारों की बेइमानी। पूँजीवादी देशों में भ्रष्टाचार बहुत फैला हुआ है क्यों कि वहाँ पूँजीवादीगण राष्ट्ररूपी यंत्र के अफसरों को घूस देते हैं,

जिस से कि वे इस प्रकार से काम करें तथा ऐसी नीति बरतें जो पूँजी-वादी एकाधिकार के लिये लाभ जनक हो।"

"पतन—ह्रास, क्रमिक रूप से नीचे की ओर गति।"

"पतित होना—गिरना, ह्रासशील होना। उदाहरण—पूँजीवादी संस्कृति बराबर पतित हो रही है।"

"लोकतन्त्र—जनता की शक्ति, ऐसा राजनैतिक ढाँचा जिस में जनता के हाथों में शक्ति रहती है। सोवियट समाजवादी लोकतन्त्र ही एकमात्र सही तरीके की जनता की सरकार है। समाजवादी संघ में सारी शक्ति शहर तथा देहात के लोगों में है। मज़दूरों के प्रतिनिधियों के सोवियटों के ज़रिये स्टालिन संविधान इस प्रकार कार्य करता है कि सोवियट लोकतन्त्र का, जो इस दुनिया में एकमात्र सामंजस्यपूर्ण लोकतन्त्र है, विकास हो। समाजवादी संघ में लिंग, जातीयता तथा नस्ल सम्बन्धी भेद के बिना सब मज़दूरों की बराबरी स्थापित हो चुकी है।"

"चेकोस्लोवाकिया, बुलगेरिया, पोलेंड, रूमानिया, हंगरी तथा इसी प्रकार कई देशों में इस प्रकार के कदम उठाये गये हैं जिन से यह भरोसा होता है कि उन-उन देशों में ऐसे लोकतन्त्र का विकास होगा, जो सोवियट लोकतन्त्र के बिल्कुल निकट है।"

"पूँजीवादी लोकतन्त्र बिल्कुल दूसरी ही चीज़ है। पूँजीवादी लोकतन्त्र पूँजीवादियों के अधिनायकत्व का ही एक स्वरूप है जिस पर कथित प्रतिनिधि संस्थाओं जैसे संसद्, नगरपालिका तथा ग्राम्य स्वायत्तशासन का मुलम्मा चढ़ा हुआ है। पूँजीवादी लोकतन्त्र जिस में पूँजीवादी एकाधिकारों का अधिनायकत्व छिपा रहता है, अमेरिका, ब्रिटेन तथा दूसरे देशों में प्रचलित है।"

"असैनिकीकरण—पूर्ण या आंशिक रूप से सैनिक मोर्चेबन्दी तथा यंत्र आदि का विनाश, सशस्त्र बल का अन्त या उसे कम से कम कर देना, अस्त्र-शस्त्र, युद्ध व उद्योग तथा युद्ध सम्भावनाओं से युक्त वस्तुओं का विनाश।

"किसी देश के असैनिकीकरण करने का अर्थ यह है कि उस देश में ऐसे कार्य किये जायँ, जिन से वह देश दूसरे देशों के लिये सैनिक भय का कारण स्वरूप न हो सके। माल्टा तथा बर्लिन सम्मेलनों के अनुसार जर्मनी का सम्पूर्ण रूप से असैनिकीकरण होना चाहिये था।

"जो कुछ भी हो ब्रिटेन तथा अमेरिका की सरकारें अपने कर्तव्यों को पूरा नहीं कर रही हैं, और ऐसी नीति बरत रही हैं जिस से कि जर्मन युद्ध धंधों का तथा जर्मन सशस्त्र बलों का पुनरुद्धार हो, और वे समाजवादी संघ, जनता के लोकतन्त्र वाले देशों तथा सारी दुनिया के लोकतान्त्रिक आन्दोलन के विरुद्ध संग्राम में काम आ सकें।

"भेदभाव का बर्ताव—किसी राष्ट्र या उस के नागरिकों के साथ दूसरे राष्ट्र तथा नागरिकों के मुकाबिले में कम हक देना तथा उन के अधिकारों का हनन। उदाहरण—अमेरिका में हब्शियों के साथ भेदभाव का बर्ताव किया जाता है।

"सिद्धान्त—कोई राजनैतिक, दार्शनिक तथा अन्य शिक्षा। ट्रूमैन सिद्धान्त—एक प्रतिक्रियावादी सिद्धान्त जिस के द्वारा अमेरिका विश्व साम्राज्य फैलाने की शिक्षा दे रहा है।

"सम्प्रसारण—सैनिक सम्प्रसारण, दूसरे देशों के इलाकों पर सेना के द्वारा कब्ज़ा या जिन इलाकों पर कब्ज़ा हो चुका है, उनका विस्तार।

राजनैतिक सम्प्रसारण—दूसरे देशों को अपने देश के प्रभाव के अधीन ले आना। आर्थिक सम्प्रसारण—दूसरे देशों के बाज़ारों पर कब्ज़ा। अमेरिका सम्प्रसारण की राजनीति का अनुसरण कर रहा है जिस का उद्देश्य विश्व साम्राज्य स्थापित करना है।

"गैंगस्टर डाकुओं के गिरोह का एक सदस्य। अमेरिका में गैंगस्टरवाद का बोल बाला है।

"हस्तक्षेप—सशस्त्र हमला, दूसरे राष्ट्र के भीतरी मामलों में एक या कई राष्ट्रों का सशस्त्र हस्तक्षेप। उदाहरण—१९१७-२० में अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान तथा जर्मनी ने सोवियट रूस में संगठित रूप से हस्तक्षेप किया, उन का उद्देश्य सोवियट पद्धति को नष्ट कर पूँजीवाद का पुनरुद्धार करना तथा हमारे देश का अंग-भंग करना था।

"लिन्चिंग—अमेरिका का लिन्च कानून जिस में हब्शियों तथा क्रान्तिकारी मज़दूरों से पाशविक तरीके पर बदला लिया जाता है।... लिंचिंग अमेरिकन वास्तविकता की एक विशेषता है, तथा यह इस बात का उदाहरण है कि अमेरिकन पूँजीवाद अपने वर्ग-शासन को दृढ़ीभूत करने के लिये किस प्रकार के जंगली आचार को प्रोत्साहन देने के लिये तैयार है।

"मार्शल योजना—अमेरिका के वैदेशिक मंत्री जनरल मार्शल के द्वारा १९४७ की ५ जून की घोषणा, जिस में अमेरिका में कथित डालर सहायता की योजना के अनुसार उन योरोपीय देशों को सहायता देने का वादा किया जो हिटलरी शासन के कारण कष्ट में फँस गये थे। मार्शल योजना अमेरिका के साम्राज्यवादियों के द्वारा योरोप पर कब्ज़ा किये जाने तथा उस को गुलाम बनाने की योजना है।

"मार्शल योजना का उद्देश्य यह है कि अमेरिका के उद्योगपति धन

कुबेरों के हित में पश्चिमी योरोप की आर्थिक पद्धति को दबा कर रखा जाय। पश्चिमी योरोप के देशों में उद्योग-धन्धों, वैदेशिक व्यापार, वित्त तथा सिक्के की पद्धति पर अमेरिकन एकाधिपतियों का कब्ज़ा स्थापित हो रहा है।

"सच तो यह है कि मार्शल योजना के कारण उन देशों में राष्ट्रीय प्रभुत्व का अन्त हो रहा है।

"मार्शल योजना समाजवादी संघ तथा जनता के लोकतन्त्र वाले देश और सारी दुनिया के क्रान्तिकारी आन्दोलन के विरुद्ध पश्चिमी राष्ट्रों की सैनिक-राजनैतिक गुटबन्दी की नींव है।

"अमेरिका पश्चिमी जर्मनी को इस गुट के अन्दर अपनी नीति को कार्यान्वित करने के लिये इस्तेमाल कर रहा है। मार्शल योजना की सहायता से अमेरिका के एकाधिकारी आर्थिक संकट को बचाना, अपने गुदामों में जमा मालों को बेचना, अधिक मुनाफा प्राप्त करना तथा योरोप की जनता पर अपनी इच्छा लादना चाहते हैं।

"राजनैतिक प्रतिक्रिया—सामाजिक प्रगति का म्रियमाण वर्गों द्वारा प्रतिरोध। कोई भी बात जिस से लुप्तप्राय पूँजीवादी पद्धति, पूँजीवादी शासन का समर्थन होता है, वह प्रतिक्रिया है, और प्रतिक्रियावादी शिविर में उस का स्थान है। द्वितीय महायुद्ध के बाद से विश्व प्रतिक्रियावाद की प्रधान शक्ति तथा समर्थक अमेरिकन पूँजीवाद हैं।

"पुनरुद्धार—प्राचीन पद्धति जो क्रान्ति के द्वारा नष्ट हो चुकी है, उस की पुनः स्थापना। उदाहरण—अमेरिका तथा ब्रिटेन के साम्राज्यवादी १९४५ के पहले के पूँजीवादी ढाँचे का पुनरुद्धार करना चाहते हैं।

"राष्ट्रीय पूर्ण प्रभुता— किसी राष्ट्र की राजनैतिक स्वतन्त्रता। कोई राष्ट्र तभी पूर्ण प्रभु कहलाता है जब वह वैदेशिक तथा आन्तरिक मामलों में किसी दूसरे राष्ट्र के अधीन न हो। अमेरिका इस समय योरोपीय देशों के सम्बन्ध में जिस नीति का अनुसरण कर रहा है, उस से उन देशों की पूर्ण प्रभुता का हनन होता है।

"अधीन—शब्द के विस्तृत अर्थ में अधीन का अर्थ है उस पर निर्भर। इस प्रकार द्वितीय महायुद्ध के जमाने में हंगरी, रूमानिया, और फिनलैंड हिटलरवादी जर्मनी के अधीन राष्ट्र थे। उदाहरण—बेनेलेक्स देश समूह यानी बेल्जियम, नेदरलैंड्स, लक्समबर्ग ये सब देश अमेरिका के आर्थिक तथा राजनैतिक अधीन देश हैं।

"वेटो—यह एक लैटिन शब्द है जिस का अर्थ है मैं मना करता हूँ। वेटो का संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् के कार्य में बड़ा भारी अर्थ है, जहाँ कोई भी फैसला तब तक मान्य नहीं समझा जाता, जब तक उस की स्थायी समिति के सभी सदस्य उस पर एकमत हो कर वोट न दें। आधारभूत प्रश्नों पर बड़ी शक्तियों का मतैक्य शान्ति तथा सुरक्षा के संग्राम की सफलता के लिये एक बहुत महत्वपूर्ण गारंटी है।

इस कारण आंग्ल अमेरिकन साम्राज्यवादी सुरक्षा परिषद् के अधिकार-पत्र में बताये हुए तरीकों पर बहुत ज़ोर से आक्रमण करते हैं।"

रूस में यहूदियों के सम्बन्ध में सत्य

एक बूढ़े यहूदी मित्र ने पूछा—क्या आप एक अच्छा मंत्री चाहते हैं ? मेरे पुत्र को मंत्री नियुक्त करना कैसा रहेगा ?

मुझे इस सुझाव पर बहुत आश्चर्य हुआ। मेरे मित्र जानते थे कि एक सोवियट नागरिक के लिये किसी विदेशी संवाददाता के यहाँ काम करना तब तक बुद्धिमत्तापूर्ण न होगा, जब तक कि वह व्यक्ति उस काम के लिये "दिया" न जाय। इस के अतिरिक्त मेरे मित्र के पुत्र ने अभी हाल ही में उच्च सम्मानों के साथ इतिहास में एम. ए. की डिग्री प्राप्त की थी, जिस से कि उस के लिये उच्च शिक्षा की किसी भी संस्था में शिक्षक का पद प्राप्त करना आसान होता। मैंने मित्र से ऐसा ही कहा।

मेरे मित्र ने गम्भीर हो कर उत्तर दिया—वह भी तब तक ऐसा ही सोचता था जब तक कि वह नौकरी के लिये घूमा नहीं था।

ऐसा ज्ञात हुआ कि जहाँ भी यह रूसी की तरह दिखायी पड़ने वाला मेरे मित्र का पुत्र गया, वहीं उस का स्वागत हुआ, और वहीं उसे दरख्वास्त भरने के लिये कहा गया। पर ज्यों ही नौकरीवाली मुलाकात में यह ज्ञात हो गया कि वह यहूदी है, त्यों ही उसे नम्रतापूर्वक बताया गया कि कोई जगह खाली नहीं है। महीनों इस प्रकार घूमने के बाद लड़का काम पाने के सम्बन्ध में निराश हो गया।

जिस समय यह बातचीत हुई मैंने अपने मित्र की कहानी का कुछ अविश्वास किया, पर जल्दी ही मुझे एक दूसरे सूत्र से इस का समर्थन प्राप्त हुआ। एक बड़ी शिक्षा संस्था के अध्यक्ष ने मुझे बतलाया कि उन्हें यह हिदायत मिली थी कि वे आगे कोई यहूदी शिक्षक न रक्खें, तथा ज्यों ही कोई मौका आवे स्टाफ के यहूदियों को निकाल बाहर करें।

साम्यवादी दल की नयी हिदायतों के अनुसार यहूदियों को सोवियट के बौद्धिक तथा राजनैतिक जीवन में प्रमुख भाग से निकाला जा रहा था। यह केवल पहले के ज़माने के यहूदी विरोध में लौट जाना नहीं था, जिस की भावनायें अब भी बहुत कुछ बची हुई थीं। यद्यपि पहले के ज़माने के यहूदी विरोध से इस नयी नीति को बल पहुँचाया जा रहा है, फिर भी दल की नीति को गलत तरीके से क्रान्ति के पहले के यहूदी विरोधी दंगों अथवा नात्सी यहूदीहनन के साथ एक नहीं समझना चाहिये। यहूदियों के विरुद्ध वर्तमान नीति एक नस्ल के रूप में चलायी नहीं जा रही है। इस के विपरीत साम्यवादियों ने उन पर एक सांस्कृतिक गुट के रूप में हमला किया, ऐसा गुट जिस पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। इस कारण उन को काली सूची के अन्तर्गत किया गया।

युद्ध के पहले सोवियट संघ में बिल्कुल कोई भी यहूदी प्रश्न नहीं था। साम्यवादी दल ने सक्रिय रूप से यहूदी विरोध का मुकाबिला किया, और यहूदियों को विश्वास तथा अधिकार के पदों पर तैनात किया। यद्यपि ट्राट्स्की तथा उन के मुख्य अनुयायी यहूदी थे, फिर भी राजद्रोहों के प्रसिद्ध मुकदमों के समय तथा उस के साथ होनेवाली 'शुद्धियों' के दौरान में कभी यह यहूदी विरोध नहीं उठा।

इस प्रकार यहूदियों को जो बराबरी दी गयी, उस के लिये वे कृतज्ञ

थे, और वे सोवियट शासन के प्रबलतम समर्थकों में थे। यहूदी जनता सोवियट समाज में खपने लगी, और धीरे-धीरे उस में बहुत कुछ समा गयी। बहुतों ने यहूदी अलगाव छोड़ कर रूसी नाम रख लिये।

युद्ध तथा इस के बाद के युग में यहूदियों की मर्यादा तथा दृष्टिकोण में बहुत परिवर्तन हुए। नात्सी निर्यातन से यहूदी भावना और यहूदी एका बढ़ा।

इसी के साथ-साथ न केवल नात्सी यहूदी विरोधी प्रचार कार्य की जड़ें यूक्रेन तथा बियेलोरशिया में जहाँ सब से अधिक युद्ध पूर्व यहूदी आबादी थी, धँस गयीं, बल्कि सोवियट सैनिक रेखा के पीछे भी इन की गूँज पहुँची। १९४१ के अक्तूबर में मास्को को जल्दी-जल्दी खाली करते समय यह अफवाह फैल गयी कि यहूदियों ने सब थानों पर कब्जा कर लिया, सारी धन-दौलत ले कर उड़ गये तथा बाकी आबादी को आफत में छोड़ गये।

बहुत-सी कुत्साओं की तरह इस अफवाह में भी सत्य का एक कण था क्यों कि यहूदी यह जानते थे कि यदि वे नात्सियों के हाथों में पड़ गये, तो उन की क्या गति होगी, इस कारण वे सब के सब शहर छोड़ कर भाग गये।

कई ऐसी खबरें सोवियट सेनाओं में फैलीं जिन का आशय यह था कि यहूदी तो युद्ध भूमि के पीछे बहुत दूर रह कर मज़ा कर रहे हैं, जब कि रूसी मोर्चों पर लड़ कर जान दे रहे हैं। इन में से कई खबरें नात्सियों द्वारा फैलायी गयी होंगी। बहुत अधिक तादाद में यहूदी सैनिकों को साहस के लिये विशेषता दी गयी, पर इस बात से पूर्वोक्त कहानियों का कोई अन्त नहीं हुआ, क्यों कि ये कहानियाँ गुप्त यहूदी विरोध पर पनपायी जा रही थीं।

युद्ध के बाद जो यहूदी लौट कर अपने घरों में आये, उन्होंने यह देखा कि उन की अनुपस्थिति में उन के घरों पर अयहूदियों ने कब्जा कर लिया था, यहाँ तक कि उन की चीजों पर भी कब्जा हो गया था। कब्जा करने वाले लोगों ने हर मामले में खुशी के साथ कब्जा वापस दे दिया ऐसी बात नहीं, इस के अलावा आक्रान्त इलाकों में लौटे हुए यहूदी अपने ही देश में प्रवासी हो गये, क्योंकि इस बीच में नाज़ियों ने उन के रिश्तेदारों तथा मित्रों का सफाया कर दिया था, और इस प्रकार उन की जड़ें टूट चुकी थीं।

इन तत्वों का सम्मिलित असर यह हुआ कि यहूदी सोवियट नागरिक अपनी तथा अपने पड़ोसियों की आँखों में सब से पहले एक यहूदी हो गया, और उस की पृष्ठभूमि तथा सम्बन्धों के कारण वह बिल्कुल अलग हो गया। इसी कारण सोवियट भूमि के यहूदियों में इज़राइल राष्ट्र के लिये गर्व तथा अप्रत्याशित जोश दिखायी पड़ा। पर इस घटना के पहले भी यहूदियों का बदला हुआ दृष्टिकोण इस बात से प्रगट हो चुका था कि अब सोवियट समाज के प्रति उन का दृष्टिकोण निःस्पृह हो गया था, और सर्वोपरि उन में यह दिखायी पड़ा कि पश्चिम के साथ घनिष्ठतर सहयोग तथा एक दूसरों को समझने की भावना उत्पन्न हो चुकी थी।

१९४६ की ग्रीष्म ऋतु में एक अमेरिकन रब्बी जो अमेरिका के पादरियों के ऐसे गुट के सदस्य थे जिस ने रूसी युद्ध में सेवा कार्य के लिये कोष एकत्र किया था, मास्को सीनागाग याने यहूदी मन्दिर में पधारे। स्थानीय यहूदियों ने उन का भावुकतामय तथा जोशीले तरीके से स्वागत किया। साथ ही उन लोगों ने अमेरिका तथा उस के द्वारा दी हुई सहायता के लिये प्रेम तथा प्रशंसा की भावना व्यक्त की

क्योंकि अभी तक लोगों के मन में सहायता की बातें ताज़ी थीं। इस के बाद दल ने "पश्चिम के सामने घुटना टेकने" की यहूदी प्रवृत्ति के विरुद्ध बहुत गुप्त रूप से पहली कड़ी चेतावनी दी।

इज़रायल की स्थापना के साथ-साथ सोवियट भूमि के यहूदियों ने देखा या सोचा कि उन्हें नवीन तथा सुन्दर जीवन की सम्भावना प्राप्त हुई है। आशाएँ उस समय और भी तगड़ी हुईं जब कि सोवियट सरकार ने फौरन ही नये राष्ट्र को मान लिया, यद्यपि साम्यवादी नीति में बराबर ज़ीओनवाद का बहुत ज़ोर शोर से विरोध किया था, और सारी ज़ीओनवादी संस्थाओं का निर्दयता के साथ दमन किया था।

जब इज़रायल राष्ट्र बन चुका, तो सोवियट नीति के बनाने वालों ने देखा कि इस में मध्य पूर्व में अपना पैर जमाने का अच्छा मौका है। तदनुसार इज़रायल के पत्रों में अच्छी प्रशंसा हुई, और इस विषय पर दल की ओर से व्याख्यानों का प्रबन्ध हुआ।

मास्को में एक ऐसे व्याख्यान के बाद श्रोताओं में से एक आदमी उठ खड़ा हुआ है, और उस ने पूछा कि जो यहूदी इज़रायल में जा कर बसना चाहते हैं वे किस प्रकार अपनी दरख्वास्त दें। इस प्रश्न का उत्तर देने के बजाय वक्ता ने एक ज़बर्दस्त तिरस्कारमूलक व्याख्यान दिया, और यह कहा कि इस प्रकार का प्रश्न वफादार सोवियट नागरिक के अनुपयुक्त है। वक्ता ने और भी कहा कि सोवियट नागरिक को अपने जन्मसिद्ध अधिकार पर इतना गर्व होना चाहिये कि वह बाहर जा कर बसने की बात मन में ही न लावे, और यह विचार ही राष्ट्रद्रोहमूलक है। श्रोताओं में कई दूसरे लोग प्रश्नकर्ता के पक्ष के निकले। लोगों ने यह कहा कि क्या पोल तथा चेक जाति के सोवियट नागरिक देश में वापस जाने के समझौतों के अनुसार अपने-अपने

देशों में वापस नहीं जाने दिये गये ? फिर इज़रायल के मामले में इस प्रकार की बात क्यों न की जाय ?

जब श्रीमती गोल्डा मेयर्सन के नेतृत्व में इज़रायली प्रतिनिधि मंडल के सदस्य मास्को पधारे, तो उन्हें स्थानीय यहूदियों की ओर से पहले यहूदी मन्दिर में, और फिर मेट्रोपोल होटल के कमरों के जंगलों के सामने जयकार लगा कर स्वागत किया गया। यह सोवियट इतिहास में बिल्कुल अनोखी बात थी। फौरन ही प्रतिनिधि मंडल के पास सैकड़ों पत्र आये, और प्रश्न पूछे गये कि किस प्रकार लोग इज़रायल जा सकते हैं। किसी प्रकार यह अफवाह फैल गयी कि सोवियट यहूदियों को पूर्ण रूप से इज़रायल भेजे जाने का प्रबन्ध हो चुका है। हज़ारों यहूदी अपने कारोबार बन्द कर बोरिया बिस्तर बाँध कर जाने को तैयार हो गये। पर कोई नया मूसा उन का नेतृत्व करने के लिये नहीं निकला। लाल सागर ने तो रास्ता दे दिया था, पर लाल पर्दे ने उन्हें जाने देना अस्वीकार किया।

---

(२)

इज़रायल के लिये १९४८-४९ में यहूदियों के अभूतपूर्व जोश से घबड़ा कर क्रेमलिन ने बहुत तेजी से कदम उठाया।

करीब-करीब रातों रात इज़रायली प्रतिनिधि मंडल को यहूदी

आबादी से और अधिक सम्पर्क पैदा करने से रोक दिया गया। पुलिस के एजेंटों ने मिलने के लिये आने वाले सोवियट नागरिकों को लौटा दिया। कुछ थोड़ी सी गिरफ़्तारियों से और प्रदर्शन बंद हो गये। इज़रायल के प्रति अख़बारों ने लहजा बदल दिया, और तेलअवीव सरकार के पूंजीवादी राष्ट्रीय चरित्र पर ज़ोर देने लगे, और यह इंगित किया जाने लगा कि प्रधान मन्त्री डैविड बेनगुरियन वालस्ट्रीट के एजेंट हैं।

एम. वी. डी. फौरन यहूदियों की सांस्कृतिक तथा सामाजिक संस्थाओं को उखाड़ फेंकने के लिए दौड़ पड़ा। मास्को में यिडिश भाषा का पत्र 'आईनहाईट' का हाता तथा एम. एस. प्रकाशन संस्था एक दिन सप्ताह के अन्त में बंद कर दी गयी। पर इस के लिये पहले से न तो संस्था के नौकरों को कोई चेतावनी दी गयी, और न बाद को कोई जवाब दिया गया। यहूदी फासिस्टविरोधी कमिटी की भी यही गति हुई। नये हुक्मनामे के अनुसार ऐसी सारी संस्थाएँ यहूदी राष्ट्रीयता या जीओनवाद के सगड़े केन्द्र और इस कारण संदिग्ध समझे गये।

यहूदियों को जिम्मेदारी के पदों से निकालने का विशेषकर ऐसे पदों से जिन में बाहरी दुनिया से सम्पर्क होते थे, निकालने का रूप बहुत ही भयानक रहा। कुछ ही सप्ताहों के अंदर जर्मनी या आस्ट्रिया में सोवियट कब्जा के प्रशासनों में जितने भी यहूदी थे, सब वापस बुलाये गये। विदेशी मिशनों या प्रतिनिधि मंडलों में और यहूदी लिये नहीं गये।

कोई दस साल से कुछ ऊपर हुआ कि मैक्सिम लिटवीनोफ नामक एक यहूदी सोवियट वैदेशिक दफ़्तर का प्रधान था। कई बहुत उच्च

सोवियत राजदूत यहूदी थे। इन में वाशिंगटन के राजदूत कान्स्टेंटिन उमानेस्की तथा लंदन में राजदूत ईवान माइस्की थे। पर आज यहूदियों को उस विशेष स्कूल में लिया भी नहीं जाता, जिस में वैदेशिक सेवाओं के लिये प्रशासन दिया जाता है। वैदेशिक व्यापार मंत्रालय में भी यही नीति बर्ती जाती है।

सरकार तथा दल के यंत्र में सर्वत्र यही निष्कासन की प्रक्रिया चल रही है। उदाहरणार्थ हाल में किसी नये यहूदी को दल की केन्द्रीय संस्थाओं में नहीं लिया गया। पोलिट ब्यूरो में एकमात्र यहूदी लाज़ार कागानोविच है, जो एक बहुत पुराना सदस्य है, जिस के व्यक्तिगत सम्बन्ध बहुत दृढ़ हैं, और जिस का सोवियत प्रेम संदेह से परे है।

यहूदियों के विरुद्ध अभियान उस समय अपने सब से प्रबल रूप में १९४९ की जनवरी में पहुँचा, जब "मूलहीन" तथा "जड़हीन सार्वदेशिकवादी" लोगों के विरुद्ध अभियान शुरू हुआ। उद्देश्य तो यह था कि ऐसे सब लेखकों, आलोचकों तथा वैज्ञानिकों को निष्कासित किया जाय जो किसी भी प्रकार पश्चिम के साथ सहानुभूति दिखलाते हैं या दल की नीति से कुछ मतभेद रखते हैं, पर इस कारण जिन पर हमला हुआ, उन में से अधिकांश यहूदी थे।

यह कार्य बहुत भद्र तथा सार्वजनोचित ढंग से शुरू हुआ। पर जल्दी ही सोवियत तिरस्कारों का सारा तोपखाना इन के विरुद्ध खोल दिया गया। दोषियों को दल के संगठनों तथा लेखक-संस्थाओं से निकाल दिया गया, इस प्रकार उन के साहित्यिक जीवन की समाप्ति हो गयी।

सार्वदेशिकवादियों पर यह दोष लगाया गया कि वे साहित्य, कला, विज्ञान में सोवियत सफलताओं को छोटा करते हैं, साथ ही साथ

पश्चिम की ह्रासशील संस्कृति की खुशामद करते हैं। नाटक के सार्वदेशिकवादी समालोचकों की दुर्गति के कारण ही ऐसा ज्ञात होता है कि इस समय सोवियट नाट्यशाला का पतन हुआ है।

बिएलोरशियन लेखक संस्था के प्रधान पेट्रु ग्लेबका के अनुसार "सार्वदेशिकवादियों ने सब से अच्छे सोवियट राष्ट्रप्रेममूलक नाटकों पर कैंची चलायी, तथा नाट्यशालाओं में उन के प्रदर्शन को जहाँ तक हो सका रोका।...गुणहीन सार्वदेशिकवाद, विदेशी वस्तुओं की प्रशंसा यहूदी नाट्यशाला में विशेष कर के करते दिखायी पड़ता था। यहूदी नाट्यशाला में पूँजीवादी अमेरिका को स्वर्ग कर के दिखलाया गया।"

प्रतिभाशाली लोकप्रिय यहूदी कवि किमोविड पेरत्सोमार्कीस्की पर इस कारण हमला किया गया कि रूमानिया के एक नगर सिनाइया में आ कर उन में यह विकृत भावना उत्पन्न हुई कि वे उसे बाइबिल में उल्लिखित सीनाई पर्वत के साथ संयुक्त करें, जहाँ से ३,००० वर्ष पहले मूसा ने अपने नियम प्रचारित किये थे। इन सारी बातों से दल के आलोचकों में यह संदेह उत्पन्न हुआ कि पेरत्सोमार्कीस्की ने १९२८ में खुल्लमखुल्ला जो ज़ियोनवाद के साथ सम्बन्ध विच्छेद किया था, वह निष्कपट नहीं था।

नयी नीति में यहूदी विद्वानों की कैसी दुर्गति हुई है यह लेनिनग्राड के साहित्य विभाग के अध्यापक आइखेनबाउम की दुर्गति से पता लगता है।

उन पर सार्वदेशिकवादी होने का, रूसी संस्कृति की निन्दा करने और उसे छोटा करने का अभियोग लगाया गया। यह आक्रमण इस बात पर आधारित था कि १९१९ में उन्होंने स्लाविक साहित्य की तुलना में पश्चिम के साहित्य को पसंद किया था। इस के अतिरिक्त

उन्होंने छापे के हरफों में अपने पिता की प्रशंसा में यह कहा था कि वे बड़े प्रतिभाशाली व्यक्ति थे, उन्होंने बाइबल और तौरेत का अध्ययन किया था, और वे इज़रायल के लिये एक ज्योति के रूप में थे। उस प्रशंसा में उन्होंने यह भी कहा था कि उन के पूर्वजों में कई इब्रानी भाषा में कविता लिखनेवाले हुए थे।

इस पर ज़्वेजदा नामक पत्र ने कहा—"वे उत्तराधिकार के सम्बन्ध में मिचुरिनवादी सिद्धान्त के बजाय एक अपना ही बिल्कुल स्पष्ट ओर्गैन-वादी सिद्धान्त स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं।"

जिन यहूदी बुद्धिवादियों पर हमला किया गया, उन में से कइयों ने रूसी नाम ले लिये थे। पर उन पर आक्रमण करनेवालों ने कोष्ठक में उन के भूतपूर्व नाम दिये, और फिर अन्त में केवल यहूदी नाम ही रखे।

इस नयी प्रक्रिया से खोलोडोफ बदल कर मेयरोविच, यास्नी बदल कर फिंकेलस्टाइन, ज्डानोव बदल कर लिफशिस्टस्ज, सानोफ बदल कर स्मलसन और गान बदल कर कागान हो गया था। कभी गृहहीन सार्व-देशिक वादियों को खुल्लमखुल्ला यहूदी नहीं कहा गया, पर व्यंगचित्रों में उन की तस्वीरें इस प्रकार से बनायी जाती थीं कि लोग समझ जाते थे।

सार्वदेशिकवादियों के विरुद्ध अभियान का विदेशों में इतना प्रति-कूल असर हुआ, विशेषकर ऐसे देशों में जहाँ दल को यहूदियों का सम-र्थन मिला हुआ था कि दल ने इस के इतर तथा बहुत जोशीले पहलुओं को निषेध कर दिया। प्रबल रूप से गालियाँ देना तथा व्यंग चित्र बंद हो गये, पर आधारगत नीति में कोई फर्क नहीं आया।

यहूदी लेखकों में दो ही लेखक साहित्यिक शुद्धि के अभियान से बच पाये। एक तो इलियाएरेनबुर्ग और दूसरा कहावत प्रसिद्ध दल की ओर से खम ठोक कर आगे आनेवाला डेविड ज़सलाविस्की। पर जिस

समय यह अभियान अपनी सर्वोच्च ऊँचाई पर था, उस समय इन लोगों पर भी कुछ समय के लिये ग्रहण लग गया था।

एरेनबुर्ग पर भी सार्वदेशिकवादी होने का अभियोग लग सकता था, क्योंकि पश्चिमी योरोप के साथ उन के बहुत गहरे सम्बन्ध थे, पर उन्होंने इस आक्रमण से अपनी बचत इस प्रकार कर ली कि उन्होंने पहले ही से ज़ाओनवाद पर ज़ोर से हमला कर दिया, और इज़रायली मंत्री श्रीमती मेयरसन का सार्वजनिक रूप से अपमान कर दिया।

एक राजनयिक स्वागत के अवसर पर जब श्रीमती मेयरसन के साथ उन का परिचय कराया गया, और श्रीमती ने उन से अंग्रेजी में बात की, तो एरेनबुर्ग जो जानते थे कि उन्हें अंग्रेजी नहीं आती, फौरन यह कह कर अलग हट गये कि उन्हें किसी बात से इतनी घृणा नहीं होती जितनी कि रूस में पैदा एक यहूदिन के मुँह से अंग्रेजी सुन कर होती है।

कुछ सप्ताह के बाद जब मैं ने श्रीमती मेयरसन से पूछा कि उन का प्रतिनिधि मंडल यह अब भी आशा करता है या नहीं कि अब आगे किसी सोवियट भूमि के यहूदी को इज़रायल में आ कर बसने दिया जायगा या नहीं। इस पर वह मुस्कराईं और बोलीं...आख़िर हम लोग वस्तुवादी हैं।

बाल्टिक प्रान्त—एक शाखा रेल का अंतिम स्टेशन

(१)

मूछों वाले एम. वी. डी. के कार्नेल ने कार के जँगले के पर्दे को हटा दिया, और स्याही की तरह अँधेरे में इधर-उधर टिम-टिमाती हुई हल्की, पतली, अकेली रोशनियों की ओर चिन्ता के साथ देखने लगे।

वे देखते थे और कहते जाते थे..."ऐस्ट लोग तो बड़े अनुदार ज़िद्दी लोग हैं! वे हम रूसियों को पसन्द नहीं करते। वे हमारी सामाजिक पद्धति को सरल रूप से ग्रहण नहीं कर पाते। उन के रुख बिलकुल ही कड़े तथा स्वार्थपूर्ण हैं। यदि मेरा बस चलता, तो मैं इन सारे लोगों को एक दम से गाड़ी पर बैठा कर यूराल के उस पार किसी निरापद स्थान में ले जाता। वहाँ उन के लिये काफी जगह है जहाँ वे जैसे में जो चाहे सो कर सकते हैं। उस हालत में हम यहाँ पर अपने लोगों को ला कर बसा देते।"

मैंने इस पर यह आपत्ति की कि यह कार्य बहुत कठिन प्रमाणित हो सकता है।

इस पर कार्नेल ने प्रतिवाद किया..."यदि हम वाल्गा के जर्मनों, क्रिमिया के तातारों, चेचेनों, पूर्वी प्रशियनों के साथ ऐसा कर सके हैं,

तो हम ऐसा इन के साथ भी कर सकते हैं। हम अपनी पश्चिमी सीमा पर ऐसा पाला चाहते हैं जिस में कोई खतरा न हो। पहला मौका मिलते ही यह हमारी पीठ पर छुरी मारेंगे जैसा कि उन्होंने १९-४१ में किया था। अभी १ महीने पहले इस तरह एक पूरी रेल लूट ली गयी थी। सारे रूसी यात्री लूट लिये गये, पर दूसरों को किसी ने नहीं छुआ। ये लोग दल के दो पदाधिकारियों को उड़ा ले गये, तब से उन का पता नहीं लगा।

"और इन अपराधियों का पीछा करना बेकार है। सारा देहात इन से मिला हुआ है। दिन के समय ये लोग चारों तरफ की आबादी में घुल मिल जाते हैं। या तो सब को गिरफ्तार किया जाय, नहीं तो एक दो को गिरफ्तार करना बेकार है।"

कैरेलिया के सीमा से तथा लोवाऊ से यात्रा करते हुए जहाँ हमारी यात्रा इस कारण रुक गयी थी कि बरफ के कारण लेनिनग्राड का रास्ता बन्द था, हमें सोवियत मनोविज्ञान में यह अन्तर्दृष्टि प्राप्त हुई।

रूसी रेलों में ही कुछ ऐसी बात है कि बात करने का जी चाहता है। समाज के सामयिक रूप से अलगाव, यात्रियों का गुमनाम होना, क्योंकि यात्री यहाँ कौशल से अपना नाम बताना बचाते हैं, और सर्वोपरि यह विश्वास कि अपनी अपनी जगह पहुँचने पर प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने काम से चला जायगा, और शायद फिर कभी भेंट न हो, इन सारी बातों के कारण रूसियों की स्वभावसिद्ध वाचालता को मौका मिल जाता है कि वह संयम तोड़ कर अपने को खोल दे, और उबलती हुई केतली के सामने दिल खोल कर बातें करे। इस के अलावा हम उस साधारण पिटे घिसे रास्ते से दूर थे, जहाँ एक रूसी का किसी विदेशी से साबिका पड़ सकता है।

मैं ने एम. वी. डी. के कार्नेल से यह मन्तव्य किया कि मैं ने लिबाऊ के बाज़ार में जितना मांस तथा जितनी किस्म का मांस देखा वह मास्को में दुर्लभ है, और दाम भी मास्को से बहुत कम है। उन्हों ने बताया कि यह इस कारण है कि यहाँ के किसान यह समझ रहे हैं कि अब सामूहिकीकरण समीप है। अब तक लैटविया के किसानों के $\frac{1}{10}$ का ही सामूहिकीकरण हुआ है। यह दिसम्बर १९४८ की बात थी, पर आम पैमाने पर काम जल्दी शुरू होने वाला था, इस लिये किसान अपने जानवरों को मार रहे थे जिस से कि वे सामूहिक खेती संस्थाओं के हाथों में इन जानवरों को देने से बचे रहें। कार्नेल ने बताया कि इसी से यह ज्ञात होता है कि ये लोग कितने कठिन लोग हैं।

कार्नेल ने बड़ी खुशी के साथ कहा—"अगले साल इस समय आप को पसली की हड्डियाँ भी मुश्किल से मिलेंगी। तब तक हम सौ फी सदी सामूहिकीकरण कर चुके होंगे।" सच तो यह है कि कार्नेल ने जो भविष्यवाणी की थी, वह समय से बहुत पहले ही पूरी हो गयी। जो रूसी मित्र लैटविया के समुद्र तट पर गर्मी की छुट्टियाँ मनाने गये, वे यह शिकायत करते हुए लौटे कि वहाँ खाद्य स्थिति खराब है, और चीजों के दाम बहुत हैं।

रीगा में हमें लीबाऊ से भी अधिक मांस दिखायी पड़ा। हम ने बड़े दिन के लिये एक टर्की नामक मुर्गा, कई मुर्गी के बच्चे, तथा अन्य मांस खरीदे जो मास्को में दो महीना चल सकता था। रीगा के विराट ढके हुए बाजारों में एक-एक किसान अपना माल बेच रहे थे। इन में से अधिकतर या तो रूसी बोल ही नहीं सकते थे, या बहुत थोड़ी बोलते थे, और जब उन से रूसी में बातचीत की जाती

थी, तो उन के चेहरे कड़े पड़ जाते थे, और आँखों से घृणा बरसती थी।

रीगा में तीन दिन रहते समय मैंने यह चेष्टा की कि दस साल पहले जब मैं रह गया था, उस समय की स्मृतियों की प्रतिध्वनि प्राप्त करूँ। पर मेरा तजर्बा इस प्रकार प्रमाणित हुआ जैसे कोई मित्रों के घर पर नींद से जगे, और देखे कि सब मित्र चले गये हैं। उन में से किसी का पता भी नहीं मालूम है, और जिन कमरों की सुंदर सजधज से कभी चित्त प्रसन्न होता था, उन में अब उन वस्तुओं का कहीं पता नहीं है, और नये अजनबी अजीब लोग वहाँ पर बस गये हैं, बल्कि जला कर ताप रहे हैं।

युद्ध के कारण विनष्ट कई शहरों को मैं देख चुका हूँ, जैसे खार-कोफ, कीव, स्मोलेनस्क, हम्बुर्ग, बर्लिन, वारसा इत्यादि। पर इनमें से किसी में भी यहाँ तक कि जो बिल्कुल जमींदोज़ हो गये हैं, उनमें भी अंतिम तथा अपरिवर्तनीय विनाश का वह चित्र आँखों के सामने नहीं आता जैसा रीगा को देखने से आता है। याद रहे कि रीगा में जल के मोर्चे के पास पुराने शहर में ही पादार्थिक विनाश हुआ है, फिर भी यह हालत है। रीगा में इमारतें नष्ट होने का कोई गम नहीं, क्योंकि वे तो फिर से बन सकती हैं, पर यहाँ तो नगर की आत्मा, चरित्र, वातावरण और व्यक्तित्व नष्ट हो गया। पहले की वे सुन्दर शुभ-दर्शन अच्छे कपड़े वाली जनता नहीं रह गयी, आकर्षक रेस्टोरेंट, काफी-खाना, सुन्दर-सुन्दर छोटी दूकानें चली गयीं। युद्ध के पहले रीगा में इमा-रत के हर ब्लाक में एक फूलों की दूकान थी।

ये सब बातें गयीं, जिन के कारण रीगा बाल्टिक की राजधानी तथा

उत्तर की पेरिस, जैसा कि रूस के निवासी दावा करते थे, वे सब बातें चली गयीं।

जिस समय मेरी स्त्री बाहर गयीं, उस समय चारों तरफ से लोग उन के कपड़ों को देखने के लिये उन की तरफ घूरते थे। मास्को में इन कपड़ों को कोई नहीं देखता क्योंकि वहाँ पश्चिम के फेशन कुछ कुछ आ जाते हैं। तीन दिनों में हमने एक भी अच्छे कपड़ेवाले पुरुष या स्त्री को नहीं देखा। हम ने खाने लायक खाने की खोज में कई रेस्टोरेंटों की खाक छानी, असफल हो कर हम फिर यात्रियों के ही होटल से संतोष करने लगे।

युद्ध के पहले रीगा हवाई जहाज से स्टाकहालम से ५० मिनट का रास्ता था। अब कोई हवाई जहाज है ही नहीं। जहाँ तक रीगावासियों का सम्बन्ध है स्टाकहालम दूसरे ग्रह में होता तो कोई फर्क नहीं पड़ता। एक अन्तर्राष्ट्रीय चौराहा की जगह पर अब यह नगर मास्को की एक शाखा लाइन का एक अन्तिम स्टेशन है, जो ट्रेन से २० घंटे की दौड़ है।

स्थानीय निवासियों से हमें कहानी मालूम हुई। जब सोवियट शक्ति ने १९४० में बाल्टिक राज्यों को ले लिया, तो वे सोवियट सीमाओं के अन्दर एक अर्द्ध पूँजीवादी मरुभूमि के उद्यान के रूप में रहे। सोवियटीकरण केवल इतना ही हुआ कि कारखानों का राष्ट्रीयकरण हुआ। निजी दूकान और छोटे जमींदार बने रहे।

जिस समय सोवियट शक्ति १९४४ में लौट आयी, तो उस समय भी स्थानीय आर्थिक पद्धति को बदलने के लिये कोई जल्दी नहीं की गयी। १९४६ में भी निजी व्यापार जारी था। उस साल के अन्त में निजी दूकानों पर टैक्स चौगुना करके दो हज़ार से आठ हजार रूबल कर दिया गया। अधिकांश दूकानदार गिड़गिड़ाते रहे, पर वे अपना

टैक्स अदा कर पाये। १९४७ के अंत में फिर टैक्स चौगुना कर दिया गया। यह उस समय हुआ जब मुद्रा सुधार हो रहा था, और १० पुराने सिक्के एक में तबदील किये जा रहे थे। टैक्स नये सिक्कों में देना था। इस कदम के उठाये जाने से एक ही बार में रीगा का निजी व्यापार विलुप्त हो गया।

सरकार राजनैतिक रूप से भी इनकार दमन करने लगी।

"सट्टेबाजों के विरुद्ध संग्राम" के नाम पर जो गिरफ्तारियाँ की गयीं तथा निर्वासन दिये गये, उन से रीगा की देशी आबादी उस बिन्दु तक घट गयी, जो कुल आबादी को देशान्तरित करनेवाली हमारे सहयात्री एम. वी. डी. के कार्नेल कुछ अधिक दूर नहीं थी। जितने अनुमान हमारे सामने आये, उन के अनुसार रीगा की कुल आबादी प्राक्युद्ध के युग की तरह चार लाख में पहुँची थी। पर इन निवासियों में से ४/५ वे लोग थे जो रीगा के मकानों तथा वासस्थानों के विषय में आकर्षित हो कर पश्चिमी रूस तथा बिएलोरशिया से आ कर बस गये थे। इन्हीं आगन्तुकों से इस नगर को नया लहजा तथा रंग प्राप्त हुआ था।

(२)

रीगा के बीच में अब लैटविया की स्वतन्त्रता का स्मारक एक सुरुचिपूर्ण पतला-सा मीनार खड़ा है। "हमारी स्वतन्त्रता की स्मृति में" यह यहाँ के निवासी बड़े दुःख से कहते हैं, जिन में से सैकड़ों मीनार

के पाद देश में फूल चढ़ा जाते हैं, जहाँ लिखा है—"भूमि और स्वतन्त्रता के लिये"।

अपनी स्वतन्त्रता खोने के बाद अब लैटविया के किसान जमींदार अपनी भूमि भी खो रहे हैं। सारे बाल्टिक इलाके में खेती का सामूहिकीकरण सौ फ़ी सदी हो चुका है। साम्यवादी दल के प्रचारक यह कहते हैं कि यह प्रक्रिया स्वेच्छाकृत है। व्यवहार में किसान या जमींदार सामूहिक फ़ार्म के साथ या तो बन्दोबस्त कर ले या तो "कुलक" श्रेणी में आ जाय याने एक ऐसा किसान जिस के पास २५ बीघे से ज्यादा जमीन है, इस श्रेणी में आता है।

सामूहिकीकरण अभियान के ऐन पहले स्टोनिया के साम्यवादी दल की कांग्रेस के सामने भाषण देते हुए दल के मंत्री कारोटम्मा ने कहा —

"सामूहिक खेती की स्थापना की एक प्रधान आवश्यकता है कुलकों के विरुद्ध निर्दयतापूर्ण संग्राम, निर्णयात्मक रूप से उन की संख्या घटाना तथा उन का अन्त करना। प्रतिक्रान्तिकारी कुलक राष्ट्रीयतावादी उपादानों के विरुद्ध हमारा संग्राम तथा आक्रमण जितना ही दृढ़ तथा निर्दय होगा, उतना ही सामूहिक खेती के निर्माण में हमारा काम सफल होगा।"

रूसी मानदंडों से देखते हुए एस्टोनियाँ तथा लैटविया के सारे किसान कुलक श्रेणी में आ जाते हैं इस कारण सामूहिक फ़ार्मों को संगठित करने के पक्ष में बहुत जबरदस्त तर्क उत्पन्न होता है।

कुलकों का उच्छेद टैक्स अदा कर ही मुख्यतः किया जाता है। इस अस्त्र को सोवियटों ने निजी व्यापार को खतम करने में बहुत अच्छी तरह इस्तेमाल किया है। इस प्रकार टैक्स लेने और लगाने की शक्ति मानों विनाश करने की शक्ति है।

इस सम्बन्ध में डेढ़ साल पहले एस्टोनियों के लिये जो देहाती आयकर कानून बना, वह असली बात को खोल कर रख देता है। दूसरे बाल्टिक देशों में भी इसी प्रकार के कानून हैं। सामूहिक फ़ार्मों के सदस्यों को इस कानून के अनुसार आयकर में ५० फ़ी सदी छूट दी जाती है। कुलकों को पूरा टैक्स अदा करना पड़ता है।

कानून में ऐसा बताया गया है कि प्रत्येक मामले में जिस आय पर टैक्स लगाया जायगा उस का निर्णय उस व्यक्ति या परिवार की जमीन, ढोर आदि देख कर होगा। हाँ जमीन कितनी उपजाऊ है यह भी देखा जायगा। ढोरों से जो आय होती है वह ढोरों की गिनती पर निर्भर है। तेरह सौ रूबल बहुत अच्छी गाय के लिये, और बकरा या भेड़ के लिये सौ रूबल तथा प्रति मधुमक्खी के छत्ते के लिये बीस रूबल लिया जाता है।

सामूहिक खेती करने वाले इन मामलों में भी फायदे में रहते हैं, क्योंकि उन्हें भेड़, बकरे तथा सुअरों पर कोई टैक्स नहीं देना पड़ता। कानून में उन्हें नयी ज़मीन के लिये दो साल तक टैक्स देना नहीं पड़ता। इस प्रकार की ज़मीन में बिलकुल नयी ज़मीन के अलावा ऐसी ज़मीन भी आती है जिस में बहुत परिश्रम करने की आवश्यकता है जैसे जंगली पेड़ों की जड़ें निकालना और चौरस करने आदि का काम है। शेषोक्त प्रकार की भूमि तीन साल तक टैक्स से बरी रहती है।

२,५०० रूबल से कम आय पर कोई टैक्स नहीं लिया जाता। टैक्स का जो क्रमिक वृद्धिशील रेट है उस में ४,००० रूबल तक की आय पर एक फ़ी सदी और २०,००० से २१,००० की आय

पर १४ फ़ी सदी आय-कर लिया जाता है। इस से ऊपर सरकार हर एक रूबल में से ५० कोपेक यानी ५० फ़ी सदी ले लेती है।

जिन लोगों को कुलक बताया जाता है, वे दूसरों की तरह किसी टैक्स से बरी तो हैं ही नहीं, इस के विपरीत उन्हें नियमित टैक्सों के अलावा १,५०० रूबल तक की आय पर २० फ़ी सदी, और १५,००० से २०,००० रूबल आय पर ३० फ़ी सदी ऊपरी टैक्स और देना पड़ता है।

कानून के अनुसार ऐसे सभी लोग कुलक श्रेणी में आते हैं, जो जर्मन कब्ज़े के दिनों में या तब से स्थायी रूप से मज़दूर लगा कर काम कराते हैं। इस सम्बन्ध में एक अपवाद यह रक्खा गया है कि जिन लोगों के परिवार में आदमी कम हैं, वे फसल के मौके पर दिन में एक मज़दूर रख सकते हैं। कुलकों में ऐसे लोग भी आते हैं जो खेती के यंत्र भाड़े पर दे कर रुपये या अन्य किसी प्रकार से किराया लेते हैं, जो लोग दूसरे किसानों के श्रम को इस लिये शोषण करते हैं कि उन्होंने उस किसान को ढोर, बीज, खाद्य पदार्थ या खेती के यंत्र उधार दिये थे, जो लोग आटे की मिल, लकड़ी चीरने की मिल, ऊन धुनने के यंत्र को किराये पर या पट्टे पर दे कर आय करते हैं, जो जमीन को पट्टे पर देते हैं, या जो लोग इस लिये माल खरीदते हैं कि उन्हें फिर से बेचें।

ऊपर जो सूची बतायी गयी है, उस में जो भी व्यक्ति किसी तरह आ जाता है या आ सकता है, उसे कुलक करार दिया जाता है। और यह सूची इतनी बड़ी है कि इस में कोई भी किसान आ सकता है। स्थानीय देहाती सोवियट की सभा में कुलकों की सूची

बनाती है, और उस में ब्योरा लिखा जाता है कि अमुक व्यक्ति क्यों कुलक माना गया है।

यह सूची ज़िला सोवियट सभा को भेज दी जाती है, फिर वहाँ से वित्तीय अधिकारियों को हिदायत चली जाती है कि कानून के अनुसार अमुक अमुक व्यक्ति से टैक्स और ऊपरी टैक्स वसूल किया जाय। कुलक की सूची में आये हुए लोगों को जब टैक्स का निर्धारण मिल जाता है, तो उसे यह अधिकार होता है कि वह इस वर्गीकरण के विरुद्ध ज़िला सोवियट के सामने अपील करे, और ज़िला सोवियट के लिये यह लाज़िम है कि वह दो हफ्ते के अन्दर अपने फैसले पर पुनर्विचार करे। यदि ज़िला सोवियट का फैसला किसान के विरुद्ध जाय तो वह एस्टोनियों के मंत्रिमंडल के सामने अपनी अपील ले जा सकता है। मंत्रिमंडल का फैसला अन्तिम और अपरिवर्तनीय है अन्त में कानून में यह बताया गया है कि कुलकों से बाकी टैक्स की अदायगी के मामले में वे साधारण कानून लागू नहीं होते जिन के अनुसार ऐसी अदायगी के लिये कई प्रकार की सम्पत्ति ज़ब्ती से बरी है। दूसरे शब्दों में यदि कुलक टैक्स अदा न कर पावे तो उस की सम्पत्ति ज़ब्त हो सकती है और सच तो यह है कि उस के ऋणों तथा देयों का कोई अन्त नहीं है।

टैक्स सम्बन्धी इस कानून से ज्ञात हो जाता है कि छोटे स्वतन्त्र किसान मालिकों के इस परम्परागत इलाके में अभी-अभी सामूहिक खेती का कार्यक्रम शुरू हुआ, और समय से पहले ही वह पूरा हो गया। इस नक्शे को मानो पूरा करते हुए यह बता दिया जाय कि इस टैक्स में केवल राष्ट्र के प्रति व्यक्ति को जो कुछ नगद देना है, उसी का उल्लेख है, बाकी उसे जो कुछ देना पड़ता है, वह तो इस के अलावा

है। नकद के अलावा जो कुछ राष्ट्र को देना पड़ता है, उस में भी कुलकों को दूसरों से बहुत अधिक देना पड़ता है।

बाल्टिक राज्यों का बहुत तेजी से सामूहिकीकरण सोवियट की उस नीति का ही एक अंग है जिस के अनुसार हाल में अंतर्भुक्त किये हुये इलाकों का दृढ़ीकरण हो रहा है। इस के अलावा रूस के अन्य उपग्रह राष्ट्रों में जो कि खागो के सामूहिकीकरण की विराट योजना को शीघ्र ही कार्यान्वित किया जायगा, इस का मानो यह एक प्रयोग है।

---

(२)

बाल्टिक राज्य न केवल पूर्वी योरोप में काम में लाये जानेवाले सामूहिकीकरण का एक प्रयोग क्षेत्र है, बल्कि उपग्रह राष्ट्रों में विशेषकर उन देशों में जहाँ बहुत बड़ी रोमन कैथोलिक आबादी है, धर्म के प्रति साम्यवादियों की क्या नीति हो, इसका भी एक प्रयोग क्षेत्र है।

रूसी सम्राटों के स्वीकृत धर्म के रूप में आर्थोडक्स चर्च बहुत वर्षों तक केवल सम्राट की ही सेवा में संलग्न था। पर रूसी क्रान्ति के बाद इसने नये राष्ट्र के अधिकार को कभी अस्वीकार नहीं किया। पर महायुद्ध के बाद से चंद टुकड़ों के लिये इसने झुककर नीचतापूर्ण ढंग से सोवियट नीति का एक अंग बन कर काम करना स्वीकार किया है।

पर रोमन कैथोलिकवाद में बहुत अनुशासित सोपान के रूप में संगठित पादरी मंडली का होना, इसके मानने वालों की इसके प्रति

अविचलित भक्ति होना और सर्वोपरि पोप के प्रति यह वफादार होना, सोवियट के लिये एक गंभीरतर चुनौती साबित हुई।

जो पहला ठोस रूप से रोमन कैथोलिक देश सोवियट शासन में आया, वह था लिथुआनिया, और लेटविया में भी एक बहुत बड़ी रोमन कैथोलिक जनता की संस्था थी। सोवियट दृष्टिकोण से यहाँ पर इस समस्या के समाधान करने के लिये उपायों का आविष्कार तथा तथा उनके परीक्षण के लिये आदर्श सुविधाएँ थीं। बात यह है कि सोवियट भूमि के अविच्छेद्य भागों के रूप में यह इलाके बाहरी दुनिया से एकदम अलग किये जा सकते थे, पर कम से कम प्रारम्भ में हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड के साथ ऐसा नहीं किया जा सकता था।

इसलिये सोवियट शासन के लिये यह संभव हुआ कि विदेशी दर्शकों को यहाँ से अलग रक्खा जाय तथा अधिकार प्राप्त लोगों के अतिरिक्त किसी को इन इलाकों में आने न दिया जाय। इसीलिये क्रेमलिन अपने प्रयोगों को यहाँ चालू रख सकता था, प्रयोग को जिस प्रकार चाहे मोड़ दे सकता था, और इसमें उसे बाहरी प्रकाशन का कोई भय नहीं था।

सोवियट सेना ज्योंही इस इलाके में आ गई, त्योंही पहला कदम यह उठाया गया कि बाल्टिक इलाके के पादरियों का रोम से सम्बन्ध काट दिया गया। यह कोई कठिन बात नहीं थी क्योंकि आने जाने की अनुमति पर सरकार का सम्पूर्ण नियंत्रण था।

इसके बाद उच्च पादरियों के विरुद्ध ज़ोरदार तरीके से पद्धतिगत रूप में राष्ट्र-द्रोह के तरह तरह के मुकदमें चलाये गये, जिनके फलस्वरूप सोवियट विरोधी कार्यों के लिये कुछ प्रिलेटों को सज़ायें दी गईं।

१९४७ में आने हंगरी में कार्डिनल मिंडजेन्टी की गिरफ्तारी के बहुत पहले लिथुयानिया की राजधानी विल्ना से यह खबर आई कि रोमन कैथोलिक पादरियों पर यह अभियोग लगाया गया है कि वे सोवियट राष्ट्र के विरुद्ध प्रतिक्रान्तिकारी गुप्त षड्यंत्रकारियों से मिले हुये हैं। यह कहा गया कि लिथुयानिया की कैथोलिक प्रतिक्रिया के इतिहास में यह एक बहुत ही लज्जाजनक पृष्ठ है।

इस रिपोर्ट में ब्यौरे में यह कहा गया कि टेलसियायी के बिशप बोरिसिआवीसियस जनता के शत्रु के रूप में दंडित हुये हैं। उनके सम्बन्ध में यह भी कहा गया कि वे आतंकवादियों (जो कोई भी उनके शासन का विरोध करता है उसे रूसी साम्यवादी आतंकवादी बता देते हैं) का साथ दे रहे थे। उन्हें इस कारण दंडित किया गया कि उन्होंने एक आतंकवादी नेता को गिरजे में नौकर करके आश्रय दे रक्खा था। दूसरे अपराधियों में मेमेल के पास स्थित क्रेटिंगा के फ्रांसिस्कन मठ के दो मठधारी आतंकवादी दल के सदस्य होने तथा आतंकवादियों को अस्त्र-शस्त्र खरीदने के लिये दो लाख रूबल देने के लिये दंडित हुये थे।

रिपोर्ट में यह कहा गया कि मठ की दीवारों के अन्दर आतंकवादियों का प्रधान केन्द्र था। और मठ के मन्दिर में सोवियट विरोधी पर्चे छपते थे।

काइसेडोरिस के बिशप को आतंकवादी गुट के सदस्य होने, सोवियट विरोधी साहित्य बाँटने, गिरजों के अन्दर सोवियट विरोधी खुतबा पढ़ने, अपने घर में आतंकवादियों को आश्रय देने तथा आतंकवादी रंगरूटों को भर्ती कराते समय प्रतिज्ञा देने के लिये दंडित किया गया। रिपोर्ट में यह भी कहा गया कि ये पादरी आतंकवादी "कई ईमानदार

मेहनतकश, गरीब किसान, नये बसने वाले, सोवियट बुद्धिजीवियों को अक्सर उनके परिवारों के साथ हत्या करने के लिये जिम्मेदार हैं ।"

पादरियों के विरुद्ध जो कुछ कहा गया है उससे एक बात यह तो मालूम होती है कि लिथुयानिया में गुप्त षड्यंत्र बहुत विस्तृत है। स्मरण रहे कि सोवियट पत्रों में इसका कभी जिक्र नहीं आता ।

आतंकवाद के अतिरिक्त रिपोर्ट में "प्रतिक्रियावादी पादरियों" के विरुद्ध यह अभियोग लगाया गया है कि वे जनता को विशेषकर नवयुवकों को अपने गलत सिद्धान्तों की शिक्षा देते हैं। इसमें यह कहा गया है कि रोमन कैथोलिक युवक संघों की पुनःस्थापना करने के लिये गिरजों में सहगान दलों की स्थापना की गई है। यह बताया गया है कि ऊकमेर्गे नामक शहर में सहगान दलों के सदस्यों ने सोवियट विरोधी पर्चे बाँटे, और आतंकवादियों की तरफ से स्थानीय साम्यवादी दल पर खुफियों का काम किया। इस रिपोर्ट के अनुसार विलना में कुछ पादरियों ने नौजवानों को साम्यवादी युवक संघ में शामिल होने से रोका, तथा घूम-घूम कर अभिभावकों से यह कहा कि वे अपने बच्चों को साम्यवादी युवक संघ से इस्तीफा देने के लिये मजबूर करें ।

इन सारी सोवियट विरोधी कार्यावली के लिये रोमन कैथोलिक पादरी समाज के प्रधानों की नैतिक जिम्मेदारी बतायी गयी है। रिपोर्ट का कहना है कि इन लोगों ने ऐसे कार्यों की निन्दा की यह तो सभी क्षेत्रों में साबित है। इस से यह अनुमान निकाला गया है कि "लिथुयानिया में कैथोलिक गिरजे के प्रधान ऐसी कार्यावली से सहानुभूति रखते हैं, और ऐसा करने में वे पोप का ही अनुकरण कर रहे हैं, जो फैसिस्ट गुप्त षड्यंत्रों को प्रोत्साहन देते हैं।"

इस प्रकार छिट फुट सूचनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि हंगरी तथा चेकोस्लोवाकिया में, और इस के बाद पोलैंड में रोमन कैथोलिक गिरजे के विरुद्ध किस प्रकार से वही नीति चलायी जा रही होगी जो लिथुयानिया में पहले पहल काम में लायी गयी थी। इस के अतिरिक्त इस बात की भी पद्धतिगत रूप से चेष्टा हुयी कि उच्च पादरियों को जनता की आँखों में गिरा दिया जाय, साथ ही साथ इस बात की भी कोशिश की गयी कि निम्न पदारियों को अपने साथ मिला लिया जाय। इन के सम्बन्ध में रिपोर्ट में यह कहा गया कि ये लोग सब तरह अपराधों से बरी हैं, और उच्च पादरियों की प्रतिक्रियावादी कार्यावली से इन्हें बड़ी झुँझलाहट है।

लिथुयानिया में इस चाल का उद्देश्य यह था कि कैथोलिकों में से एक हिस्सा राष्ट्रीय कैथोलिक के रूप में साम्यवादी पक्ष में आ कर मिल जाय। प्रमाणों के अभाव में यह कहना कठिन है कि यह नीति कहाँ तक सफल रही। पर इतना तो स्पष्ट है कि रिपोर्ट में बतायी हुयी अधिक संख्यक गिरफ्तारियों के बाद पादरियों में से एक काफ़ी बड़ा हिस्सा उन लोगों का हो गया जो किसी न किसी हद तक साम्यवादी शासन के साथ सहयोग करने लगे थे।

मास्को में एकमात्र चालू कैथोलिक चर्च सेंट लूई का फ्रांसीसी चर्च है। गत ग्रीष्म ऋतु में फादर टामस नामक फ्रेंच पादरी से यह कहा गया कि वे अपनी चाभियाँ दे दें। उस के बाद से उन्हें इस बात का अधिकार दिया गया कि राजनयिकों के लिये सप्ताह में एक बार धार्मिक व्याख्यान दें, पर उन्हें उस व्याख्यान के समय के अतिरिक्त और किसी समय चर्च में घुसने का अधिकार नहीं था।

इस की सरकारी व्यवस्था यों की गयी कि सोवियट नागरिकों में से कैथोलिकों ने पूजास्थान प्राप्त करने की दरख्वास्त दी थी, और सोवियट अधिकारी ने इस बात को मानकर कि सोवियट नीति में पूजा की स्वतंत्रता है उन्हें एक ऐसा स्थान दे कर उन के दावे को स्वीकार कर लिया है। यथा-समय लिथुयानिया से एक पादरी आया जिस ने अपना परिचय फादर ऐडमोविच करके दिया। जब फादर टामस ने उन से कहा कि अपने बिशप का अनुमति-पत्र दिखलावें, तो उन्होंने कहा कि वे ऐसे कागजात दे चुके हैं, और इस समय वे कागजात सोवियट सरकार के धार्मिक विभाग के पास हैं।

विदेशी दूत तथा पत्रकार मंडल

मास्को में रहते समय राजदूतों पर बराबर बहुत कड़ा पहरा रहता है। "जिन मकानों में उन्हें रक्खा जाता है, उन पर पहरेदार तैनात रहते हैं और जब ये किसी भी कार्य से बाहर जाते हैं तो उन के साथ-साथ विशेष अंगरक्षक रहते हैं। यदि कोई भी आ कर राजदूत से निजी मामलों में भी बातचीत करना चाहे, तो उस पर बहुत खतरनाक संदेह हो जाता है।"

ऊपर उद्धृत अंश महान रूसी इतिहासकार क्ल्यूचेवस्की के लेखों में से लिया गया है। ये उन्नीसवीं सदी में थे, फिर भी इन के ये वचन मास्को में इस समय मौजूद राजनयिकों पर बिल्कुल लागू होते हैं।

कई बार इस प्रकार के उद्धरण यह दिखाने के लिए काम में लाये जाते हैं, कि रूस में सोवियट शासन के पहले से ही विदेशियों पर संदेह किया जाता था।

पर क्ल्यूचेवस्की क्रान्ति के पहले के युग में राजनयिकों के साथ जो व्यवहार होता था, उस का जिक्र नहीं कर रहे हैं, और न वे अपने लिखने के समय याने उन्नीसवीं सदी की ही बात लिख रहे हैं, बल्कि वे यह लिख रहे हैं कि "ईवान भयानक" के जमाने में विदेशी दूतों के साथ जो बर्बर (यह उन्हीं का शब्द है) व्यवहार होता था उसी का वर्णन किया है।

कुछ पैरा चल कर वे संतोष के साथ यह लिखते हैं कि सत्रहवीं सदी के मध्य तक परिस्थितियाँ बहुत कुछ सुधरीं, और तब तक "राजदूत तथा उन के साथ के लोगों को यह अधिकार हो गया कि पहली बार पेश किये जाने के बाद वे सारे शहर में बिना किसी अंगरक्षक आदि के स्वतन्त्रतापूर्वक घूम सकते थे।"

पर इस समय मास्को स्थित अमेरिकन राजदूत के लिये यह असंगत है कि वह अपने बहुसंख्यक एम. वी. डी. पहरेदारों से बच कर सड़क के उस पार भी चला जाय।

उन्हें निजी काम पर किसी सोवियट नागरिक से मिलने या बातचीत करने का कोई मौका नहीं मिलता। हाँ उन्हें वैदेशिक मंत्रालय तथा कदाचित होने वाले सरकारी भोज आदि के अवसर पर सोवियट नागरिकों से शिष्टाचार रूप सामने मिलने का मौका मिलता है।

अमेरिका में जो सोवियट राजदूत तथा अन्य सोवियट सरकारी कर्मचारी रहते हैं, उन्हें अमेरिकन भूमि पर अमेरिका की नीति पर आलोचना करने तथा बड़ी सभाओं में सोवियट नीति के समर्थन करने का मौका दिया जाता है क्योंकि अमेरिका में लोगों को स्वतन्त्र रूप से बोलने का अधिकार है। पर मास्को स्थित किसी भी अमेरिकन राजदूत को यह मौका नहीं दिया गया कि वह किसी भी तरीके से अपने देश के दृष्टिकोण को सोवियट जनता के सामने रक्खे।

दूतावास का कोई भी व्यक्ति यदि वह मंत्री या काउन्सलर के पद के नीचे है, तो उस का नाम प्रोटोकोल डिवीज़न की निमन्त्रणवाली

सूची में नहीं रहता, इस कारण ऐसे लोग तो रूसियों से और भी काम मिल सकते हैं ।

वे थियेटर, नृत्य या कान्सर्ट में जा सकते हैं । वे कुछ निर्दिष्ट स्थानों में भी जा सकते हैं । पर वे जहाँ भी जायेंगे जनता तथा चारों तरफ के जीवन से एक अदृश्य पर दुर्गम दीवार से काट दिये जाते हैं ।

इस प्रकार सामाजिक बहिष्कार के कारण जो निराशा होती है, उस के साथ-साथ यह भी बात है कि अन्य स्थानों पर दूतावासों में जो साधारण राजनयिक कार्य होते रहते हैं, मास्को में उन का करीब करीब अभाव है ।

इस सम्बन्ध में दक्षिण अमेरिका के एक बृहत्तर प्रजातन्त्र के राजदूत की बात उदाहरण के रूप में दी जाती है । इन महाशय को प्रतिमास २,५०० डालर के अतिरिक्त खर्चे के लिये और भी भत्ते मिलते थे । रूस में एक साल जब वे रह चुके तो एक यात्रा अनुमति पत्र देने के सिलसिले में केवल दस डालर की आय हुई ।

जो पढ़ने लिखने वाले राजनयिक हैं, वे रूसी भाषा को को सीखने की ओर ध्यान देते हैं, पर उन्हें सिर्फ नौकरों के साथ बातचीत करने के अतिरिक्त रूसी भाषा बोलने के अभ्यास का और कोई मौका नहीं मिलता ।

उन्हें रूसी शिक्षक तथा नौकर "ब्यूरोबिन" नामक एक काल्पनिक संस्था से पहुँचाये जाते हैं । यह संस्था विदेशी मंत्रालय के अन्तर्भुक्त है, और राजनयिकगण के द्राविक तथा सांस्कृतिक आवश्यताओं की पूर्ति करना इस का काम है ।

यदि किसी राजनयिक को रसोइया, आपेरा के टिकट चाहिये, या यदि उसे अपनी छत मरम्मत करवानी है, या ईंधन के लिये लकड़ी

चाहिए, या नाच के लिये आरकेस्ट्रा चाहिये, या स्टाकहालम के लिये हवाई जहाज़ पर आसन चाहिये, या किराये पर घर चाहिये, तो उसे लिखित रूप में ब्यूरोबिन से मांग करनी पड़ती है। (जब एन्टीयक के ग्रीक आर्थोडक्स पेटियार्क ने मास्को में इसलिये एक प्रतिनिधि भेजा कि मास्को के पेटियार्क के साथ उन का सम्बन्ध स्थापित हो तो ब्यूरोबिन ने इन्हें एक गिरजा भी दे दिया)।

एक समय था जब कि पश्चिम के साथ सम्बन्ध बहुत नष्ट हो गये थे, और जब एक विशेष ब्यूरोबिन कला विभाग की तरफ से चुने हुये राजनयिक लोगों के लिये बैले नर्तकी तथा अन्य लोग विशेष रूप से पहुँचाये जाते थे। इस विभाग के प्रधान अलेक्ज़ेंड्रोक नामक एलसा-मेक्स्वेल का एक पुरुष संस्करण था जिसे अच्छी चीज़ें पसन्द थीं और जो एक बहुत सुन्दर मकान में रहता था, जहाँ राजनयिकों की बहुत उदारता के साथ दावत तथा मनोरंजन किया जाता था। दो साल पहले यह विभाग समाप्त कर दिया गया, साथ ही साथ अलेक्ज़ेंड्रोक, उस की स्त्री तथा अन्य सहकारी भी समाप्त कर दिये गये, यह शायद इसलिये कि वे कर्तव्य की पुकार के बाहर इन पार्टियों में रस लेते थे।

अलेक्ज़ेंड्रोक के चले जाने के बाद राजनयिकगण एक दूसरे को दावत आदि देने के अतिरिक्त और किसी प्रकार से मनोरंजन नहीं कर सकते, जिसे वे खूब करते हैं, पर ऐसी पार्टियों में प्रति बार वे ही चेहरे दिखाई पड़ते हैं। हाँ इसका परिणाम यह होता है कि मास्को के राज-नयिकगण एक दूसरे को खूब जान जाते हैं।

मास्को की विदेशी बस्ती में अन्तर्राष्ट्रीय बातें छोटे पैमाने में बरा-बर प्रतिफलित होती रहती है। प्रत्येक राष्ट्र-द्रोह के मुकदमे के साथ साथ चेक, पोल, रूमानियन, हंगेरियन तथा बुल्गेरियन पश्चिमी देशों

के लोगों से अलग होकर आपस में हेल मेल बढ़ाने लगते हैं। मित्र तथा निष्पक्ष स्वीडगण यह चेष्टा करते हैं कि दोनों गुटों से दोस्ती रक्खें। कामिनफार्म के झगड़े के बाद से युगोस्लावगण करीब करीब किसी से नहीं मिलते।

पिछलग्गुये राष्ट्रों के राष्ट्रीय वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में होने वाली दावतों में अमेरिकन चौथी जुलाई की दावत या ब्रिटिश राजा के जन्म दिवस की दावत से कहीं अधिक रूसी अतिथि आते हैं। इसके अतिरिक्त पिछलग्गुये राजनयिकों के साथ उनके पश्चिमी साथियों से अधिक अच्छा व्यवहार नहीं होता।

एक पिछलग्गुये राजदूत ने कार्पेथास के स्वास्थ्य निवास में एक आसन के लिये क्रेमलिन को लिखा, पर कोई नतीजा नहीं हुआ। एक अन्य पिछलग्गुये मिशन के प्रथम सचिव ने मुझ से कड़ुवेपन के साथ यह शिकायत की कि मास्को में दो साल रहते हुये हो गये, पर उन्हें किसी रूसी घर में जाने का मौका नहीं मिला। एक अन्य पिछलग्गुये उपदूत ने मुझ से इस बात पर ईर्ष्या प्रकट की कि मैं निजी मकान में रहता हूँ इस कारण मेरे रूसी मित्र हैं, पर वे होटल में रहते हैं इस लिये वहाँ कोई रूसी उनसे मिल कर अपने को आँखों का शिकार बनाना नहीं चाहता। न केवल यही बल्कि साम्यवादी दल के एक महत्त्वपूर्ण सदस्य ने मुझ से यह शिकायत की कि उन पर बराबर आँख पड़-ताल की जाती है और होटल में उनके कमरे के डेस्क की नियमित रूप से सप्ताह में दो बार तलाशी ली जाती है।

मुझे भी अपने होटल के कमरे के दफ्तरवाले डेस्क के सम्बन्ध में यही बात मालूम हुई, पर मैंने यह समझा कि अमेरिकन संवाददाता

होने के कारण मुझ पर विशेष देख-रेख है, पर मित्रतापूर्ण देशों के राज-नयिक इस प्रकार की बातों से परी होंगे ।

आम तरह से यह जो सोवियट शिकायत है कि पश्चिमी राजनयिक-गण पहले से ही शत्रुतापूर्ण भावना लेकर मास्को में आते हैं तथा वे हर बात में नुक्स निकालने में तैयार रहते हैं, इसमें कुछ सचाई है । पर मास्को राजनयिक बस्ती के सब से तिक्त मन वाले भौतिभंग भूत लोग वे हैं जो सोवियट संघ के लिये सहानुभूति तथा इस देश को और इसके देशवासियों को जानने की मित्रतापूर्ण लालसा लेकर आये थे ।

इस परिवर्तन के लिये सोवियट सरकार स्वयं ही जिम्मेदार है । यदि सोवियट की यह सुचिंतित इच्छा है कि जो राजनयिक मास्को में आते हैं, वे उनसे नाराज़ हो जाय तथा उनसे घृणा करने लगें, तो उनकी यही नीति सब से अच्छी है ।

---

(३)

मास्को में आंग्ल अमेरिकन पत्रकार मंडल के पत्रकारों की संख्या जहाँ युद्ध के जमाने में दो दर्जन थी वहाँ अब केवल पाँच है और सो भी सब अमेरिकन हैं । इस प्रकार संख्या ह्रास के कारण ये हैं—(१) रूस में प्रवेश-पत्र प्राप्त करने में बहुत भारी कठिनाई (२) रहने तथा काम करने में अकल्पनीय रूप से अधिक खर्च (३) सेंसर विभाग की तरफ से खबरों का अधिकाधिक दमन ।

अंतिम ब्रिटिश संवाददाता, रायटर्स प्रतिनिधि को अभी हाल में अवमूल्यन के बाद देश में वापस बुला लिया गया। बात यह है कि बढ़े हुये खर्च के कारण प्रधान कार्यालय ने मास्को शाखा बंद कर देना तय कर लिया। खबर भी कम मिलती थी। एक भूतपूर्व ब्रिटिश संवाददाता मास्को में रह गया है, और वह अब सोवियट का प्रचार एजेंट है।

अमेरिकन संवाददाताओं में से दो एसोसियेटेड प्रेस, एक यूनाइटेड प्रेस तथा एक न्यूयार्क टाइम्स के प्रतिनिधि हैं। पंचम व्यक्ति एक ब्रिटिश समाचार एजेन्सी के आंशिक एजेंट के रूप में काम करता है।

पाँच में से चार मास्को में व्यक्तिगत बन्धनों के कारण रहते हैं क्योंकि सोवियट की यह नीति है कि विदेशियों की स्त्रियों तथा बच्चों को बाहर जाने की अनुमति न दी जाय। अब तो सोवियट नागरिक विदेशियों से शादी ही नहीं कर सकते। इस के कारण सोवियट के हाथ में एक ताकत भी आ जाती है क्योंकि कुछ महीनों के बाद देश में रहने की फिर से अनुमति लेनी पड़ती है, और छोटे से छोटे बहाने पर किसी को भी देश से निकाल दिया जा सकता है।

अभी हाल तक संवाददाताओं को यह अधिकार था कि यदि वे बाहर चले जाँय तो दो महीने के अंदर उन्हें फिर से आने का अनुमति-पत्र मिल जाता था। १९४९ की जनवरी से यह नियम रद्द कर दिया गया। इस के बाद से संवाददाताओं के लिये अब यह नियम हो गया कि यदि वे देश के बाहर गये तो उन्हें फिर आने के लिये अपने यहाँ के सोवियट दूतावास के जरिये से दरख्वास्त भेजनी पड़ेगी। इस सम्बन्ध में प्रथम और एकमात्र परीक्षण वाला मामला न्यूयार्क हेरल्ड ट्रिब्यून के संवाददाताओं के साथ सम्बद्ध था। यह व्यक्ति जून में इस

इरादे से गया कि कुछ सप्ताह बाहर रहेगा। पर चार महीनों तक फिर से आने के अनुमति पत्र को प्राप्त करने में असमर्थ रह कर उसने रूस पहुँचने की आशा छोड़ दी।

उन को जो तजुर्बा हुआ, उस से यह बात मालूम होती है कि क्यों अब बाकी संवाददाता छुट्टी मनाने या चीज़ें ख़रीदने के लिये स्टाकहालम आदि स्थानों की यात्रा नहीं करते। यहाँ पर यह बता दिया जाय कि राजनयिकों को देश में भ्रमण करने की जो सीमित अनुमति है, संवाददाताओं के लिये वह भी नहीं है।

मास्को स्थित विदेशी संवाददाताओं पर क्या गुज़रती है, विशेषकर सेंसर विभाग से किस तरह गुजरती है, इसे दूसरों ने बहुत ब्योरे के साथ लिखा है। इस कारण मैं केवल इतना ही बताऊँगा कि हमें सोवियट संगठनों, अफ़सरों तथा व्यक्तियों या किसी अन्य संवाद के साधन उपलब्ध नहीं थे। हाँ केवल सोवियट पत्र-पत्रिका और मास्को रेडियो हमारे लिये खुले हुये थे। अक्सर तो ऐसा होता था कि हम "प्रावदा" पत्र में प्रकाशित तथा मास्को रेडियो से प्रसारित खबरों को भी इस्तेमाल नहीं कर सकते थे। गत वर्ष राजधानी के बाहर के अखबारों से लिये हुये संवाद भी रोक दिये जाते थे।

मनमाने सेंसर के विरुद्ध किसी प्रकार की अपील नहीं थी। जब तक तार चला नहीं जाता था, हमें यह भी मालूम नहीं होता था कि जो तार हम भेज रहे हैं उन में से कितना निकाल दिया गया। केवल प्रतिदिन के तथ्यमूलक संवादों को ही काटा नहीं जाता था, बल्कि चालाकी से किसी अंश को निकाल कर या एक नया जोड़ कर सारा अर्थ ही बदल दिया जाता था। यदि संवाददाता सोवियट मत उद्धृत करता था, तो चालाकी से उद्धरण के चिह्न उड़ा दिये जाते थे जिस से एक तो

यह पता नहीं लगता कि कौन ऐसा कह रहा है, और दूसरा यह भ्रम उत्पन्न होता था कि ये सारी बातें संवाददाता के ही विचार को प्रतिफलित करती हैं।

मास्को में संवाददाताओं की अवस्था राजनयिकों से कहीं गिरी हुई है क्योंकि राजनयिकों को कई प्रकार से राजनयिक होने के कारण सुरक्षा प्राप्त है। सोवियट राष्ट्र में गुप्त रहस्य सम्बन्धी अस्पष्ट तथा व्यापक कानून के अनुसार किसी को भी खुफिया कर के अभियुक्त तथा दंडित किया जा सकता है।

इतने कम उत्तरदायित्व होने के कारण सोवियट सरकार जब भी कोई प्रतिशोधमूलक षड्यंत्र आदि प्रमाणित करना चाहता है तो संवाददाताओं पर ही उस की नज़र जाती है। १६४८ की बसन्त ऋतु में राबर्ट मैजीडाफ तथा गत फरवरी में आनाल्हुईस्टांग के निकाले जाने से यह बात स्पष्ट होती है।

कुमारी स्ट्रांग को साम्यवादी लक्ष्य की आजीवन सेवा के बाद भी जिस प्रकार निकाल दिया गया, उस से निश्चित रूप से बहुत से लोग चक्कर में पड़ गये हैं। पर वास्तविकता यह है कि इस की एक बुद्धि-संगत व्याख्या की जा सकती है। स्वयं कुमारी स्ट्रांग ने अपने जाल में यह बहाना दिया क्योंकि बाद को चल कर उन्होंने लिखा कि उन के अल्पकालीन जेलवास के समय एम. वी. डी. की तरफ से नियुक्त उन का निर्यातक रूस के बाहर चलने वाले लोकतान्त्रिक आन्दोलन में कुछ भी दिलचस्पी नहीं रखता था, और इस की उसे जरा भी परवा नहीं थी कि हेनरी वालेस के समर्थकों में इस गिरफ्तारी के क्या असर हो सकते हैं। सोवियट संघ के प्रति सहानुभूति रखने वालों की भावुकता के सम्बन्ध में एम. वी. डी. को कोई परवाह नहीं है क्यों कि वह तो

मनुष्य जाति को दो हिस्सों में विभक्त करता है, एक तो शत्रु और दूसरे वे लोग जो उस के द्वारा बेवकूफ बनाये जाते हैं।

कुमारी स्ट्रांग तीस साल तक सोवियट प्रेमिक कोल्हू का बैल बनी रही, यह तथ्य उन के कुछ भी काम नहीं आया क्योंकि वह इधर कुछ असंतुष्ट हो रही थी। एक साल से कुमारी स्ट्रांग मास्को के पत्रकार विभाग के नौकरशाहों की यह शिकायत करती हुई फिर रही थी कि वे उन्हें संवाद प्राप्त करने से रोकते हैं तथा उन्हों ने इस बीच में जो योजना बनाई थी कि स्थलमार्ग से मंचूरिया होते हुए साम्यवादी चीन में जायगी, उस के मार्ग में बाधक हो रहे थे।

एक बहुत साहसी स्त्री होने के कारण रूसी जिस प्रकार ना कह-ने के बदले प्रश्न को टालते हैं, उस से वह निराश नहीं हुई। रूसियों से असफल रहने के बाद वह होटल के कमरों में जाकर रूस में आये हुए चीनी साम्यवादी तथा उत्तर कोरिया के नेताओं से मिली। ऐसे लोग सारी परिस्थिति को बिना जाने हुए कुमारी स्ट्रांग की माओ त्से-तुंग प्रीति तथा क्रेमलिन के नेताओं के साथ घनिष्ठता जान कर उन्हें इस काम में सहायता देने का वायदा करते रहे। जब सोवियट अधिकारियों को यह बात मालूम हुई तो वे बहुत नाराज़ हुए। इस में वह जो समय-समय पर कुछ ऐसे मंतव्य करती थी जो बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं थे, जैसे टीटो के सम्बन्ध में अनुकूल बातें, उन तक पहुँचती रहीं।

इस से फैसला हो गया। अधिकारियों ने यह तय कर लिया कि किसी भी हालत में कुमारी स्ट्रांग को स्थल, जल अथवा वायु मार्ग से साम्यवादी चीन में पहुँचने नहीं देना है। बात यह है उन लोगों ने तर्क किया होगा कि अपनी ख्याति तथा सम्बन्धों के कारण

इस समय वह जिस मानसिक स्थिति में है, उस में वह चीनी लोगों में शायद तरह तरह के बुद्धिभ्रंश उत्पन्न करे। क्रेमलिन ने निश्चित रूप से यह सोचा कि एक ही तरीका है उस से बचने का, वह यह कि उस की ख्याति को खुफिया होने का अभियोग लगा कर नष्ट कर दिया जाय, और उन्हें अभियोग लगा कर रूस से निकाल दिया गया।

उन्हों ने यह तर्क किया कि इस प्रकार का दोष लग जाने के कारण वह चीन या अन्य किसी पिछलगुये राष्ट्र में प्रवेश करने की अनुमति प्राप्त न कर सकेगी।

कुमारी स्ट्रांग वाले मामले से भी ब्रिटिश सूचना मंत्रालय द्वारा प्रकाशित रूसी पत्र "ब्रिटिश-मित्र" के सम्पादक आर्चिबाल्ड जानस्टोन का मामला है। गत वर्ष मिस्टर जानस्टोन मई के उज्ज्वल प्रातःकाल में अपने दफ्तर से लंच के समय निकले, और तब से उन का पता नहीं लगा। दो दिन बाद "प्रावदा" में एक पूरे पृष्ठ का पत्र छपा जिस में साम्यवादी दल की भाषा में ब्रिटिश नीति तथा ब्रिटिश दूतावास की तीव्र निन्दा की गयी थी। इस में श्री जानस्टोन का दस्तखत था।

ऐसा ज्ञात होता है कि वे इस प्रकार जो बदल गये वह पहले से सोचा समझा हुआ नहीं था क्योंकि उन के घर पर उन के सारे कपड़े, उन का पास पोर्ट तथा नकद में एक बहुत बड़ी रकम छूटी थी। उन्हों ने कभी उन चीजों की मांग भी नहीं की। कई सप्ताह बाद ब्यूरोविन ने ब्रिटिश दूतावास को यह कहा कि वह श्री जानस्टोन की सारी वैयक्तिक सम्पत्ति को उस के हवाले कर दे। ऐसा कहा जाता है उन्हीं की हिदायत पर हुआ। दूतावास ने ब्यूरोविन को कपड़े तो

दे दिये पर यह कहा कि पासपोर्ट तथा रुपये श्री आनस्टोन को ही दिये जा सकते हैं।

वे कभी इन चीज़ों को लेने नहीं आये, यद्यपि एक मौके पर उन्हें एक पत्रकार सम्मेलन में पेश किया गया था, जहाँ उन्हों ने यांत्रिक तथा अजीब बैठी हुई आवाज़ में एक तैयार वक्तव्य पढ़कर सुनाया जो "प्रावदा" पत्र की ही तरह था, व्यक्तिगत प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया, और ज्योंही सम्मेलन समाप्त हुआ त्योंही हटा लिये गये।

क्या सैनिक रूप से संगठित मज़दूर-गुलाम विद्रोह करेंगे ?

सोवियट संघ एक चालू संस्था है। यहाँ जो समाजवादी पद्धति चालू है, उसे कोई यह कह कर उड़ा नहीं सकता कि वह केवल दिमाग़ी ख्याल अथवा स्वाप्निक है। युद्ध की अग्नि परीक्षा को पार कर नया समाज प्रयोग के सोपान से घर तथा बाहर सर्वत्र उन्नति कर चुका है, और बाहर इसका विस्तार हुआ है। इन तथ्यों की स्वीकृति पर ही कोई वस्तुवादी तरीके से समस्या को समझ सकता है।

सोवियट पद्धति इस कारण नष्ट होने नहीं जा रही है कि वह अव्यावहारिक है। वैयक्तिक आर्थिक व्यवसाय बुद्धि के दमन के क्षतिकर परिणामों के सम्बन्ध में अक्सर जो बातें कही जाती हैं, उन में कुछ सत्य का अंश है, पर इसका बहुत कुछ प्रतिशोध नये उद्योजकों की तलाश करने के प्रयास के कारण हो चुका है। इसके अलावा यह भी समझना चाहिए कि सोवियट कार्य पद्धति में जो निम्नतर कार्य शक्ति है, वह बहुत कुछ इस बात से नष्ट हो जाती है कि सोवियट में जो पूर्ण रूप से संगठित आर्थिक योजनायें चालू हैं, उनसे प्रतियोगितामूलक आर्थिक पद्धति में मौजूद कई क्षय तथा एक ही बात को दोबारा करने में जो कर्मशक्ति नष्ट होती है, वे बच जाते हैं।

यह विरोधाभास की पश्चिमी मानदण्डों से सोवियट पद्धति की जो अत्यन्त आपत्तिजनक विशेषताएँ हैं जैसे—वैयक्तिक स्वतन्त्रता का

अभाव, श्रम का बाध्यतामूलक प्रयोग, बौद्धिक बल प्रयोग आदि वाले व्यवहार में सामर्थ्य सूचक हो गई हैं। रहा यह कि पूँजीवादी आर्थिक पद्धति की तुलना में जो नैतिक अवनति होती है, उसकी बात छोड़ दी जाय। यह समझ लेना चाहिये कि मुक्त जगत के सामने यह एक चुनौती के रूप में है।

कई व्यावहारिक सुविधाएँ भी हैं। सोवियट पद्धति में पूँजीवाद की कई आर्थिक असंगतियाँ जैसे—बेकारी तथा अति उत्पादन से उत्पन्न आर्थिक संकट नहीं रह जाते। इसका कारण यह है कि सम्पूर्ण रूप से केन्द्रीभूत नियंत्रण रहता है।

सोवियट पद्धति में एक उच्च तरीके से संगठित, सोद्देश्य संस्था अथवा आल, सारे खाद्यान्न, औद्योगिक यंत्र, सारी चीज़ों तथा श्रम शक्ति को और विभाजन पर सम्पूर्ण अधिकार तथा नियंत्रण रखती है।

एक ऐसे युग में जब कि यंत्र वैज्ञानिक प्रणालियों के कारण क्रमिक रूप से बदले हुये पैमाने पर एकीभूत परिचालना की आवश्यकता है, उस हालत में सोवियट को बड़ी सुविधा प्राप्त होती है। यह विशेष कर इस समय मनुष्य जाति के लिये अधिक उपयोगी है क्योंकि इस समय हम आणविक युग के चौखट पर खड़े हैं।

सोवियट राष्ट्र को जो व्यापक आर्थिक शक्तियाँ प्राप्त हैं उन में सब से महत्वपूर्ण श्रम शक्ति पर सम्पूर्ण नियंत्रण है। मुक्त आर्थिक पद्धति में मज़दूर अपने श्रम को बेचने का कानूनी हक रखता है, वह चाहे तो इसे बिलकुल न बेचे। सोवियट इस बात पर बहुत गर्व करता है कि वहाँ कोई बेकारी नहीं है। प्रत्येक को काम मिलने की गारंटी है। वे इस बात को नहीं बताते कि काम चुनने का या काम न करने का, अपनी श्रम शक्ति को रोक रखने का अधिकार वहाँ न तो व्यक्तिगत रूप से

और न सामूहिक रूप से ही (यह ऐसे कि वहाँ हड़ताल करने का अधिकार नहीं है) किसी को है ।

सोवियट मज़दूर या कार्यकर्त्ता बहुत कड़ी नियंत्रण पद्धति के अधीन उसी प्रकार से बंधा हुआ है जैसे पहले के सामुद्रिक गुलाम अपने डांड़ों से बंधे होते थे । जो व्यक्ति अपने काम से हट जाता है उसे कर्त्तव्य त्यागी माना जाता है और कड़ी सजा मिल सकती है । काम की दरख्वास्त के साथ प्रत्येक को अपनी श्रम पुस्तिका पेश करनी पड़ती है जिसमें उसने पहले जितने काम किये हैं, उनका पूरा रिकार्ड रहता है । उसने श्रम के जो अनुशासन भंग किये हैं, तथा जो सजायें पाई हैं, वे इस में दर्ज रहती हैं । यदि उस ने अपनी अंतिम नौकरी को उचित रूप से अधिकृत हो कर छोड़ा है और उसके पास इसके तहरीरी प्रमाण हैं तभी उसको नौकरी मिल सकती हैं, नहीं तो कई क्षेत्रों में उसे अधिकारियों के पास अनुशासन के लिये भेजा जाता है ।

अवश्य इस पद्धति के पीछे एम. वी. डी. की बाध्यतामूलक शक्ति रहती है । लारेन्टी पी. बेरिया के नेतृत्व से एम. वी. डी. ने विराट बाध्यतामूलक श्रम शिविर संगठित किये, जिनमें लकड़ी के कारखाने, सोने की खान, आबपाशी, रेल निर्माण आदि कार्य थे, और ऐसे कार्यों को चलाने के लिये जिस श्रम शक्ति की आवश्यकता थी, वह भी पहुँचाता रहा ।

जिस समय जर्मन हमला हुआ, उस समय बेरिया ने अपने सारे साधनों को युद्ध प्रयास में लगा दिया, और ऐसे आश्चर्यजनक वीरता के कार्य किये कि जमे हुए टुंडरा इलाके से सैकड़ों मील तक होते हुए पिचोरा नदी की गोद में एक रेल लाइन बनाई, और पिचोरा से कोयला

निकाला तथा भेजा जाने लगा जिससे कि डानवास के कोयले की क्षति पूर्ति हो सके।

युद्ध के बाद से एम. वी. डी. ने नये कार्यक्षेत्रों में काम किया है। उदाहरणार्थ १९४९ के जून में ग्रीक, तुर्की तथा यहूदी नस्ल के कोई तीस हज़ार व्यक्ति कृष्ण सागर की तटभूमि से ३ घंटे की नोटिस पर हटा कर दूसरी जगह भेज दिये गये। क्रिमिया के तातार तथा उत्तर काकेशस की चेचेन जाति सम्पूर्ण रूप से मध्य एशिया में भेज दी गई मास्को के ग्रीक, दूतावास का अनुमान है कि कोई पचास हजार ग्रीक प्रजा जो पहले दक्षिणी रूस में नद की तरफ बसी हुई थी इस समय कज़ाकिस्तान में है।

इन कार्यों से अपनी बारी में बाद को जो नयी और अत्यंत वृहत योजनाएं बनाई गई, जिनमें आणविक कारखाने भी थे, मदद पहुँचाई।

इस प्रकार की जबरदस्ती के कारण सोवियट श्रम दूसरी जगहों के मुकाबले में जहाँ मजदूर जब चाहे तब अपना काम बदल सकता है, निम्नकृष्ट होगा इस में तो संदेह नहीं, पर गुण की दृष्टि से जो कमी रहती है, वह असीम परिमाण की बात से बहुत कुछ कट जाती है इस में संदेह नहीं।

किसी भी देश में यहाँ तक कि आधुनिक औद्योगिक देशों में भी इतनी अधिक स्त्रियाँ काम नहीं करती, जितनी कि रूस में करती हैं। इस कारण रूस में प्राप्त श्रम शक्ति का परिमाण बहुत अधिक है।

रूस के इस दावे में बहुत सांख्यिक आधार है कि क्रान्ति के बाद से स्त्रियाँ इतने प्रकार के कार्यों में लगी हुई हैं कि क्रान्ति के पहले वह अकल्पनीय और निषिद्ध थी। यह सभी पेशों के विषय में सत्य है।

आज सोवियट स्त्रियाँ इंजिनियर, शिक्षक तथा डाक्टर के रूप में

काम कर रही हैं। सूती मिलों में, सड़क पर चलने वाली कारों में तथा बस कंडक्टरों में स्त्रियों की बहुत अधिक संख्या है। पर सोवियट प्रचार कार्य में जो सम्पूर्ण बराबरी का दावा किया जाता है, उस से अभी चीज़ें बहुत दूर हैं।

यद्यपि आज तक उच्च राजनैतिक शक्ति के दायरे में किसी स्त्री का प्रवेश नहीं हो सका, तो भी निम्नतम सतहों पर स्त्रियों ने भारी तथा बिना कौशल के हाथ से किये जाने वाले कामों में सर्वत्र विजय पाई है। यहाँ तक बता देना चाहिये कि मजदूरी का सोवियट पैमाना इतना छोटा है कि बहुत कम स्त्रियाँ यहाँ तक कि बच्चों वाली स्त्रियाँ भी काम करने के अधिकार का उपयोग में लाने से चूक नहीं पातीं।

सोवियट नगरों में स्त्रियाँ खाई खोदती हैं, बरफ साफ करती हैं और निर्माण कार्यों में परिश्रम के कार्य करती हैं। ये स्त्रियाँ अच्छी तगड़ी बलिष्ठ पेशी वाली किसान कन्याएँ तथा स्त्रियाँ हैं, जो अबला कहलाना पसन्द नहीं करतीं। जब इतना सस्ता श्रम हाथ के पास मिलता है तो अक्सर ऐसा होता है कि सोवियट भूमि में यंत्र को घिसने से बचाने के लिए इसी प्रकार के श्रम का इस्तेमाल किया जाता है।

गत १८ महीनों में मास्को में लोगों के रहने के हिस्सों में गैस के पाइप लगाये गये जिस से कि सुदूर सैराटोव से प्राकृतिक गैस को लाकर हजारों रसोईघरों में पहुँचाया जाता है। हमारे अपने घर के सामने ही मैंने यह देखा कि स्त्रियों की गैंती फावड़ा वाले गिरोह ने पत्थरों को हटा कर, गहरी खाई खोदी, पाइप लगाई, फिर पत्थरों को रक्खा, उस में पाइप डाला, और इसे तीन बार लगातार खोदना और खोदना

रहा जिससे पता लगे कि कहीं सीलन तो नहीं रह गयी, और यह सारा काम छः महीनों के अन्दर हो गया।

तीसरी खुदाई उस समय हुई जब कि बरफ पड़ रही थी और स्त्रियों को रंभों के द्वारा बरफ तथा बर्फीली ज़मीन से रास्ता बनाना पड़ रहा था। फिर वसन्त ऋतु में जब खाई भर भरा कर सब काम ठीक हो गया, तो उन्होंने सड़क को फिर से बनाया। मास्को की कई सड़कों में मैंने इस कार्य को होते देखा।

अमेरिका में किसी भी गोरे ठीकेदार का इस प्रकार श्रम के अपव्यय से दीवाला पिट जायगा, पर सोवियट भूमि के खजाने में इस से कोई फ़र्क नहीं पड़ता था।

"मुक्त" सोवियट नागरिक को जिस प्रकार अर्द्धदास की तरह अपने काम से बँधा रहना पड़ता है, वह जनता के गले में एक आर्थिक फाँसी के रूप में है। खाद्य तथा अन्य उपभोग द्रव्यों पर जो सम्पूर्ण राष्ट्रीय नियंत्रण है वह भी बहुत महत्वपूर्ण है। यह नियंत्रण बराबर दमन तथा खुशामद, पुरस्कार तथा सज़ा के द्वारा सर्वांगपूर्ण होता है, और यह सारा काम साम्यवादी दल की नीति के अनुसार होता है।

भूतकाल में सरकार ने जान बूझ कर अगण्य किसानों को भूखों मारा जिस से कि वे सामूहिकीकरण पर राज़ी हों। आज सोवियट की तरफ से शहरी मज़दूरों तथा बुद्धिजीवियों की इस रूप में खुशामद की जा रही है कि उन्हें कम दाम में पहले से अच्छा खाना कम दामों पर पहुँचाया जा रहा है। ऐसा इस लिये संभव हो रहा है कि युद्धोत्तर उत्पादन में अच्छा मुनाफा हुआ है, साथ ही पूर्वी योरोप में नियंत्रण के कारण आर्थिक लाभ पहुँचा है।

युद्धोत्तर काल में सोवियट में जो आर्थिक प्रगति हुई है वह न

केवल देश की पुनरुद्धार सम्बन्धी शक्ति का परिचायक है, बल्कि बड़े पैमाने पर आर्थिक योजना की फलदायकता का सूचक है। सोवियट ने जिस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया उसे अब किसी न किसी हद तक सारे सभ्य जगत में राष्ट्रीय बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय पैमाने पर अपनाया गया है। शायद इस की सब से प्रबल और उत्कृष्ट अभिव्यक्ति आर्थिक सहयोग प्रशासन है।

साम्यवादी चुनौती को स्वीकार कर लोकतांत्रिक पाश्चात्य जग यह प्रदर्शित करना चाहता है कि आर्थिक योजना सभ्य समाज में बिना उन शारीरिक तथा मानसिक बाध्यताओं के जिन्हें सोवियट काम में लाता है सफल हो सकती है। यह जीवन-मरण का प्रश्न है, क्यों कि लोकतंत्र वाद के लिये इस का बहुत बड़ा खतरा है कि कहीं साम्यवाद का विरोध करते हुये पाश्चात्य उन्हीं उपायों का प्रयोग न करने लगे, जिन्हें साम्यवादी काम में लाते हैं, और कहीं ऐसा न हो कि मानवीय स्वतंत्रता किसी प्रकार के घृणित अधिनायकवाद के सामने घुटना टेक दे।

जर्मनी में ऐसा ही हुआ, जहाँ नात्सीवाद मुख्य रूप से एक साम्यवाद विरोधी धर्मयुद्ध के रूप में शुरू हुआ। इतिहासकारगण बहुत दिनों तक इन दोनों विरोधी पद्धतियों के द्वारा व्यवहृत तरीकों का एक तरीके से अध्ययन करेंगे। हिटलर ने स्टालिन की तरह आर्थिक दबाव को राजनैतिक उद्देश्य से काम में लगाया। उसने भी मज़दूरों को उच्चतर रहन-सहन का वायदा कर के अपनी तरफ मिलाना चाहा। बड़े मज़े की बात है कि दस साल पहले उसी पूर्व योरोप का सारा धन जर्मनी में जा रहा था, और उससे जर्मन मज़दूरों तथा बुद्धिजीवियों को यह विश्वास दिलाने की चेष्टा की जा रही थी कि हेरेनफोल्क यानी शासक

जाति के होने में फायदा है, आज उसी पूर्वी योरोप का सारा धन रूसी मज़दूरों के जीवन मानदंड को बढ़ा रहा है ।

नात्सीवाद तथा साम्यवाद दोनों में सामान्य बात यह है कि उन का आवेदन भौतिकवाद के प्रति है, और उन में यह विश्वास है कि हिंसा तथा दमन किसी भी समस्या को हल कर सकते हैं तथा शक्ति के लिये कोई भी उपाय ठीक है। सर्वोपरि दोनों एक ही दार्शनिक उत्स स्थल से अपने विचार प्राप्त करते हैं और भलाई बुराई तथा सचाई और झूठ के निर्दिष्ट मानदंड को अस्वीकार करते हैं। ऐसी हालत में यंत्र विज्ञान तथा संगठन मनुष्य जाति फायदा पहुँचाने के बजाय बुराई पैदा करते हैं ।

नात्सी विश्व दृष्टिकोण में नज़रबन्द शिविरों, गैस से मारने के कमरों तथा "कल की दुनिया के सम्बन्ध में स्वप्न" की गुंजाइश हो जाती है। इसी प्रकार सोवियट विश्व दृष्टिकोण में बाध्यतामूलक श्रम शिविर, "सार्वजनिक शुद्धियाँ", पुलिस आतंक तथा विश्व साम्यवाद और पता नहीं क्या क्या के लिये गुंजाइश है ।

फिर भी पाश्चात्य में जो लोग मानसिक आलस्य, स्मृतिभ्रम, निराशा के कारण यह कहते हैं कि फौरन एक लड़ाई लड़कर सारा मामला सुलझा लेना चाहिये उन्हें यह स्मरण दिलाने की आवश्यकता है कि अभी हाल में जो लड़ाई हुई थी, उस से जैसे एक तरफ बहुत गंभीर समस्याओं का हल हो गया, उसी प्रकार बहुत सी गंभीर समस्याओं का उदय भी हुआ। घाते में अर्थहीन विनाश भी हुआ। पराजित जर्मनी में भी नात्सीवाद पर अन्तिम विजय इस बात पर निर्भर है कि जर्मन जनता को लोकतान्त्रिक आदर्शों की ओर आकर्षित करने में सफलता मिलती है या नहीं ।

जो लोग ऐसा समझते हैं कि साम्यवाद को केवल सैनिक उपायों से परिणामदायक रूप में समाप्त किया जा सकता है, वे मूर्ख से भी अधिक मूर्ख हैं। न केवल इस से सार्वदेशिक सर्वनाश होगा, और विजेता तथा विजित दोनों का सर्वनाश होगा, बल्कि विचारों के क्षेत्र में, तथा केवल भूमि पर अधिकार नहीं बल्कि मनुष्य के मन पर निर्णयात्मक जो लड़ाई है वह लड़नी रह जायगी।

आगामी वर्षों में पुलिस राष्ट्र के सब से तगड़े तथा दृढ़प्रतिज्ञ शत्रु लौह यवनिका के पूर्वी हिस्से में विकसित होंगे, क्योंकि साम्यवादमूलक सिद्धान्त शिक्षा होने पर भी स्वाभाविक ज्ञान तथा रुचियों के सबक भुलाये नहीं जा सकते। आज रूस में हजारों विचारशील बुद्धिमान लोग हैं जो सर्वशक्तिमान पुलिस राष्ट्र के नीचे कराह रहे हैं, और अपने सारे मन से छुटकारा पाना चाहते हैं।

जाति के रूप में रूसीगण न तो आक्रमण की रुचि वाले हैं और न शासन की भूख रखते हैं। वे अजनबी लोगों से डरते नहीं।

वे बहुत ही मानवीय, सामाजिक तथा दूसरे देशों के सम्बन्ध में कौतूहल रखने वाले हैं, इस कारण यदि वे सहजात बुद्धि से सोवियट पद्धति से अलग नहीं हो जाते, तो कम से कम वर्तमान गृह तथा वैदेशिक नीति को नापसन्द करते हैं इस के अलावा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हजारों लोग ऐसे हैं जो कभी न कभी पुलिस शासन से व्यक्तिगत रूप से बहुत तकलीफ उठा चुके हैं। विचारधारा के अभियान या प्रत्येक नई शुद्धि से असन्तुष्ट लोगों की संख्या बढ़ती जाती है। यद्यपि प्रशासन की कोई भी आलोचना सही नहीं जाती और उसे रोकी जाती है, और एम. वी. डी. के कान तथा आँखें सर्वत्र हैं, फिर भी मनुष्य की प्रकृति ऐसी है कि प्रत्येक व्यक्ति का कम से कम एक

साथी है जिस पर वह पूर्ण रूप से विश्वास करता है और इस प्रकार एक अन्तहीन जंज़ीर बन जाती है, यद्यपि इस का कोई संगठित रूप नहीं है।

औसत दर्जे के सोवियट नागरिक का मानसिक दृष्टिकोण उम्र की श्रेणी के अनुसार तीन मुख्य सोपान में से होकर गुज़रते हैं—

(१) पचीस साल की उम्र के नीचे सिद्धान्तों द्वारा बहुत अधिक प्रभावित होने के कारण युवकों के लिये जो प्रचार कार्य प्रस्तुत किया जाता है, उस के असर में आकर बहुत उज्ज्वल स्वप्न दिखाई पड़ते हैं। बात यह है अभी तक दुनिया का तजर्बा बहुत कम है।

(२) पचीस से लेकर पैंतीस साल की उम्र तक दैनिक जीवन तथा वास्तविक परिस्थितियों में पड़ कर आशाएँ धीरे धीरे निराशा में परिणत होती हैं।

(३) पैंतीस के बाद अन्तिम रूप से भ्रान्तिभंग होता है। व्यक्ति की मर्यादा तथा चरित्र के अनुसार या तो बहुत स्वार्थपूर्ण कठिनीभूत विश्व निन्दुकता पैदा होती है, या एक दैनिक कार्यक्रम का अनुसरण करते हुए भी उदासीनता हो जाती है या निविड़ भीतरी विद्रोह की भावना जागती है। जो लोग दल तथा राष्ट्र के यंत्र में कार्य करते हैं वे प्रथम श्रेणी याने विश्व-निन्दुकता के शिकार होते हैं। नागरिकों में से अधिकांश द्वितीय श्रेणी याने उदासीनता का अवलम्बन करते हैं। पर बहुतेरे ऐसे भी हैं जिन को यदि जरा भी आशा मिल जाय तो फौरन तीसरी श्रेणी याने विद्रोह की तरफ बढ़ें।

नात्सी आक्रमण के आरम्भिक महीनों में यह पता लगा था कि किस प्रकार सोवियट समाज की जड़ों में असन्तोष का घुन लग चुका

था। पर हिटलर की राजनैतिक गलतियों तथा क्रूरताओं के कारण ऐसे लोगों की आँख खुल गई जो यह समझते थे कि हिटलरवाद में उन्हें क्रेमलिन के शासन से अधिक सुख मिलेगा।

यह जरूरी है कि पश्चिम के लोग पुलिस राष्ट्र तथा सोवियट समाज में फर्क करना सीखें। बात यह है कि पुलिस राष्ट्र तो हमारा अपरिहार्य शत्रु है पर यदि सोवियट जनता को मूर्खतापूर्ण ढंग से दुश्मन नहीं बनाया गया तो वह हमारी ओर मित्रतापूर्ण हो सकती है। और वे ही हैं जो अन्त तक देश के भाग्य का निर्णय करेंगे।

यह आवाज़ जो बार-बार आती है

चर्चिल ने कुछ साल पहले यह कहा था कि सोवियट क्या चाहता है, उस के क्या उद्देश्य हैं, इस पर रहस्य, पहेली तथा भुलभुलैया की तीन परतें चढ़ी हुई हैं, पर युद्ध के बाद से यह परतें उड़ चुकी हैं, और आज सोवियट नीति में कोई भी बात ऐसी नहीं है जो छिपी हुई हो। सच तो यह है कि सार्वजनिक रूप से इन उद्देश्यों को मोलोटोफ़ की सुप्रसिद्ध गर्वोक्ति कि "सभी रास्तों का अन्त साम्यवाद में जा कर होता है" से विज्ञापित होता है।

जिन दिनों लड़ाई चल रही थी, उन दिनों सोवियट पर जो अज्ञेयता का पर्दा था, उसने उन्हें बहुत फायदा पहुँचाया, क्योंकि क्रेमलिन की योजनाओं के सम्बन्ध में पश्चिमी मित्रों को अँधेरे में रखना था। जब स्टालिन ने '४४ के प्रारम्भ में पश्चिम को यह आश्वासन दिया कि वे एक "मुक्त तथा लोकतान्त्रिक" पोलैंड देखना चाहते हैं, तो पश्चिम ने व्यग्रता के साथ उन के कथन पर विश्वास किया। पश्चिम यह जानता था कि स्टालिन इन ज्ञात तथा विश्वसनीय विशेषणों को अत्यन्त उच्च तरीके से विशिष्ट साम्यवादी अर्थों में इस्तेमाल कर रहे हैं।

यहीं से जनता के लोकतन्त्र की यह लुकाछिपी शुरू होती है, जो इस समय अन्तिम सोपान में है। साम्यवादियों ने "जनता के लोकतन्त्र" की प्रशंसा की, और लोकतन्त्रवादियों ने उन पर विश्वास किया और

वे यह समझें कि यह कोई ऐसी राज्य प्रणाली है जिसमें समाजवादी और पूँजीवादी उपादान अच्छी तरह सम्मिलित होते हैं, और इस में, पूर्व तथा पश्चिम की तरह से बढ़िया विशेषताएँ आ जायेंगी।

तब से दुनिया ताकती ही रह गयी और साम्यवादियों ने एक-एक कर के सब लोकतान्त्रिक दलों को खाने और सब दलों के साथ समाज-वादियों को भी मिटा दिया, शक्ति पर एकाधिकार प्राप्त कर लिया और विशुद्ध साम्यवादी कार्यक्रम पेश कर दिया। जनता के लोकतन्त्र की व्याख्या सर्वहारा के अधिनायकत्व से न जो कुछ कम था और न अधिक याने दूसरे शब्दों में यह साम्यवादियों का अधिनायकत्व था। हज़म करने की प्रक्रिया इस तेज़ी से तथा इस बिन्दु पर पहुँच गयी कि अब एक ही बात रह गयी है वह है इन पिछलगुए राष्ट्रों को रूस के अन्तर्भुक्त कर लेना।

पूर्वी योरोप में सोवियट नीति का न केवल पर्दा फाश हो चुका है, बल्कि सारी दुनिया में साम्यवाद के क्या उद्देश्य तथा उपाय हैं यह भी स्पष्ट हो चुका है। इस के अतिरिक्त क्रेमलिन के साथ साम्यवादी दलों का ख़ास सम्बन्ध है एक ज़माने में दुरंगी बातचीत में फँस कर कुछ अस्पष्ट हो जाने पर भी अब सम्पूर्ण रूप से भी शीतल युद्ध तथा योरोपीय पुनरुद्धार के कार्यक्रम से स्पष्ट हो चुका है।

आज लोगों के निकट सोवियट उद्देश्य स्पष्ट हो जाने के कारण बहुत से लोगों के दिमागों में यह प्रश्न उठ रहा है—अब तो सोवियट के पास अणु बम मौजूद है, तो क्या उस के नेता लड़ाई पर तुले हुए हैं?

इस प्रश्न का सब से अच्छा उत्तर है—नहीं और हाँ। इस उत्तर की असंगति समय के उपादान से दूर हो जायगी। अभी जहाँ तक कि

हम भविष्य को देख रहे हैं, उत्तर नकारात्मक है। क्रेमलिन को यह विश्वास है कि समय उस के पक्ष में है, और यदि युद्ध एक दिन भी टलता है तो उतनी हद तक उसी का पलड़ा भारी होता है। पर इस प्रश्न का दीर्घकालीन उत्तर हाँ में है। साम्यवादियों का यह विश्वास है कि यद्यपि कोई एक संघर्ष टाला जा सकता है, फिर भी इन दो विरोधी विश्व पद्धतियों में संघर्ष तो होना ही है और उस में अनिवार्य रूप से साम्यवाद की विजय होगी।

इसी के अनुसार यद्यपि सोवियट यह आशा रखता है कि अभी लड़ाई टल सकती है, फिर भी आर्थिक योजनाओं से वे सैनिक तैयारी को सब से अधिक महत्त्व देते हैं। वे कई बार किसी-किसी तात्कालीन उद्देश्य की प्राप्ति के लिये युद्ध का खतरा भी उठाते हैं जैसा कि बर्लिन अवरोध के समय हुआ था। फिर भी क्रेमलिन यह समझता है कि सोवियट जनता को आक्रमणात्मक युद्ध में कूद पड़ने के लिये कहने का नतीजा अच्छा नहीं होगा, इस लिये कई बार वे लड़ाई को बचा जाते हैं।

और इसी में शान्ति तथा युद्ध न होने की सब से बड़ी आशा है। पश्चिम की शक्तियाँ अपने घरों की आर्थिक पद्धति को ठीक कर अपने दरवाज़ों पर साम्यवाद की जड़ों को नष्ट कर व्यवहार रूप में सोवियट प्रचार कार्य को परास्त कर सकते हैं। इस बीच में पश्चिम को तोषण नीति का वर्जन करते हुए धैर्य के साथ यह चेष्टा करनी चाहिये कि सारे महत्त्वपूर्ण मामलों में सोवियटों के साथ वास्तविक समझौता हो जाय।

पश्चिम को यह स्मरण रखना चाहिये कि यद्यपि सोवियट नेता कठमुल्ला सिद्धान्तों तथा दृष्टिकोण के शिकार हैं, फिर भी उन्हें तथ्य

मनवाया जा सकता है। स्वयं स्टालिन ने एक बार प्रयोगवादी मनोवृत्ति में यह कहा था कि "वस्तुओं का तर्क ही सब से तगड़ा तर्क है।"

इस खेल में जो चीज़ें दाँव पर हैं उन को देख कर ऐसा मालूम होता है कि इस पर जितना भी प्रयास तथा धैर्य खर्च किया जाय थोड़ा है। सोवियटों के साथ बर्ताव करते-करते निराश पश्चिमी राजनीतिज्ञों को ब्लादीमीर क्ल्यूचेवस्की ने सत्रहवीं सदी के रूसी राजनयिकता पर जो कुछ लिखा उस से शायद सान्त्वना हो। उन्होंने लिखा था —

"मास्को के बयारों अर्थात् जारशाही के जमाने के रूसी अभिजातों के राजनयिक तरीके से अक्सर विदेशी राजदूत, विशेष कर वे लोग जो ईमानदारी से सीधा व्यवहार करना चाहते थे, उन को बड़ी निराशा होती थी। वे अक्सर इस बात की शिकायत करते हैं कि मास्को के राजनयिक दो मुँहे हैं, यकायक बात बदलते हैं, झट से प्रतिज्ञा करते हैं, और उस से भी जल्दी उसे तोड़ते हैं। उन के चालों से बचने के लिये केवल इतना ही जान लेना काफी नहीं था कि वे झूठ बोल रहे हैं। इस के लिये यह भी जानना जरूरी था कि वे क्यों झूठ बोल रहे हैं, तथा उस झूठ का क्या मूल कूता जाय।

"यदि ये झूठ बोलते हुए पकड़े गये तो वे शरमाते नहीं, बल्कि (जैसा कि आज विशिन्स्की करते हैं) घृणा के साथ उल्टा दोष लगाते हैं। चाहे जितनी बारीकी से तथा धनात्मक रूप से बातचीत के विषय का स्पष्टीकरण किया गया हो, फिर भी जब जरूरत पड़ती थी तो तरह-तरह की जटिल व्याख्याएँ कर वे या तो इस की शक्ति को घटा देते थे, या उसे एक अप्रत्याशित रूप दे देते थे।"

इस अन्तिम बात की तुलना बर्लिन अवरोध के समय जनरल क्ले

के इस वक्तव्य से कीजिये—"सोवियट सरकार किसी भी समझौते के तोड़ने के समर्थन में फौरन कोई न कोई बारीक नुक्ता निकाल लेती है।" फिर भी जनरल क्ले ने अपनी दृढ़ता तथा धैर्य से बर्लिन अवरोध पर कार्य करते हुए यह ऐतिहासिक उदाहरण पैदा कर दिया कि बिना युद्ध के सोवियटों के साथ कैसे बर्ताव किया जाय।

सोवियट सरकार के साथ एक वस्तुवादी व्यवहार पद्धति कायम रखते हुए भी अमेरिका को चाहिये कि सोवियट सरकार के सिर पर से होते हुए वह रूसी जनता की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाता रहे। वह बराबर इस साम्यवादी प्रचार का विरोध करता रहे कि अमेरिका सोवियट संघ पर हमला करना चाहता है।

इस ओर रूसी भाषा के रेडियो प्रसार के कार्यक्रम "अमेरिका की आवाज़" का सूत्रपात कर बहुत अच्छा काम किया गया है। सोवियट की तरफ से इसे जाम करने की भरसक कोशिश हो रही है, यह इसकी सफलता का द्योतक है। इस प्रकार जाम होने के पहले हमें मालूम है कि लोग इन कार्यक्रमों को बहुत ध्यान से सुनते थे।

आज भी जाम प्रक्रिया से बच कर जो कुछ भी थोड़ा बहुत रूस में पहुँच जाता है, वह अणुबम से अधिक शक्तिशाली है, यह शान्ति का ऐसा अस्त्र है जो मनुष्य के हृदयों में प्रवेश हो जाता है, और विनाश के बजाय सृजन करता है।